KENNETH ANDERSON

THE BLACK PANTHER OF SIVANIPALLI

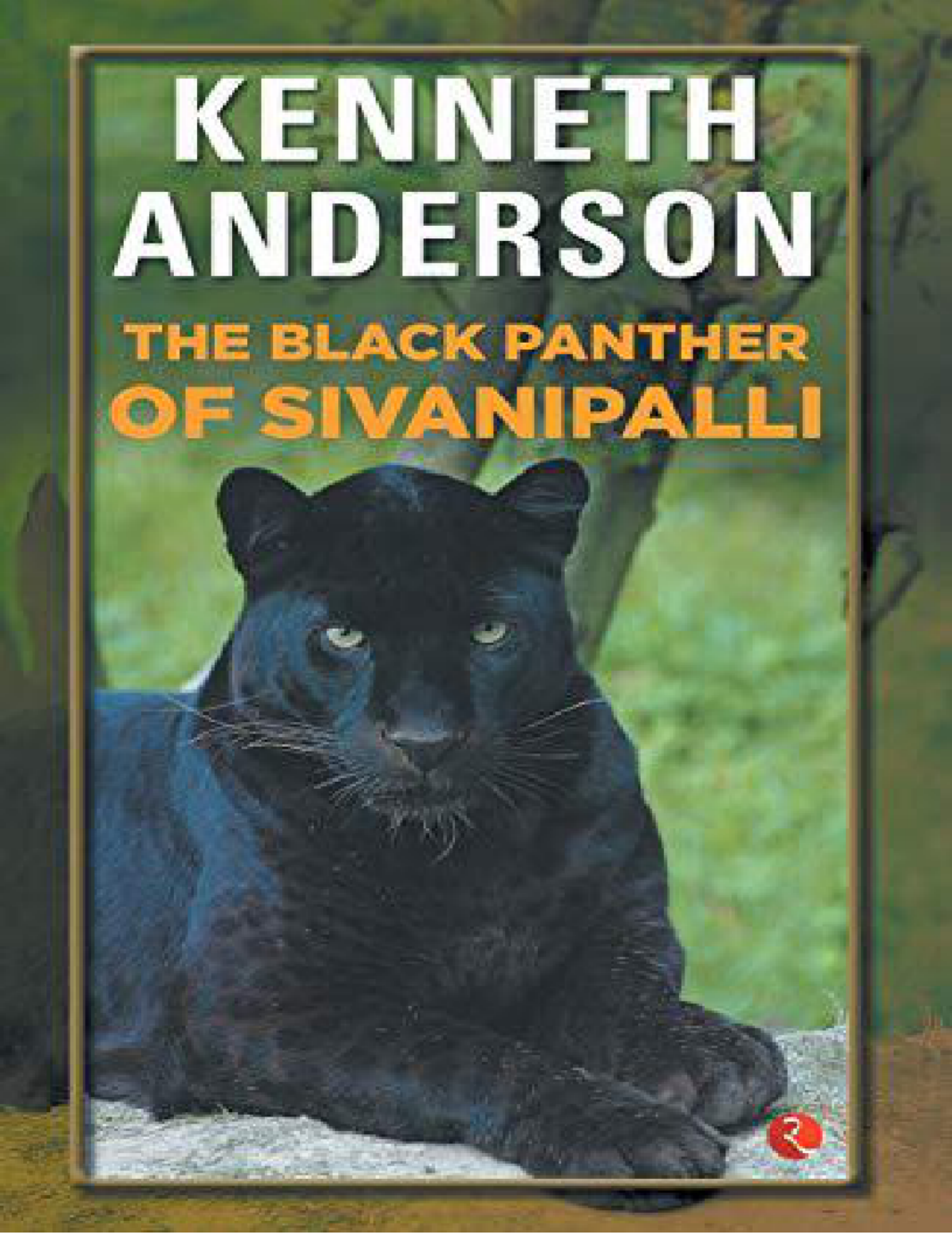

Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
अंतर्वस्तु
परिचय
एक पैंथर का रास्ता
येल्लागिरी पहाड़ियों का आदमखोर पैंथर
ओल्ड मुनुस्वामी और मगदी का पैंथर
शिवानीपल्ली का काला पैंथर
सांप और अन्य जंगली जीव
हैदराबाद का हत्यारा
गेडेसल का विशाल बैल बाइसन
चोर्डी का अयालदार बाघ
पेगेपलयम का आदमखोर

शिवानीपल्ली का काला पैंथर

उसी लेखक द्वारा

भारतीय जंगल की कहानियाँ
आदमखोर और जंगल के हत्यारे
नरभक्षी की पुकार
बाघ दहाड़ता है
बहुत समय पहले के जंगल
यह जंगल है

शिवानीपल्ली का ब्लैक पैंथर

केनेथ एंडरसन

Rupa & Co

पांचवां संस्करण 2011

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
7/16, Ansari Road, Daryaganj,
नई दिल्ली 110 002

सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

टाइपसेटिंग का कॉपीराइट © रूपा एंड कंपनी 2001

टाइपसेट द्वारा
माइंडवेज़ डिज़ाइन
1410 चिरंजीव टावर
43 नेहरू प्लेस
नई दिल्ली 110 019

अंतर्वस्तु

परिचय

एक पैंथर का रास्ता

येल्लागिरी पहाड़ियों का आदमखोर पैंथर

ओल्ड मुनुस्वामी और मगदी का पैंथर

शिवानीपल्ली का काला पैंथर

सांप और अन्य जंगली जीव

हैदराबाद का हत्यारा

गेडेसल का विशाल बैल बाइसन

चोर्डी का अयालदार बाघ

पेगेपलयम का आदमखोर

परिचय

इस पुस्तक के पहले पाँच अध्याय पैंथरों को समर्पित हैं। शायद आप सोच रहे होंगे कि मैंने पैंथरों पर ही ध्यान क्यों केंद्रित किया है और जंगल के अन्य जानवरों के बारे में क्यों नहीं लिखा। इसका एक कारण यह है कि पैंथर आज भी भारत में काफी आम हैं। दूसरा, इन्हें ढूंढना अपेक्षाकृत आसान है, क्योंकि आज भी ये कुछ बड़े शहरों से कुछ मील की दूरी पर ही मिल जाते हैं। तीसरा कारण यह है कि पैंथरों का शिकार काफी सस्ता है और आम आदमी की जेब के बजट में है। पैंथर कुत्ते, बकरी या गधे जैसे चारे पर आ जाते हैं; जबकि बाघ को भैंस या बैल से आकर्षित करना पड़ता है, जिसमें काफी खर्च आता है।

इसके बदले में, पेड़ की मचान की सुरक्षा में बैठकर शिकार करने के बजाय जमीन पर बैठकर खेल भावना से पैंथर का शिकार करना बाघ के शिकार जितना ही रोमांचकारी अनुभव प्रदान करता है।

मैंने बाघों और अन्य जानवरों के बारे में एक अध्याय लिखा है, और साँपों के बारे में भी कुछ लिखा है। मैंने साँपों को इसलिए शामिल किया है क्योंकि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बाघों, हाथियों, शेरों और बड़े जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा और जाना जाता है, लेकिन साँपों के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं लिखा गया है, और ज़्यादातर लोग उनके बारे में बहुत कम जानते हैं, सिवाय इसके कि आम तौर पर उनसे बचना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि मैं इन समान रूप से रोचक जीवों पर कुछ प्रकाश डाल सकूँगा। पाठक को एक पल के लिए भी यह नहीं सोचना चाहिए कि बाघ, तेंदुआ, भालू और हाथी भारतीय जंगल में मिलने वाले सबसे खतरनाक जीव हैं। झाड़ियों या घास में घात लगाए बैठा ज़हरीला साँप कहीं ज़्यादा तेज़, कहीं कम दिखाई देने वाला और कहीं ज़्यादा शक्तिशाली होता है।

मैंने एक बहादुर बाइसन की कहानी और बाघों के साथ दो रोमांचक अनुभवों के बारे में भी बताया है। इन दोनों कहानियों से आपको आदमखोर बाघ का शिकार करने में आने वाली कठिनाइयों, परेशानियों और निराशाओं का अंदाजा लग जाएगा। एक मामले में मैं पूरी तरह असफल रहा; दूसरे में मुझे सफलता मिली, लेकिन महज़ संयोग से। मैंने एक ऐसे बाघ के संक्षिप्त वर्णन के साथ अपनी बात समाप्त की है जिसका व्यवहार बहुत ही विचित्र था। जब मैं यह लिख रहा हूँ तब वह जीवित है—और वह अब भी एक रहस्य बना हुआ है।

जैसे-जैसे मैं इन रोमांचक अनुभवों को लिखता हूँ, वर्तमान के दृश्य और ध्वनियाँ धुंधली होती जाती हैं और यादें उमड़ पड़ती हैं। जंगल की रात का अंधेरा, ऊपर तारों से भरा आकाश और नीचे

जंगल की चादर पर टिमटिमाते रत्न, घने पत्तों के बीच अनगिनत जुगनू जो परी जैसे दीपक की तरह चमकते हैं; और वे अन्य, अधिक चमकदार, जीवंत प्रकाश, बाघ, तेंदुआ या बाइसन की चमकती आँखें, और झाड़ियों के बीच से धीरे-धीरे चलते हुए सुंदर हिरण की हरी आँखें, जो सरसराते पेड़ों के नीचे चलते समय मेरी टॉर्च की रोशनी को प्रतिबिंबित करती हैं।

आइए, मेरे साथ उन कुछ घंटों के लिए, जो इस पुस्तक को पढ़ने में आपको लग सकते हैं, बाघ, तेंदुआ और हाथी के क्षेत्र में, विशाल वृक्षों की बुलंदियों और घनी छाया के बीच, जिनके तने इस अद्भुत इमारत की संरचना करते हैं। तथाकथित सभ्यता के झूठे मूल्यों और विचारों को भूल जाइए, जीवन की स्वतंत्र और सरल सच्चाइयों पर थोपे गए उन नियमों को भूल जाइए। यहाँ जंगल में आपको सत्य मिलेगा, आपको शांति, आनंद और खुशी मिलेगी; आपको जीवन ही मिलेगा। यहाँ पाखंड, बनावटीपन, कृत्रिमता और झूठेपन के लिए कोई जगह नहीं है, कोई समय नहीं है। आप आदिम स्वरूप के आमने-सामने हैं, उस वास्तविकता के सामने हैं, उस अद्भुत चीज़ के सामने हैं - जो ईश्वर है।

यदि मैं आपको कुछ क्षणों के लिए आपके जीवन की सभी नीरसताओं से दूर ले जाकर, उष्णकटिबंधीय जंगल के चमत्कारों और उसके रोमांच में ले जाने में सफल हो जाऊं, जहां आपका जीवन आपकी इंद्रियों, आपकी बुद्धि, आपके कौशल और अंत में ईश्वर की कृपा पर निर्भर करता है, जब आप घने हरे-भरे जंगलों या पत्थरों के ढेर के बीच एक घायल आदमखोर के खून के निशान का पीछा करते हैं, तो मैं स्वयं को भरपूर पुरस्कृत महसूस करूंगा।

एक

एक पैंथर का रास्ता

हर तेंदुआ दूसरे तेंदुआ से अलग होता है। कुछ तेंदुआ बेहद साहसी होते हैं; कुछ बेहद डरपोक। कुछ बेहद चालाक होते हैं; कुछ बिल्कुल मूर्ख प्रतीत होते हैं। मैंने ऐसे तेंदुओं को भी देखा है जिनमें मानो छठी इंद्री होती है, और वे ऐसे व्यवहार करते हैं मानो किसी के मन की हर बात को पढ़ और समझ सकते हों। अंत में, लेकिन बहुत कम ही, ऐसे तेंदुआ भी होते हैं जो मनुष्यों पर हमला करते हैं, और उससे भी कम, ऐसे तेंदुआ जो उन्हें खा जाते हैं।

आम तौर पर, आदमखोर जानवर किसी असाधारण परिस्थिति का परिणाम होते हैं। हो सकता है कि किसी ने उसे घायल कर दिया हो, और उसके बाद वह आसानी से अपने प्राकृतिक शिकार—अन्य जानवरों—का शिकार करने में असमर्थ हो गया हो। इसलिए, मजबूरीवश वह मनुष्यों को खाने लगता है, क्योंकि वे उसके लिए आसान शिकार होते हैं। या शायद किसी पैंथर ने किसी मृत मानव शरीर को खा लिया हो, जिसे पहले बहुत उथली कब्र में दफनाया गया था और बाद में सियार या भालू ने खोदकर निकाल लिया था। मानव मांस का स्वाद चखने के बाद, पैंथर को अक्सर इसकी आदत पड़ जाती है। अंत में, हालांकि यह बहुत ही दुर्लभ है, हो सकता है कि यह किसी आदमखोर माँ का बच्चा हो, जिसने उसे यह आदत सिखाई हो।

आम तौर पर पैंथर एक शांत और काफी हानिरहित जानवर होता है जो मनुष्यों से डरता है और उन्हें देखते या उनकी आवाज सुनते ही चुपचाप झाड़ियों में गायब हो जाता है। घायल होने पर, कुछ पैंथर असाधारण क्रूरता और बहादुरी दिखाते हैं। वहीं दूसरी ओर, कुछ बेहद कायर होते हैं और अपने पीछे आने देते हैं, या कुत्तों की तरह उनका पीछा भी करते हैं।

अगर आप किसी पहाड़ी की चोटी से किसी पैंथर को अपने शिकार का पीछा करते हुए देख पाते, तो यह एक बेहद मनोरंजक नज़ारा होता। आप उसे हर झाड़ी, हर पेड़ के तने और हर पत्थर के पीछे छिपते हुए देखते। वह खुद को ज़मीन पर इस तरह से समेट सकता है कि वह दिखाई ही न दे, जब तक कि आपकी नज़रें बहुत तेज़ न हों। एक बार मैंने दूरबीन से एक पैंथर को देखा और जंगल में उसकी अद्भुत कुशलता देखकर दंग रह गया। फिर आती है उसकी आखिरी छलांग। कुछ ही छलांगों में, बिजली की तेज़ी से, वह अपने शिकार तक पहुँच जाता है।

अचूक निशाने के साथ, वह अपने शक्तिशाली नुकीले दांतों से ऊपर और पीछे से जानवर का गला पकड़ लेता है, ताकि जब जानवर ज़मीन पर गिरे तो पैंथर उसके खुरों से दूर, दूसरी तरफ रहे, जिससे गंभीर चोट लग सकती है। शिकार ज़मीन पर गिर जाता है और उसकी पकड़ तब तक ढीली नहीं पड़ती जब तक जानवर मर नहीं जाता। मरने के बाद भी, पैंथर अपने शिकार के गले में किए गए गहरे घावों से उसका खून चूसता रहता है।

ज़रा कल्पना कीजिए जंगल की खामोशी और चुपके से आते हुए पैंथर की, जो अपने शिकार की ओर बढ़ रहा है या उसके लिए बांधे गए जीवित शिकार का पीछा कर रहा है। अगर आप पैंथर का शिकार करना चाहते हैं, तो बहुत ध्यान से देखें: हर झाड़ी में झाँकें, घास के हर गुच्छे में देखें, किसी चट्टान या पत्थर के पास से गुजरते समय सावधान रहें, गड्ढों और खाइयों में भी गौर करें। क्योंकि पैंथर इनमें से किसी के भी पीछे हो सकता है, या ज़मीन में किसी गड्ढे में छिपा हो सकता

है। न केवल आपकी सफलता, बल्कि आपका जीवन भी आपकी सावधानी पर निर्भर करेगा, क्योंकि आप जंगल के सबसे कुशल जीव और एक बेहद खतरनाक शिकारी के खिलाफ अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कर रहे हैं।

पैंथर का उसके अपने तरीके से शिकार करने की कोशिश करना सबसे कठिन और रोमांचक शौक में से एक है। इसे 'स्टिल-हंटिंग' के नाम से जाना जाता है।

शिकार करते समय सफल होने के लिए, आपके पास जंगल की गहरी समझ, कोमल चाल और लगभग पैंथर जैसी बुद्धि होनी चाहिए; क्योंकि आप इस बेहद चालाक जानवर को उसी के खेल में मात देने की कोशिश करने वाले हैं। आप उसका शिकार अपने पैरों पर खड़े होकर करने वाले हैं—और याद रखें, वह स्वयं भी सबसे कुशल शिकारी है।

सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि वह शिकार की तलाश में कब निकलता है। वह आम तौर पर निशाचर जानवर है और रात में जंगल में घूमता है। आप इंसान हैं, इसलिए टॉर्च की मदद के बिना अंधेरे में नहीं देख सकते। लेकिन टॉर्च से शिकार करना संभव नहीं है। दूसरा सबसे अच्छा समय शाम को अंधेरा होने से ठीक पहले का होता है। तब आपको पैंथर से मिलने का मौका मिल सकता है। दिन में बाहर जाना बेकार है, क्योंकि उस समय वह आराम कर रहा होता है। इसके अलावा, उसे तेज़ धूप पसंद नहीं है।

दूसरा सवाल यह है कि आम तौर पर उसे खोजने के लिए सबसे अच्छी जगहें कौन सी हैं? इसका जवाब जानने के लिए, आपको अगले सवाल का जवाब पता होना चाहिए—जंगल में पैंथर आमतौर पर किसका शिकार करता है? इस सवाल का जवाब बहुत मददगार नहीं होगा, क्योंकि पैंथर किसी भी जीवित चीज़ को खा जाता है, बशर्ते वह इतनी बड़ी न हो कि उसे पकड़ा न जा सके। जंगली मुर्गे, मोर, खरगोश, बंदर, जंगली सूअर और हिरण परिवार के सभी जानवर, बहुत बड़े नर हिरणों को छोड़कर, उसके शिकार होते हैं। गांवों के पास, पालतू सूअर, कुत्ते, बकरियां, भेड़ें, गधे और औसत आकार के मवेशी उसका मुख्य भोजन हैं। यहां तक कि गांव की आवारा बिल्ली भी उसका शिकार बन सकती है, बशर्ते वह झोपड़ियों से बहुत दूर भटकने की मूर्खता करे।

मान लीजिए कि हम एक जंगल में हैं जहाँ पैंथर अपना प्राकृतिक भोजन शिकार करता है। पैंथर शिकार कैसे करता है? याद रखिए, उसकी दृष्टि और सुनने की शक्ति अद्भुत है, लेकिन सूंघने की क्षमता लगभग न के बराबर है। अगर आप पैंथर की जगह होते, तो आप क्या करते?

ज़ाहिर है, दो में से एक बात होगी। या तो आप चुपचाप उन इलाकों में घूमेंगे जहाँ भोजन मिलने की संभावना है, या फिर आप किसी ऐसी जगह के पास छिप जाएँगे जहाँ आपको भोजन मिलने की उम्मीद हो। पैंथर ठीक यही करता है।

वह दबे पांव, गद्देदार कदमों से, उन जगहों पर घूमता है जहां उसे लगता है कि जिन पक्षियों और जानवरों की वह तलाश कर रहा है, उनके होने की संभावना है, या वह किसी पानी के गड्ढे या नमक चाटने की जगह के पास उनका इंतजार करता है जहां वे आम तौर पर आते हैं।

अगर वह शिकार की तलाश में है और चुपचाप रहना चाहता है, तो वह हमेशा घनी झाड़ियों या सूखे पत्तों के बीच नहीं छिप सकता, क्योंकि उनसे सरसराहट की आवाज़ आती है। इसलिए वह पगडंडियों, जानवरों के रास्तों, जंगल की आग बुझाने वाली जगह या नाले या नदी के किनारे छिपकर चुपके से चलता है। इसके अलावा, वह पानी के स्रोतों या नमक के टीलों के पास छिप जाता है, जहाँ से गुजरते हुए वह अपने शिकार पर झपट्टा मार सकता है। आपको उसे ऐसी ही जगहों पर ढूंढना चाहिए।

इसके अलावा, आपकी हलचल भी उसका ध्यान आकर्षित करेगी। इसलिए, दिन के समय जंगल में टहलें और देखें कि क्या आपको पग के निशान मिलते हैं—सिर्फ़ कुछ पग के निशान

नहीं, बल्कि पुराने और नए, कई निशान। जब आपको ये निशान मिल जाएं, तो आप समझ जाएंगे कि आपको पैंथर का एक जाना-माना रास्ता मिल गया है। ऐसी जगह चुनें जहाँ दो या दो से अधिक ऐसे रास्ते मिलते या एक-दूसरे को काटते हों, या ऐसी जगह जहाँ ऐसा कोई रास्ता या आग की लकीर किसी नदी को पार करती हो।

जब आपको वह जगह मिल जाए, तो उसी शाम वापस आएं और किसी सुविधाजनक पेड़ के तने या झाड़ी के पीछे छिप जाएं; और फिर, चाहे कुछ भी हो जाए, एकदम शांत बैठे रहें और आस-पास के रास्तों, आग बुझाने वाली जगहों या नदी-नालों पर पैनी नज़र रखें। अगर आप भाग्यशाली रहे, तो हो सकता है आपको कोई शिकारी पैंथर इनमें से किसी एक पर चलता हुआ दिखाई दे, जो शायद बीच-बीच में पेड़ों की ओर देखकर किसी बंदर या किसी बड़े जंगली पक्षी की तलाश कर रहा हो। यह तो ज़ाहिर सी बात है कि ऐसी निगरानी में आपको बाघ, हाथी या हिरण की कई प्रजातियों में से कोई एक भी दिख सकती है।

लेकिन फिलहाल मान लेते हैं कि आप सिर्फ एक पैंथर की तलाश में हैं। अगर आपको जंगल में कोई तालाब या नमक चाटने की जगह मिल जाए, तो उसके पास किसी छाया में या अगर चींटियों का टीला उपलब्ध हो तो उसके पीछे लेट जाना सुविधाजनक होगा। जंगल के विभिन्न जीवों को ऐसी जगहों पर आते-जाते देखना आपके लिए काफी मनोरंजक होगा। अगर कुछ समय बाद आपको कोई पैंथर या बाघ आपके जैसी ही जगह पर बैठा हुआ दिखाई दे, तो ज्यादा आश्चर्यचकित न हों, हालांकि मैं आपको चेतावनी देना चाहूंगा कि उन्हें पहचानना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा, क्योंकि वे बहुत चुपचाप चलते हैं। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मांसाहारी जीव ऐसी जगहों पर छिपकर अपने प्राकृतिक भोजन की प्रतीक्षा करते हैं।

मुझे याद है कि एक बार मैं एक पेड़ के तने के पीछे घास में लेटा हुआ था, जहाँ से एक उथली खाई के कोने में बने नमक के टीले का नज़ारा दिखता था। पहले की जाँच से पता चला था कि चित्तीदार हिरण और सांभर बड़ी संख्या में इस नमक के टीले पर आते थे। शाम ढल रही थी, तभी मेरे ठीक पीछे हल्की सी सरसराहट सुनाई दी, जिससे मैंने धीरे से अपना सिर घुमाकर पीछे देखा। वहाँ मैंने एक पैंथर को देखा जो मुझे स्पष्ट रूप से आश्चर्यचकित होकर देख रहा था। जब उसने देखा कि उसे देख लिया गया है, तो वह खड़ा हो गया और भागने के इरादे से आधा मुड़ गया। फिर उसने एक बार फिर मेरी तरफ देखा, मानो कह रहा हो, 'क्या तुम यहाँ से दफ़ा नहीं हो सकते?' अंत में वह चला गया।

इन जानवरों को उनके शावकों के साथ या बाघिन को उनके शावकों के साथ देखना बेहद मनमोहक होता है। माँ की देखभाल का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मांसाहारी जानवर अपने शावकों को तब तक गुफा से बाहर नहीं लाते जब तक वे ठीक से चलने-फिरने लायक न हो जाएं और शिकार के बुनियादी नियम न समझ लें। तब तक उन्हें गुफा में ही सुरक्षित रखा जाता है। बहुत छोटे होने पर उन्हें केवल दूध पिलाया जाता है। जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं, तो माँ उन्हें कच्चा मांस खिलाना शुरू कर देती है, जिसे पहले वह खुद खाकर थोड़ा पचा लेती है और फिर शावकों के खाने के लिए उल्टी कर देती है। जैसे-जैसे शावक ठोस मांस पचाने में सक्षम होते जाते हैं, माँ अपने शिकार को गुफा में लाती है—शायद कोई जंगली मुर्गा या मोर, और समय बीतने के साथ-साथ छोटे जानवर, हिरण की टांग तक, या शायद पूरा हिरण भी।

शावक बहुत लालची होते हैं और अगर उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए तो वे ज़रूरत से ज़्यादा खा लेते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। मैंने कई तेंदुआ और बाघ के शावक पाले हैं और पाया है कि तेंदुआ विशेष रूप से पेट की सूजन (गैस्ट्राइटिस) से ग्रस्त होते हैं। वे कच्चे मांस के टुकड़े चट कर जाते हैं और खून के कटोरे भर-भरकर पीते हैं, यहाँ तक कि लगभग हिलने-डुलने में असमर्थ हो

जाते हैं। एक बार जब उन्हें पेट की सूजन हो जाती है, तो यह बीमारी लगभग लाइलाज साबित होती है और वे तीन-चार दिनों में भीषण पीड़ा से मर जाते हैं। यह बीमारी उन्हें लगभग आठ महीने की उम्र तक प्रभावित करती है और मैंने इस बीमारी से कई शावकों को खोया है।

जंगली अवस्था में, एक माँ को यह बात सहज रूप से पता होती है और वह अपने बच्चों को उतना ही खाना देती है जितना उन्हें चाहिए होता है, कच्चे मांस के साथ प्राकृतिक दूध भी तब तक देती रहती है जब तक कि बच्चे काफी बड़े नहीं हो जाते और दूध पीते समय उसे काटने और खरोंचने नहीं लगते।

यदि गुफा पर किसी प्रकार का खतरा मंडराता है, चाहे वह घुसपैठ करने वाले मनुष्यों के रूप में हो या प्रजाति के नर के रूप में, जो अपने बच्चों को खाने का शौकीन होता है, तो वह उन्हें एक सुरक्षित स्थान पर ले जाती है। वह ऐसा करने के लिए उन्हें गर्दन के पिछले हिस्से से पकड़कर अपने मुंह में उठा लेती है।

जब शावक चलने लायक हो जाते हैं, तो माँ उन्हें शिकार करने और खुद शिकार करने की कला सिखाने के लिए बाहर ले जाती है। यह एक लंबी प्रक्रिया होती है। माँ पहले खुद शिकार को मारती है, जबकि शावक झाड़ियों में छिपे रहते हैं। फिर वह म्याऊँ जैसी कर्कश आवाज़ें निकालकर उन्हें बुलाती है, जिससे वे मरे हुए जानवर पर उछल-कूद कर सकें, उसे काट सकें और ताज़ा शिकार और गर्म खून का स्वाद चख सकें। ऐसा करते समय शावकों द्वारा निकाली गई भयंकर आवाज़ें सुनने में बहुत मज़ेदार होती हैं। वे अपना साहस बढ़ाते हैं और गुस्से में आकर एक-दूसरे पर और यहाँ तक कि अपनी माँ पर भी गुर्राते और झपटते हैं।

अगला पाठ तब शुरू होता है जब वह शिकार को आधा ही मारती है, या उसके पैर की नसें घायल कर देती है, जिससे बच्चों को बाकी काम अपनी क्षमता के अनुसार पूरा करने का मौका मिलता है। वे जानवर के गले पर हमला करके और उसे काटकर मार डालते हैं—यह एक बहुत ही क्रूर प्रक्रिया है।

शिकार करने की कला सिखाने में बाघ के शावकों को पैंथर की तुलना में कहीं अधिक समय लगता है। पैंथर अपने शिकार का गला दबाकर और लटककर उन्हें मार डालते हैं, जबकि बाघ बड़ी कुशलता से गर्दन तोड़ देता है। इसलिए बाघ के शावकों को सिखाने में अधिक समय लगता है, और यह आम बात है कि एक बाघिन अपने शावकों को सिखाते समय झुंड में से चार या पाँच मवेशियों को मार देती है, जबकि अक्सर शावकों को अगर अकेला छोड़ दिया जाए तो वे केवल काटकर या नोंचकर काम बिगाड़ देते हैं, और अंततः जानवर बच निकलता है।

मैंने पहले भी बताया है कि बाघ एक बहुत ही वैज्ञानिक और कुशल शिकारी होता है। वह आम तौर पर अपने शिकार की पीठ पर आधा छलांग लगाता है, झुककर दूसरी तरफ से उसका गला पकड़ लेता है, और अपने अगले पंजों से मज़बूती से उसे जकड़े रखता है। फिर वह एक तेज़ और ज़ोरदार झटके से ऊपर और पीछे की ओर खींचता है जिससे जानवर गिर जाता है। शिकार और बाघ के संयुक्त वज़न के साथ-साथ गर्दन के अचानक और ज़ोरदार घुमाव के कारण ही शिकार की गर्दन टूट जाती है।

जब कोई मादा बाघिन या तेंदुआ अपने बच्चों के साथ शिकार पर निकलती है, तो बच्चे उसके पीछे-पीछे चलते हैं, माँ की हर हरकत की नकल करते हैं और ठीक उसी तरह ज़मीन पर या झाड़ियों के पीछे छिप जाते हैं। ऐसे समय में बाघिन के बहुत पास रहना खतरनाक होता है। वह अपने बच्चों की रक्षा में आप पर हमला कर सकती है। तेंदुआ मादा के हमले की संभावना कम होती है, हालांकि वह भयंकर गुर्राहट करके अपनी ताकत का प्रदर्शन जरूर करती है। फिर भी, कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता, इसलिए जब भी कोई परिवार नज़र आए तो अपनी

राइफल तैयार रखना ही समझदारी है।

लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, और जब तक बेहद अपरिहार्य न हो और आत्मरक्षा में ही करना पड़े, कृपया माँ को गोली न मारें, चाहे वह पैंथर हो या बाघिन। ऐसा करने पर शावक निश्चित रूप से जंगल में भाग जाएंगे जहाँ वे भूख से मर सकते हैं, या यदि वे बड़े हो गए तो आदमखोर बन सकते हैं। आपको याद रखना चाहिए कि उन्होंने अभी तक अपने प्राकृतिक भोजन, यानी अन्य जानवरों को मारना ठीक से नहीं सीखा है। यदि आप इस स्तर पर उनकी शिक्षा में बाधा डालते हैं, तो आपके द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों के कारण वे अपनी भूख मिटाने के लिए मनुष्यों को मारने लग सकते हैं। हमेशा याद रखें कि किसी भी बड़े जानवर की तुलना में मनुष्य का पीछा करना, उस पर हमला करना और उसे मारना कहीं अधिक आसान है।

इस तरह के शौक को पूरा करने के लिए भारतीय शीत ऋतु के दौरान, यानी नवंबर, दिसंबर और जनवरी के महीनों में, एक दिलचस्प समय होता है, क्योंकि यही वह समय होता है जब इन दोनों मांसाहारी प्रजातियों का प्रजनन काल होता है।

बेशक, आपको याद रखना चाहिए कि ये जानवर ज़्यादातर रात में सक्रिय रहते हैं, और शाम ढलने के समय इन्हें देखने या सुनने की संभावना बहुत कम होती है। बाघिन द्वारा अपने साथी को पुकारने की आवाज़ सुनना रोमांचकारी होता है, और उसकी पुकार में अधीरता का भाव लगभग महसूस किया जा सकता है। हालांकि, मैं आपको चेतावनी देना चाहूंगा कि इस मौसम में बाघ निश्चित रूप से खतरनाक होते हैं, खासकर जब वे मादा को रिझाने की कोशिश कर रहे हों या संभोग कर रहे हों। उनका तरीका बेहद हिंसक होता है, बाघ और बाघिन दोनों ही अक्सर एक-दूसरे को बेरहमी से काटते और खरोंचते हैं।

आपने शायद घरेलू बिल्लियों के संभोग के दौरान उनके अजीब व्यवहार को देखा होगा। इसे कई गुना बढ़ा दें, तो आपको बाघों की कामुकता का कुछ अंदाजा हो जाएगा। वे उन्माद और क्रोध में डूब जाते हैं, और इस यौन उत्तेजना के समय उनकी निजता में दखल देने वाले किसी भी इंसान का बुरा हाल होता है। बाघिन इस दौरान बाघ से भी ज्यादा उत्तेजित और इसलिए ज्यादा खतरनाक मानी जाती है। कामुक आवाजों में चिल्लाती हुई बाघिन अक्सर बड़े-बड़े इलाकों में वन विभाग के काम और बैलगाड़ियों का आवागमन रोक देती हैं।

इस मामले में पैंथर भी काफी हद तक समान होते हैं, लेकिन आम तौर पर उनमें किसी मानव घुसपैठिए पर हमला करने का साहस नहीं होता है, हालांकि वे इसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने में कोई संकोच नहीं करेंगे।

एक पैंथर बाघ की तुलना में बिल्ली से अधिक मिलता-जुलता है। शिकार के रास्ते के किनारे रेत या सूखे पत्तों को खरोंचकर पैंथर द्वारा शौच करने और फिर मल को ढकने के निशान से पता चलता है, ठीक उसी तरह जैसे एक पालतू बिल्ली करती है। हालांकि, एक बाघ ऐसा नहीं करता, बल्कि कुत्ते की तरह मल को खुला छोड़ देता है। दोनों ही मामलों में, मल में ज्यादातर पिछले शिकार के बिना पचे बाल होते हैं।

लकड़बग्घा, जो मृत जानवरों का मांस खाता है, हड्डियाँ भी पूरी तरह निगल जाता है। इसलिए इस जानवर का मल आसानी से पहचाना जा सकता है, जो अर्ध-पचे हुए हड्डियों के कठोर, सफेद टुकड़ों के रूप में दिखाई देता है। लकड़बग्घे के पदचिह्नों को उसके आगे और पीछे के पंजों के आकार में बड़े अंतर से पहचाना जा सकता है; आगे के पंजे पीछे के पंजों से काफी बड़े होते हैं।

बाघों की तरह, पैंथर भी चलते समय अपने पंजे अंदर खींच लेते हैं, इसलिए लगभग एक ही आकार के पैंथर और लकड़बग्घे के पदचिह्नों में अंतर यह है कि पैंथर के पदचिह्न का गोला

लकड़बग्घे के पदचिह्न से काफी बड़ा होता है, जबकि पंजे के सिरे बिल्कुल भी दिखाई नहीं देते। लकड़बग्घा अपने पंजे अंदर नहीं खींच पाता, इसलिए वह जमीन पर अपने निशान स्पष्ट रूप से छोड़ देता है।

अतीत में, कुछ शिकारी यह दावा करते थे कि पैंथर और तेंदुआ दो बिल्कुल अलग प्रजातियाँ हैं, जबकि अन्य कहते थे कि वे एक ही हैं। लेकिन आधुनिक युग में यह विवाद समाप्त हो गया है, क्योंकि अब यह स्वीकार कर लिया गया है कि वे वास्तव में एक ही हैं। पर्यावरण और आहार में अंतर के कारण कुछ जानवर दूसरों की तुलना में बहुत बड़े आकार के हो जाते हैं। जंगल में रहने वाला पैंथर, जो शिकार किए गए जानवरों का अधिक पौष्टिक आहार लेता है, आमतौर पर गाँवों के पास रहने वाले पैंथर की तुलना में बहुत बड़ा होता है और उसका फर गहरा और मोटा होता है, जहाँ उसका भोजन कुत्तों और बकरियों तक ही सीमित होता है। इसके अलावा, चट्टानों और पत्थरों के बीच रहने के कारण, उसका फर हल्का होता है और बाल छोटे और मोटे होते हैं। संयोगवश, जंगल में रहने वाले पैंथर का गहरा फर उसे जंगल की घनी वनस्पति में प्रभावी ढंग से छलावरण करने में मदद करता है, जबकि 'गाँव के पैंथर' (जैसा कि उसे कभी-कभी कहा जाता है) का हल्का फर उसे चट्टानों के बीच ढूंढना बहुत मुश्किल बना देता है।

हालांकि, कभी-कभार दोनों ही मामलों में अपवाद देखने को मिलते हैं, और प्रकृति अप्रत्याशित रूप से अपने ही नियम को तोड़ती हुई प्रतीत होती है। मैंने गांवों के पास और घने जंगल से दूर रहने वाले कुछ बहुत बड़े पैंथरों का शिकार किया है, जिनके शरीर पर गहरे, घने बाल थे, और जंगल के भीतर कुछ छोटे पैंथरों का भी शिकार किया है जिनके शरीर पर हल्के रंग के बाल थे।

यही बात बाघों पर भी लागू होती है। जो बाघ मवेशी खाने के आदी हो जाते हैं, वे मोटे और भारी हो जाते हैं, जबकि असली शिकारी बाघ दुबले-पतले और मांसल होते हैं, उनमें बिल्कुल भी चर्बी नहीं होती, क्योंकि जंगली जानवरों का शिकार करने में उन्हें मवेशी खाने वाले बाघों की तुलना में कहीं अधिक मेहनत करनी पड़ती है, जो बिना किसी खास मेहनत के अपना शिकार पकड़ लेते हैं। कठिन व्यायाम से चर्बी कम होती है, न केवल मनुष्यों में, बल्कि बाघों में भी।

दोनों प्रजातियों के नरभक्षी विशिष्ट अपवाद हैं और अप्राकृतिक परिस्थितियों के परिणाम हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है।

पैंथर्स अच्छी तरह से पेड़ पर चढ़ सकते हैं और कभी-कभी बंदरों का पीछा करते हुए या जंगली कुत्तों से बचने के लिए पेड़ों पर चढ़ जाते हैं। बाघ ऐसा नहीं कर सकते, हालांकि मैंने मैसूर चिड़ियाघर में एक ऐसे बाघ को देखा है जिसने काफी ऊँचाई तक चढ़ना सीख लिया था और अपने बाड़े के अंदर एक पेड़ पर उसके लिए विशेष रूप से बनाए गए चबूतरे पर लेट जाता था। यह इस बात का उदाहरण है कि बाघ, मनुष्यों की तरह, एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

तेंदुआ और बाघ दोनों ही बंदरों का शिकार एक अनोखे तरीके से करते हैं। जंगली बंदर बहुत सतर्क होते हैं और अपने प्राकृतिक शत्रु, मांसाहारी जानवरों पर पैनी नजर रखते हैं। इनमें से किसी भी जानवर की आवाज या झलक मिलते ही वे सबसे ऊपरी शाखाओं पर चढ़ जाते हैं, जहां वे सुरक्षित रहते हैं। यह जानते हुए, तेंदुआ और बाघ भयानक गुर्राहट और दहाड़ के साथ उस पेड़ की तलहटी पर हमला कर देते हैं जिस पर बंदर चढ़े होते हैं। ये डरावनी आवाजें बेचारे बंदरों को बुरी तरह डरा देती हैं, और वे अपनी सुरक्षित जगह पर रहने के बजाय अगले पेड़ पर कूदने की कोशिश करते हैं; या, अगर वह पेड़ बहुत दूर होता है, तो वे दूसरे पेड़ पर चढ़ने के इरादे से बहुत ऊंचाई से जमीन पर कूद जाते हैं। इस प्रक्रिया में उनमें से कुछ घायल हो जाते हैं या बेहोश हो जाते हैं, और चालाक शिकारी के आसान शिकार बन जाते हैं।

भारतीय जंगलों में पाए जाने वाले सबसे बुद्धिमान जानवरों में से एक, बल्कि शायद सबसे बुद्धिमान, जंगली कुत्ता है। पुराने समय के शिकारी इस श्रेणी में जंगली हाथी, बाघ और तेंदुआ को स्थान देते रहे हैं, लेकिन यदि आपने जंगली कुत्ते की आदतों का अध्ययन किया है, तो आप उनसे असहमत हो सकते हैं। हिरण का शिकार करते समय, वे अपने साथ 'फ्लैंकर' भेजते हैं, जो शिकार से आगे दौड़ते हैं और बाद में उस पर हमला करते हैं। तीस या उससे अधिक के बड़े झुंड में, ये जानवर निडर शिकारी होते हैं और किसी भी बाघ या तेंदुआ को घेरकर, हमला करके, सचमुच टुकड़े-टुकड़े कर मार डालते हैं, भले ही इस प्रक्रिया में उन्हें कितना भी नुकसान क्यों न उठाना पड़े।

विशेषकर मद्रास की पूर्व प्रेसीडेंसी के चित्तूर जिले के जंगलों में, बाघों ने इस मामले में काफी बदनामी हासिल की है, और मुझे कम से कम तीन ऐसे मामले पता हैं जहाँ भयंकर लड़ाई हुई, जिसके परिणामस्वरूप बाघ के टुकड़े-टुकड़े हो गए, लेकिन इससे पहले उसने आधा दर्जन कुत्तों को मार डाला था और कई अन्य को घायल कर दिया था। मैंने कभी किसी पैंथर को इस तरह मरते हुए नहीं देखा, क्योंकि जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, वे पेड़ों पर चढ़कर भागने में सक्षम होते हैं।

बाघ को पानी बहुत पसंद होता है और वह बड़ी-बड़ी नदियों को आसानी से तैरकर पार कर लेता है। खासकर गर्मी के मौसम में, दोपहर के समय वह किसी छायादार नदी या तालाब के किनारे झपकी लेना बहुत पसंद करता है, कभी-कभी तो पानी में ही लेट जाता है। वह बरसात के दिनों में भी बेफिक्र होकर शिकार करता है, और अक्सर तेज बारिश के बाद अगली सुबह उसके पदचिह्न दिखाई देते हैं। लेकिन पैंथर के साथ ऐसा नहीं है। हर मायने में एक असली बिल्ली की तरह, उसे पानी से नफरत है, बारिश से घृणा है, और वह तैरना नहीं जानता, हालांकि आपातकालीन स्थिति में, जैसे जंगली कुत्तों के झुंड से बचने के लिए, वह तैर सकता है।

बाघ मूल रूप से मंगोलिया के ठंडे क्षेत्रों से भारत में आया था। इसीलिए उसे गर्मी से बचने के लिए ठंडी जगहें पसंद हैं। तेंदुआ भारत और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है।

बाघ कभी-कभार ही सांभर की आवाज़ की नकल करते हैं, जाहिर तौर पर उन्हें आकर्षित करने और घात लगाकर हमला करने के लिए। ऐसी नकल बहुत कम ही सुनने को मिलती है और केवल उन जंगलों में जहाँ हिरण बहुतायत में पाए जाते हैं। हालाँकि, पैंथर इस प्रथा का पालन नहीं करते, बल्कि वे पूरी तरह से चुपचाप शिकार का पीछा करने, ज़मीन पर लेटकर बेहद छोटी जगहों में छिपने की क्षमता और अंत में अपने शिकार पर तेज़ी से झपटने पर निर्भर रहते हैं।

पुराने ज़माने के शिकारी अक्सर कहते थे कि बाघ एक 'सज्जन' होता है, जबकि पैंथर एक 'उछल-कूद'। मुझे लगता है कि ये कहावतें उन अनुभवी और मंझे हुए शिकारियों के अनुभवों से लोकप्रिय हुई हैं, जिन्होंने दोनों प्रजातियों के घायल जानवरों का पीछा करते हुए, अक्सर मजल-लोडर जैसी पुरानी बंदूकों से उन्हें सबक सिखाया है। वाकई, उन्हें सलाम! उन दिनों के फैशन के हिसाब से कम हथियारों और बेढंगे कपड़ों में, भारी बूट और मोटी टोपी पहने हुए, वे निडर होकर घायल जानवर का पीछा करते थे। आज के शिकारी से कितना अलग! जो रात में कार की सुरक्षित जगह से गोली चलाता है, जिसकी रोशनी बेचारे जानवर को चकाचौंध कर देती है और उसे बचने का ज़रा भी मौका नहीं देती!

एक घायल बाघ आमतौर पर अपने पीछा करने वाले के पास आने पर गुर्राकर अपनी मौजूदगी का पता दे देता है, लेकिन एक घायल पैंथर अक्सर चुपचाप और छुपकर बैठा रहता है और शिकारी के गुजर जाने के बाद उस पर पीछे से हमला करता है। इसलिए पैंथर को 'बदमाश' कहने वालों की बात में कुछ सच्चाई नजर आती है। दरअसल, बाघ आमतौर पर कहीं ज्यादा

बहादुर और निश्चित रूप से कहीं ज्यादा ताकतवर होता है, और जब वह मारने के इरादे से हमला करता है तो वह अपना काम पूरी तरह से अंजाम देता है। हालांकि, एक पैंथर—जब तक कि वह आदमखोर न हो—अपने पीछा करने वाले को बुरी तरह घायल कर देता है और फिर भाग जाता है, बजाय उसे सीधे मारने के।

पैंथर अपने शिकार की हड्डियों को कुतरते हैं, भले ही वे बहुत सड़ चुकी हों। आमतौर पर, बाघ दूसरे दिन के बाद अपने शिकार के पास नहीं जाते। एक तो वे बहुत अधिक खाते हैं और दो-तीन बार के भोजन के बाद उनका सारा खाना खत्म हो जाता है। दूसरा कारण यह है कि वे साफ-सफाई से भोजन करते हैं। सड़ा हुआ मांस दोनों प्रजातियों के पंजों के नीचे फंस जाता है। इससे खतरनाक कीटाणु पनपते हैं और इनके काटने से ज़्यादा इनके खरोंच ही रक्त विषाक्तता का कारण बनते हैं। बाघ अपने पंजों के नीचे फंसी इस गंदगी के प्रति बहुत सजग रहते हैं और कुछ पेड़ों की मुलायम छाल पर खरोंच कर अपने पंजों को साफ करते हैं और उन्हें तेज भी करते हैं। पैंथर ऐसा बहुत कम करते हैं, इसलिए उनके पंजे आमतौर पर ज़्यादा संक्रमित होते हैं। छह या सात फीट की ऊंचाई पर ऐसे पंजे के निशान वाले पेड़, जहां बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपने अगले पंजों के पंजे साफ करता है, शिकारी के लिए अपने शिकार की उपस्थिति का एक शुभ संकेत होता है।

अन्य मायनों में भी, बाघ कहीं अधिक साफ-सुथरा भोजन करता है। जहाँ एक तेंदुआ अपने शिकार के पेट की तरफ से छेद करके अपना भोजन शुरू करता है, और जल्द ही पेट, आंतें, अपशिष्ट पदार्थ आदि सब कुछ उसके शिकार के मांस में मिल जाते हैं, वहीं बाघ गुदा के पास एक छेद बनाता है जिसमें वह अपना पंजा डालता है और आंतों और पेट को बाहर निकालता है, उन्हें लगभग दस फीट दूर घसीटता है और फिर साफ भोजन करना शुरू करता है। इस प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए, वह अक्सर जानवर की पूंछ को जड़ के पास से काटकर अलग कर देता है। जंगलों में पाए जाने वाले बड़े तेंदुआ कभी-कभी ऐसा ही करते हैं, लेकिन सामान्य और छोटे जानवर कभी नहीं करते, जो जल्द ही खुद को ऐसे भोजन में मिला लेते हैं जिसमें आंतें और मल सब कुछ शामिल होता है।

एक बाघिन और उसके शावकों की गुफा या मांद, पैंथर के परिवार द्वारा बसे हुए स्थान की तुलना में बहुत साफ-सुथरी रखी जाती है, और स्पष्ट रूप से हड्डियों और अन्य अपशिष्ट पदार्थों से मुक्त प्रतीत होती है जो लगभग हमेशा पैंथर के रहने वाले स्थानों पर मौजूद होते हैं।

प्रजनन के मौसम को छोड़कर, बाघ जंगल में अपनी उपस्थिति का संकेत पैंथर की तुलना में कहीं अधिक देते हैं। भारत के जंगलों में रहने वाली आदिवासी जनजातियाँ इस बात की पुष्टि करेंगी और आपको शिकार के दौरान बाघों द्वारा आमतौर पर अपनाए जाने वाले रास्तों की दिशा बताएँगी। उनकी मधुर, गहरी और धीमी कराह, जो उस अविस्मरणीय 'ऊ-ऊ-ओंग' की आवाज़ में समाप्त होती है, जो विशाल वन वृक्षों के नीचे घोर अंधेरे में या चमकीली चाँदनी में घाटियों और घने जंगलों में गूंजती है, जंगल प्रेमी के कानों को संगीत की तरह लगती है। पैंथर की कर्कश लेकिन कम दूर तक सुनाई देने वाली आवाज़, जो लकड़ी काटने वाले आदमी की आवाज़ से काफी मिलती-जुलती है, कभी-कभी जंगल की रात के सन्नाटे को भेदती है, और बहुत कम सुनाई देती है।

बाघ की एक और अनोखी आदत है शिकार के दौरान एक खास रास्ते पर चलना। यह रास्ता मीलों लंबा, शायद सौ मील तक भी हो सकता है; लेकिन यह हमेशा एक ही मार्ग पर चलता है; शायद किसी सूखे नाले के तल पर, किसी नदी या नाले के किनारे, किसी जंगल वाली घाटी से होते हुए या किसी पहाड़ी की ढलान पर। पसंदीदा रास्ते पर आपको शिकार करते हुए बाघ के

पदचिह्न धूल में छपे हुए मिल सकते हैं; और एक बार उन्हें ढूंढ लेने पर, यकीन मानिए कि वे फिर से दिखाई देंगे। कुछ दिन बीत सकते हैं, जो हफ्तों, एक महीने या उससे भी अधिक समय तक बढ़ सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसने कितना रास्ता तय किया है; लेकिन आप लगभग निश्चित हो सकते हैं कि बाघ उस रास्ते से फिर से गुजरेगा। वह शायद ही कभी उसी रास्ते से लौटता है, बल्कि एक विशाल चक्कर लगाता है, उसी जगह पर वापस आता है जहां आपको उसके पदचिह्न मिले थे और फिर उसी दिशा में आगे बढ़ जाता है।

अपने क्षेत्र में गश्त के दौरान, यदि वह किसी जानवर को मारने में सफल होता है, तो बाघ उसे पूरी तरह से नष्ट करने तक कुछ दिनों के लिए आसपास ही रहेगा, जिसके बाद वह अपनी यात्रा फिर से शुरू कर देगा।

आदमखोर जानवर की गतिविधियों का अनुमान लगाते समय उसकी इस विशिष्ट आदत को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लगभग कुछ दिनों के भीतर उसी स्थान पर लौट आता है, जो उसके क्षेत्र के विस्तार पर निर्भर करता है। मानचित्र पर उसके द्वारा मारे गए जानवरों की संख्या और उनके मारे जाने की तारीखें अंकित करके और फिर कुछ सरल गणना करके आप दिनों की संख्या और उसके क्षेत्र की सीमा का अनुमान लगा सकते हैं।

पैंथर किसी तय पैटर्न का पालन नहीं करता, बल्कि हर जगह मौजूद रहता है। 'दुर्लभ पिम्परनेल' की खोज की तरह, कहीं भी प्रकट होने और उतनी ही अचानक गायब हो जाने की उसकी आदत के कारण, आदमखोर पैंथर की गतिविधियों का अनुमान लगाना लगभग असंभव है। वह अप्रत्याशित रूप से प्रकट होकर अपने शिकार को पकड़ लेता है, और वह भी ऐसे समय और स्थान पर जो सबसे अनुभवी और चतुर शिकारी भी नहीं बता पाते।

इस अध्याय में मैंने आपको 'स्थिर शिकार' के कुछ संकेत देने का प्रयास किया है, साथ ही बड़े मांसाहारी जानवरों की कुछ आदतों और विशेषताओं के बारे में भी बताया है। मैंने जानबूझकर ऐसे मौकों पर मेरे द्वारा मारे गए जानवरों के उदाहरणों का वर्णन नहीं किया है, क्योंकि मुझे लगता है कि उनमें आपकी रुचि नहीं होगी। आखिरकार, खेल का मज़ा तो इन जानवरों के खिलाफ अपने कौशल, जंगल के ज्ञान, सहनशक्ति और चतुराई का प्रदर्शन करने और उन्हें उन्हीं के खेल में हराने में है, न कि केवल उन्हें मारने में। वास्तव में, मैं आपको दृढ़ता से सलाह दूंगा कि आप अपने साथ एक कैमरा रखें, और मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इन खूबसूरत जीवों की तस्वीरें लेने तक ही सीमित रहें, न कि उन्हें गोली मारने में। आपात स्थिति में सुरक्षा के लिए अपनी राइफल अवश्य साथ रखें; लेकिन यदि आप प्रलोभन का विरोध कर सकते हैं, तो अनावश्यक हत्या से बचने का प्रयास करें।

हमेशा याद रखें कि एक अच्छी, चतुराई से खींची गई तस्वीर, आपके ड्राइंग रूम की दीवार पर टंगी या फर्श पर सजी किसी भी सजी हुई ट्रॉफी से कहीं अधिक सराहनीय और प्रशंसनीय उपलब्धि है। पहली तस्वीर में आप जानवर को उसकी जीवंत सुंदरता और शक्ति के साथ जितनी बार चाहें देख सकते हैं; जबकि एक सजी हुई ट्रॉफी, किसी टूटे हुए अंडे के छिलके या रेशम के खोल की तरह, कभी खूबसूरत रहे जानवर का मात्र खोखला ढांचा है जो समय और कीड़ों द्वारा धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा।

दो

येल्लागिरी पहाड़ियों का आदमखोर पैंथर

दोपहर का समय था। उष्णकटिबंधीय सूरज आसमान में तेज़ी से चमक रहा था, मानो आग का गोला हो। जंगल उसकी चिलचिलाती गर्मी में शांत और स्थिर पड़ा था। सुबह से चहचहाते पक्षी और बंदर भी अब शांत थे, मानो सुस्त हवा में सो गए हों।

घने वन वृक्षों की गहरी छायाओं के नीचे सुनहरी धूप से कुछ राहत मिल रही थी, हालांकि उस तापमान में छायाएँ भी कांप रही थीं। हवा के जरा से भी हिलने से जंगल की ज़मीन पर बिछी घनी पत्तियों में कोई हलचल नहीं हुई, मानो प्रकृति ने पीले-भूरे रंग की एक सुंदर चादर बिछा रखी हो। मानसून शुरू होते ही, यही सूखी पत्तियाँ सड़ कर खाद बन जाएँगी, जो समय के साथ-साथ जंगल के अन्य वृक्षों को पोषण देंगी, उन विशाल वन वृक्षों के बहुत बाद भी जिनसे ये गिरी थीं।

घने सन्नाटे को कभी-कभी जंगल में चरने के लिए लाए गए मवेशियों के झुंड के गले में लटकी लकड़ी की घंटियों की खोखली आवाज़ से भंग किया जाता था। इन लकड़ी की घंटियों के दो उद्देश्य होते हैं। पहला और मुख्य उद्देश्य है चरवाहों को घनी झाड़ियों में उन जानवरों का पता लगाने में मदद करना जिनके गले में ये घंटियाँ लटकी हैं। दूसरा उद्देश्य है किसी भी मांसाहारी जानवर को डराना जो पहनने वालों पर हमला करने के लिए तैयार हो। अक्सर दूसरा उद्देश्य सफलतापूर्वक पूरा हो जाता है, क्योंकि बाघ और तेंदुआ शंकालु जानवर होते हैं और ऐसे शिकार पर हमला करने में हिचकिचाते हैं जिसके गले में अजीब सी आवाज़ करने वाली लकड़ी की कोई वस्तु लटकी हो। लेकिन कभी-कभी यह चाल नाकाम भी हो जाती है, जो उस विशेष बाघ या तेंदुआ के स्वभाव पर और उससे भी अधिक उस समय उसकी भूख पर निर्भर करता है।

उस खास दोपहर को एक ऐसा ही अपवाद देखने को मिला। एक मोटा-ताज़ा, भूरा साँप झुंड के किनारे पर चर रहा था, बरगद के पेड़ों की छाँव में घास के बड़े-बड़े टुकड़े चबा रहा था। हर बार जब वह ज़मीन से घास का टुकड़ा तोड़ता, तो अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाकर आसपास के जंगल को निहारता से देखता, जबकि उसके जबड़े लगातार घास चबाते रहते। मानो कुछ भी हलचल नहीं थी और भूरा साँप अपने आप में और दुनिया में पूरी तरह शांत था।

अगर उसने पीछे मुड़कर देखा होता, तो वह इतना आत्मसंतुष्ट नहीं होता। ज़रा भी सरसराहट नहीं हुई, घास का एक गुच्छा हटा और दो द्वेषपूर्ण हरी आँखें दिखाई दीं जो मोटे भूरे बैल को तीव्र लालसा से घूर रही थीं। ये आँखें एक विशाल जंगली तेंदुआ के नर की थीं, और उसका भारी शरीर, जो लगभग एक बाघिन के बराबर था, ज़मीन से सटा हुआ था, उसके रोसेट का रंग घास के विभिन्न रंगों में स्वाभाविक रूप से घुलमिल गया था।

धीरे-धीरे और बिना आवाज़ किए, पैंथर ने अपने पिछले पैरों को खींचकर बैठने की मुद्रा बना ली। उसकी मांसपेशियां तनाव से कांप रही थीं। उसका पूरा शरीर धीरे-धीरे हिल रहा था, ताकि वह आने वाले घातक हमले के लिए संतुलन बना सके।

फिर अचानक, मानो आसमान से बिजली गिरी हो, वह हमला हुआ। पीले और काले धब्बों की एक लकीर की तरह, पैंथर का भारी शरीर हवा में उछला और इससे पहले कि भूरा बैल कुछ समझ पाता, उसके क्रूर पीले दांत उसकी गर्दन में धंस गए। एक पल के लिए बैल ने अपने अगले

पैरों को फैलाकर संतुलन बनाए रखने की कोशिश की, चर रहे झुंड के बीच दौड़ने की उम्मीद में। लेकिन सांस रुक जाने और फटे गले से खून बहने के कारण, उसका प्रतिरोध क्षणिक ही रहा। वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा, अपने चारों पैरों से हमलावर को लात मारकर दूर भगाने की कोशिश कर रहा था। पैंथर ने फुर्ती से अपने शरीर को खुरों की पहुँच से दूर कर लिया, लेकिन बैल के गले पर अपनी निर्दयी पकड़ नहीं छोड़ी। घायल जानवर के खुले मुंह से एक घुरघुराहट भरी आवाज निकली, उसके पैर पहले की तरह तेजी से नहीं हिल रहे थे, और फिर उसकी आतंकित आंखें धीरे-धीरे बेजान और भावहीन हो गईं क्योंकि हमले के कुछ ही मिनटों के भीतर उसकी मृत्यु आ गई।

इस प्रकार चरवाहे नाथन ने अपने सबसे अच्छे पशुओं में से एक को खो दिया, क्योंकि बाकी झुंड, मरते हुए बैल की आवाज से घबराकर, सुरक्षा के लिए जंगल से होते हुए उस वन-सीमा की ओर भागा जो अंततः कुछ मील दूर स्थित गांव तक जाती थी।

लेकिन यह नाथन का एकमात्र नुकसान नहीं था। अगले तीन महीनों में उसने अपने चार और मवेशी खो दिए, जबकि उसी गाँव में रहने वाले अन्य दो चरवाहों ने भी दो-दो मवेशी खो दिए। दूसरी ओर, इन हमलों के लिए ज़िम्मेदार पैंथर ने यह निष्कर्ष निकाला, और निस्संदेह काफी हद तक सही भी, कि उसे एक ऐसा इलाका मिल गया है जहाँ भोजन प्रचुर मात्रा में और आसानी से उपलब्ध है। उसने जंगल में शिकार के लिए जाने की बजाय पास में ही रहने का फैसला किया, क्योंकि वैसे भी जंगल में शिकार करना कहीं अधिक कठिन था।

फिर मानसून आया और भारी बारिश के साथ चारों ओर चारागाह उग आया, जिससे मवेशियों के झुंड को चराने के लिए जंगल में ले जाना अनावश्यक हो गया। गाँव के पास और आसपास के कुछ खेतों में घास उग आई, और मवेशियों के झुंड को गाँव के करीब ही रखा जाने लगा जहाँ उनकी बेहतर निगरानी की जा सकती थी।

यह बदलाव जाहिर तौर पर पैंथर को पसंद नहीं आया, और वह और भी साहसी हो गया, क्योंकि परिस्थितियों के चलते उसे नए चरागाहों में झुंडों का पीछा करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

गाँव के आसपास जंगल कम घना हो गया था, जबकि खेत पूरी तरह से वृक्षहीन थे। इससे पैंथर का आना और भी मुश्किल हो गया, और अक्सर चरवाहे उसे अपने जानवरों की ओर रेंगते हुए देख लेते थे। ऐसे मौकों पर वे चिल्लाते, उस पर पत्थर फेंकते और अपने डंडे लहराते। इन हरकतों से वह डरकर भाग जाता था।

फिर उसकी भूख बढ़ गई, उसने पाया कि उसे या तो गांव के झुंडों को शिकार के रूप में पूरी तरह से छोड़ देना चाहिए और जंगलों के जंगली जानवरों का पीछा करने के लिए वापस लौटना चाहिए, या चरवाहों के प्रति अधिक आक्रामक नीति अपनानी चाहिए।

पैंथर ने बाद वाली नीति अपनाने का फैसला किया।

एक शाम वह जितना संभव हो सका, छुपकर आगे बढ़ा और फिर खुलेआम पास की गाय की ओर झपटा। पास ही खड़े दो चरवाहों ने उसे आते देखा। वे चिल्लाए और लाठियाँ लहराईं, लेकिन उसका हमला तब तक नहीं रुका जब तक उसने अपने नुकीले दांत गाय के गले में नहीं गाड़ दिए। गाय के मरने में कुछ मिनट लगे और चरवाहे वहीं स्तब्ध खड़े रहे। फिर वे उस चित्तीदार हमलावर पर पत्थर और गालियाँ फेंकने लगे, जबकि वह अपने शिकार के अभी भी कांपते हुए शव पर पड़ा था।

जब पत्थरों की गड़गड़ाहट हुई, तो पैंथर ने गाय पर अपनी पकड़ छोड़ दी और खून से लथपथ थूथन से आदमियों पर भयानक गुर्राया, उसका चेहरा विकृत हो गया और उसकी आँखें

घृणा से धधक रही थीं। उस भयावह चेहरे और रोंगटे खड़े कर देने वाली गुर्राहट को देखकर चरवाहे भाग गए।

हालात बिगड़ने पर ग्रामीणों ने स्थानीय वनपाल से मदद करने का अनुरोध किया; अन्यथा किसी और से सहायता लेने की बात कही। वनपाल, जिसका नाम रामू था, खुद भी शिकार का शौकीन था और उसके पास एक सिंगल बैरल वाली बारह बोर की ब्रीच-लोडिंग बंदूक थी। यद्यपि सरकार के प्रतिनिधि के रूप में शिकारियों पर लगाम लगाना उसका कर्तव्य था, फिर भी वह पानी के गड्ढों और नमक के टीलों पर थोड़ी-बहुत अवैध शिकार करने का आदी था। उसका शिकार विभिन्न प्रकार के हिरण होते थे जो इन स्थानों पर आते थे, या कभी-कभार कोई जंगली सूअर। जहाँ तक संभव होता, वह अपने अधीनस्थों, वन रक्षकों को इन गुप्त गतिविधियों के बारे में नहीं बताता था, लेकिन जब यह संभव नहीं होता था, तो वह अपने द्वारा मारे गए जानवर की एक स्वादिष्ट टांग उन्हें देकर और रेंज अधिकारी को इसके बारे में एक शब्द भी बताने पर उन्हें गंभीर धमकी देकर रक्षकों की चुप्पी सुनिश्चित करता था। इन सभी सावधानियों के बावजूद, रेंज अधिकारी को रामू के इस शौक के बारे में पता चल ही गया था। वह एक कर्तव्यनिष्ठ युवा अधिकारी था, जो वन्यजीव संरक्षण की सरकारी नीति का पालन करने के लिए उत्सुक था, और उसने अपने अधीनस्थ को रंगे हाथों पकड़ने की कोशिश की। लेकिन वह अब तक अपने आधिकारिक रिकॉर्ड को बेदाग रखने में कामयाब रहा था। शायद वह बहुत चालाक था, या गार्डों को दी गई उसकी धमकियाँ इतनी खौफनाक थीं कि रेंज ऑफिसर (आर.ओ.) अभी तक सफल नहीं हो पाया था।

अब तक रामू ने किसी भी बड़े मांसाहारी जानवर पर अपने हथियार का इस्तेमाल नहीं किया था, और जब ग्रामीणों ने पैंथर को मारने में मदद के लिए उससे संपर्क किया, तो वह इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए बहुत उत्सुक नहीं था। लेकिन ग्रामीणों ने अपना अनुरोध जारी रखा, और जल्द ही रामू को यह स्पष्ट हो गया कि उसकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी है, क्योंकि वह गांव आने के लिए बहुत व्यस्त होने या गोला-बारूद खत्म हो जाने जैसे अस्पष्ट बहाने बनाकर अनिश्चित काल तक देरी नहीं कर सकता था।

इसलिए रामू एक सुबह अपने हथियार के साथ गांव पहुंचा। उसे संकट का संभावित रक्षक मानकर उसका स्वागत किया गया और उसने तुरंत इस बात का पूरा फायदा उठाते हुए ग्रामीणों द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट भोजन किया। एक गिलास कॉफी पीने के बाद, उसने संतुष्टि से डकार ली और घोषणा की कि वह अपने आने वाले काम को निपटाने से पहले एक घंटे की झपकी लेगा।

रामू कुछ घंटों बाद जागा, तब तक दोपहर हो चुकी थी। उसने मुखिया से चारे के रूप में एक बकरी देने की मांग की। ऐसा किया गया और रामू पांच-छह ग्रामीणों के साथ जंगल की ओर चल पड़ा।

उस क्षेत्र के प्रभारी वनपाल होने के नाते, रामू उस इलाके से भली-भांति परिचित थे और उन्होंने अपने मचान के लिए पेड़ का चुनाव भी कर लिया था। यह एक विशाल बरगद का पेड़ था, जो गाँव से आने वाले रास्ते और जंगल की आग बुझाने वाली रेखा के मिलन बिंदु पर सुविधाजनक रूप से उग रहा था। संयोगवश, एक नाला भी उसी स्थान के पास आग बुझाने वाली रेखा को काटता था। पैंथर इन तीनों रास्तों से होकर गुजरता था, जैसा कि उसके बार-बार पड़ने वाले पदचिह्नों से स्पष्ट था, इसलिए रामू का चुनाव वास्तव में बुद्धिमानी भरा था; क्योंकि यदि पैंथर आग बुझाने वाली रेखा के साथ-साथ चलता या नाले से ऊपर आता, तो रामू को उसकी बकरी अवश्य दिख जाती, जबकि वह स्वयं मचान में बैठकर इन दोनों रास्तों के ऊपर और नीचे,

साथ ही गाँव की ओर जाने वाले रास्ते के कुछ हिस्से को भी देख सकता था।

फिर, रामू ने अपने साथ आए ग्रामीणों को उस पेड़ पर जमीन से लगभग बीस फीट ऊपर एक मचान बनाने का निर्देश दिया, और स्वयं छिपने की कला में निपुण होने के कारण, उसने इसे पत्तियों से चतुराई से छिपा दिया, ताकि यह पैंथर की नजर में बिल्कुल भी न आए।

उस शाम चार बज चुके थे, तब जाकर काम पूरा हुआ। रामू मचान पर चढ़ा और फिर बकरी को रस्सी से उसके गले में बांधकर जमीन में गाड़े गए एक खंभे से जोड़ दिया गया।

जब ग्रामीण चले गए, तो बकरी ने खुद को अकेला पाकर गाँव के रास्ते की ओर देखा और जोर-जोर से मिमियाने लगी। परिस्थितियाँ बिल्कुल अनुकूल थीं, और पैंथर ने बकरी की आवाज सुनी और लगभग छह बजे, जब तक रोशनी अच्छी थी, उस पर झपट्टा मारा। रामू ने अपनी बंदूक में एल.जी. कारतूस भर रखा था, जिसे उसने पैंथर पर तब दागा जब पैंथर ने बकरी को उसके गले से पकड़कर जमीन पर गिरा रखा था। एक ज़ोरदार खांसी की आवाज आई; और पैंथर उछलकर झाड़ियों में भाग गया। बकरी, जो पहले से ही दम घुटने और गले में लगे घाव से मर रही थी, एक छर्रा उसके कान से होते हुए मस्तिष्क में जा लगा और उसकी तुरंत मौत हो गई।

रामू ने कुछ देर इंतजार किया, फिर बरगद के पेड़ से नीचे उतरा और जल्दी से गांव की ओर लौट गया, जहां उसने लोगों से कहा कि उसे पूरा यकीन है कि उसने पैंथर को गोली मार दी है और उसे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे उसे अगली सुबह मृत पाएंगे।

सुबह होते ही पुरुषों का एक बड़ा दल इकट्ठा हुआ और रामू के नेतृत्व में बरगद के पेड़ के पास गया। वहाँ उन्होंने देखा कि रात के दौरान एक लकड़बग्घे ने बकरी को पूरी तरह खा लिया था। रामू ने उस दिशा की ओर इशारा किया जिधर तेंदुआ कूदा था और सभी पुरुष दल ने मिलकर उसकी तलाश शुरू कर दी। कुछ ही देर में उन्हें झाड़ियों और लैंटाना के पत्तों पर खून के निशान मिले, जिससे पता चला कि उसने वास्तव में तेंदुआ को निशाना बनाया था। लेकिन तेंदुआ का कोई निशान नहीं मिला, हालांकि दल ने एक मील से अधिक दूर तक निशान का पीछा किया, लेकिन अंत में वह निशान गायब हो गया।

इसके बाद दो महीने तक मवेशियों या बकरियों पर कोई नया हमला दर्ज नहीं किया गया, और रामू सहित सभी को यकीन था कि पैंथर किसी झाड़ी में चला गया होगा और मर गया होगा।

फिर एक शाम, लगभग 16 साल का एक लड़का उसी जंगल के रास्ते गाँव लौट रहा था। वह अकेला था। एक मोड़ पर आते ही उसने लगभग बीस गज की दूरी पर एक पैंथर को अपने पिछले पैरों पर बैठा हुआ देखा, जो सीधे उसकी ओर देख रहा था। वह वहीं रुक गया, यह सोचकर कि पैंथर आम पैंथरों की तरह भाग जाएगा। लेकिन इस पैंथर ने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय, उसने अपनी स्थिति बदल ली और दुबक कर बैठ गया और भयंकर रूप से गुर्राने लगा।

लड़का मुड़कर उसी रास्ते भागा जिससे वह आया था, और पैंथर उसका पीछा करने लगा। सौभाग्य से, जिस जगह उसने लड़के को पकड़ा, वहाँ जंगल की सीमा के पार सड़ी हुई लकड़ी का एक टुकड़ा पड़ा था। जैसे ही पैंथर उसकी पीठ पर कूदा और गर्दन के पास उसके कंधे को काट लिया, वजन से लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा, और गिरते समय उसने सड़ी हुई लकड़ी का टुकड़ा देखा। भय और हताशा ने उसके हाथों को ताकत दी और उसके दिमाग को असाधारण तेज़ी दी। लकड़ी को पकड़कर, वह एक तरफ लुढ़का और उसका सिरा पैंथर के मुंह में ठूंस दिया। इससे पैंथर ने अपनी पकड़ छोड़ दी, लेकिन इससे पहले कि वह छोड़ता, उसने अपने पंजों से लड़के की बांह और जांघों को बुरी तरह खरोंच दिया था। अपने पैरों पर उछलकर, लड़के ने फिर से उस पर हमला किया; अपने शिकार के इस अप्रत्याशित प्रतिशोध से पैंथर का हौसला टूट गया

और वह झाड़ियों में कूद गया। अभी भी उस लकड़ी को पकड़े हुए जिसने उसकी जान बचाई थी, और सीने, पीठ, बांहों और पैरों से खून बह रहा था, लड़का लड़खड़ाते हुए गांव की ओर भागा।

यह किसी इंसान पर हुआ पहला हमला था। इसके लगभग तीन हफ्ते बाद दूसरा हमला हुआ, और इस बार पैंथर भागा नहीं। हुआ यूं कि एक बकरी चराने वाला अपने जानवरों के साथ लौट रहा था, तभी एक पैंथर ने उन पर हमला कर दिया और एक बकरी को पकड़ लिया। चरवाहा गरीब था और उसके सारे धन का प्रतीक उसका झुंड था। इसलिए उसने अपनी बकरी को बचाने की कोशिश की और पैंथर पर चिल्लाया, जो उसकी ओर दौड़ रहा था और अपनी लाठी घुमा रहा था। यह बहादुरी भरा काम था, लेकिन मूर्खतापूर्ण भी, क्योंकि उसे पता था कि आस-पास ही एक पैंथर है जिसने कुछ देर पहले बिना किसी उकसावे के एक इंसान पर हमला किया था। उसे अपनी इस मूर्खतापूर्ण बहादुरी की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी, क्योंकि पैंथर ने बकरी को छोड़कर उस पर झपट्टा मारा और अपने जबड़े से उसका गला जकड़ लिया।

बकरियां गांव की ओर वापस भाग गईं। जब उन्होंने देखा कि उनके साथ कोई चरवाहा नहीं लौट रहा है, तो कुछ ग्रामीणों को आश्चर्य हुआ कि क्या हुआ होगा, लेकिन उन्होंने फिलहाल इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। बाद में पता चला कि वह चरवाहा अकेला था और उसका कोई रिश्तेदार नहीं था, इसलिए लगभग एक घंटा बीत गया और शाम होने लगी, तब जाकर लोगों ने उसकी अनुपस्थिति को एक तथ्य के रूप में स्वीकार किया और यह स्पष्ट हुआ कि उसके साथ कुछ हुआ है। तब तक बहुत देर हो चुकी थी और कुछ नहीं किया जा सकता था।

अगली सुबह लगभग तीस लोगों का एक दल लाठियों और डंडों से लैस होकर गाँव से निकला और बकरी चराने वाले को खोजने की कोशिश करने लगा। वे गाँव से जंगल की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़े। पिछली शाम गाँव लौटते समय बकरियों के झुंड के खुरों के निशान रास्ते पर साफ़ दिखाई दे रहे थे। वे थोड़ा और आगे बढ़े और वहाँ उन्हें वह जगह मिली जहाँ पैंथर ने हमला किया था। धूल भरी ज़मीन पर उस विशाल चित्तीदार बिल्ली के पैरों के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे। पैंथर द्वारा अपने शिकार को घसीटकर ले जाने का एक स्पष्ट निशान भी था। जगह-जगह पर आदमी के गले से खून की कुछ बूँदें रिसकर ज़मीन पर गिरी थीं। लेकिन रास्ते से दूर की ज़मीन धूप में सूखकर सख्त हो गई थी और खून सोख चुकी थी, इसलिए उसे ढूँढ़ना मुश्किल था, हालाँकि घसीटने का निशान बिल्कुल साफ़ था।

पैंथर ने अपने शिकार को उस रास्ते से हटा दिया था जिस पर वह आदमी अपनी बकरियाँ चरा रहा था, और शव को घसीटकर जंगल में ले गया था। लेकिन वह अपने शिकार करने की जगह से ज़्यादा दूर नहीं गया था, और लगभग सौ गज की दूरी पर ही ग्रामीणों के एक समूह ने शिकार का शव ढूंढ लिया। छाती और एक जांघ का छोटा सा हिस्सा खाया जा चुका था। इस प्रकार येल्लागिरिस के आदमखोर पैंथर का जन्म हुआ।

येल्लागिरि पर्वतमाला दक्षिणी रेलवे के जलारपेट जंक्शन रेलवे स्टेशन के ठीक पूर्व में स्थित अर्धचंद्राकार पहाड़ियों का एक समूह है। अर्धचंद्राकार पर्वतमाला का खुला भाग जंक्शन से दूर की ओर है, जबकि इसका शीर्ष, स्टेशन से लगभग दो मील की दूरी पर, समुद्र तल से लगभग तीन हजार फीट की ऊंचाई पर अचानक ऊपर उठता है। एक बहुत ही ऊबड़-खाबड़, टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता इस खड़ी ढलान पर ऊपर की ओर जाता है, और कई जगहों पर चट्टानों को चढ़कर ऊपर जाना पड़ता है।

कई साल पहले—दरअसल 1941 में—मैंने इस पहाड़ी की चोटी पर एक छोटा सा खेत खरीदा था। मेरा इरादा इस खेत को, जो बैंगलोर से लगभग पचानवे मील दूर है, सप्ताहांत विश्राम स्थल के रूप में रखने का था, लेकिन मुझे नियमित रूप से वहां जाने का समय नहीं मिल पाता

था। परिणामस्वरूप, खुली ज़मीन पर तेज़ी से बढ़ने वाली लैंटाना झाड़ी का अतिक्रमण होने लगा था।

मैंने लैंटाना को हटाने के काम की निगरानी करने के लिए लगभग तीन दिनों के लिए इस जगह पर आने का फैसला किया था, और जब मैं वहाँ पहुँचा तो संयोग से बकरी चराने वाले की मृत्यु के कुछ दिन बाद का समय था। काम के लिए मैंने जिन कुलियों को रखा था, उन्होंने मुझे उस पैंथर के बारे में बताया, जिसके बारे में किसी भी अखबार में कोई खबर नहीं छपी थी। उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि वह अभी भी गाँव के आसपास मंडरा रहा है, क्योंकि उन्होंने ठीक एक दिन पहले ही उसके पदचिह्न फिर से देखे थे।

यह खबर मुझे दिलचस्प लगी और मैंने सोचा कि क्यों न उस जानवर को मारने की कोशिश की जाए। मैं अपनी दोनों राइफलें साथ नहीं लाया था, सिर्फ अपनी बारह बोर की शॉटगन लाया था, क्योंकि येल्लागिरिस में जंगली मुर्गे बहुतायत में पाए जाते हैं और जितनी बार भी मैं वहाँ गया था, हर बार खाने के लिए दो-तीन मुर्गे मार गिराए थे। इसके अलावा, इसी उद्देश्य से मैं अपने साथ आपात स्थिति के लिए सिर्फ दो एल.जी. कारतूस लाया था, बाकी नंबर छह के कारतूस जंगली मुर्गों के लिए थे। इसलिए मुझे पैंथर को सिर्फ उन्हीं दो एल.जी. कारतूसों से मारना था।

दोपहर के करीब मैंने लैंटाना पर काम रोक दिया और मजदूरों के साथ इलाके का जायजा लेने वापस चला गया। स्थिति वैसी ही थी जैसा मैंने अनुमान लगाया था। जंगल एक संकरी पट्टी में बदल गया था जिसमें लैंटाना उगी हुई थी और वह पट्टी गांव की सीमा से लगे कुछ खेतों पर आकर खत्म हो जाती थी। इन्हीं खेतों में से एक के अंत में एक पगडंडी पर एक पैंथर के पदचिह्न साफ दिखाई दे रहे थे—उसके पंजों को देखकर लग रहा था कि वह काफी बड़ा वयस्क नर पैंथर था। वह पिछली रात ही उस रास्ते से गुजरा था।

मैं गाँव गया और वहाँ के पटेल (मुखिया) से अपना परिचय दिया, जिनसे मैं पहले कभी नहीं मिला था, और उन्हें बताया कि मैं वहाँ कैसे पहुँचा। उन्होंने मेरी उपस्थिति पर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की और हर संभव सहयोग का वादा किया। हमारी बातचीत हुई और मैंने पटेल को बताया कि मैं पैंथर के खिलाफ अपने अभियान के शुरुआती चरण में चारा के रूप में इस्तेमाल करने के लिए एक बकरी खरीदना चाहता हूँ।

और यहीं पर पटेल के सहयोग की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि उनके गाँव में कोई बकरी उपलब्ध नहीं थी। बड़ी मुश्किल और देरी के बाद वे मेरे लिए पास के एक छोटे से गाँव से एक बकरी का बच्चा ला पाए, जो इतना छोटा था कि बाँधने पर मिमियाता था। पटेल स्वयं मेरे साथ आए, और उनके साथ चार अन्य लोग भी थे, जिनमें से एक बकरी को आगे ले जा रहा था, और बाकी लोग कुल्हाड़ी लिए हुए थे जिनसे मचान बनाया जाना था।

वे मुझे उसी रास्ते से वापस उस जगह ले गए जहाँ चरवाहे पर हमला हुआ था, और अंत में उस स्थान पर जहाँ उनके अवशेष मिले थे। वह स्थान 'मद्रास काँटे' या 'कोरकापुल्ली' के नाम से जाने जाने वाले इंगा डलसिस पौधे की छोटी-छोटी झाड़ियों से घना आच्छादित था। वहाँ ज़मीन पर बैठना असंभव था, क्योंकि काँटे इतने पास-पास उगे थे कि दो-चार गज की दूरी से आगे किसी भी जानवर को देखना असंभव था। इसलिए हमें मजबूर होकर उसी रास्ते पर लगभग एक चौथाई मील वापस लौटना पड़ा।

वहाँ हमें एक विशाल और घने पत्तों वाला कटहल का पेड़ दिखाई दिया, जिसके घने पत्ते बहुतायत में उग रहे थे और जो मचान बनाने के लिए आदर्श स्थान प्रतीत होता था। पेड़ के मुख्य तने से लगभग आठ फीट की ऊंचाई पर पहली शाखा निकल रही थी। उसके बाद तीसरी शाखा पगडंडी के ऊपर से गुजर रही थी और जमीन से लगभग पंद्रह फीट की ऊंचाई पर सुविधाजनक

रूप से दो भागों में बंट रही थी।

इस विभाजन के पार मैंने अपने अनुयायियों को मचान बनाने का निर्देश दिया। उन्होंने सबसे पहले पास के पेड़ से छोटी-छोटी शाखाएँ काटकर और पत्तियाँ हटाकर यह काम शुरू किया। फिर उन्होंने कटी हुई लकड़ियों को विभाजन के पार रखा और जंगल से लाई गई लताओं से उन्हें दोनों भुजाओं से बाँध दिया। इस तरह उन्होंने जल्द ही लगभग चार फुट लंबा और तीन फुट चौड़ा चबूतरा बना लिया। यह मेरे बैठने के लिए पर्याप्त था। अंत में, मचान के चारों किनारों को उन पत्तियों से अच्छी तरह ढक दिया गया जिन्हें उन्होंने मचान का आधार बनाने के लिए काटी गई छोटी शाखाओं से निकाला था। हमने चबूतरे के आधार को भी पत्तियों से अच्छी तरह ढक दिया, ताकि आसपास कहीं भी, किसी भी कोण से, या यहाँ तक कि ठीक नीचे खड़े किसी भी तेंदुआ को मचान पर बैठे व्यक्ति का कुछ भी दिखाई न दे, और न ही कुछ ऐसा दिखाई दे जो उसे अनावश्यक रूप से संदेह पैदा करे।

मैंने एक आदमी से लकड़ी का एक टुकड़ा लेकर एक नुकीला खूंटा बनवाया, उसके एक सिरे को थोड़ा नुकीला किया और फिर उसे मचान से लगभग बीस फीट की दूरी पर एक बड़े पत्थर से सख्त जमीन में गाड़ दिया, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मैं एक शॉटगन का इस्तेमाल कर रहा था।

जब सब कुछ तैयार हो गया, तो मैं खुद मचान पर चढ़ गया और पत्तों में एक छेद बनाया ताकि खंभे की ओर मुंह करके बैठ सकूँ और बकरी और उसके आसपास की ज़मीन का एक छोटा सा हिस्सा साफ दिखाई दे। जब तक हम तैयार हुए, शाम के लगभग पाँच बज चुके थे।

जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, मैं येल्लागिरिस में बड़े शिकार के लिए नहीं आया था, इसलिए मैं अपना रात्रि उपकरण, यानी राइफल की नली पर लगाने वाली मशाल नहीं लाया था। इसके बजाय, मैं एक छोटी सी दो-कोशों वाली मशाल लाया था जिसका उपयोग मैं केवल शिविर में करता था। इसकी रोशनी बहुत कम फैलती थी और मेरे वर्तमान कार्य के लिए बिल्कुल अपर्याप्त थी। इसके अलावा, इसमें कोई क्लैंप न होने के कारण, मुझे मशाल को अपने बाएं हाथ में पकड़कर बंदूक की नली के पास रखना पड़ता। स्थिति अच्छी नहीं थी, क्योंकि मैं महीने के अमावस्या वाले समय में आया था और अंधेरे में पैंथर की उपस्थिति और उसके सटीक स्थान का अनुमान लगाने के लिए मुझे केवल आवाज़ों और अपनी इंद्रियों पर निर्भर रहना पड़ता, यदि वह दिखाई देता।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, मैं मचान पर बैठ गया और जितना हो सके आराम से बैठ गया। फिर मैंने आदमियों को बकरी को खंभे से बांधने और आपस में जोर-जोर से बातें करते हुए गाँव वापस जाने का निर्देश दिया। इससे न केवल बकरी उन्हें जाते हुए देखकर मिमियाने लगेगी, बल्कि अगर कोई तेंदुआ आस-पास कहीं देख रहा हो, तो उनके शोरगुल भरे जाने और बकरी की मिमियाहट से वह जल्दी बाहर आकर खाना खाने के लिए मजबूर हो जाएगा।

निर्देशानुसार, उन आदमियों ने बकरी को खंभे से बांध दिया और जोर-जोर से बातें करते हुए गांव की ओर वापस चलने लगे। बकरी ने तुरंत खंभे से बंधी रस्सी को खींचना शुरू कर दिया और इतनी जोर से और लगातार मिमियाने लगी कि मैंने मन ही मन पटेल को उनके द्वारा चुने गए चारे के लिए बधाई दी। मुझे यकीन हो गया कि अगर पैंथर इस बकरी के एक मील के दायरे में कहीं भी होता, तो वह इसकी आवाज जरूर सुनता और अपने शिकार की ओर तेजी से बढ़ता।

लेकिन मेरी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। बकरी लगातार और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती रही, इतनी ज़ोर से कि सूरज डूबने तक उसकी आवाज़ पूरी तरह बैठ गई और उसकी चीखें कर्कश फुसफुसाहट में बदल गईं। शाम ढलते-ढलते बकरी की आवाज़ इतनी बैठ गई कि मानो उसने हार

मान ली हो और खुले में रात बिताने का निश्चय कर लिया हो। अपने अगले पैरों को पहले मोड़कर, वह ज़मीन पर बैठ गई और सो गई। अब मुझे पता था कि पैंथर के बकरी को ढूंढने की संभावना बहुत कम थी, जब तक कि वह सचमुच वहाँ से न गुज़रे और उसे अचानक न देख ले। फिर भी, मैंने लगभग नौ बजे तक इंतज़ार करने और अपनी किस्मत आज़माने का फैसला किया।

अगले ढाई घंटे जंगल में बिताए गए उन कई घंटों की तरह ही थे, जो मैंने पहले भी इसी तरह की परिस्थितियों में बिताए थे। जंगल के पक्षियों की आवाज़ें, कम से कम दिन के समय की आवाज़ें, बहुत पहले ही शांत हो चुकी थीं। केवल कभी-कभार सुनाई देने वाली आवाज़ 'हर्डबॉय' पक्षी की विशिष्ट धीमी सीटी जैसी थी। यह एक भूरे रंग का रात्रिचर पक्षी है, जिसकी लंबाई लगभग आठ इंच होती है। इसकी धीमी लेकिन तीखी आवाज़ बिल्कुल वैसी ही होती है जैसी चरवाहे अपने मवेशियों को जंगल में चराते समय उन्हें एक साथ रखने के लिए निकालते हैं। इसीलिए इसका नाम 'मत-पाया कुर्वी' है, या कहें इसका तमिल मूल नाम 'मत-पाया कुर्वी' है, जिससे यह पूरे दक्षिण भारत में जाना जाता है। संयोगवश, यह पक्षी केवल जंगली क्षेत्रों या उनके आस-पास के इलाकों में ही पाया जाता है, क्योंकि मैंने इसे कभी भी खेती वाले क्षेत्रों में नहीं देखा है।

मैं आपको इससे ज़्यादा कुछ नहीं बता सकता, सिवाय इसके कि रात 9:15 बजे मैंने निगरानी छोड़ देने का फैसला किया। मैंने बकरी की तरफ टॉर्च की रोशनी डाली, लेकिन रोशनी सोए हुए जानवर तक मुश्किल से ही पहुँच रही थी, जिसे मैं बस एक धुंधली सी आकृति के रूप में देख पाया, तभी मैंने उसे उठते हुए सुना। अगर पैंथर ने उस बकरी पर हमला किया होता तो मैं उसे ठीक से देख नहीं पाता, इसलिए मैंने खुद को यह सोचकर तसल्ली दी कि शायद अच्छा ही हुआ कि पैंथर नहीं आया।

पेड़ से नीचे उतरकर मैंने बकरी को खोला और उसकी पीठ पकड़कर वापस गांव चला गया, जहां मैंने उसे मचान बनाने में मदद करने वाले एक आदमी के पास छोड़ दिया और उसे अगले दिन तक उसकी देखभाल करने का निर्देश दिया।

अगली सुबह मैं पैंथर के बारे में और अधिक जानकारी जुटाने के लिए गाँव लौट आया। लेकिन मुझे इस कहानी की शुरुआत में बताई गई बातों के अलावा और कुछ नहीं पता था, जिन्हें मैंने धीरे-धीरे जोड़कर समझा। किसी को ठीक से नहीं पता था कि पैंथर कहाँ से आया था और कोई भी यह नहीं बता सका कि वह किस इलाके में रह रहा होगा।

अगले तीन दिन मेरी ज़मीन पर काम में बीत गए, और उन तीनों दिनों की हर शाम मैं उसी मचान में बैठा रहा, अलग-अलग बकरियों को चारे के रूप में इस्तेमाल करते हुए आधी रात से कुछ घंटे पहले तक जागता रहा। लेकिन उन तीनों शामों में मुझे तेंदुए की कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। हर सुबह मैं मचान के आसपास, जंगल की सीमाओं और विभिन्न नदी-नालों में छानबीन करता, लेकिन मुझे उस जानवर के कोई ताज़े पदचिह्न नहीं मिले जिसकी मैं तलाश कर रहा था, जिससे पता चलता है कि वह उन रातों में आसपास कहीं नहीं गया था। बहुत संभव है कि वह येल्लागिरी पहाड़ियों के किसी दूरदराज के हिस्से में चला गया हो।

चौथे दिन सुबह मैंने गांव के पटेल को अपना नाम, पता और एक टेलीग्राम के लिए पैसे सौंपकर बैंगलोर के लिए प्रस्थान किया, जिसे उसे एक संदेशवाहक के माध्यम से जलारपेट रेलवे स्टेशन भेजना था।

एक महीने से अधिक समय बीत गया। कोई टेलीग्राम नहीं आया और मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि पैंथर कोई नियमित आदमखोर नहीं था या शायद येल्लागिरी पहाड़ियों को छोड़कर बीच के खेती वाले मैदानी इलाके को पार करके जावड़ी पहाड़ियों तक फैले विशाल वन क्षेत्र में

पहुँच गया था। यह बाद वाला वन क्षेत्र काफी विस्तृत है और येल्लागिरी से बहुत दूर दक्षिण-पूर्व दिशा में तिरुवनमलाई की ओर जाता है, जो एक पवित्र पहाड़ी है जहाँ एक ऐसे ऋषि का निवास है जिनके बारे में कहा जाता है कि उनके पास कई वरदान थे।

मैं पूरी तरह गलत था, जैसा कि बाद में घटित घटनाओं से साबित हुआ।

सात सप्ताह बीतने के बाद वह टेलीग्राम आया, जिसे मैं लगभग भूल ही चुका था। उसमें बताया गया था कि जलारपेट से पहाड़ी पर स्थित विभिन्न गांवों और बस्तियों तक 'टप्पल' या डाक पहुंचाने वाले 'डाकिया' को तेंदुए ने मार डाला था।

मुझे दोपहर तीन बजे के बाद ही टेलीग्राम मिला। फिर भी, जल्दीबाजी करके मैं त्रिचिनोपोली एक्सप्रेस पकड़ने में कामयाब रहा, जो बैंगलोर से सुबह सात बजे निकली और रात 10:30 बजे जलारपेट पहुंची। मैं अपने साथ पेट्रोमैक्स लालटेन लाया था, और उसकी तेज रोशनी में स्टेशन से पहाड़ी पर चढ़कर गांव पहुंचा, जो आठ मील दूर था, रात के 2 बजे से ठीक पहले। आम तौर पर मैं रात में उस ऊबड़-खाबड़, खड़ी और पत्थरों से ढकी पगडंडी पर जाने की हिम्मत नहीं करता, खासकर जब आसपास आदमखोर पैंथर का खतरा मंडरा रहा हो, लेकिन मुझे पता था कि जब तक पेट्रोमैक्स जल रही है, तब तक सब ठीक रहेगा। मेरी 405 राइफल और उपकरणों से भरा थैला मेरी पीठ पर बंधा था, साथ ही मेरे बाएं हाथ में लटकी लालटेन, इन सबने मिलकर उस खड़ी पगडंडी पर काफी भारी और असुविधाजनक बोझ बना दिया था, और पहाड़ी की चोटी पर पहुंचते-पहुंचते मैं पसीने से भीग चुका था। गांव अभी भी एक मील दूर था, और चलते-चलते ठंडी हवा मेरे गीले कपड़ों को और ठंडा कर रही थी, जो मेरी पीठ पर सूख रहे थे।

मैंने पटेल को जगाया, जिसने बदले में गांव के अधिकांश लोगों को जगा दिया, जिससे पेट्रोमैक्स की रोशनी में सौ सांवले चेहरों और चमकते सफेद दांतों का एक समूह मेरे चारों ओर जमा हो गया।

पटेल ने मुझे भोजन की पेशकश की, जिसे मैंने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया, लेकिन मैंने उनसे कहा कि मुझे कुछ गर्म चाय मिल जाए तो मैं आभारी रहूंगा। चाय जल्द ही तैयार हो गई, और पटेल के पीतल के बड़े बर्तन में चाय की चुस्कियां लेते हुए मैंने उनकी कहानी सुनी।

दरअसल, बताने लायक कुछ खास नहीं था। मेरी पिछली यात्रा के बाद से दिन के समय, खासकर जंगल के आसपास, बाहर निकलते समय सभी लोग बहुत सावधान रहते थे। रात में वे घर के अंदर ही रहते थे। फिर जैसे-जैसे कई सप्ताह बीतते गए और पैंथर का कोई और संकेत नहीं मिला, हमेशा की तरह सतर्कता भी कम होती चली गई।

डाकिया सुबह-सुबह पहाड़ी पर चढ़ता था, लगभग 6 बजे रेलवे स्टेशन के पास स्थित छोटे डाकघर से जलारपेट से निकलता था। सभी डाक ट्रेनें रात में ही गुजरती थीं, जिनमें बैंगलोर, पूर्वी तट पर मद्रास और पश्चिमी तट पर कालीकट से आने वाली ट्रेनें शामिल थीं। येल्लागिरि पहाड़ियों तक डाक का आवागमन अपेक्षाकृत कम था, और पहाड़ी की चोटी के लिए भेजे जाने वाले कुछ ही पत्र या सामान विभिन्न डाक ट्रेनों के कर्मचारियों द्वारा अलग-अलग थैलों में रखे जाते थे और जलारपेट स्टेशन पर उतारे जाते थे। पहाड़ी पर चढ़ने वाला डाकिया इन थैलों को खोलकर उनकी सारी सामग्री अपने कंधे पर टांगे या कभी-कभी सिर पर संतुलित करके ले जाने वाले एक थैले में रखता था।

उसका एकमात्र सुरक्षा कवच—जो सुरक्षा के हथियार से कहीं अधिक पद का प्रतीक और चिह्न था, साथ ही सांपों को डराने का एक यंत्र भी—एक छोटा भाला था, जिसके डंडे पर लोहे के कई छल्ले जड़े हुए थे। वह इस भाले को हाथ में लिए रहता था और हर कुछ कदम पर इसके आधार को ज़मीन पर पटकता था। छल्ले लोहे के डंडे से और आपस में टकराते हुए झनझनाते

थे, जिससे वह तेज़ झनझनाहट की आवाज़ निकलती थी जो लगभग सौ वर्षों से पूरे भारत में डाकियाओं के बीच जानी-पहचानी है।

उस मनहूस दिन डाकिया हमेशा की तरह सुबह करीब छह बजे जलारपेट के छोटे से डाकघर से निकला था। लेकिन वह पहाड़ी की चोटी तक कभी नहीं पहुंचा। गांव वाले उसे गांव की मुख्य सड़क से गुजरते हुए उसकी घंटियों की आवाज सुनने और देखने के आदी हो चुके थे। लेकिन उस सुबह उन्हें वह जानी-पहचानी आवाज सुनाई नहीं दी। पूर्वी इलाकों की खास उदासीनता और बेफिक्री के चलते किसी ने भी इस बारे में न तो चिंता की और न ही कुछ सोचा।

दोपहर के भोजन के बाद, कुछ लोग जलारपेट की ओर पहाड़ी से नीचे उतरने लगे। लगभग एक चौथाई रास्ता तय करने के बाद, उन्होंने चट्टानों पर सूखे खून के धब्बे देखे, जो जंग लगे रंग के थे और एक निशान बना रहे थे। वे रुककर सोचने लगे, तभी एक व्यक्ति की पैनी नज़र ने डाकिया का भाला रास्ते से दूर एक झाड़ी के पास पड़ा देखा। कुछ समझकर, पूरा दल वापस गाँव की ओर भागा। वहाँ उन्होंने पटेल समेत कुछ और लोगों को इकट्ठा किया और अंत में वापस आकर उस बदकिस्मत डाकिया का आधा खाया हुआ शव पाया।

पटेल ने टेलीग्राम लिखकर उसी दल के माध्यम से मुझे जालापेट स्टेशन से भिजवाया था। तमाम अफरा-तफरी के चलते वह अगले दिन शाम तीन बजे के बाद तक मुझ तक नहीं पहुंचा, यानी लगभग चौबीस घंटे की देरी हुई, जबकि जालापेट बेंगलुरु से मात्र 89 मील दूर है। मुझे यह भी सूचना मिली कि जालापेट पुलिस अधिकारियों ने शव को जांच और अंतिम संस्कार के लिए ले लिया है।

जब तक यह सारी बातचीत समाप्त हुई और मैंने पटेल और ग्रामीणों से पैंथर के बारे में आवश्यक सारी जानकारी प्राप्त कर ली, या शायद यह कहना अधिक सही होगा कि पटेल और ग्रामीणों को जो भी जानकारी थी, वह सब मिल गई, तब तक सुबह के चार बज चुके थे। पटेल ने मुझे एक रस्सी का पलंग दिया जिसे मैं गाँव के बाहरी इलाके में ले गया, जहाँ मैं भोर तक दो घंटे की संक्षिप्त नींद के लिए लेट गया। भोर में मेरी नींद खुली तो जंगल की जानी-पहचानी आवाजों से नहीं, बल्कि दो कुत्तों के जोर-जोर से भौंकने से खुली, जो रस्सी के पलंग पर लेटे हुए मुझे स्पष्ट रूप से संदेह और घृणा से देख रहे थे।

जैसा कि मैंने कहा, येल्लागिरी पहाड़ियों में बहुत अधिक प्राकृतिक जंगल नहीं हैं, और इसलिए यहाँ किसी भी प्रकार के आदिवासी वनवासियों का कोई अस्तित्व नहीं है। मुझे एहसास हुआ कि पैंथर का पता लगाने के लिए मुझे ग्रामीणों और खुद पर ही निर्भर रहना होगा।

उस सुबह मैंने जो सवाल पूछे थे, उनमें से एक सवाल पैंथर के संभावित छिपने की जगह के बारे में था। इसका कोई निश्चित जवाब नहीं मिला था, लेकिन कुछ पशुपालकों ने बताया कि पिछले कुछ हफ्तों में उन्होंने तीन-चार बार दोपहर में 'पेरियामलाई' या 'बड़ी पहाड़ी' नाम की एक पहाड़ी की पथरीली चोटी पर एक पैंथर को धूप सेंकते हुए देखा था। येल्लागिरि पर्वतमाला ऊपर एक पठार बनाती है, और यह पेरियामलाई एकमात्र पहाड़ी है जो पठार से ऊपर उठती है और अर्धचंद्राकार येल्लागिरि पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी है। यह समुद्र तल से लगभग 4,500 फीट ऊपर है।

मैं पटेल के घर गया और उन्हें सोता हुआ पाया, लेकिन वे थोड़ी देर में जाग गए और मुझे पीने के लिए गर्म दूध से भरा एक बड़ा 'चुम्बो' दिया, जो एक गोल पीतल का बर्तन होता है, जो पानी के छोटे बर्तन जैसा दिखता है। फिर मैंने उनसे कहा कि वे उन पशुपालकों को बुलाएँ जिन्होंने पेरियामलाई पर पैंथर को देखा था और उनसे कहें कि वे मेरे साथ पहाड़ी पर चलें और उस खास चट्टान को दिखाएँ जहाँ पैंथर अक्सर देखा जाता था।

इन दोनों व्यक्तियों को मेरे साथ चलने के लिए राजी करने में कुछ समय लगा। वे बिल्कुल अनिच्छुक थे और मैं देख सकता था कि वे निश्चित रूप से डरे हुए थे। हालांकि, पटेल ने उन्हें मनाने के लिए अपने ही तरीके अपनाए, जिनमें इनकार करने पर प्रतिशोध की धमकी देना भी शामिल था, इसलिए अंततः मैं उनके साथ रवाना होने में सफल रहा।

पेरियामलाई गांव से लगभग तीन मील पूर्व में स्थित है और जलारपेट से पश्चिम की ओर जाने वाले रास्ते के विपरीत दिशा में है। कुल मिलाकर, इस पहाड़ी और उस स्थान के बीच लगभग पाँच मील की दूरी थी जहाँ दुर्भाग्यपूर्ण डाकिया मारा गया था। इसके अलावा, बीच की लगभग सारी ज़मीन खेती योग्य थी। पेरियामलाई को ढकने वाला जंगल येल्लागिरी पर्वतमाला की ढलानों से उत्तर की ओर फैले अर्धचंद्राकार हिस्से की ओर जाता था। मुझे यह देखकर अच्छा नहीं लगा क्योंकि मुझे लगा कि मवेशी चराने वालों ने शायद कोई दूसरा ही तेंदुआ देखा होगा, न कि वह जिसने डाकिया को मारा था।

पेरियामलाई की तलहटी पर पहुँचकर, मेरे दोनों साथियों ने लगभग 300 फीट ऊपर उभरी एक चट्टान की ओर इशारा करते हुए बताया कि उन्होंने कई दोपहरों को वहीं पैंथर को धूप सेंकते देखा था। पहाड़ी की तलहटी से लेकर चट्टान की तलहटी तक और पेरियामलाई के लगभग आधे हिस्से तक, जहाँ से असली जंगल शुरू होता था, घनी लैंटाना झाड़ियाँ उगी हुई थीं। मैं देख सकता था कि, जैसा कि दक्षिण भारत के कई छोटे वन मार्गों के साथ हो रहा था, लैंटाना धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से जंगल पर अतिक्रमण कर रही थी और मूल पेड़ों को दबा रही थी। येल्लागिरी पर्वतमाला की तरह ही, पेरियामलाई भी पत्थरों के ढेर से बनी एक पथरीली पहाड़ी है और लैंटाना के उस विशाल जंगल और चट्टानों के बीच पैंथर को ढूँढना एक असंभव कार्य था, क्योंकि लैंटाना का जंगल अभेद्य था।

इसलिए मैंने पहाड़ी की तलहटी में उगने वाले एक पेड़ के नीचे एक जगह चिह्नित की और उन आदमियों से कहा कि हम गांव वापस जाकर चारा लाएंगे, और उन्हें उसे लेकर वापस आना चाहिए और उसे उस जगह पर बांध देना चाहिए जिसे मैंने चुना था।

इसलिए हम वापस गए और पटेल ने मेरे लिए एक गधा मंगवाया। इस स्थिति में बकरी किसी काम की नहीं होती क्योंकि मेरा इरादा उसके साथ जागने का नहीं था। अगर बकरी मर जाती, तो तेंदुआ उसे एक ही बार में खा जाता और अगली रात उसके वापस आने का कोई कारण नहीं बचता, जबकि गधा इतना बड़ा था कि तेंदुआ पहले भोजन के बाद बचे हुए हिस्से के लिए वापस आ सकता था। इसके विपरीत एक नुकसान यह था कि बकरी अपनी मिमियाहट से तेंदुआ को आसानी से और जल्दी आकर्षित कर लेती, जबकि गधा चुप रहता।

लेकिन मुझे इस बात का भरोसा था कि अगर पैंथर पहाड़ी पर कहीं भी रहता है, तो अपनी ऊँची जगह से वह नीचे ज़मीन पर बंधे गधे को देख सकेगा। इसलिए मैंने कुछ मज़बूत रस्सी उधार ली और चरवाहों को गधे को ऊपर ले जाकर उस जगह पर बाँधने का निर्देश दिया जो मैंने उन्हें पहले ही बता दी थी।

यह सब हो जाने के बाद, पटेल स्वयं और तीन-चार ग्रामीण मेरे साथ उस जगह को दिखाने आए जहाँ डाकिया की हत्या की गई थी। पता चला कि वह जगह गाँव से लगभग डेढ़ मील दूर थी, ठीक उसी जगह जहाँ जलारपेट से आने वाला रास्ता लैंटाना और चट्टानी टीलों के बीच से गुजरता था। पिछली रात जब मैं लालटेन लेकर पहाड़ी पर चढ़ रहा था, तब मैं खुद उस जगह से गुजरा था, लेकिन लालटेन की रोशनी में खून पर मेरी नज़र नहीं पड़ी थी। निस्संदेह यह अच्छा ही हुआ, वरना मेरी शांति भंग हो जाती।

हमें रास्ते में खून के कुछ सूखे धब्बे दिखाई दिए, और मेरे साथियों ने मुझे पास ही एक जगह

दिखाई जहाँ उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को घसीटकर ले जाया गया था और उसका कुछ हिस्सा खा लिया गया था। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, उसके अवशेषों को दाह संस्कार के लिए जलारपेट ले जाया गया था, इसलिए उन्हें वहाँ और रखने से कोई लाभ नहीं था।

पगडंडी से लगभग तीन सौ गज ऊपर एक काजू का पेड़ खड़ा था, और इस पेड़ के नीचे मैंने पटेल से एक और गधे को बांधने के लिए कहा।

फिर हम वापस गाँव की ओर चल पड़े, और मैंने सुझाव दिया कि एक तीसरे गधे को उस जगह बाँध दिया जाए जहाँ झाड़ियाँ गाँव के सबसे करीब हों। पटेल ने एक बार फिर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए दो और गधे मंगवाए और उन्हें अलग-अलग समूहों में बाँटकर मेरी हिदायत के मुताबिक बाँधने के लिए भेज दिया।

यह सब होते-होते दोपहर के एक बज चुके थे, और मुझे एहसास हुआ कि अब मेरे पास आगे की घटनाओं का इंतजार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि पैंथर उस रात तीन गधों में से किसी एक को मार डालेगा, बशर्ते कि वह गलती से उसके सामने आ जाए। चूंकि पैंथर ने अब तक कुछ ही इंसानों का शिकार किया था, इसलिए यह स्पष्ट था कि वह मुख्य रूप से दूसरे जानवरों का मांस खाकर ही जीवित था।

पटेल ने मेरे सामने गरमागरम भोजन परोसा, जिसमें चावल और दाल करी थी, साथ में उनके खेत में उगाए गए बैंगन और प्याज भी थे, और लाल मिर्च की भरपूर मात्रा डालकर इसे बेहद तीखा बनाया गया था। मुझे कहना पड़ेगा कि मुझे वह भोजन बहुत पसंद आया, हालांकि मिर्च के कारण मेरे चेहरे से पसीना बह रहा था। यह देखकर मेरे मेज़बान को बहुत हंसी आई और उन्होंने माफी मांगना शुरू कर दिया, लेकिन मैंने उन्हें यह कहकर रोक दिया कि मुझे ऐसा भोजन वाकई बहुत पसंद आया। इसके बाद खूब सारी कॉफी पी गई, और जब मैं आखिरकार उठा तो बहुत संतुष्ट महसूस कर रहा था।

समय बिताने के लिए मैं अपने छोटे से खेत में गया और बाकी शाम वहीं-वैसे काम करता रहा। आपको शायद यह जानकर दिलचस्पी होगी कि मेरा यह खेत केवल डेढ़ एकड़ का है, लेकिन यह बहुत ही छोटा और सघन खेत है। यहाँ एक 'मार्किंग-नट' का पेड़ है, जिसके फल से एक काला तरल पदार्थ निकाला जाता है, जिसका उपयोग आमतौर पर धोबी और कपड़े धोने के लिए भेजते समय मालिक के नाम के पहले अक्षर लिखने के लिए करते हैं। एक बार निशान लग जाने पर यह 'स्याही' धुलती नहीं है। तीन 'कटहल' के पेड़ हैं, जो ग्राफ्टिंग द्वारा उगाए गए हैं, और प्रत्येक पेड़ पर दो से बारह पाउंड या उससे भी अधिक वजन के फल लगते हैं। यहाँ कुछ अमरूद के पेड़, कुछ आड़ू के पेड़ और एक सब्जी का बगीचा है। दो मौजूदा इमारतें, जिन्हें कोट्टाई कहा जाता है, मिट्टी की दीवारों वाली हैं और उन पर जंगली घास और 'चोलम' अनाज के डंठलों के मिश्रण से बनी मोटी छप्पर की छतें हैं। उनके सामने एक छोटा सा गुलाब और क्रोटन का बगीचा है। उस समय मेरे पास लगभग तीन दर्जन मुर्गियाँ थीं, जिनमें लेगहॉर्न, रोड्स और ब्लैक माइनोरका शामिल थीं, और कुछ बत्तखें भी थीं। मेरा पीने का पानी एक छोटे से कुएँ से आता है जिसमें मैंने कुछ मछलियाँ डाली थीं, जिन्हें मैं मूल रूप से बैंगलोर से पानी साफ रखने के लिए लाया था। सामने एक छोटी सी धारा बहती है जो मेरी एक सीमा बनाती है, और बाकी तीन तरफ बांस के पेड़ लगे हैं। हालाँकि यह जगह छोटी है, फिर भी बेहद आरामदायक है, और बैंगलोर से रविवार को शांतिपूर्वक घूमने के लिए एक आदर्श स्थान है।

लगभग आधी ज़मीन नीची है और उस नाले से लगती है जिसका मैंने अभी ज़िक्र किया है। मैंने इस छोटी नदी से थोड़ा पानी लेकर एक किस्म का काला चावल उगाया है, जिसे 'पेगु चावल' के नाम से जाना जाता है और जो मूल रूप से बर्मा से आयात किया गया था। मेरी जानकारी के

अनुसार, मेरा खेत दक्षिण भारत के उन गिने-चुने स्थानों में से एक था जहाँ उस समय यह काला बर्मा चावल उगाया जाता था। मुझे पता था कि इसे कई जगहों पर बोया गया था, लेकिन किसी न किसी कारण से इसकी खेती असफल रही।

इस फार्म के बारे में एक रोचक तथ्य यह था कि इसके दो कोट्टई में से एक पर उस एंग्लो-इंडियन महिला के भाई का भूत रहता था, जिससे मैंने 1941 में इसे 500 रुपये में खरीदा था; जो अंग्रेजी मुद्रा में लगभग 35 पाउंड के बराबर है। उस व्यक्ति की मृत्यु एक रहस्यमयी बीमारी से हुई थी, जिसके बारे में मुझे बताया गया था कि उसके बाएं हाथ और सीने में अचानक असहनीय दर्द होता था—संभवतः एंजाइना पेक्टोरिस। वह इस छोटे से फार्म से बहुत लगाव रखता था और कहा जाता है कि बंजर भूमि के रूप में इसे खरीदने के बाद उसने वहां पच्चीस साल से अधिक समय बिताया था। फिर उसने इसे अपनी बहन को दे दिया, क्योंकि उसका अपना कोई परिवार नहीं था। हालांकि, कहानी के अनुसार, उसकी मृत्यु के बाद, शाम ढलने के समय अक्सर गांव वाले उसे अपने कोट्टई के सामने खड़े देखते थे। इसके बाद, जाहिर सी बात है, गांव वाले उस जगह से दूर रहने लगे।

मेरी बहन ने मुझे उस कथित भूतिया घटना के बारे में तब तक कुछ नहीं बताया जब तक कि मैंने खेत खरीदकर उप-पंजीयक के सामने बिक्रीनामा पंजीकृत करवाते समय नकद भुगतान नहीं कर दिया। शायद उसे लगा होगा कि 'भूत' की वजह से मैं सौदा रद्द कर दूंगा। फिर उसने बताया कि उसका मृत भाई कभी-कभी रात में दोनों कोट्टई में घूमता था, और उसने उसे कई बार चांदनी रात में गुलाब के पेड़ों की देखभाल करते हुए देखा था, जो उसका खास शौक था। उसने यह भी बताया कि वह 'आत्मा' बिल्कुल हानिरहित थी, कोई आवाज नहीं करती थी, न ही कोई परेशानी पैदा करती थी, और पास जाने पर गायब हो जाती थी।

मैं यह बताना भूल गया कि कोट्टियों के साथ मुझे कुछ बहुत पुराना फर्नीचर भी मिला: प्रत्येक इमारत में एक पलंग, एक टूटी-फूटी ड्रेसिंग टेबल, दो अलमारियाँ और तीन-चार खस्ताहाल कुर्सियाँ। पलंग पुराने ज़माने के थे, जिनमें पट्टियाँ लगी हुई थीं।

मुझे वह पहली रात अच्छी तरह याद है जब मैं एक कोट्टाई में सोया था (संयोग से वही कोट्टाई जिसमें मेरे भाई की मृत्यु हुई थी), क्योंकि वह बरसात की रात थी और दूसरे कोट्टाई की छत टपक रही थी। मैंने बिना गद्दे वाला अपना पलंग लकड़ी के तख्तों से बने पलंग पर बिछाया और सोने के लिए लेट गया। लेकिन तख्ते चुभ रहे थे और मेरे कंधों और पीठ पर दबाव डाल रहे थे। कुछ देर तक नींद न आने पर मैंने सोचा कि ज़मीन पर सोना ज़्यादा आरामदायक होगा। ज़ाहिर है, वहाँ बिजली नहीं थी, इसलिए मैंने एक मोमबत्ती जलाई ताकि पलंग को ज़मीन पर रख सकूँ। मोमबत्ती बुझाकर मैं सोने के लिए लेट गया। इस बार मैं कामयाब रहा और तुरंत सो गया।

मुझे नहीं पता कि मैं कब जागा। चारों तरफ़ घना अंधेरा था। कोई भारी, ठंडी और चिपचिपी चीज़ हिली और मेरे गले से लग गई, और ऐसा लगा जैसे दो बर्फीली गीली उंगलियाँ मेरी गर्दन के दोनों ओर फैली हुई हों।

मैं कोई कल्पनाशील व्यक्ति नहीं हूँ। मुझे अंधेरे से डर नहीं लगता। न ही मैं अंधविश्वासी हूँ। लेकिन अचानक यादों के सैलाब में मुझे अपने मरे हुए भाई और उसके भूत की याद आ गई, यह भी कि मैंने अपनी टॉर्च खिड़की पर कुछ ही दूरी पर छोड़ दी थी, और यह भी कि मुझे माचिस की डिब्बी कहाँ मिली थी। ये सारे विचार एक साथ आए, और तभी वह ठंडी, चिपचिपी, गीली चीज़ साफ़ तौर पर हिलने लगी और ऐसा लगा जैसे वह अपनी दो फैली हुई उंगलियों को मेरे गले के दोनों ओर और भी कसकर दबा रही हो। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। वहाँ और लेटना नामुमकिन था। जैसे किसी अलौकिक शक्ति से मैं उठ खड़ा हुआ और उस अनजान खिड़की की ओर भागा जहाँ

मैंने अपनी टॉर्च छोड़ी थी। अंधेरे में इधर-उधर टटोलते हुए, आखिरकार मुझे वह टॉर्च मिल ही गई। मैंने बटन दबाया, यह उम्मीद करते हुए कि भूत और उसके चिपचिपे हाथ, कब्र से ठंडे होकर, मेरे सामने होंगे! लेकिन वहाँ ज़मीन पर एक ऐसा मेंढक था जो मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा था। एक विशाल, काला, चिपचिपा जीव, लगभग एक फुट लंबा। वह बारिश के कारण झोपड़ी में आ गया था।

इससे पता चलता है कि इंसान की भावनाएं कितनी तीव्र हो सकती हैं। कुछ ही सेकंड पहले मैं अलौकिक और अज्ञात के विचार से बुरी तरह भयभीत था। अब मैं मन ही मन हंस रहा था जब मैंने चप्पल पहने पैर के अंगूठे से मेंढक को कोट्टई के दरवाजे तक पहुंचाया और फिर उसे बारिश में बाहर निकाल दिया।

अगली सुबह तीनों गधे ज़िंदा थे, इसलिए मैंने पूरा दिन अपने खेत में बिताया। किसी के पास पैंथर के बारे में कोई खबर नहीं थी। एक और रात बीत गई और अगली सुबह तीनों गधे ज़िंदा थे। इस बार थोड़ी सी खबर थी। डाकिया की मृत्यु के बाद, डाक को पहाड़ी पर एक के बजाय तीन लोग ले जा रहे थे। दल में मृत डाकिया की जगह आया हुआ नया डाकिया और दो चौकीदार थे, जिन्हें अंगरक्षक के रूप में उसके साथ भेजा गया था। उनके पास साधारण भाले थे, साथ ही वह भाला भी था जो कभी मृत डाकिया का था और अब उसके उत्तराधिकारी को मिल गया था।

इन तीनों व्यक्तियों ने गांव में उत्साहपूर्वक बताया कि उन्होंने एक पैंथर को एक चट्टान की कगार पर धूप सेंकते हुए देखा था, जो उस स्थान से लगभग एक चौथाई मील नीचे की ओर थी जहां पिछले डाकिया की हत्या कर दी गई थी।

यह खबर सुनकर पटेल ने एक ग्रामीण को मेरे पास आने और मुझे बताने के लिए भेजा। अपनी राइफल लेकर मैं उसके साथ वापस गाँव गया, जहाँ दोनों चौकीदारों ने मेरे साथ चट्टान दिखाने के लिए चलने की पेशकश की। हमने लगभग दो मील की दूरी आराम से तय कर ली। लेकिन सामने केवल एक नंगी चट्टान ही दिखाई दी। वहाँ लेटा हुआ पैंथर, चाहे वह आदमखोर हो या नहीं, जा चुका था, और इतनी गर्मी, इतनी पथरीली जगह और पत्थरों के ढेर में उसे ढूँढ़ना असंभव था। हालाँकि, यह खबर उत्साहजनक थी, क्योंकि इससे संकेत मिला कि पैंथर अभी भी आसपास ही है। गाँव और अपने छोटे से खेत में लौटने से पहले, मैंने एक बार फिर काजू के पेड़ के नीचे रखे चारे का निरीक्षण किया और मन ही मन उस शाखा का चयन कर लिया जिस पर मैं ज़रूरत पड़ने पर अपना मचान लगाऊँगा।

वह रात सौभाग्य लेकर आई, हालांकि काजू के पेड़ के नीचे बैठे गधे के लिए बुरी खबर थी, क्योंकि अंधेरे के घंटों के दौरान पैंथर ने उसे मार डाला और उसका लगभग आधा हिस्सा खा लिया।

अगली सुबह, इस तथ्य का पता उन लोगों के दल को चला जिन्हें मैंने बारी-बारी से तीनों चारे का निरीक्षण करने, उन्हें भोजन और पानी देने का काम सौंपा था। वे वापस आए और मुझे बताया, इससे पहले उन्होंने गधे के अवशेषों को गिद्धों द्वारा हड्डियों तक खा जाने से बचाने के लिए उन्हें शाखाओं से ढकने की सावधानी बरती थी।

मैंने दोपहर का खाना जल्दी खत्म किया और अपना ओवरकोट, टॉर्च, चाय की थर्मस और कुछ बिस्कुट लेकर गाँव की ओर चल पड़ा, जहाँ मुझे पटेल से आसानी से एक चारपाई उधार मिल गई। चार मददगारों ने उसे काजू के पेड़ तक पहुँचाया, जहाँ उसे टांगकर हमारे साथ लाई रस्सियों से बाँध दिया गया। मैंने खुद चारपाई को छोटी-छोटी टहनियों और पत्तों से इस तरह ढक दिया कि वह हर तरफ से, यहाँ तक कि नीचे से भी, अदृश्य हो गई। मैं जानता था कि आदमखोर मांसाहारी जानवरों से निपटने के लिए यह काम बहुत सावधानी से करना बेहद ज़रूरी था। ज़रा

सी भी लापरवाही सफलता और असफलता के बीच का अंतर पैदा कर सकती थी। अगर कोई पत्ता उल्टा पड़ा हो, जिसका निचला हिस्सा ऊपर दिख रहा हो, या चारपाई का कोई भी हिस्सा किसी भी कोण से दिखाई दे रहा हो, या पेड़ के नीचे टहनियों या गिरे हुए पत्तों का कोई टुकड़ा भी हो, तो इनमें से कोई भी चीज़ आदमखोर जानवर का शक जगाने के लिए काफी थी, जो अपने शिकार के पास लौटते समय हमेशा बेहद सतर्क रहता है।

सभी व्यवस्थाएँ अंततः मेरी संतुष्टि के अनुरूप पूरी हो गईं, और मुझे केवल एक ही कमी नज़र आई कि मचान कुछ ज़्यादा ऊँचा नहीं था, ज़मीन से दस फीट से भी कम। साथ ही, काजू के पेड़ पर चढ़ना आसान था। दोपहर लगभग ढाई बजे मेरे साथ आए लोगों का दल चला गया, जबकि मैंने उन्हें निर्देश दिया था कि अगर मैं रात में गाँव वापस नहीं लौट पाया तो वे भोर होते ही वापस आ जाएँ।

मैं मचान पर वापस बैठ गया और खुद को यथासंभव आरामदायक स्थिति में लाने की कोशिश की।

दोपहर का समय बहुत उमस भरा था, चारों ओर जमा पत्थरों से गर्मी परावर्तित हो रही थी। पेड़ भी दोपहर की तेज़ धूप से ज़्यादा बचाव नहीं कर पा रहे थे। सच कहूँ तो, शाम होते ही मुझे सुकून मिला और सूरज पश्चिम में मैसूर पठार की ओर डूबने लगा। नीचे मैदान में मुझे जलारपेट रेलवे स्टेशन दिखाई दे रहा था और यार्ड में शंटिंग इंजनों से क्रीम रंग का धुआँ उठ रहा था। कुछ-कुछ अंतराल पर कोई ट्रेन आती-जाती और इंजनों की सीटियाँ साफ़ सुनाई देतीं। बाकी सब कुछ शांत था।

शाम ढलते समय दूर से एक मोर की दहाड़ सुनाई दी और कुछ चिड़िया पेड़ के आसपास मंडराती रहीं। इनके अलावा और कोई जानवर या पक्षी नजर नहीं आ रहा था।

फिर रात का अंधेरा छा गया। पश्चिम की ओर मुख किए पहाड़ी की ढलान पर बैठे हुए, मैं मैदानों को काले आवरण में लिपटे हुए देख सकता था, जबकि मेरे ऊपर पहाड़ी की चोटी पर अभी भी दिन के उजाले के अंतिम निशान बाकी थे। जलारपेट की बत्तियाँ एक-एक करके टिमटिमाने लगीं, जिनमें स्टेशन के प्लेटफार्मों और शंटिंग यार्डों के नीले रंग के नियॉन लैंप प्रमुख थे। कहीं-कहीं मुझे रेलवे सिग्नल की लाल और हरी बत्तियाँ दिखाई दे रही थीं। उत्तर से एक ट्रेन जलारपेट की ओर आ रही थी, इंजन की तेज हेडलाइट अपने आगे प्रकाश की एक लकीर खींच रही थी। फिर ट्रेन एक ढलान पर पहुँची और इंजन अपने भार के कारण ज़ोर लगाने लगा। 'अगर वह कर सकती है... तो मैं कर सकता हूँ... अगर वह कर सकती है... तो मैं कर सकता हूँ।' चढ़ाई पर चढ़ने के लिए संघर्ष करते हुए उसके धुएँ के गुबार मेरे मन में ये शब्द बन गए, और मैंने उसके घिसे हुए बड़े बेयरिंग की खड़खड़ाहट सुनी। ये सभी आवाज़ें मुझे बहुत करीब लग रही थीं—और फिर भी बहुत दूर थीं; सीधी रेखा में वे कम से कम पांच मील से अधिक दूर थे।

मेरे चारों ओर अंधेरा छा गया। यह बिना चाँद की रात थी। घने बादल आसमान में इधर-उधर भाग रहे थे, कुछ येल्लागिरी पर्वतमाला की चोटियों में विलीन हो रहे थे। कोई भी तारा प्रकाश नहीं बिखेर रहा था, और अंधेरा घना होता जा रहा था। मुझे अपनी श्रवण शक्ति पर ही निर्भर रहना होगा।

कीड़े-मकोड़े न के बराबर दिखाई दे रहे थे, यहाँ तक कि जंगली झींगुर की मधुर चहचाहट भी सुनाई नहीं दे रही थी। मैं खाट पर चुपचाप बैठा रहा। कभी-कभार कोई मच्छर मेरे सिर के आसपास भिनभिनाता हुआ मेरे चेहरे या हाथों पर बैठ जाता। फिर उसकी सुई जैसी नुकीली सूंड मेरी त्वचा में चुभती और हल्की सी चुभन महसूस होती। मैं अपनी उंगलियाँ या हाथ थोड़ा हिलाता या चुपचाप अपने निचले होंठ को थोड़ा बाहर निकालकर अपने चेहरे पर फूँकता। इससे

मच्छर थोड़ा विचलित हो जाता और या तो अपने रास्ते चला जाता या फिर मुझे काटने की कोशिश में इधर-उधर उड़ने लगता।

मुझे जंगल में मचानों या छिपने की जगहों पर बैठने की आदत थी, इसलिए मुझे समय का पता ही नहीं चला, क्योंकि वैसे भी बार-बार घड़ी देखने का कोई फायदा नहीं था। मैं समय को जल्दी तो नहीं गुजार सकता था।

ऐसे मौकों पर इंसान के मन में तरह-तरह के विचार आते हैं, कुछ सुखद, कुछ अप्रिय और कुछ पुरानी यादें। मुझे याद है कि उस शाम, किसी अज्ञात कारण से, मैं एक नई तरह की साइकिल बनाने के बारे में सोचने लगा, ऐसी साइकिल जिसे कम से कम मेहनत से तेज़ गति से और लंबी दूरी तक चलाया जा सके। क्या यह अजीब नहीं है कि जब इंसान का मन खाली बैठा होता है तो वह क्या-क्या सोच सकता है?

इस साइकिल के बारे में मेरे ख्यालों में खलल एक हल्की सी आह जैसी आवाज़ से पड़ा। मैं समझ गया कि पैंथर आ गया है और मरे हुए गधे के ऊपर खड़ा है। मैंने जो दबी हुई आवाज़ सुनी थी, वह उसके मुंह को थोड़ा सा खोलने पर निकली सांस की थी।

मैंने सोचा कि इस समय टॉर्च जलाकर गोली चलाना शायद जल्दबाजी होगी। बेहतर होगा कि उसे आराम से खाना खाने दिया जाए। काश मैंने ऐसा न किया होता, क्योंकि ऐसा करने से मैंने एक सफल मौका गँवा दिया और एक और इंसान की जान ले ली।

मैं बड़ी बेसब्री से मांस के फटने और हड्डियों के टूटने की आवाज़ का इंतज़ार कर रहा था, जिससे मुझे यकीन हो जाता कि पैंथर गधे को खा रहा है, लेकिन इसके बजाय मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। पल बीतते चले गए और फिर मुझे बेचैनी से शक होने लगा कि कुछ गड़बड़ हो गई है।

मुझे अपने अनुभव से पता है कि मांसाहारी जानवर जब चाहें तो कितने शांत रह सकते हैं; खासकर पैंथर, जो न केवल बिना आवाज किए, बल्कि बिना दिखाई दिए भी आ-जा सकता है, और वह भी दिन के उजाले में। इस घोर अंधेरे में, यह जानवर चाहे एक गज दूर हो या एक मील दूर, इस अंधकार में उसका दिखना लगभग असंभव था।

मैंने अपनी घड़ी के चमकदार डायल पर नज़र डाली, जिसमें नौ बजने में बीस मिनट बाकी थे। मैं बिना हिले-डुले इंतज़ार करता रहा। नौ बज गए और फिर, मेरे दाहिनी ओर चट्टानों के एक हिस्से से, मुझे एक गहरी गुर्राहट सुनाई दी, और कुछ ही सेकंड बाद एक और गुर्राहट सुनाई दी।

किसी तरह पैंथर को मेरी मौजूदगी का एहसास हो गया था। वह मुझे सूंघ नहीं सकता था, क्योंकि पैंथरों की सूंघने की शक्ति बहुत कम या न के बराबर होती है। वह मुझे सुन भी नहीं सकता था, क्योंकि मैंने कोई आवाज़ नहीं की थी। इसलिए, या तो उसने अनजाने में ऊपर देखा होगा और मचान को देख लिया होगा, या किसी अंतर्ज्ञान ने उसे आगाह किया होगा। दोनों ही मामलों में, अब उसे पता चल गया था कि वहाँ एक इंसान है। हो सकता है कि उसने मुझे नीचे खींचने के लिए पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की हो, लेकिन संभवतः उसकी आत्मरक्षा की भावना ने उसे आगाह कर दिया होगा कि यह इंसान उसके लिए खतरनाक है और उन लोगों जैसा नहीं है जिन्हें उसने मारा था।

बेशक, यह पैंथर आदमखोर नहीं हो सकता है, हालांकि उसके वर्तमान व्यवहार को देखते हुए यह कम तर्कसंगत व्याख्या प्रतीत होती है।

शुरू में तो गुर्राहट का मकसद चेतावनी देना था। जैसे-जैसे गुर्राहट बढ़ती गई, उसका मकसद जानवर का हौसला बढ़ाना भी था। शायद काफी गुर्राहट के बाद वह इतना उत्तेजित हो जाए कि जिस पेड़ पर मैं बैठा था उस पर हमला कर दे और ऊपर चढ़ने की कोशिश करे। जैसा कि मैंने

पहले भी कहा है, पैंथर अक्सर बंदरों के साथ ऐसा ही करते हैं। वे पेड़ के तने पर झपटने से पहले लगातार गुर्राहट करके बंदरों को डरा देते हैं। फिर बंदर आम तौर पर डर के मारे नीचे गिर जाते हैं या कूद जाते हैं। शायद उसे भी यही उम्मीद थी कि उसकी आवाज़ का मुझ पर भी वैसा ही मनोबल गिराने वाला असर होगा।

कुछ ही देर में गुर्राहट की तीव्रता और गति दोनों बढ़ गईं। पैंथर अब भयानक शोर मचा रहा था। जैसा मैंने अभी सोचा था, वह या तो मुझे पूरी तरह से डराकर भगाना चाहता था या मुझे मेरे ठिकाने से हटाना चाहता था; या फिर वह पेड़ पर चढ़ने के लिए अपना साहस जुटा रहा था। मैंने बाद वाली संभावना के लिए खुद को तैयार कर लिया।

कुछ और मिनटों तक ऐसा ही चलता रहा और फिर वह हर हमलावर पैंथर की तरह खांसते हुए दहाड़ता हुआ बाहर आया। जैसे ही वह काजू के पेड़ के नीचे पहुँचा, मैं पलंग के किनारे झुक गया, छलावरण करने वाली टहनियों को हटाकर राइफल को नीचे की ओर किया और टॉर्च का स्विच दबाया। मुझे पता था कि मुझे जल्दी करनी होगी क्योंकि, जैसा कि मैंने आपको बताया है, मचान ज़मीन से केवल दस फीट ऊपर था और पेड़ पर चढ़ना आसान था, इसलिए पैंथर पल भर में मुझ तक पहुँच जाएगा।

दुर्भाग्यवश, छलावरण करने वाली एक शाखा पैंथर पर गिर पड़ी। निस्संदेह इससे पेड़ पर उसकी चढ़ाई में कुछ देरी हुई, भले ही वह पूरी तरह से रुकी न हो। लेकिन साथ ही, इससे वह टॉर्च की रोशनी से पूरी तरह से छिप गया। जब मैंने नीचे देखा तो शाखा तेज़ी से हिल रही थी और मैंने अनुमान लगाया कि उसने पैंथर को ढक लिया है।

उस क्षण मैंने एक मूर्खतापूर्ण कार्य किया। जानवर के शाखा से छूटने का इंतज़ार करने के बजाय, मैंने तुरंत उस जगह पर निशाना साधा जहाँ मुझे लगा कि उसका शरीर होगा और ट्रिगर दबा दिया। गोली की आवाज़ के साथ ही एक गिरते हुए शरीर की आवाज़ आई, क्योंकि पैंथर ज़मीन पर पीछे की ओर गिर पड़ा। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैंने उसे मार डाला है, लेकिन यह विचार बस एक पल के लिए ही रहा, क्योंकि जैसे ही उसने ज़मीन को छुआ, वह उस शाखा से कूद गया जिसमें वह उलझ गया था, और इससे पहले कि मुझे अपनी राइफल को रीलोड करने के लिए अंडरलीवर चलाने का मौका मिलता, मैंने उसकी पीली आकृति को झाड़ियों में छलांग लगाते हुए एक पल के लिए देखा।

मैंने टॉर्च उस जगह पर चमकाई जहाँ से वह गायब हुआ था, लेकिन न तो उसका कोई निशान दिखा, न ही उसकी कोई आवाज़ सुनाई दी, न ही उसके आगे बढ़ने का कोई संकेत मिला। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। हो सकता है वह झाड़ियों में मृत पड़ा हो, या घायल हो, या फिर कहीं दूर जाकर गायब हो गया हो। कुछ भी पता नहीं चल सकता था।

मैंने कुछ देर तक टॉर्च घुमाई और फिर कुछ हलचल की आवाज़ सुनने की उम्मीद में अंधेरे में बैठ गया। लेकिन कुछ भी सुनाई नहीं दिया। मैंने एक घंटा और इंतज़ार किया और फिर उस दिशा में झाड़ियों में गोली चलाने का फैसला किया जहाँ वह गया था, इस उम्मीद में कि अगर वह वहाँ घायल पड़ा हो तो शायद कुछ प्रतिक्रिया हो। इसलिए, टॉर्च जलाकर मैंने राइफल से उस जगह पर गोली चलाई जहाँ से वह गायब हुआ था। गोली की आवाज़ पहाड़ी पर गूंज उठी, लेकिन पैंथर की तरफ से कोई आवाज़ या प्रतिक्रिया नहीं हुई।

एक मालगाड़ी जलारपेट से चली और बेंगलुरु की ओर जाने वाले घाट खंड पर मुलानुर की ढलान पर चढ़ने लगी। पीछे वाला बैंकिंग इंजन, जिसका काम ढलान के शीर्ष तक पहुँचने तक धक्का देकर सहायता करना था, ज़ोर से धक्का देने लगा और उसकी तेज़ आवाज़ और खड़खड़ाहट ने आगे वाले इंजन की आवाज़ को दबा दिया, जिसका चालक शायद पीछे से मिल

रही सहायता के कारण आराम से चल रहा था।

मैं रात 11:30 बजे तक इंतज़ार करता रहा। आती हुई मद्रास-कोचीन एक्सप्रेस के इंजन की तेज़ सीटी की आवाज़ सुनकर मैंने पेड़ से नीचे उतरकर अपने घर जाकर चैन की नींद सोने का फ़ैसला किया। मुझे ऐसा करने में कोई हिफ़ाज़त नहीं थी, क्योंकि अगर पैंथर घायल होता और आस-पास होता, तो मेरी आखिरी गोली की आवाज़ सुनकर वह ज़रूर प्रतिक्रिया देता। या तो वह मर चुका था या बहुत दूर चला गया था। अगर वह घात लगाकर बैठा भी होता, तो मेरी आखिरी गोली उसे डराकर भगा देती।

मैं काजू के पेड़ से नीचे उतरा और अपनी टॉर्च की रोशनी में वापस गांव की ओर चल पड़ा, जहां अपने घर जाने से पहले मैंने पटेल और उत्साहित ग्रामीणों को सारी घटना बताई।

अगली सुबह मैं गाँव लौटा, जहाँ कम से कम बीस इच्छुक पुरुष इकट्ठा हुए और मेरी मदद करने को तैयार हो गए। उन्होंने मेरी सलाह और निर्देशों के अनुसार गाँव के आधे दर्जन कुत्तों को भी साथ ले लिया। इस प्रकार, संख्या में पर्याप्त होने और सुरक्षित होने के कारण, हम काजू के पेड़ और पिछली रात की घटना स्थल की ओर चल पड़े।

गधे के अवशेष अछूते थे। पेड़ के ठीक नीचे ज़मीन में एक गड्ढा था, जहाँ मेरी गोली धंस गई थी, और कहीं भी खून का एक धब्बा भी नहीं दिख रहा था। हमने उन झाड़ियों में अच्छी तरह से तलाशी ली जिनमें पैंथर गायब हो गया था और जहाँ मैंने अपनी दूसरी गोली चलाई थी, साथ ही आसपास के बड़े-बड़े पत्थरों और झाड़ियों में भी काफी बड़े इलाके में तलाशी ली, लेकिन यह स्पष्ट था कि मेरा निशाना पूरी तरह चूक गया था और पिछली रात चलाई गई मेरी गोली वह भाग्यशाली निशाना नहीं लगा पाई जिसकी मुझे उम्मीद थी। पैंथर पूरी तरह से बच निकला था।

मैं गुस्से से भरा हुआ और खुद से निराश था, इसलिए मैं अपने साथियों के साथ गाँव लौट आया, जहाँ मैंने पटेल को बताया कि मेरा समय समाप्त हो गया है और मुझे बैंगलोर लौटना होगा। हालाँकि, मैंने उनसे कहा कि अगर कोई नई जानकारी मिले तो मुझे एक और टेलीग्राम भेज दें। फिर मैं कोट्टा गया, अपना सामान इकट्ठा किया और उसे अपने थैले में भर लिया, और जल्द ही काजू के पेड़ के पास से गुजरते हुए जलारपेट की ओर उतरने लगा, जहाँ से मैंने मद्रास से शाम की एक्सप्रेस पकड़ी और उसी रात आठ बजकर पंद्रह मिनट में घर पहुँच गया।

येल्लागिरी नरभक्षी पैंथर के साथ मेरी मुठभेड़ का पहला दौर यहीं समाप्त हुआ।

मेरी उम्मीदों के विपरीत, पटेल से मुझे कोई खबर नहीं मिली। दो महीने बीत जाने पर मैंने उन्हें एक पत्र लिखा और कुछ ही दिनों में जवाब मिला कि जानवर के बारे में कोई और खबर नहीं मिली है। इससे मुझे लगा कि शायद उसने आदमखोरी छोड़ दी हो या येल्लागिरि से मुश्किल से पंद्रह मील दक्षिण में स्थित जावड़ी पर्वत श्रृंखला की ओर चला गया हो। दूसरी ओर, अगर बाद वाली बात सच होती, तो जावड़ी पहाड़ियों पर किसी के मारे जाने की खबर मुझे प्रेस या सरकारी सूचना के माध्यम से जरूर मिल जाती। इसलिए मैं पहले वाले सिद्धांत की ओर झुका और मुझे लगा कि पैंथर ने इंसानों पर हमला करने की अपनी प्रवृत्ति छोड़ दी है। बेशक, हो सकता है कि मेरी गोली निशाने पर लगी हो और जानवर किसी सुनसान जगह पर जाकर मर गया हो। लेकिन यह आखिरी सिद्धांत शायद ही तर्कसंगत था।

नौ सप्ताह और बीत गए, फिर पटेल परिवार की ओर से जालरपेट रेलवे स्टेशन से एक टेलीग्राम आया, जिसमें बताया गया था कि पैंथर फिर से प्रकट हुआ है और उसने एक बार फिर एक इंसान को मार डाला है। टेलीग्राम में मुझे तुरंत आने के लिए कहा गया था, और मेरे पास दो घंटे का समय बचा था, इसलिए मैंने अगली ट्रेन पकड़ ली।

यह एक धीमी गति वाली ट्रेन थी जो मुझे उस रात लगभग साढ़े आठ बजे जलारपेट स्टेशन

पर लेकर आई। तुरंत पहाड़ी पर चढ़ने का कोई उद्देश्य नहीं था, क्योंकि उस समय मैं कुछ कर ही नहीं सकता था; इसलिए मैंने प्रतीक्षा कक्ष में कुछ घंटे सोने और भोर होते ही चढ़ाई शुरू करने का फैसला किया। हालाँकि, यह योजना बहुत सफल साबित नहीं हुई। सबसे पहले, गुजरती ट्रेनों का शोर मुझे हर बार सोने से रोकता था, क्योंकि मुझे हल्की नींद आती है। दूसरे, मच्छरों और खटमलों के हमले, जो कुर्सी पर बहुतायत में थे, मुझे प्लेटफार्म पर इधर-उधर घूमने के लिए मजबूर करते रहे, जो मैं सुबह पाँच बजे तक करता रहा, जब मैं लगभग दो मील दूर येल्लागिरि की तलहटी के लिए रवाना हुआ। जब मैंने चढ़ाई शुरू की तब भोर हो चुकी थी और मैं सुबह 7:15 बजे तक पटेल के गाँव पहुँच गया।

मेरे पटेल मित्र ने हमेशा की तरह बड़े ही सौहार्दपूर्ण ढंग से मेरा स्वागत किया और खूब सारा दूध मिलाकर गरमागरम कॉफी पिलाई। फिर उन्होंने बताया कि तीन दिन पहले सुबह-सुबह एक तेंदुए ने एक युवती पर हमला कर उसे मार डाला था। वह युवती पेरियामलाई पहाड़ी की तलहटी से बहने वाली एक छोटी नदी से पानी भरने गई थी। उन्होंने यह भी बताया कि जिस गाँव की वह युवती थी, वहाँ के लोग कुछ ही देर बाद वहाँ पहुँच गए और शव को अंतिम संस्कार के लिए ले गए। ऐसा लगता है कि तेंदुए ने उस दुर्भाग्यपूर्ण युवती का बहुत कम हिस्सा खाया था, शायद इसलिए कि उसे ढूंढ रहे लोगों के दल ने परेशान कर दिया था और उसे आराम से बैठकर भोजन करने का समय नहीं मिला था।

इस बार मैंने बकरी को जीवित चारा बनाकर उस पर बैठने का फैसला किया, क्योंकि येल्लागिरि में मेरा प्रवास चार दिन से अधिक नहीं हो सकता था, क्योंकि मेरे पास केवल चार दिन की ही छुट्टी थी। इसलिए पटेल ने मेरे लिए उसी पड़ोसी गाँव से एक बकरी लाने की पेशकश की, जहाँ से उन्होंने पिछली बार लाई थी, लेकिन कहा कि इसमें अच्छी खासी रकम लगेगी—लगभग बीस रुपये—क्योंकि येल्लागिरि में न केवल बकरियाँ दुर्लभ थीं, बल्कि उस गाँव में, जो लगभग तीन मील दूर था, उनके मालिकों को मांग का पता चल गया था और उन्होंने उसी के अनुसार कीमतें बढ़ा दी थीं। मैं मान गया और पैसे दे दिए, और बकरी के आने में लगने वाले समय में मैं अपने खेत में जाकर देखने लगा कि काम कैसा चल रहा है।

दोपहर में, बैंगलोर से लाया हुआ ठंडा भोजन खाने के बाद, मैं पटेलों के गांव लौटा तो पाया कि बकरी अभी तक नहीं आई थी।

दोपहर के दो बज चुके थे जब जानवर को लाने के लिए भेजा गया आदमी एक बूढ़ी काली बकरी लेकर लौटा। मतलब, वह उस अवस्था से आगे निकल चुकी थी जब अकेले रहने पर वह देर तक मिमियाती थी और पैंथर को आकर्षित करती थी। दूसरी बात, जैसा कि मैंने कहा, वह एक काली बकरी थी। काली या सफेद बकरियाँ कभी-कभी कुछ पैंथरों के मन में संदेह पैदा कर देती हैं। आमतौर पर भूरे रंग का चारा, चाहे बकरी हो, कुत्ता हो या बैल, सबसे अच्छा होता है, क्योंकि उनका रंग उन जंगली जानवरों से मिलता-जुलता होता है जो पैंथर का प्राकृतिक भोजन होते हैं। हालांकि, अब बकरी बदलने का समय नहीं था और मुझे परिस्थितियों के अनुसार ही काम चलाना था।

पटेल और चार-पाँच आदमी मेरे साथ थे, जिनमें से पाँचों के पास कुल्हाड़ी, रस्सियाँ और वही चारपाई थी जिसका इस्तेमाल मैंने पिछली बार किया था। हम एक घंटे से भी कम समय में उस गाँव पहुँच गए जहाँ से वह लड़की थी। वहाँ दो और आदमी मेरे दल में शामिल हो गए, जिन्होंने मुझे वह जगह बताने की पेशकश की जहाँ उस युवती की हत्या की गई थी।

यह गाँव से लगभग तीन-चौथाई मील दूर था। पश्चिम से पूर्व की ओर एक छोटी सी धारा बहती थी, जिसमें पानी की एक पतली धार थी, और यह पेरियामलाई पहाड़ी के आधार के

किनारे से होकर गुजरती थी, जो लगभग आधा मील दूर थी। यह धारा रेतीली थी और इसके किनारे मिश्रित लैंटाना और वेट-ए-बिट कंटीली झाड़ियों का घना जंगल था। जिस स्थान पर लड़की पर हमला हुआ था, वहाँ ग्रामीणों ने एक उथला गड्ढा खोदा था ताकि शुष्क मौसम में जब धारा का बाकी पानी सूख जाए तो वे अपने मवेशियों को पानी पिला सकें। पिछले दिन जब लड़की की हत्या हुई थी, तब वह इसी स्थान पर पानी पीने आई थी। लैंटाना उस गड्ढे के काफी करीब उगी हुई थी, और यह स्पष्ट था कि आदमखोर ने इस झाड़ी की आड़ में उसका पीछा किया था, और यहीं से उस पर अंतिम हमला किया था।

हालात ऐसे थे कि इस पैंथर ने एक बार फिर साबित कर दिया था कि वह आदमखोर होने के बावजूद अपनी आदतों में बेहद असामान्य था। उसने बार-बार दिन दहाड़े अपने शिकार पर हमला किया था। ऐसा सिर्फ बाघ ही करते हैं, क्योंकि आदमखोर पैंथर स्वभाव से कायर होते हैं और आमतौर पर रात के अंधेरे में ही हमला करते हैं। मुझे लगा कि शायद लड़की के आने से पहले ही यह जानवर झाड़ियों में छिपा हुआ था और इतनी आसानी से मिले भोजन के लालच में नहीं आ सका।

इसी विचार के साथ, मैं घुटनों के बल नीचे बैठ गया और लैंटाना की झाड़ियों और आसपास की ज़मीन का बारीकी से निरीक्षण करने लगा। जल्द ही मुझे अपने सिद्धांत की पुष्टि मिल गई, क्योंकि एक झाड़ी आराम करने के लिए पर्याप्त आश्रय प्रदान करती थी। उसके नीचे सूखे लैंटाना के पत्तों की मोटी परत के कारण किसी भी स्पष्ट पदचिह्न को ढूंढना असंभव था, लेकिन जंगली जानवर की हल्की सी गंध ने मुझे अपने अनुमान की पुष्टि करने के लिए प्रेरित किया, और यह कि पैंथर इस जगह का उपयोग कभी-कभी आराम करने के लिए करता था, क्योंकि यह तालाब के पास पानी पीने आने वाले किसी भी शिकार पर हमला करने के लिए आदर्श स्थान था।

यह उत्साहवर्धक था, क्योंकि अगर पैंथर ने पहले इसका इस्तेमाल किया था, तो पूरी संभावना थी कि वह इसे फिर से इस्तेमाल करेगा। इसके अलावा, जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, पेरियामलाई पहाड़ी लगभग आधा मील दूर थी। पैंथर का पहाड़ी के ऊपर चट्टानों और गुफाओं में अपना नियमित मांद हो सकता था और उसे यह लैंटाना का मांद किसी अनजान शिकार के आने की प्रतीक्षा करने के लिए सबसे सुविधाजनक जगह लगती।

इन परिस्थितियों का अध्ययन करते हुए अचानक मेरे मन में एक विचार आया। मैं एक ऐसा दृश्य बनाऊँगा जो पैंथर की अपेक्षा के यथासंभव निकट हो। मैं बकरी को तालाब के किनारे एक खंभे से बाँध दूँगा ताकि वह पानी पीने आई हुई जानवर जैसी लगे। और मैं उसी लैंटाना झाड़ी के नीचे छिपकर पैंथर के आने को रोक दूँगा। यदि वह बकरी की आवाज़ सुन ले, या पहाड़ी पर ऊपर से, जहाँ से वह स्पष्ट रूप से दिखाई देगी, उसे देख ले, तो वह सीधे मेरे हमले के स्थान पर आएगा और मुझे उसका इंतज़ार करते हुए पाएगा।

मैंने पटेल और अपने साथ आए लोगों को अपना विचार समझाया। उन्हें यह विचार चतुर लगा, लेकिन पटेल ने इसे मूर्खतापूर्ण बताया, क्योंकि इसमें बहुत बड़ा जोखिम था। मैंने उन्हें समझाया कि वास्तव में खतरा बहुत कम है, क्योंकि आसपास घनी लताना और झाड़ी की सघनता के कारण पैंथर को किसी भी तरफ या पीछे से मुझ तक पहुँचने में कठिनाई होगी, और वह केवल इस गुप्त आश्रय के प्रवेश द्वार से ही मुझ तक पहुँच सकता है, जबकि मैं उस दिशा से उसके आने की उम्मीद कर रहा हूँगा और तैयार रहूँगा। इसके अलावा, उसका ध्यान बकरी पर केंद्रित होगा और उसे शायद ही पता चलेगा कि उसके अपने ही ठिकाने में कोई दुश्मन उसका इंतजार कर रहा है।

हम जो खूंटा साथ लाए थे, उसे नदी के किनारे से एक पत्थर की मदद से रेत में गहराई तक

गाड़ दिया गया। मैं झाड़ी के नीचे छिप गया और रात के लिए आराम से बैठने का इंतजाम करने में समय लगाया। मैंने अपनी राइफल की नली पर टॉर्च भी लगा दी और यह जांच लिया कि वह ठीक से काम कर रही है या नहीं। यह टॉर्च मैंने हाल ही में खरीदी थी। यह तीन सेल वाली फिक्स्ड फोकस टॉर्च थी। आखिर में, मैंने अपनी पानी की बोतल से चाय का एक लंबा घूंट लिया और फिर आदमियों को बकरी को उसके पिछले पैरों से खूंटे से बांधने का आदेश दिया।

इन सभी तैयारियों के दौरान बकरी को कुछ दूरी पर रखा गया था, ताकि उसे पता न चले कि कोई इंसान इतनी पास झाड़ियों में छिपा हुआ है; क्योंकि अगर उसे पता चल जाता, तो अकेलेपन के कारण उसके मिमियाने की संभावना बहुत कम हो जाती। दूसरी ओर, अगर बकरी को सचमुच अकेलापन महसूस होता, तो उसके रोने की संभावना कहीं अधिक होती।

जब बकरी को बांधा जा रहा था, मैं पूरी तरह चुप रहा। अपना काम खत्म करने के बाद, पटेल और उसके आदमी चले गए और मैं अकेला ही आगे की स्थिति का इंतजार करने के लिए रह गया।

लैंटाना के नीचे गर्मी थी और सन्नाटा छाया हुआ था, और सूर्यास्त से काफी पहले ही जहाँ मैं बैठा था वहाँ अंधेरा छा गया था। बकरी ने शुरू में कुछ बार मिमियाया और फिर चुप हो गई। मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि अंधेरा होने पर वह फिर से मिमियाएगी। लेकिन मेरी निराशा अधूरी रही। कभी-कभी मुझे बकरी की आवाजें सुनाई देती थीं जब वह रस्सी से बंधी होने के लिए लात मारती और छटपटाती थी, लेकिन अब वह आवाजें भी बंद हो गई थीं और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि वह जानवर सो गया है।

मजबूरीवश, मुझे पूरी रात जागते और सतर्क रहना पड़ता था और मैं बकरी की नींद में शामिल नहीं हो सकता था। मुझे उस बदकिस्मत बकरी से ईर्ष्या होती थी।

मच्छरों ने मुझे परेशान कर दिया था, और तरह-तरह के कीड़े मेरे शरीर पर रेंग रहे थे। जंगली चूहे, जो पालतू चूहों से भी छोटे होते हैं, लैंटाना के पत्तों को सरसराते हुए और तनों पर रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे। एक बार कोई लंबी और मुलायम चीज़ सूखे पत्तों के बीच से और झाड़ी के किनारों से सरकती हुई गुजरी। वह एक सांप था। वह हानिरहित था या जहरीला, यह मैं नहीं जान सका। मच्छरों और कीड़ों के बावजूद मैं बिल्कुल स्थिर बैठा रहा, और रेंगने की आवाज़ बंद हो गई।

पैंथर नहीं आया। झाड़ी के नीचे सन्नाटे में कोई आवाज़ नहीं गूंजी, रात के पक्षी की पुकार भी नहीं। समय अपने लंबे और उबाऊ सफर पर चलता रहा। मेरी घड़ी की चमकदार सुइयाँ बहुत धीरे-धीरे घंटे गिन रही थीं। मुझे नींद आ रही थी, लेकिन कुछ पल के लिए भी आँखें बंद करने की इच्छा को रोकने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने पैंथर के बारे में सोचना बंद करने के लिए दूसरी बातों और घटनाओं के बारे में सोचने की कोशिश की। लेकिन मेरे दिमाग में बस एक ही बात आई - उस बकरी को कोसना।

नए दिन की धुंधली रोशनी धीरे-धीरे छनकर आ रही थी, यहाँ तक कि किसी जंगली मुर्गे, मोर या किसी अन्य पक्षी की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। मैं उस झाड़ी से भारत का सबसे निराश व्यक्ति बनकर निकला। वह बकरी, जो खंभे के पास कुंडली मारकर सो रही थी, आलस से उठी, आराम से अंगड़ाई ली, अपनी छोटी पूंछ हिलाई और मुझे इस तरह देखा मानो कह रही हो, 'अब बताओ, असली बकरी कौन है, तुम या मैं?' जवाब जानते हुए भी मैंने कुछ कहने से परहेज किया।

इसके बजाय, मैंने उस बदकिस्मत जानवर को खोल दिया, जो मेरे पीछे-पीछे उस गाँव तक आ गया जहाँ पटेल रहते थे। वह सज्जन, उन्हीं लोगों के साथ जो एक दिन पहले हमारे साथ आए

थे, यह देखने के लिए निकलने ही वाले थे कि मेरा क्या हाल हुआ। मैंने उनसे काली बकरी लौटाने को कहा और बताया कि मैं कुछ घंटे सो लूँगा और फिर खुद जाकर कोई बेहतर चारा ढूँढूँगा। मैं अपने घर गया और दोपहर तक सोता रहा।

जब मैं जागा तो मुझे भूख लग रही थी, इसलिए मैंने डिब्बाबंद सैल्मन मछली खोली और उसे बैंगलोर से लाई हुई रोटी के साथ खाया। रोटी थोड़ी सूखी हो गई थी, लेकिन उस पर डिब्बाबंद मक्खन की मोटी परत लगाने से उसका स्वाद बेहतर हो गया। इससे मेरा पेट दोपहर के भोजन के लिए भर गया। मैंने पहले ही अपने पोर्टेबल प्राइमस स्टोव पर चाय के लिए पानी उबालने के लिए रख दिया था और चाय वाकई ताज़गी देने वाली थी। दोपहर का भोजन करते समय मैंने एक और केतली में चाय उबाली और उसे अपनी पानी की बोतल में डाल लिया। रात भर जागने के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करके मैं पटेलों के गाँव लौट आया। सौभाग्य से मौसम पिछली रात की तरह ही गर्म था, इसलिए ओवरकोट की ज़रूरत नहीं पड़ी।

मैंने अपनी बात को और मज़बूत करने के लिए पटेल को अपने साथ लिया और उस गाँव की ओर चल पड़ा जहाँ बकरियाँ उपलब्ध थीं। वहाँ, कुछ बकरियों को चुनने और फिर गरमागरम सौदेबाजी के बाद, मैं एक अधपकी बकरी को चुनने में कामयाब रहा जो मिमियाने की ज़्यादा संभावना रखती थी। शाम के 3:30 बज चुके थे जब हम उस जगह के लिए निकले जहाँ मैं पिछली रात रुका था, लेकिन वास्तव में कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि जगह पहले ही तय हो चुकी थी और कोई मचान लगाने की ज़रूरत नहीं थी।

पांच बजने से पहले ही मैं झाड़ियों में घुस गया था, नई बकरी को बांध दिया गया था और आदमी वापस लौट रहे थे।

जैसे ही वे नज़र और आवाज़ से ओझल हुए, बकरी मिमियाने लगी और लगातार मिमियाती रही। मैंने मन ही मन अपने चयन पर खुशी जताई।

शाम होते-होते लैंटाना के नीचे फिर से घना अंधेरा छा गया, बकरी ज़ोर से चिल्लाई और मैं तेंदुए के आने की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगा। एक घंटा बीत गया। तभी मुझे लगभग सुनाई न देने वाली सरसराहट सुनाई दी, जैसे किसी सूखी टहनी पर पैर रखा गया हो, और मुझे आभास हुआ कि तेंदुए आ रहा है। निर्णायक क्षण लगभग आ ही गया था। अब मुझे सावधान रहना था कि तेंदुए के पूरी तरह दिखाई देने से पहले टॉर्च की रोशनी न डालूँ। अगर मैंने ऐसा किया, तो मुझे पता था कि वह गायब हो जाएगा। दूसरी ओर, अगर मैंने बहुत देर कर दी, तो हो सकता है कि वह मुझे पहले देख ले और मुझ पर हमला कर दे, या फिर गायब ही हो जाए।

अपनी सारी इंद्रियों को पूरी तरह से समेटे, मैं इंतज़ार करता रहा। कोई नई सरसराहट या दूसरी आवाज़ नहीं आई। तभी मुझे एक हल्की फुफकार सुनाई दी। सहज ही मैं समझ गया कि पैंथर ने मुझे देख लिया है या महसूस कर लिया है। उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए थे, मानो वह गुर्राने की तैयारी में हो। उसके होंठों के उसी सिकोड़ने से वह हल्की फुफकार सुनाई दी थी जो मैंने सुनी थी। अब करो या मरो। मैंने टॉर्च का बटन दबाया। उसकी रोशनी सीधे पैंथर की दो लाल-सफेद आँखों पर पड़ी। मैं उसका चेहरा और सीना साफ़ देख पा रहा था, लगभग दस फीट दूर से। जल्दी से गले पर निशाना साधते हुए मैंने विनचेस्टर का ट्रिगर दबा दिया। पैंथर एक कदम आगे बढ़ा। फिर वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया, लेकिन इससे पहले कि मेरी दूसरी गोली उसके सीने में लग जाती। वह पीछे की ओर गिर पड़ा और आँखों से ओझल हो गया और कुछ सेकंड तक झाड़ियों में लोटता रहा। फिर एक मरते हुए जानवर की स्पष्ट गड़गड़ाहट सुनाई दी; फिर सन्नाटा छा गया।

मैंने आधा घंटा और इंतज़ार किया, फिर झाड़ियों से बाहर निकलने का जोखिम उठाने का

फैसला किया। मुझे लगा कि ऐसा करना काफी सुरक्षित होगा, क्योंकि मुझे लगभग यकीन था कि पैंथर मर चुका है। भरी हुई राइफल को सामने पकड़े हुए, मैं झाड़ियों से बाहर निकला और बकरी के पास खड़ा हो गया। मेरा पहला विचार था कि उसे खोलकर अपने साथ ले जाऊं। तभी मेरे मन में ख्याल आया कि जिस पैंथर पर मैंने गोली चलाई थी, वह शायद आदमखोर पैंथर न होकर कोई साधारण जानवर ही हो। अगर ऐसा होता, तो मुझे अंधेरे में पटेलों के गांव लौटते समय बहुत सावधानी बरतनी पड़ती और बकरी को साथ ले जाने से मेरा ध्यान भटकता, जो मेरे लिए परेशानी का सबब बन सकती थी। इसलिए मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और पटेलों के घर की ओर चल पड़ा, जहां मैं धीरे-धीरे और सावधानी से चलते हुए पहुंचा। लोग अभी भी जागे हुए थे और मैंने उन्हें सारी घटना बताई। फिर मैं चैन की नींद के लिए अपने घर चला गया।

अगली सुबह हमें पैंथर वहीं मिला जहाँ वह गिरा था। एक बूढ़ा नर, जिसकी खाल कुछ खुरदरी और पीली थी, उसमें आदमखोर होने के सारे लक्षण दिख रहे थे क्योंकि उसके नुकीले दांत बुढ़ापे के कारण घिस गए थे और उसके पंजे कुंद और फटे हुए थे।

लेकिन असली अपराधी को पकड़ने में सफल हुआ या नहीं, यह तो समय ही बताएगा।

दोपहर तक मैं उसकी खाल लेकर पहाड़ी से नीचे उतर रहा था।

उस घटना को हुए कई साल बीत चुके हैं, लेकिन येल्लागिरी या जावड़ी पर्वतमाला में उसके बाद किसी की भी मौत नहीं हुई है, इसलिए मुझे पूरा यकीन है कि उस रात आदमखोर सांप को पकड़ने में मैं सफल रहा था।

तीन

ओल्ड मुनुस्वामी और मगदी का पैंथर

मैं जिस शहर में रहता हूँ, वह बैंगलोर, भारत के पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी से लगे मद्रास शहर से लेकर पश्चिमी तट पर अरब सागर से लगे मंगलौर शहर तक खींची गई सीधी रेखा के लगभग मध्य में स्थित है। बैंगलोर समुद्र तल से लगभग तीन हजार फीट ऊपर एक पठार पर बसा है। यहाँ रहने वाला कोई भी व्यक्ति इसकी अनूठी जलवायु को कभी नहीं भूल सकता—न तो बहुत गर्म, न बहुत ठंडा, न ही बहुत बरसात, न बहुत सूखा—नवंबर से फरवरी के मध्य तक सर्दियों में सुहावनी धुंध भरी सुबहें और गर्मियों में भी ताजगी भरी ठंडी सुबहें। बैंगलोर नाम कन्नड़ शब्द 'बंगाल उरु' का अंग्रेज़ीकरण है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'बीन शहर', इसलिए इसे 'बीन का शहर' के नाम से जाना जाता है; और बैंगलोर के स्वादिष्ट फलों और सब्जियों का स्वाद चखने वाला कोई भी व्यक्ति इन्हें कभी नहीं भूल सकता, चाहे वे उष्णकटिबंधीय हों या यूरोपीय।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक बैंगलोर एक शहर के रूप में विकसित होने से बहुत दूर था। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में इसकी रणनीतिक सैन्य स्थिति, एक बड़े औद्योगिक शहर के रूप में विकसित होने की अपार क्षमता और अन्य सभी खूबियों ने मिलकर इसे भारत का सबसे लोकप्रिय स्थान बना दिया। युद्ध के दौरान और बाद में शरणार्थियों की व्यापक आमद के कारण, इसकी जनसंख्या तीन गुना हो गई है, यह अत्यधिक औद्योगीकृत हो गया है और अब एक तेजी से विकसित होने वाला शहर है।

लेकिन यह बैंगलोर की खूबियों का वर्णन नहीं है; बस इतना कहना था कि मैं एक बेहद खूबसूरत शहर में रहता हूँ। बैंगलोर कई पहाड़ियों पर बसा है, और अगर आप उनमें से किसी एक पर खड़े होकर चारों ओर देखें, तो आपको क्षितिज पर तीन बहुत ऊँची पहाड़ियाँ दिखाई देंगी, जो क्रमशः उत्तर, उत्तर-पश्चिम और पश्चिम दिशा में हैं। ये सभी पहाड़ियाँ पैंतीस मील के दायरे में हैं और प्रत्येक की ऊँचाई चार हज़ार फीट से अधिक है। उत्तर की ओर वाली पहाड़ी सबसे ऊँची है। वास्तव में यह एक नहीं बल्कि तीन पहाड़ियाँ हैं, जिनमें तीन चोटियाँ मिलकर नंदीद्रूग समूह बनाती हैं। 'द्रूग' का अर्थ है 'पहाड़ी किला', और इन तीन चोटियों में से सबसे पूर्वी चोटी पर एक पुराने किले के अवशेष हैं, जो आज भी अच्छी हालत में हैं। इसे मैसूर के वीर योद्धा टीपू सुल्तान ने बनवाया था। यह किला एक ऐसे बिंदु पर स्थित है जहाँ से लगभग 600 फीट की सीधी खाई दिखाई देती है। इसे 'टीपू की छलांग' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहीं पर यह बूढ़ा सैनिक अपने दुश्मनों को, जो उसे परेशान करते थे, आँखों पर पट्टी बाँधकर एक पतले, हिलते हुए तख्ते पर खाई के ऊपर चलने के लिए मजबूर करता था। अगर वे तख्ते के अंत तक चलकर वापस आ जाते, तो उन्हें बख्श दिया जाता था। ऐसा लगता है कि इस कारनामे को अंजाम देने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। शायद तख्ता बहुत ज्यादा हिलता था—या शायद उसे जानबूझकर बहुत ज्यादा हिलाया जाता था। कौन जाने? इतिहासकार इस बारे में स्पष्ट नहीं हैं।

बैंगलोर के उत्तर-पश्चिम में शिवनगंगा नामक पहाड़ी है। इसके शिखर पर एक मंदिर है और यह हिंदुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है। इसके शिखर पर एक कुआँ भी है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह इतना गहरा है कि उसका कोई तल नहीं है। एक अन्य मान्यता यह भी है कि यह

कुआँ एक गुप्त भूमिगत मार्ग का आरंभ है जो बैंगलोर तक पूरे पैंतीस मील तक जाता है।

पश्चिम की ओर स्थित तीसरी पहाड़ी को मगदी पहाड़ी के नाम से जाना जाता है। बैंगलोर की ऊँची ज़मीन से देखने पर यह चीनी से लदी हुई प्रतीत होती है; लेकिन जब आप वहाँ पहुँचते हैं तो पाते हैं कि इसमें ऊँट की तरह दो कूबड़ हैं। इनके बीच एक घनी घाटी है जिसमें प्रवेश करना कठिन है, क्योंकि रास्ते फिसलन भरे हैं; यदि आप फिसल गए, तो आपका हाल उन आँखों पर पट्टी बाँधे कैदियों से कुछ बेहतर नहीं होगा जिनके साथ टीपू नंदीड्रुग पर मनोरंजन करते थे।

यही वह घाटी है जो मुझे कहानी की शुरुआत तक ले जाती है, क्योंकि यहीं पर उस पैंथर की गुफा बताई जाती थी जिसने मगदी में आतंक मचा रखा था।

मगदी पहाड़ी चारों ओर से घने जंगलों और पहाड़ियों से घिरी हुई है। दक्षिण में आरक्षित वन का एक बड़ा हिस्सा है, जो पहाड़ियों की एक श्रृंखला को कवर करता है और संगम नामक स्थान के पास कावेरी नदी तक सत्तर मील से अधिक दक्षिण की ओर फैला हुआ है। इस क्षेत्र का पूरा हिस्सा आरक्षित वन नहीं है, लेकिन इसका एक बड़ा हिस्सा है, जबकि शेष भाग घनी झाड़ियों से आच्छादित है। पहाड़ियों की इस श्रृंखला के लगभग मध्य में, क्लोज़पेट और कंकनहल्ली कस्बों के बीच, चोटियाँ विशेष रूप से ऊँची और घनी हैं, और यह क्षेत्र पैंथरों से भरा हुआ है। यह शिकारगाह मेरे बेटे डोनाल्ड का पसंदीदा स्थान है। उसने वहाँ चालीस पैंथर और एक दर्जन से अधिक भालू मारे हैं, और उसकी उम्र अभी तेईस साल से थोड़ी ही अधिक है।

मगदी पहाड़ी के पश्चिम में कम झाड़ियों वाले मैदान हैं। यहाँ काले हिरण, खरगोश, मोर, तीतर और बटेर बहुतायत में पाए जाते हैं। पहाड़ उत्तर की ओर भी जारी हैं, लेकिन वहाँ वे काफी कम ऊँचे हैं। पूर्व में अधिक पहाड़ी क्षेत्र है, और बैंगलोर लगभग पैंतीस मील दूर है। अर्करावर्थी नदी, जो अपेक्षाकृत छोटी धारा है, तेईसवें मील के पत्थर के पास बैंगलोर जाने वाली सड़क को पार करती है, और ठीक वहीं पर इस पर बांध बना हुआ है। इसका जल संग्रहण क्षेत्र इतना बड़ा है कि वर्ष के सबसे सूखे समय में भी बैंगलोर को पर्याप्त जल आपूर्ति सुनिश्चित कर सके। इस बांध को तिप्पगोंडाहल्ली के नाम से जाना जाता है, और विशाल पंप शेष तेईस मील की दूरी तय करके बैंगलोर तक पानी पहुंचाते हैं।

यह उस देश का पूरा परिदृश्य है जहाँ यह तेंदुआ पहली बार दिखाई दिया था। यह न सोचें कि मैंने इस जानवर को 'तेंदुआ' नाम दिया है, इसलिए इसमें कोई खास बात है। तेंदुआ और पैंथर एक ही प्राणी हैं। मेरी जानकारी के अनुसार, भारत में हम इन्हें अक्सर पैंथर कहते हैं, जिसका कोई ठोस कारण नहीं है।

जिन घटनाओं का मैं वर्णन करने जा रहा हूँ, वे अंतिम युद्ध से पहले घटित हुई थीं।

इस पैंथर ने मगदी पहाड़ी की तलहटी में बसे कुछ बिखरे हुए गांवों में कुछ बकरियों और एक-दो ग्रामीण कुत्तों को मार डाला। किसी ने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उस इलाके में पैंथर पीढ़ियों से ऐसा करते आ रहे थे और लोग उनके साथ पले-बढ़े थे।

समय बीतता गया और उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया। उसने कुछ युवा बैलों और कुछ गायों को भी मार डाला।

भारत में बैल एक पवित्र पशु है और कोई भी हिंदू उसका मांस नहीं छूता। फिर भी, सारा कठिन काम बैल ही करता है। वह खेतों की जुताई करता है और बैलगाड़ियाँ खींचता है। यहाँ तक कि वह चूना पीसने वाले विशाल पत्थर के पहियों को भी घुमाता है। लेकिन उसके अनेक उपयोगों और अत्यधिक महत्व को देखते हुए, लोग कभी-कभार किसी तेंदुआ द्वारा अपने बैलों में से किसी एक को खा लेने पर आपत्ति नहीं करते—बशर्ते वह अत्यधिक लालची न हो जाए। लेकिन जब वह गायों को मारने लगता है—जो दूध और मक्खन देती हैं, जिनसे घी बनता है, जो पिघला हुआ

मक्खन है और पूरे देश में खाना पकाने में उपयोग किया जाता है और जिसका बहुत महत्व है—तो वह एक अक्षम्य अपराध करता है और अब कुछ करने का समय आ गया है।

बैंगलोर में एक व्यक्ति रहता है—और मैं वर्तमान काल का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि वह अभी भी वहीं है—जिसका नाम मुनुस्वामी है, जो खुद को एक पेशेवर 'सज्जन शिकारी' गाइड बताता है। वह एक धूर्त भी है। वह शिकार की खबरें शहर में लाता है और उन्हें नौसिखियों और अनुभवहीन लोगों को बताता है। 'मास्टर, व्हाइटफील्ड के पास चालीस जंगली सूअरों का झुंड है, जहाँ आप शिकार कर सकते हैं, वह बारह मील दूर है।' या, 'मास्टर, मगदी रोड पर दसवें मील और मैसूर शहर जाने वाली सड़क पर अठारहवें मील पर काले हिरणों के कई झुंड हैं, प्रत्येक में पचास जानवर हैं, जिन्हें मास्टर बहुत आसानी से मार सकते हैं।' वह जानकारी के बदले में उचित अग्रिम राशि मांगता है, और यदि वह तय दिन पर नौसिखिए के साथ उस स्थान पर जाता है, तो नौसिखिए आमतौर पर यह सोचकर हैरान रह जाता है कि उन ढेरों जंगली सूअरों और काले हिरणों का क्या हुआ, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे वहाँ बहुतायत में हैं। लेकिन मुनुस्वामी को एक पल के लिए भी कम मत समझिए। वह बहुत बुद्धिमान और झूठ बोलने में माहिर है। 'देखिए, मालिक,' वह कहेगा, 'मैंने आपको बहुत पहले ही जल्दी आने को कहा था। आप नहीं आए। कल ही बड़ी भीड़ में कुछ सैन्य अधिकारी साहब गाड़ी में आए थे। उन्होंने दो सूअरों को गोली मार दी। अब सब भाग गए हैं। मालिक, फिर किसी और दिन आइएगा, ठीक है?'

जंगली सूअर और काले हिरण मुनुस्वामी के लिए तो बस मामूली शिकार हैं। उन्हें अपने असली रूप में देखना तब संभव होता है जब वे किसी अनुभवहीन शिकारी को किसी तेंदुआ के बारे में खबर सुनाते हैं, जिसे जीवन का सबसे बड़ा सबक मिलने वाला होता है। वे बंगले के द्वार पर हाज़िर होंगे या सड़क पर साहब से कुछ इस तरह कहेंगे: 'सर, मैं बड़ा सज्जन शिकारी-गाइड हूँ। मैं मालिक को काले हिरण, जंगली सूअर, मोर, खरगोश, तीतर और हरे कबूतर दिखाता हूँ। या मालिक को चिड़िया और जंगली बत्तखें पसंद हैं? ये दिसंबर के महीने में बहुत सारी आती हैं - क्रिसमस का समय होता है। मालिक को बहुत बड़ा तेंदुआ मारना पसंद है? उनके पास एक बड़ा तेंदुआ है। यहाँ से केवल पंद्रह मील दूर, कंकनहल्ली रोड पर। मालिक पंद्रह चिप्स एडवांस देते हैं, मैं एक गधा बाँध देता हूँ। तेंदुआ गधे को मार देता है, मैं आकर मालिक को बताता हूँ। मैं एक बढ़िया मचान भी बनाता हूँ। मालिक तेंदुआ को आसानी से मार देते हैं।'

नौसिखिए को अचंभित कर दिया गया। एक जिंदा शिकार के लिए सिर्फ पंद्रह रुपये? एक पैंथर सिर्फ पंद्रह मील दूर? किसने कहा था कि शिकार करना एक महंगा या मुश्किल शौक है?

तो पंद्रह रुपये मुनुस्वामी को दे दिए जाते हैं, जिसे याद आता है कि मालिक को शिकार की खबर देते समय उसे खाने के लिए दो रुपये और बस के किराए के लिए तीन रुपये और देने होंगे। नौसिखिए को यह बहुत वाजिब लगता है और वह पाँच रुपये और दे देता है। मुनुस्वामी अत्यंत संतुष्ट होकर चला जाता है।

सबसे पहले वे स्थानीय ताड़ी की दुकानों में से एक पर जाते हैं। वे केवल ताड़ी ही पीते हैं और शराब से परहेज करते हैं, क्योंकि उनका कहना है कि वह उनके लिए बहुत तेज़ होती है। लेकिन वे ताड़ी की तीन बोतलें पी जाते हैं। यह नारियल के पेड़ का किण्वित रस होता है। फिर बूढ़े मुनुस्वामी गहरी नींद में सो जाते हैं।

अगले दिन वह उठता है और पूरी लगन से 'पैंथर' को फंसाने के काम में जुट जाता है।

बैंगलोर में आवारा पशुओं, कुत्तों और गधों के लिए दो पशु बाड़े हैं। अगर आपका गधा बाड़े में बंद है, तो उसे वापस लेने का आधिकारिक शुल्क एक रुपया है। लगभग दस दिनों के बाद, लावारिस जानवरों को सार्वजनिक नीलामी में बेच दिया जाता है ताकि उन दस दिनों के दौरान

उनके पालन-पोषण में हुए खर्च का कुछ हिस्सा वसूल किया जा सके। ये नीलामियाँ सप्ताह में लगभग दो बार होती हैं, और मुनुस्वामी के लिए इनमें से किसी एक में जाकर लगभग दो रुपये में गधा खरीदना बहुत आसान है। या फिर वह अवैध रूप से खुद को बंद जानवरों में से किसी एक का मालिक बताकर उस पर अपना दावा कर सकता है। आखिर, एक गधा दूसरे गधे जैसा ही दिखता है, और प्रभारी अधिकारी के पास मुनुस्वामी के दावे की सच्चाई की जाँच करने का कोई तरीका नहीं है, खासकर तब जब वह किसी मित्र या एजेंट को यह दावा करने के लिए भेजता है।

इस प्रकार मुनुस्वामी को वह गधा, जिसके लिए साहब ने उसे पंद्रह रुपये दिए थे, केवल दो रुपये में मिल गया, जिससे उसे तेरह रुपये का लाभ हुआ, जो उसकी प्रारंभिक लागत पर संभावित 650 प्रतिशत लाभ दर्शाता है। वाकई एक शानदार शुरुआत।

फिर वह साहब को बताए गए तेंदुआ के मिलने की जगह तक कई मील पैदल चलकर जाता है और गधे को वहाँ दो-तीन दिन के लिए बाँध देता है। तीसरे दिन सुबह तड़के वह खुद गधे को मार डालता है। वह इस तरह करता है: उसके पास एक बड़ा सा चाकू होता है जिसमें लगभग एक दर्जन चीज़ें लगी होती हैं, जिनमें एक गोल नुकीला औजार भी होता है, जो शायद घोड़ों के खुरों से पत्थर निकालने के लिए बनाया गया था। कम से कम मुझे तो यही बताया गया है, लेकिन मैं खुद पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूँ। इस भद्दे औजार से वह बेचारे जानवर की गर्दन की नस में वार करता है और जब वह गिर जाता है, तो वह फिर से वार करता है, कुल मिलाकर चार घाव करता है, गले के दोनों तरफ दो-दो। उसी चाकू के धारदार सिरे से वह पेट चीरता है, आँतों को बिखेर देता है और बाहरी चमड़ी से मांस के कुछ टुकड़े नोच लेता है। फिर वह शव को टहनियों से ढक देता है। अंत में, वह अपने साथ लाए एक गंदे थैले से एक रहस्यमयी वस्तु निकालता है। क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि यह क्या है? यह मुनुस्वामी का सबसे बेहतरीन करतब है। यह एक पैंथर का पंजा है, जिसे भूसे से भरकर बनाया गया है। इसकी मदद से वह जगह-जगह पंजों के निशान बनाता है।

दृश्य को अपनी विशेषज्ञता के अनुरूप तैयार करने के बाद, मुनुस्वामी कुछ आने देकर एक लॉरी में लिफ्ट लेकर शहर जाता है और बड़े उत्साह से साहब को बुलाता है। अनुभवहीन साहब भी उत्तेजित हो जाते हैं। हड़बड़ी में वह अपनी पत्नी से अपने लिए सैंडविच और थर्मस में चाय तैयार करवाता है, जबकि वह खुद अपनी राइफल साफ करता है, गोलियां, टॉर्च, बैटरी और कई अन्य छोटी-मोटी चीजें इकट्ठा करता है—जिनमें से अधिकांश का वह कभी उपयोग नहीं करता और वैसे भी वे बेकार ही हैं। फिर वह मुनुस्वामी को लेकर तेज गति से उस जगह की ओर निकल पड़ता है जहाँ 'पैंथर' ने 'हत्या' की है।

मुनुस्वामी ने ज़मीन पर बने पंजों के निशान और गधे के गले पर बने तेंदुए के दांतों के निशानों की ओर इशारा किया, और साहब आश्वस्त हो गए। उन्होंने दो कुलियों की मदद से एक मचान बंधवाने का भी इंतज़ाम किया, जिनके काम के लिए उन्होंने दो-दो रुपये लिए, जबकि उन्हें उन्होंने केवल बारह आने ही दिए। अंत में, साहब के ऊपर जाने से पहले, उन्होंने एक सौदा तय किया। यदि मालिक तेंदुए को मार गिराता है, तो उसे मुनुस्वामी को बीस रुपये बख्शीश देनी होगी। यदि मालिक चूक जाता है—जो मालिक की अपनी गलती है—तो उसे अपने वफादार सेवक को दस रुपये देने होंगे। यदि तेंदुए नहीं मिलते—मालिक को यह नहीं भूलना चाहिए कि तेंदुए बहुत ही चालाक जानवर होते हैं और कभी-कभी शिकार पर वापस नहीं आते—तो मुनुस्वामी ने मालिक के लिए चिलचिलाती धूप में बहुत मेहनत की है और उसे पाँच रुपये मिलने चाहिए। सौदा तय हो गया।

आश्चर्यजनक रूप से, मुनुस्वामी अपने गुरु पर उतना ही भरोसा करता है, जितना वह गुरु से

अपने प्रति भरोसे की अपेक्षा करता है।

खैर, पैंथर नहीं आता—और इसका कारण भी बिल्कुल स्पष्ट है: कोई पैंथर है ही नहीं। मुनुस्वामी पहले अपने पाँच रुपये जेब में रख लेता है, फिर मालिक को यह कहकर दिलासा देता है कि पैंथर अप्रत्याशित प्राणी होते हैं और शायद अगली बार आ जाए। वह दूसरा गधा बाँधने की पेशकश करता है। और कहानी ऐसे ही चलती रहती है, जब तक कि नौसिखिए ने इन मायावी प्राणियों में से किसी एक को देखने का विचार ही छोड़ दिया और अपना ध्यान जंगली बत्तख या तीतर पर केंद्रित करने का फैसला कर लिया। यहाँ भी मुनुस्वामी काम आता है।

आप मुझसे पूछ सकते हैं: 'आपको मुनुस्वामी के बारे में यह सब कैसे पता है?' मैं भी एक समय ऐसा ही अनुभवहीन था और उन्होंने मुझे कम से कम चार बार बेवकूफ बनाया था। एक दिन मुनुस्वामी के साथ एक दुर्घटना घटी। वह मुझे उनके पगडंडियों के निशान दिखा रहे थे। एक आवारा कुत्ता हमें उत्सुकता से देख रहा था और अचानक एक झाड़ी में घुस गया और कपड़े का थैला लेकर बाहर आया। मुनुस्वामी घबराकर उसके पीछे भागे। कुत्ता भागा और थैले से कुछ धब्बेदार चीज़ गिर गई। मुनुस्वामी और मैं दोनों उसे लेने दौड़े। वह एक तेंदुआ का भरा हुआ पैर था। फिर, गधे की मौत से भी कहीं ज़्यादा भयानक मौत के खतरे के बावजूद, उन्होंने मुझे अपनी कार्यशैली विस्तार से बताई, ठीक वैसे ही जैसे मैंने आपको बताई है।

मैं धैर्यवान व्यक्ति हूँ और 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत में विश्वास रखता हूँ। अगर मेरे जैसे नासमझ लोग हैं, जो बस 'उठाए जाने' का इंतज़ार कर रहे हैं, तो मुनुस्वामी उन्हें क्यों न चुनें? इसलिए, मैंने कभी भी उनके खेल में बाधा नहीं डाली और मुनुस्वामी मुझे पसंद करते हैं।

यह मत सोचिए कि यह बताकर मैं उसका खेल बिगाड़ रहा हूँ, क्योंकि मुनुस्वामी बैंगलोर में फैले शिकारियों के गिरोह में नए सदस्य से मिलते समय हर बार अपना नाम बदल लेता है। वह रामैया, पूजा, पूनिया या सौ अन्य नामों से जाना जा सकता है। लेकिन अगर आप कभी बैंगलोर आएं और हमारे गिरोह में शामिल होना चाहें, तो मैं आपको उसके बारे में एक संकेत देता हूँ—एक सामान्य सा वर्णन। अगर कोई अंग्रेज़ी बोलने वाला 'सज्जन शिकारी-गाइड' आपसे मिले—एक दुबला-पतला, लंबा, अधेड़ उम्र का, गहरा काला आदमी, जिसके लंबे बाल पीछे की ओर बंधे हों और एक गांठ हो, और बड़ी उभरी हुई आँखें हों—चाहे उसने पगड़ी पहनी हो या टोपी, धोती, लुंगोटी या ढीली पतलून या शॉर्ट्स, और चाहे वह अपना नाम जैक जॉनसन ही क्यों न बताए, उससे दूर रहें और अपना पर्स किसी दराज में सुरक्षित रख दें। बहुत संभव है कि वह मेरा पुराना दोस्त मुनुस्वामी ही हो, वही खुशमिजाज 'टेढ़ा-मेढ़ा' गाइड।

इस व्यक्ति के बारे में बात करते हुए, मुझे पता है कि आपको लग सकता है कि मैं अपनी कहानी से बहुत भटक गया हूँ। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है, क्योंकि वह कहानी की शुरुआत और अंत में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और मुझे यकीन है कि आपको इस अनोखे और विलक्षण चरित्र से परिचित होने में आनंद आया होगा।

मुनुस्वामी को मगदी पहाड़ी क्षेत्र में बैल और गायों को मारने वाले तेंदुओं की गतिविधियों के बारे में पता चला था। यह मत सोचिए कि मुनुस्वामी भले ही अपने बनाए हुए तेंदुओं का इस्तेमाल करते थे, लेकिन उन्हें असली तेंदुओं के बारे में कुछ भी नहीं पता था। उन्हें पता था। सालों पहले, जब वे जवान थे और हालात इतने कठिन नहीं थे, तब वे खुद एक सच्चे शिकारी थे और इन जानवरों के बारे में काफी कुछ जानते थे। इसलिए जब उन्हें यह सूचना मिली, तो वे बस से मगदी गए और खुद जाकर जाँच-पड़ताल की, जिससे उन्हें पता चला कि तेंदुआ अक्सर बकरियों और मवेशियों को मार रहा था।

आप समझ सकते हैं कि उनके तौर-तरीकों और इस अजीब तथ्य के कारण कि मुनुस्वामी के

साथ शिकार पर जाने वाले किसी भी व्यक्ति ने कभी पैंथर नहीं देखा, और बहुत कम ही कुछ और देखा, एक गाइड के रूप में उनकी प्रतिष्ठा धूमिल हो रही थी। यूरोपीय और भारतीय, दोनों ही तरह के अनुभवी और नौसिखिए, आधे से अधिक शिकारी पुरुषों के घर उनके लिए बंद हो चुके थे। मुनुस्वामी के लिए यह बहुत ही दयनीय स्थिति थी और इसका सीधा असर उनकी आय और परिणामस्वरूप उनके पेट पर पड़ रहा था। अब समय आ गया था कि वे इस समस्या का समाधान करें और खुद को निर्दोष साबित करें।

पैंथर का निडरतापूर्वक और बार-बार शिकार करना उसे आसानी से पकड़ने लायक बना देता था, और इसी बात ने मुनुस्वामी की छिपी हुई शिकार की प्रवृत्ति को जगा दिया। उसने फैसला किया कि वह जानवर को मार गिराएगा और फिर शहर में जुलूस निकालकर इस बात का प्रचार करेगा। इस जुलूस में पैंथर को ढोल की थाप पर बिठाकर बेंगलुरु की सड़कों पर घुमाया जाएगा। इससे भी बेहतर यह होगा कि मुनुस्वामी पैंथर के साथ अपनी तस्वीर खिंचवाएगा और उसकी प्रतियां अपने उन ग्राहकों को देगा जिनसे अभी भी उसके अच्छे संबंध हैं। जो ग्राहक संपर्क में नहीं हैं, उन्हें वह डाक से प्रतियां भेजेगा। प्रत्येक प्रति के पीछे वह एक छोटा सा बयान लिखेगा कि शिकारी मुनुस्वामी ने फलां दिन, फलां जगह पर इस पैंथर को मारा है, क्योंकि उसके साथ आए साहब, उसकी तमाम मदद के बावजूद, ऐसा करने में असमर्थ रहे थे।

जैसे-जैसे वह इस बारे में सोचता गया, बूढ़े मुनुस्वामी को यह विचार और भी रोमांचक लगने लगा। इससे उन्हें सोचने के लिए कुछ मिलेगा और उनकी घटती प्रतिष्ठा को जबरदस्त बढ़ावा मिलेगा।

बहुत समय पहले अपनी बंदूक बेच देने के बाद, उसने किसी तरह एक पुरानी, हथौड़े के आकार की .12 बोर वाली दोहरी बैरल वाली बंदूक उधार ली। फिर वह उस जगह पर वापस आया और ग्रामीणों को बताया कि वह, मुनुस्वामी, एक बूढ़ा शिकारी, जिसने कभी जनरलों और वायसराय के साथ सेवा की थी, उस जानवर को मारने आया है जो उन्हें इतना नुकसान पहुंचा रहा है। उसने कहा कि वह मगदी गांव में रहना चाहता है, जो उस पहाड़ी से लगभग चार मील उत्तर-पश्चिम में स्थित है जिसके नाम पर इस गांव का नाम पड़ा है, और उसने ग्रामीणों से कहा कि अगर उनके किसी जानवर को मार दिया जाए तो उसे तुरंत सूचना दें।

दो दिन बाद खबर आई कि पैंथर ने एक और गाय को मार डाला है। एक कारतूस और तीन अन्य कारतूस, जिनमें एल.जी. (लॉन्ग-ग्लाइसीलिएटेड) गोलियां थीं, जो उसने बंदूक के साथ उधार ली थीं, लेकर मुनुस्वामी घटनास्थल पर पहुंचा, अपनी मचान बांधी और पैंथर के कंधे के ऊपरी हिस्से में कारतूस से गोली मार दी। दूसरे कारतूस में मौजूद एल.जी. (लॉन्ग-ग्लाइसीलिएटेड) - क्योंकि उसने दोनों कारतूस एक साथ चलाकर सुनिश्चित किया था - ने भी उसे घायल कर दिया, लेकिन पैंथर फिर भी बच निकला। बाद में स्थिति का जायजा लेते हुए, मुनुस्वामी ने फैसला किया कि घायल पैंथरों का पीछा करने के लिए अब उसकी उम्र काफी बढ़ चुकी है। इसके अलावा, जिस 'प्रचार स्टंट' ने उसकी कल्पना को हवा दी थी, उससे मिलने वाले फायदे अब पैंथर द्वारा छोड़े गए खून के निशान का पीछा करने के खतरों के मुकाबले काफी नहीं लग रहे थे। इसलिए उसने उस दिन का काम वहीं खत्म करने का फैसला किया और बैंगलोर लौट गया।

कई सप्ताह बीत गए, और फिर वही पुरानी कहानी, जो हमेशा एक ही तरह से शुरू होती है, अपने सामान्य क्रम में आगे बढ़ी। मगदी से क्लोज़पेट तक फैली 22 मील लंबी सड़क के किनारे बसे कुछ गांवों के बाहर एक पैंथर ने कुत्तों और बकरियों पर हमला करना शुरू कर दिया। दो मामलों में, बकरियों के रखवालों ने अपनी बकरियों को बचाने की कोशिश की और उन पर हमला

हो गया। इस हमले में एक आदमी और एक लड़के को बुरी तरह घायल कर दिया गया।

फिर एक जूटका चालक और उसका टट्टू कहानी में आए। तीन लोग एक रात क्लोज़पेट रेलवे स्टेशन पर मैसूर से आने वाली रात की ट्रेन से उतरे। उस समय बस सेवा उपलब्ध न होने के कारण, इन तीनों ने क्लोज़पेट से दस मील दूर स्थित अपने गाँव तक जूटका से जाने का फैसला किया। जूटका, उन लोगों के लिए जो इस शब्द से परिचित नहीं हैं, दो पहियों वाला वाहन होता है जिसकी छत बांस से मजबूत की गई चटाई की अंडाकार होती है, और इसे एक विशेष रूप से पाले गए छोटे आकार के टट्टू द्वारा खींचा जाता है। जूटका के टट्टू आम गाँव के टट्टुओं से मिलते-जुलते हैं, सिवाय इसके कि उनके बाल और पूंछ छोटे होते हैं।

जूटका अपने गंतव्य पर पहुँची और यात्रियों को उतार दिया। चालक ने गाँव में ही सोने और अगली सुबह क्लोज़पेट लौटने का फैसला किया। उसने अपने टट्टू को खोलकर उसे सूखी घास खिलाई, जो उसने गाड़ी के फर्श के ठीक नीचे लटकी बोरी में रखी थी। फिर वह सो गया।

टट्टू ने घास चर ली और फिर गांव की गली में भटकने लगा, इस उम्मीद में कि उसे वहां और घास मिल जाएगी। इस तरह वह गांव के बाहरी इलाके में पहुंच गया, जो कि एक छोटा सा गांव था।

गली के किनारे बनी आखिरी झोपड़ी के पीछे से अचानक कोई चीज़ उछलकर उसके बगल में आ गई और उसका गला नोचने लगी। ज़ोर से हिनहिनाते हुए टट्टू गली में वापस भाग गया। हमला करने वाली चीज़ ने टट्टू के गले पर अपनी पकड़ बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन गिर पड़ी, हालांकि गिरने से पहले उसने उसे एक गहरा घाव दे दिया था। वह चीज़ पैंथर थी।

भयभीत टट्टू की आवाज़ और पैंथर की दहाड़ से जूटका मालिक की नींद खुल गई, जिसने देखा कि उसका जानवर उसकी ओर दौड़ रहा है। वह डर से कांपते हुए रुक गया, उसके गले से खून बह रहा था। उसने तुरंत अलार्म बजाया।

टट्टू जूतका को खींच नहीं सका; इसलिए अगले दिन मालिक उसे पैदल ही क्लोज़पेट वापस ले गया, जहाँ उसने पुलिस को मामले की सूचना दी। खबर फैल गई और यह बात सबको पता चल गई कि इलाका एक ऐसे पैंथर से खतरे में है जो किसी भी दिन आदमखोर बन सकता है।

कुछ ही समय बाद, मगदी गाँव से दो मील की दूरी पर एक व्यक्ति पर हमला हुआ और उसे बुरी तरह घायल कर दिया गया। कुछ दूरी पर अपने खेतों में काम कर रहे ग्रामीण मदद के लिए दौड़े और उन्होंने उसे जमीन पर पड़ा पाया, जिसके शरीर पर जानवर के नुकीले पंजों से बुरी तरह खरोंचें और घाव थे। वे उसे मगदी गाँव ले गए और वहाँ के स्थानीय निधि अस्पताल में उसका इलाज किया गया। पुलिस में सूचना दर्ज कराई गई और स्थानीय पुलिस अधिकारी, जिसका पद लगभग सार्जेंट के बराबर होता है, गाँव का सबसे वरिष्ठ अधिकारी और पुलिस चौकी का प्रभारी होने के नाते, सबूतों की मौके पर जाँच करने के लिए एक कांस्टेबल के साथ साइकिल पर रवाना हुआ।

उन्हें उस जगह ले जाया गया जहाँ रैयतों ने घायल आदमी को उठाया था। जब वे खून के निशान और जानवरों के पैरों के निशान देख रहे थे, और शायद पुलिसकर्मियों की तरह ढेर सारे नोट्स बना रहे थे, तभी किसी ने ऊपर देखा और कहा कि उन्हें एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर एक चट्टानी टीले पर एक पैंथर लेटा हुआ दिखाई दे रहा है, जो मुश्किल से दो फर्लांग दूर था। दाफेदार ने उसे देखा, अपने कांस्टेबल की साइकिल उधार ली, और तेज़ी से वापस गाँव की ओर भागा ताकि वहाँ मौजूद पुलिस शस्त्रागार में रखी तीन राइफलों में से एक ले आए।

हालांकि वह तेजी से साइकिल चलाकर वापस लौटा, लेकिन जब तक वह उस स्थान पर पहुंचा, उसके कांस्टेबल और एक-दो ग्रामीणों ने, जो वहीं रुके हुए थे, बताया कि पैंथर पहाड़ी की

चोटी के पीछे गायब हो गया था। ग्रामीणों ने दफ्फेदार को बताया कि यदि वह पहाड़ी के चारों ओर से घूमकर जाए—दूरी बहुत ज्यादा नहीं थी—तो शायद वह पैंथर को दूसरी तरफ से घेर सके।

दफ्फेदार बेहद उत्साही और बहादुर था। उसने एक ग्रामीण को शॉर्टकट बताने के लिए साथ लिया और पहाड़ी के चारों ओर तेजी से घूमकर अपनी बंदूक में एक 303 कारतूस लोड किया। भारत में पुलिस बल सैन्य बलों के समान राइफलों से लैस होते हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि उनमें आमतौर पर बारूद की तीलियां नहीं होतीं, ताकि एक बार में सिर्फ एक ही कारतूस दागा जा सके। इससे दंगे या स्थानीय अशांति के समय किसी पुलिसकर्मी को बेवजह गोली चलाने से रोका जा सकता है। इसी कारण दफ्फेदार के पास सिर्फ एक ही कारतूस था और दो-तीन कारतूस उसकी जेब में थे।

वे पहाड़ी के दूसरी ओर पहुँचे, लेकिन उन्हें पैंथर का कोई निशान नहीं मिला। वहाँ कई बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे, और गाँववाले ने सुझाव दिया कि वे पहाड़ी पर थोड़ा ऊपर चढ़ें, क्योंकि पैंथर शायद कहीं आसपास ही होगा। उन्होंने ऐसा ही किया, और कुछ चट्टानों के बीच या पीछे से पैंथर प्रकट हुआ। दाफेदार चौंक गया और उसने कमर से गोली चलाई, जो पूरी तरह से चूक गई। अगले ही पल वह ज़मीन पर पड़ा था और पैंथर उसके ऊपर था, उसकी छाती और बांहों पर काट और खरोंच रहा था। उसका साथी तेज़ी से पहाड़ी से नीचे भाग रहा था।

कुछ सेकंड तक अपना क्रोध प्रकट करने के बाद, वह पैंथर, जो अभी तक आदमखोर नहीं बना था, घायल पुलिसकर्मी को छोड़कर वापस चट्टानों की ओट में चला गया जहाँ से वह आया था। बुरी तरह घायल दाफेदार वहीं पड़ा रहा जहाँ उस जानवर ने उसे छोड़ा था।

इसी बीच भागता हुआ ग्रामीण वापस कांस्टेबल और अन्य ग्रामीणों के पास लौटा और उन्हें सारी घटना बताई। कांस्टेबल तुरंत अपनी साइकिल पर सवार होकर गांव के पुलिस स्टेशन की ओर भागा, जहां उसने स्थानीय पुलिस बल के अन्य तीन सदस्यों को बुलाया और उन्हें बताया कि उनके दाफेदार की संभवतः हत्या कर दी गई है।

अपने रैक से बची हुई दो राइफलें और दो लाठियाँ लेकर, कानून के चार प्रतिनिधि पहाड़ी की ओर तेज़ी से वापस लौटे। रास्ते में और भी ग्रामीण उनके साथ जुड़ते गए। दस से अधिक लोगों के एक दल ने अंततः गंभीर हालत में दफ्फेदार को उठाया और उसे स्थानीय निधि अस्पताल ले गए। अगले दिन बैंगलोर से एक एम्बुलेंस बुलाई गई, जो उसे शहर के विक्टोरिया अस्पताल ले गई।

पैंथर के विभिन्न हमलों की सभी रिपोर्टें दर्ज कर ली गई थीं, लेकिन जब उसने उनके ही एक सिपाही—और वह भी एक दफ्फेदार—पर हमला किया, तो पुलिस सचमुच हरकत में आ गई। उन्हें यह पता लगाने में ज्यादा समय नहीं लगा कि इस सारी परेशानी की जड़ कौन था, और इसी समय, शरारती शिकारी गाइड, बूढ़ा मुनुस्वामी, फिर से मैदान में आ गया।

पुलिस ने उसे पकड़ लिया। गवाहों ने गवाही दी थी कि उसने एक मचान बनाया और पैंथर के लिए बैठ गया। उन्होंने यह भी कहा कि उसने उसे घायल कर दिया था। ऐसा करने के लिए उसने बंदूक का इस्तेमाल किया होगा। क्या उसके पास बंदूक थी? क्या उसके पास शस्त्र लाइसेंस था? क्या वह बिना लाइसेंस वाली बंदूक छिपा रहा था? क्या उसने बंदूक उधार ली थी? किससे? क्यों? कब? कहाँ? क्या मालिक के पास लाइसेंस था? उसने कितने कारतूस लिए थे?

उन्हें एक सौ एक सवालों के जवाब देने थे। कुल मिलाकर, बेचारे मुनुस्वामी को समझ आ गया था कि उनका समय बहुत बुरा बीतने वाला है। उन पर लगे आरोपों की संख्या इतनी ज़्यादा थी कि अगर दाफेदार की ज़ख्मों से मौत हो जाती है तो उन पर 'संभावित हत्या' का आरोप

लगाया जा सकता है—ये आरोप एक पूरा पन्ना भर देते थे और निस्संदेह उन्हें लंबे समय तक जेल में भेज देते।

तब मुनुस्वामी की जन्मजात सूझबूझ काम आई और उन्होंने अपना सबसे बड़ा सौदा किया। उन्होंने चार दिनों के भीतर पैंथर को गोली मारकर उसका शव जिला पुलिस अधीक्षक (डी.एस.पी.) के चरणों में रखने का वचन दिया। अगर वे असफल रहे, तो पुलिस उनके साथ जो चाहे कर सकती थी। अगर वे सफल रहे, तो उन पर लगे आरोप भुला दिए जाएंगे।

डीएसपी, एक व्यावहारिक अधिकारी होने के नाते, मुनुस्वामी पर मुकदमा चलाने की बजाय पैंथर को गोली मारने में अधिक रुचि रखते थे। क्योंकि यह स्पष्ट था कि यह जानवर आदमखोर बनने की राह पर था; जबकि मुनुस्वामी, अपने सभी कुटिल तरीकों के बावजूद, इतनी कुख्याति तक पहुँचने की संभावना नहीं थी। इसलिए डीएसपी ने उसे केवल चार दिन की सजा देकर लॉक-अप से रिहा कर दिया।

उसी दोपहर मैंने अपने दरवाजे पर लगातार 'सर, सर' की आवाज़ सुनी। यह मुनुस्वामी थे। उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे—वे इतनी जल्दी कैसे बहने लगे, यह एक रहस्य है जो उन्होंने अभी तक मुझे नहीं बताया है—उन्होंने अपनी पूरी दुख भरी कहानी शुरू से अंत तक सुनाई, और उस पैंथर के बारे में वह सारी जानकारी दी जो उन्हें पता थी या जो वे जुटा पाए थे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने यहाँ कहानी बताई है।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उनके पास पैंथर को मारने के लिए सिर्फ़ चार दिन हैं, अगर वे ऐसा नहीं कर पाए तो उन्हें 'बड़ी-बड़ी जेल' जाना पड़ेगा, जैसा कि उन्होंने खुद कहा था। मैंने हँसते हुए उनसे पूछा कि वे भाग क्यों नहीं गए। उन्होंने माना कि यह विचार उनके मन में आया था, लेकिन पूरे भारत में उन्हें ऐसे खेल-प्रेमी साहब कहाँ मिलेंगे जो उन्हें इतनी आसानी से पैसे दे दें; ऐसी उदार नीलामी जहाँ वे सिर्फ़ दो रुपये में ज़िंदा गधे खरीद सकें; और, ओह! बैंगलोर में रहने के और भी कई फ़ायदे। इन विचारों से बूढ़ा आदमी टूट गया और उसकी आँखों से पहले से कहीं ज़्यादा आँसू बहने लगे। मुझे यह जानकर हैरानी नहीं होती कि उनमें से कुछ आँसू सचमुच के थे।

क्या मैं इस पैंथर को गोली मारकर उसकी मदद कर सकता हूँ? मैं उसे बचा लूँगा, और ओह! उन अनगिनत लोगों को भी बचा लूँगा जिन्हें यह पैंथर मार सकता है।

मैंने दूसरी बात मान ली, लेकिन मैंने मुनुस्वामी से साफ-साफ कह दिया कि मुझे पहली बात में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। उन्हें बुरा नहीं लगा। मैंने कहा कि मैं उनकी मदद एक शर्त पर करूंगा: चूंकि निस्संदेह वही सारी परेशानी की जड़ थे, इसलिए पैंथर को गोली मारते समय उन्हें मेरे साथ रहना होगा और भागना नहीं होगा।

सहमति जताते हुए उस बूढ़े व्यक्ति ने सचमुच मुस्कुरा दिया। हैरानी की बात यह थी कि उसके आंसू पूरी तरह गायब हो गए थे।

उसी शाम मैं उसे डीएसपी के घर ले गया, जहाँ मैंने हँसते हुए मुनुस्वामी के आने की सारी बातें बताईं। मैंने पुलिस अधिकारी से कहा कि मुझे नहीं पता कि मुनुस्वामी को पैंथर को मारने के लिए चार दिन की मोहलत देना वाकई गंभीर था या नहीं, लेकिन मैंने यह भी कहा कि अगर ऐसा है तो यह समय सीमा एक बाधा है, क्योंकि मैं उस बूढ़े बदमाश को अपने साथ रखना चाहता हूँ ताकि वह मेरी मदद कर सके, और अगर पाँचवें दिन पुलिस आकर उसे ले जाए तो यह एक झंझट बन जाएगा।

डीएसपी ने जवाब दिया कि उनका इरादा वास्तव में मुझे अपना काम पूरा करने के लिए केवल चार दिन देने का था, लेकिन मेरी बात को ध्यान में रखते हुए, जब तक मैं आगे बढ़कर इस जानवर को पकड़ने की कोशिश करता रहूंगा, तब तक वे हस्तक्षेप नहीं करेंगे। उन्होंने मुझे एक

पत्र भी दिया, जिसमें सभी पुलिस अधिकारियों से, जिन्हें मैं यह पत्र दिखा सकूं, मेरी हर संभव सहायता करने का अनुरोध किया गया था।

मैंने यह बात मुनुस्वामी को नहीं बताई। इससे वह अपने प्रयासों में ढिलाई बरतते। इसके बजाय, मैंने बताया कि डीएसपी साहब को उन्हें चार दिन का समय देने पर पछतावा होने लगा था और वे इसे घटाकर तीन दिन करना चाहते थे, लेकिन मैंने उनकी ओर से हस्तक्षेप करके ऐन मौके पर स्थिति को संभाल लिया।

इससे मुनुस्वामी मेरे प्रति पहले से कहीं अधिक आभारी हो गए और यात्रा पर निकलने के लिए उतने ही बेचैन हो गए। अगली सुबह हम स्टुडेबेकर कार में बैठकर मगाडी पहाड़ी पर पहुंचे और उसके तलहटी में स्थित विभिन्न गांवों में पूछताछ शुरू कर दी, जिसमें वह स्थान भी शामिल था जहां मुनुस्वामी ने पैंथर को घायल किया था। रास्ते में सवाल पूछते हुए हम मगाडी गांव तक पहुंचे, जहां मैंने उन पुलिस कांस्टेबलों से बात की जिन्होंने उनके दफ्फेदार को बचाया था। वहां से हम कार में बैठकर क्लोज़पेट की ओर चल पड़े, रास्ते में पड़ने वाले हर गांव में रुककर सवाल पूछते रहे। इस तरह हम उस गांव तक पहुंचे जहां पैंथर ने टट्टू पर हमला किया था, और अंततः क्लोज़पेट कस्बे तक पहुंचे, जहां पुलिस सब-इंस्पेक्टर, जिन्हें मैंने डी.एस.पी. द्वारा दिया गया नोट दिखाया, ने तुरंत जूटका-वाले को बुलवाया। मैंने उससे पूछताछ की और उसने मुझे बताया कि उसके टट्टू के साथ क्या हुआ था।

ये सारे सवाल पूछने में मुझे उस शाम देर तक का समय लग गया, लेकिन इसके बावजूद मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो यह जानता हो कि पैंथर कहाँ रह रहा होगा या उसकी आदतें कैसी होंगी। बेशक, मुझे पता था कि कोई जल्दी नहीं है, लेकिन मुनुस्वामी का उदास चेहरा और भी मुरझा गया जब उन्हें एहसास हुआ कि उनके चार दिनों में से एक दिन बिना किसी ठोस नतीजे के बीत चुका है।

हम उस रात मगदी गांव वापस आए और यात्रियों के बंगले में सोए।

अगली सुबह तड़के एक दुबला-पतला व्यक्ति आया और बताया कि वह आसपास की पहाड़ियों पर स्थित मधुमक्खी के छत्तों से शहद इकट्ठा करके, जड़ी-बूटियाँ और अन्य औषधीय जड़ें जमाकर तथा मौका मिलते ही खरगोश, तीतर और बटेर का शिकार करके अपना जीवन यापन करता है। उसने बताया कि उसे पिछली रात बताया गया था कि मैं मुनुस्वामी के साथ पैंथर के बारे में जानकारी लेने आया था, और वह यह बताने आया था कि उसे लगभग यकीन है कि वह जानवर मगदी पहाड़ी की दो छोटी पहाड़ियों के बीच की दरार में स्थित एक गुफा में रहता है।

मैंने उनसे पूछा कि उन्हें इस बात का इतना यकीन कैसे है? उन्होंने बताया कि कुछ सप्ताह पहले वे जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने वहाँ गए थे और उन्होंने देखा कि खून से लथपथ एक जानवर कुछ चट्टानों को पार कर गया था और अपने पीछे एक स्पष्ट निशान छोड़ गया था। सावधानी से पीछा करते हुए, उन्होंने उस जगह पर तेंदुए के पदचिह्न पाए जहाँ जानवर ने चट्टानों को छोड़ा था। इसके बाद उन्होंने पीछा करना बंद कर दिया। बाद में उन्हें पता चला कि पिछले दिन किसी ने पास ही एक तेंदुए को घायल कर दिया था। वह व्यक्ति मुनुस्वामी ही था।

वह उस गुफा के बारे में जानता था, क्योंकि उसने अतीत में कई बार उसके आस-पास के मधुमक्खी के छत्ते से शहद निकाला था। कुछ दिन पहले, दाफेदार पर हमले के ठीक बाद, लेकिन मेरे सूचनादाता को क्लोज़पेट में एक सप्ताह के लिए बाहर रहने के कारण इसकी सूचना मिलने से पहले, वह यह देखने के लिए गुफा के पास गया था कि क्या मधुमक्खियों ने फिर से छत्ता बनाना शुरू कर दिया है। वह गुफा से कुछ दूरी पर ही था कि एक जानवर ने उस पर गुर्राया। उसे तुरंत हफ्तों पहले मिले खून के निशान याद आ गए और वह जितनी जल्दी हो सके घाटी से

निकल गया।

यह वाकई एक बड़ी खबर थी।

मैंने सवाल पूछना शुरू किया, और उसने मुझे गुफा तक ले जाने का जिम्मा लिया, बशर्ते कि मैं घाटी और गुफा तक जाने वाले घने लैंटाना के बीच से लगभग एक फर्लांग तक हाथों और घुटनों के बल रेंगने के लिए तैयार रहूँ।

मैं सहमत हो गया और मुनुस्वामी से कहा कि अब समय आ गया है कि वह सौदे के अपने हिस्से को पूरा करे, जो कि मेरे साथ चलना और पैंथर को मारने के समय मौजूद रहना था, ताकि वह उसे घायल करने के अपने पाप का प्रायश्चित कर सके।

अगर मैंने उससे डर दिखाने की उम्मीद की थी, तो मैं गलत था। पुलिस ने उसे इतना डरा दिया था कि वह किसी पैंथर का सामना करने से ज्यादा इस बात से डरा हुआ था कि बचे हुए तीन दिन बिना हमारे शिकार को पकड़े ही बीत जाएंगे।

सूरज के तेज होने का इंतजार करते हुए मैंने आराम से छोटा हज़री खाया। ऐसा इसलिए ताकि पैंथर को अपनी गुफा में दिन भर की नींद पूरी करने का समय मिल सके। अगर मैं वहां जल्दी पहुंच जाता, तो वह मुझे आते हुए सुन सकता था और भाग सकता था।

हम ठीक दस बजे कार से बंगले से निकले और पंद्रह मिनट से भी कम समय में सड़क पर उस जगह पहुँच गए जो पहाड़ी की दो छोटी-छोटी चोटियों के बीच घाटी के लगभग सामने थी। दुबले-पतले आदमी, जिसने अपना नाम अलिमुथु बताया था, ने इशारा किया कि हमें कार से उतरना होगा। मैंने कार को सड़क से थोड़ी दूर एक पेड़ की छाँव में खड़ा किया और हम तीनों नीचे उतर गए। मैंने अपनी राइफल का निचला लीवर चलाकर यह सुनिश्चित किया कि वह ठीक से काम कर रही है। फिर अलिमुथु, मुनुस्वामी और मैं गुफा की ओर चल पड़े।

यह पहाड़ी सड़क से लगभग दो मील दूर है। हम आधार तक पहुँच गए और घाटी की ओर चढ़ना शुरू कर दिया, जो हमारे चारों ओर पेड़ों के कारण अब दिखाई नहीं दे रही थी। पेड़ों की चोटियों के ऊपर से मुझे ऊपर और हमारे दाएं-बाएं ओर स्थित दो छोटी पहाड़ियों की चोटियाँ मुश्किल से दिखाई दे रही थीं।

हम एक घंटे तक चढ़ते रहे और यह एक कठिन चढ़ाई थी। फिर हम लैंटाना झाड़ियों के एक विशाल जंगल में पहुँचे, जिसने पेड़ों और आसपास के छोटे जंगल को पूरी तरह से घेर लिया था। यही वह जगह थी, जैसा कि अलीमुथु ने बताया, जहाँ से हमें कुछ दूरी तक लैंटाना के बीच से रेंगते हुए जाना था।

मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि अगले एक फर्लांग (लगभग एक फर्लांग) का सफर तय करना बेहद मुश्किल था। हम पहले से ही पसीने से तरबतर थे और कांटों से खरोंचें लग चुकी थीं। अलिमुथु आगे रेंग रहा था; मैं उसके पीछे-पीछे चल रहा था, और मुनुस्वामी उससे भी ज़्यादा करीब था। जब तक हम लैंटाना के उस घने जंगल को पार कर पाए, तब तक हम पसीने से तरबतर हो चुके थे और मेरी खाकी कमीज़ और पैंट कई जगहों से फट चुकी थीं। मुझे यकीन है कि लैंटाना की हर शाखा पर लगे नुकीले हुकों में मेरे चेहरे, गर्दन और हाथों के छोटे-छोटे हिस्से लटक रहे थे।

आखिरकार हम उस घेरे से निकलकर टीलों के बीच की घाटी में पहुँच गए। वहाँ हर जगह बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे, जो भालाकार घास से आधे तक ढके हुए थे। अलिमुथु ने फुसफुसाते हुए बताया कि गुफा बाईं ओर है और घाटी के लगभग तीन-चौथाई हिस्से पर है। वहाँ एक पैंथर को देखना नामुमकिन था, यहाँ तक कि थोड़ी दूरी से भी। एक दर्जन बाघ भी वहाँ उतने ही अदृश्य होते।

अब मैं आगे चल रहा था, मेरे पीछे अलिमुथु और उसके ठीक पीछे मुनुस्वामी थे। मैं दाईं ओर रहा और दाहिनी ओर की छोटी पहाड़ी के किनारे-किनारे चलता रहा, ताकि अगर पैंथर गुफा से या बाईं ओर किसी आड़ से हमला करे, तो मुझे उसे आते देखने का मौका मिल सके। हम गुफा के ठीक सामने आ गए। उसके ऊपर चट्टान में एक लटकती हुई दरार थी। मैंने देखा कि इस चट्टान पर मोम के कांटों के निशान थे, जो पुराने मधुमक्खी के छत्ते रहे होंगे, हालांकि कोई नया छत्ता दिखाई नहीं दे रहा था। गुफा के अंदर का हिस्सा बाहर बिखरी हुई लंबी घास और चट्टानों के ढेरों से छिपा हुआ था, जिनमें से कई जाहिर तौर पर ऊपर से पहाड़ी से लुढ़क कर नीचे आ गए थे।

फिर हमने वह आवाज सुनी। एक स्पष्ट गुर्राहट। अलिमुथु ने मुझे रोकने के लिए मेरा कंधा छूने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन मैंने वह आवाज पहले ही सुन ली थी।

इसे किसी पैंथर ने बनाया हो सकता है—या फिर किसी भालू ने।

मैं सोचने के लिए रुक गया। मेरे सामने दो रास्ते थे। इसमें कोई शक नहीं था कि आवाज़ सामने से आई थी: गुफा से या उसके बहुत पास किसी जगह से। मैं पत्थर फेंक सकता था या थोड़ा और आगे बढ़ सकता था। लेकिन मुझे दूसरा रास्ता अपनाने में डर लग रहा था। वह जीव, चाहे जो भी हो, गुफा के ऊपरी हिस्से से मुझ पर हमला कर सकता था। अगर मैं घास और चट्टानों के बीच से उसे आते हुए नहीं देख पाया, या मेरा पहला निशाना चूक गया, तो मैं बड़ी मुसीबत में पड़ सकता था।

विवेक ने वीरता पर विजय प्राप्त कर ली और मैंने अलिमुथु और मुनुस्वामी से फुसफुसाकर कहा कि वे उस दिशा में पत्थर फेंकें। उन्होंने वैसा ही किया।

कुछ नहीँ हुआ।

अपनी राइफल को तैयार अवस्था में रखकर, मैं अपने सामने के दृश्य में जरा सी भी हलचल पर नजर रख रहा था।

उन्होंने और पत्थर फेंके, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ।

फिर मैंने देखा कि लंबी घास थोड़ी सी दाहिनी ओर हिल रही थी, पहाड़ी की ओर जा रही थी, गुफा के किनारे से आगे बढ़कर पीछे की ढलान वाली जमीन से मिल रही थी।

वह हलचल हवा के झोंके या घास में से किसी जानवर के रेंगने के कारण हो सकती थी। एक बात तो मुझे पक्का पता थी, वह भालू तो बिल्कुल नहीं था। दक्षिण भारत में ब्रुइन का रंग काला होता है, और मैं भूरी घास के बीच ऐसी काली चीज़ को आसानी से पहचान लेता। वैसे भी ब्रुइन इस तरह से छिपकर चल भी नहीं सकता—कोशिश करने पर भी नहीं। वह एक अनाड़ी किस्म का है, जो या तो अचानक किसी जगह पर पहुँच जाता है या अचानक वहाँ से भाग जाता है।

मैंने अपनी आँखों पर जोर डाला और फिर धब्बेदार आकृति का एक हिस्सा देखा क्योंकि वह गुफा के ऊपर लटकी हुई चट्टान की ऊंचाई के बराबर आ गया था।

अब वह जानवर हिलना-डुलना बंद कर चुका था और निस्संदेह हमारी तरफ देख रहा था, हालाँकि घास में उसका सिर या चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ सेकंड और बीत जाते तो शायद वह गायब हो जाता।

मैंने उस धब्बेदार हिस्से को अपनी नज़र में लिया और धीरे से ट्रिगर दबा दिया।

पैंथर घास से उछलकर निकला, झींगे की तरह दुगना हो गया, फिर ढलान पर पीछे की ओर लुढ़क गया और घास में छिप गया। एक बड़े पत्थर पर चढ़कर मैंने नीचे देखने की कोशिश की। कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

मैंने दस मिनट तक इंतजार किया; फिर अलिमुथु और मुनुस्वामी को छिपने का इशारा करके

मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। बीच-बीच में मैं किसी चट्टान पर चढ़कर जानवर की एक झलक पाने की कोशिश करता रहा।

आखिरकार मैंने ऐसा कर ही दिया, और मेरी सारी सावधानी बेकार थी, क्योंकि पैंथर मर चुका था। मेरी वो तस्वीर किस्मत से सही निकली थी। .405 की गोली उसकी गर्दन के पिछले हिस्से से होकर उसके सिर में जा लगी थी।

जांच से पता चला कि मुनुस्वामी की बंदूक से निकली गोली जानवर की पीठ के आर-पार, कंधों के ठीक पीछे से आर-पार हो गई थी। इससे पीठ में एक बड़ा छेद हो गया था और एक भयंकर खुला घाव बन गया था जिसमें कीड़े रेंग रहे थे। त्वचा में दो एल.जी. छर्रे धंसे हुए थे, लेकिन उनसे बने घाव भरते हुए प्रतीत हो रहे थे। हालांकि, मुख्य घाव अंततः जानवर की मृत्यु का कारण बन जाता, अगर इससे पहले वह आदमखोर न बन गया होता। यह एक अधेड़ उम्र का नर जानवर था, जिसकी लंबाई लगभग सात फीट थी।

हमें उस भयानक लैंटाना के घने जंगल से उसके शरीर को घसीटकर ले जाने में बहुत परेशानी हुई, लेकिन बहुत मेहनत और पसीने के बाद हम आखिरकार वहां पहुंच गए।

उस शाम हमने शव को डीएसपी के चरणों में रख दिया। चार दिन की समय सीमा बढ़ाने के लिए उनसे अनुरोध किए हुए ठीक अड़तालीस घंटे बीत चुके थे। लेकिन मुनुस्वामी और मैंने यह काम आधे समय में ही पूरा कर लिया था। डीएसपी के चेहरे पर मुस्कान थी।

चार

शिवानीपल्ली का काला पैंथर

बैंगलोर के नज़दीक होने और सप्ताहांत में घूमने-फिरने या चांदनी रात में कुछ घंटों के लिए आराम से समय बिताने के कारण शिवानीपल्ली हमेशा से मेरी पसंदीदा जगह रही है। आपको बस बैंगलोर से 41 मील दूर डेनकनिकोट्टा तक गाड़ी से जाना है, फिर चार मील गाड़ी चलाकर कार से आगे बढ़ना है, और फिर गाड़ी छोड़कर पांच मील पैदल चलकर शिवानीपल्ली पहुंचना है। यह छोटा सा गांव आरक्षित वन के किनारे पर बसा है।

इस छोटे से गाँव से लगभग तीन मील पश्चिम में ज़मीन लगभग तीन सौ फीट नीचे ढलान पर जाती है, जहाँ एक धारा बहती है। गाँव के दक्षिण में एक और धारा पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है, जो कई झरनों के साथ तेज़ी से नीचे उतरती है और पश्चिमी घाटी के तल पर बहने वाली पहली धारा में मिल जाती है। शिवानीपल्ली के पूर्व में जंगल एक पहाड़ी पर लगभग पाँच सौ फीट की ऊँचाई पर स्थित गुलहट्टी बंगलो नामक वन लॉज तक फैला हुआ है। गुलहट्टी के पूर्व में, लगभग साढ़े चार मील की दूरी पर, अय्यूर नामक स्थान पर एक और वन बंगलो है। उत्तर-पूर्व में चार मील दूर कुचुवड़ी नामक एक पथरीली पहाड़ी के पास वन विभाग का एक शेड है। यह चंदन का क्षेत्र है, और शेड में एक प्राचीन विशाल तराजू रखा हुआ है जिसका उपयोग जंगल से लाए गए चंदन के टुकड़ों को तौलने के लिए किया जाता है, जिन्हें बाद में डेनकनिकोट्टा स्थित ब्लॉक मुख्यालय में वन विभाग के गोदामों में भेजा जाता है।

शिवानीपल्ली के उत्तर की ओर, घनी झाड़ियों वाला जंगल सड़क तक और उससे भी आगे, पाँच मील की दूरी तक फैला हुआ है, जहाँ आपको कार छोड़कर पैदल ही गाँव की ओर प्रस्थान करना होगा।

शिवानीपल्ली में मुश्किल से आधा दर्जन फूस की झोपड़ियाँ हैं और यह इतना बड़ा भी नहीं है कि इसे एक छोटा गाँव कहा जा सके। इससे काफी बड़ा गाँव सालिवरम उत्तर दिशा में तीन मील की दूरी पर स्थित है, जो मुख्य सड़क की ओर जाने वाले पैदल मार्ग के लगभग आधे से थोड़ा अधिक आगे है।

वन विभाग की अग्नि-रेखाएँ शिवानीपल्ली को चारों ओर से घेरे हुए हैं, जो गाँव से आधे मील से एक मील की दूरी पर स्थित आरक्षित वन क्षेत्र की शुरुआत को दर्शाती हैं। दक्षिण-पूर्वी कोने पर जहाँ ये दो अग्नि-रेखाएँ मिलती हैं, वहाँ लगभग एक जलकुंड है। गाँव के पश्चिम में तीन सौ फुट की गहरी खाई के तल पर मिलने वाली दो धाराएँ जंगल से होते हुए शिवानीपल्ली से लगभग आठ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक अन्य बड़े गाँव, एंचेटी की ओर बहती हैं।

मैंने आसपास के क्षेत्र की स्थलाकृति का यह विस्तृत विवरण इसलिए दिया है ताकि आप उस क्षेत्र की एक तस्वीर अपने मन में बना सकें जिसमें वह रोमांचक घटना घटी जिसका वर्णन मैं करने जा रहा हूं।

यह पैंथर की गतिविधियों के लिए एक आदर्श स्थान है, जहाँ चारों ओर छोटी-छोटी पथरीली पहाड़ियाँ, झाड़ियाँ, घने जंगल और दो जलधाराएँ (पानी के स्रोत के अलावा) मौजूद हैं। ये जलधाराएँ न केवल पैंथरों के लिए, बल्कि उनके शिकार के लिए भी निरंतर जल आपूर्ति

सुनिश्चित करती हैं। पानी की इस नियमित आपूर्ति के कारण, शिवानीपल्ली में मवेशियों का एक बड़ा झुंड रहता है, जो इन बिल्लियों के लिए एक अतिरिक्त आकर्षण है!

परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र के आसपास काफी संख्या में पैंथर लगभग स्थायी रूप से निवास करते हैं। यही मुख्य कारण है कि 1929 में जब मैंने पहली बार शिवानीपल्ली का दौरा किया था, तो मैं इसकी ओर आकर्षित हुआ था।

यह जंगल कई प्रकार का है, जिसमें जलकुंड के आसपास उगने वाले घने बांस से लेकर दक्षिणी और पश्चिमी किनारों पर घने जंगल तक, और पूर्व और उत्तर की ओर चंदन के पेड़ों से घिरे हुए काफी पतले जंगल और झाड़ियाँ शामिल हैं।

ग्रामीण इलाका बेहद खूबसूरत है, पश्चिम क्षितिज पर धुंधली नीली रेखा की तरह फैली पहाड़ियों का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। सुबह-सुबह जंगल से कोहरे की चादर उठती है और पहाड़ियों की निचली सतह को पूरी तरह से ढक लेती है, जिससे उनकी चोटियाँ ऊनी ऊन के सागर में उबड़-खाबड़ द्वीपों की तरह दिखाई देती हैं। बादल वाले दिन इसका ठीक उल्टा नजारा देखने को मिलता है, जब तूफानी बादल पहाड़ियों की चोटियों पर छा जाते हैं और उन्हें पूरी तरह से छिपा लेते हैं, तो केवल उनकी ढलानों का निचला हिस्सा ही दिखाई देता है, जिससे ऐसा लगता है मानो यह इलाका लगभग समतल है।

मैंने शिवानीपल्ली के आसपास के जंगलों में चांदनी रातों में कई बार घूमते-घूमते समय बिताया है। ये जंगल उर्दू क्रिया 'घूम' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'इधर-उधर भटकना'। यहाँ हर तरह के जानवर पाए जाते हैं, सिवाय बाइसन के, जिनकी संख्या सीमित है। चांदनी रात में जंगल में घूमते समय, हाथी से सामना होने, बाघ की गुर्राहट, पैंथर की कर्कश आवाज या घबराए हुए सांभर के भागने की आवाज सुनने की संभावना हमेशा बनी रहती है। आप उन्हें देख नहीं पाएंगे—शायद हाथी को छोड़कर, क्योंकि ये दोनों मांसाहारी जानवर, और सांभर भी, बहुत चालाक होते हैं और आपको आते हुए बहुत पहले ही देख या सुन चुके होते हैं।

आपको शायद कोई भालू ज़मीन में दीमक या कंद की जड़ों को खोदते हुए या धीरे-धीरे चलते हुए ज़ोर-ज़ोर से सूंघते और फुफकारते हुए दिखाई दे। आप उसे देखने से बहुत पहले ही उसकी आवाज़ ज़रूर सुन लेंगे, क्योंकि वह घनी वनस्पति की धुंधली पृष्ठभूमि में एक काले धब्बे की तरह दिखेगा, चाँदनी में धूसर और भूतिया सा।

सन् 1934 में शिवानीपल्ली में एक अनोखी घटना घटी। एक चरवाहा अपने मवेशियों को दिनभर चराने के लिए जंगल ले गया था और वहां से लौट रहा था तभी उसने एक काले तेंदुआ को पानी के कुंड पर पानी पीते देखा। शाम के पांच बजने के कुछ ही समय बाद का समय था, जो मवेशियों को गांव के बाड़ों में वापस लाकर रात भर के लिए रखने का सामान्य समय होता है। सुबह करीब नौ बजे या उससे भी बाद में मवेशियों को दिनभर चराने के लिए जंगल में ले जाने और शाम को जल्दी वापस लाने का रिवाज है। देर से निकलने और जल्दी लौटने का कारण यह है कि गायों को दिन में दो बार दुहा जा सके।

इस प्रकार, जब चरवाहे ने पानी के किनारे उगी एक झाड़ी के पास खड़े एक काले पैंथर को देखा, तब लगभग पाँच बज चुके थे और अभी भी काफी उजाला था। वह शांति से तालाब का पानी पी रहा था। उसने कसम खाकर कहा कि वह बिल्कुल काला था और मेरे पास उस पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि जानबूझकर झूठ बोलने का कोई मतलब नहीं था। जब झुंड पास आया, तो पैंथर ने मवेशियों की ओर देखा; लेकिन जब चरवाहा अपने जानवरों के बीच आया, तो वह झाड़ियों में गायब हो गया।

काला तेंदुआ कोई अलग या विशेष प्रजाति नहीं है। यह केवल मेलेनिज़्म का एक उदाहरण

है। कभी-कभी, हालांकि बहुत कम ही, एक ही झुंड में एक काला शावक दिखाई देता है, जबकि अन्य शावक सामान्य आकार और रंग के होते हैं। कहा जाता है कि काले तेंदुआ इस जिले के आसपास की तुलना में मलाया, बर्मा, असम और इसी तरह के घने सदाबहार जंगलों में अधिक पाए जाते हैं। इन्हें भारत के पश्चिमी घाटों में भी कभी-कभार देखा गया है और इनका शिकार भी किया गया है। मेरे पास इस बात पर विश्वास करने के सभी कारण हैं कि वे इन घने सदाबहार जंगलों में अधिक पाए जाते हैं, क्योंकि तब उनका गहरा रंग उन्हें बेहतर छलावरण प्रदान करता है। साथ ही, चूंकि वे मेलेनिज़्म के सरल उदाहरण हैं, इसलिए उन्हें हर जगह और हर उस जगह पाया जाना चाहिए जहां तेंदुआ पाए जाते हैं, चाहे जंगल किसी भी प्रकार का हो। मैंने जंगली अवस्था में केवल एक अन्य काले तेंदुआ को देखा है, और वह तब था जब वह एक शाम लगभग छह बजे कावेरी नदी के पास पेन्नाग्राम और मुत्तूर के बीच घाट खंड पर सड़क पार कर रहा था। वे प्रकृति के—या यों कहें कि जंगल के—उन रहस्यों में से एक हैं जिन्हें आज तक पूरी तरह से संतोषजनक ढंग से हल नहीं किया जा सका है।

यदि आप चिड़ियाघर में किसी काले पैंथर को ध्यान से देखें, तो आप पाएंगे कि सामान्य पैंथर के रोसेट निशान अभी भी काले बालों के बीच से दिखाई देते हैं, हालांकि निश्चित रूप से वे बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते हैं।

जब चरवाहे ने इस काले पैंथर को देखा, तो वह गाँव आया और लोगों को इसके बारे में सब कुछ बताया। इस इलाके में पहले कभी किसी काले पैंथर को देखा या सुना नहीं गया था और उसकी कहानी पर आम तौर पर किसी ने विश्वास नहीं किया। बेशक, उसने जानवर को अपनी आँखों से देखा था, इसलिए उसे कोई संदेह नहीं था, हालाँकि उसे पूरा यकीन था कि उसने जिस जानवर को देखा था वह कोई सामान्य या जीवित जानवर नहीं था, बल्कि शैतान था, जो जंगल में अपने कई रूपों में से एक रूप धारण करके अपने जैसे बेचारे ग्रामीणों को डराता था।

कुछ सप्ताह बीत गए और फिर कभी किसी ने उस काले पैंथर को न देखा और न ही उसके बारे में सुना। चरवाहे की कहानी भुला दी गई।

कुछ महीनों बाद, एक दिन दोपहर के समय, जब सूरज आसमान में चमक रहा था, मवेशियों का एक और झुंड आराम कर रहा था। कुछ मवेशी आँखें बंद करके बैठे थे और कुछ पास के पेड़ों की छाँव में आलस से घास चर रहे थे। मवेशी दो से लेकर छह के छोटे-छोटे समूहों में लेटे हुए थे। दोनों चरवाहों ने दोपहर का भोजन, रागी के गोले और करी, जो वे अपने साथ एक गंदे कपड़े में बाँधकर लाए थे, खा लिया था और दूसरे पेड़ की छाँव में अगल-बगल लेटे हुए गहरी नींद में सो रहे थे।

यह वास्तव में एक शांत दृश्य था, क्योंकि नीले आकाश से उष्णकटिबंधीय सूर्य की प्रचंड किरणें पृथ्वी पर चमकती हुई गर्मी की लहरों के रूप में परावर्तित हो रही थीं। मवेशियों का झुंड आराम से, सुस्त और बेफिक्र था, तभी शिवानीपल्ली के काले पैंथर ने अपना पहला शिकार किया।

अचानक प्रकट होते ही, पैंथर ने अपने नुकीले दांत एक अधविकसित भूरे और सफेद रंग की गाय के गले में गाड़ दिए, लेकिन इससे पहले कि वह दर्द से चीखती और अपने पैरों पर खड़ी हो जाती, उसने अपने हमलावर को उसके दांतों से गले में फंसाए हुए ही जमीन से ऊपर उठा लिया।

गाय की दर्द भरी चीख सुनकर सो रहे चरवाहों में से एक जाग गया, और जो यह सब देखकर दंग रह गया। उसने अपने साथी को जगाया और उसे दिखाया कि शैतान अचानक काले रूप में प्रकट हुआ है। उन्होंने देखा कि घायल गाय ज़मीन पर गिर पड़ी और बुरी तरह छटपटाते हुए अपनी जान गंवा बैठी। काला पैंथर उस पर अपनी पकड़ बनाए हुए था। इस तरह गाय की

मृत्यु हो गई। चरवाहे उछल पड़े और खड़े हो गए।

आम तौर पर, अगर कोई पैंथर उनके किसी मवेशी पर हमला कर देता, तो वे उसकी मदद के लिए दौड़ पड़ते, अपनी लाठियाँ लहराते और जोर-जोर से चिल्लाते, अगर पीड़ित की जान बचाने के लिए नहीं तो कम से कम हमलावर को भगाने के लिए, इससे पहले कि वह शिकार को घसीटकर ले जा सके।

इस मामले में उनमें से किसी ने भी ऐसा करने की हिम्मत नहीं दिखाई। वे बस वहीं जड़वत खड़े रहे और हैरानी से देखते रहे। जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, पैंथर ने मरी हुई गाय के गले पर अपनी पकड़ छोड़ दी और उनकी ओर देखा। हालांकि वह लगभग पचास गज दूर था, फिर भी वे गाय के फटे हुए गले से बहते हुए गहरे लाल खून को साफ देख सकते थे, जिससे पैंथर का थूथन काले फर की पृष्ठभूमि पर गहरे लाल रंग में रंग रहा था।

वे दुम दबाकर भाग गए।

जब शिवानीपल्ली के कुछ ग्रामीणों ने यह कहानी सुनी, तो वे शव को पूरी तरह खाए जाने से पहले वापस लाने के लिए बाहर जाने से बहुत हिचकिचा रहे थे। अगर हत्यारा एक सामान्य पैंथर होता, तो वे ऐसा ज़रूर करते, लेकिन इस अनसुने काले राक्षस की मौजूदगी ने उन्हें पूरी तरह से डरा दिया था। उन्हें उस पैंथर के बारे में बताया गया था जिसे पानी के गड्ढे पर सबसे पहले देखने वाले चरवाहे ने बिल्कुल काला बताया था। चूंकि वे खुद ग्रामीण थे, इसलिए उन्होंने उस मामले में अतिशयोक्ति की गुंजाइश रखी थी, लेकिन यहाँ दो और चरवाहे थे, दोनों एक ही बात कह रहे थे। क्या यह सचमुच सच हो सकता है?

उस दिन के बाद, काले रंग के लुटेरे ने शिवानीपल्ली से नियमित रूप से जानवरों की चोरी शुरू कर दी। उसे कई बार देखा गया, जिससे ग्रामीणों के मन में उसके वास्तविक अस्तित्व और रंग के बारे में कोई संदेह नहीं रह गया था।

जब लोगों को जंगल में उसकी मौजूदगी का पता चला, जो उनके पशुओं पर लगातार हो रहे हमलों के कारण उन्हें मजबूरन अपने घरों तक लाना पड़ा था, तो उनकी सामान्य सुस्ती और उदासीनता भी हिल उठी और वे अधिक से अधिक सतर्क हो गए। अंततः एक ऐसी स्थिति आ गई जब मवेशियों को गाँव से लगभग एक चौथाई मील के दायरे से आगे चरने के लिए नहीं ले जाया जाता था।

अपने भोजन की आपूर्ति बाधित होते देख, काले पैंथर ने अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाना शुरू कर दिया। उसने दक्षिण-पश्चिम में अंचेटी से और पूर्व में गुलहट्टी और अय्यूर से आने वाले झुंडों के जानवरों को मारकर खा लिया। उसने सालिवरम से एक बड़ा गधा भी उठा लिया, जो जैसा कि मैंने बताया, शिवानीपल्ली के उत्तर में और वन अभ्यारण्य के ठीक बाहर स्थित था।

लगभग इसी समय, मैं अपने एक मित्र के साथ शिवानीपल्ली गया। हम रविवार को दोपहर के भोजन के बाद वहाँ गए थे, हमारा इरादा जंगल में शाम की सैर करने और शायद एक जंगली मुर्गा या दो हरे कबूतर पकड़ने का था। काले तेंदुआ के उद्भव और गतिविधियों की कहानी में मेरी बहुत रुचि थी। इससे पहले मैंने केवल एक बार ही चिड़ियाघर के बाहर इसे देखा था, इसलिए मैंने ठान लिया था कि अगर संभव हो तो मैं इसे जरूर पकड़ूंगा।

मैंने ग्रामीणों को यह पेशकश की कि अगर वे इस पैंथर द्वारा मारे गए अगले जानवर को बिना छेड़े छोड़ दें और मुझे सूचित करें, तो मैं उन्हें उसकी कीमत चुका दूँगा। उन्हें बस से होसुर कैटल फार्म नामक छोटे कस्बे तक जाना होगा, जो टेलीग्राफ कार्यालय के सबसे नज़दीक था, जहाँ से बैंगलोर में मुझे संदेश भेजा जा सकता था। मैंने उनसे यह भी कहा कि वे यह जानकारी उन सभी लोगों तक पहुँचाएँ जहाँ पैंथर पहले ही हमला कर चुका है। अंत में, और अधिक प्रोत्साहन और

आकर्षण के रूप में, मैंने कहा कि मैं न केवल मरे हुए जानवर की कीमत चुकाऊँगा, बल्कि मेरे निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करने वाले को पचास रुपये की नकद बख्शीश भी दूँगा।

अगले कुछ दिनों में फोन आने की उम्मीद में मैंने बैंगलोर में अपनी पोर्टेबल चारपाई-मचान और अन्य सामान तैयार रखा था ताकि टेलीग्राम मिलते ही कुछ ही मिनटों में निकल सकूँ। लेकिन आखिरकार फोन आने में दो हफ्ते से भी ज्यादा समय लग गया। और तो और, यह देर से आया! यानी, शाम चार बजे से ठीक पहले मुझे मिला। मैं चार बजकर पंद्रह मिनट पर निकल चुका था, लेकिन जब मैं शिवानीपल्ली पहुँचा तब तक लगभग सात बजकर पंद्रह मिनट हो चुके थे और काफी अंधेरा हो चुका था।

मैंने देखा कि टेलीग्राम उस दोपहर लगभग डेढ़ बजे होसुर कैटल फार्म में पहुँचाया गया था, जो कि बहुत देर हो चुकी थी, इसके अलावा बैंगलोर की तरफ से भी अतिरिक्त देरी हुई थी क्योंकि इसे एक्सप्रेस टेलीग्राम के बजाय एक साधारण संदेश के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जैसा कि मैंने निर्दिष्ट किया था।

शिवानीपल्ली में रंगास्वामी नाम का एक व्यक्ति रहता था, जिसने पहले दो-तीन बार शिकारी के रूप में मेरी सहायता की थी। होसुर पशु फार्म से टेलीग्राम भेजने वाले उसी व्यक्ति ने यह सूचना दी थी कि उसी सुबह दस बजे, मवेशियों के चरने के लिए गांव से निकलने के तुरंत बाद, एक तेंदुआ ने शिकार किया था। प्रभारी चरवाहे को, जिसे बाकी लोगों की तरह ही मारे गए जानवर के लिए नकद इनाम के साथ-साथ मेरी पेशकश के बारे में बताया गया था, उसने बड़ी समझदारी से शव को नहीं छुआ और यह खबर लेकर शिवानीपल्ली वापस भाग गया। उसने यह खबर रंगास्वामी को दी, जिसने बारह बजकर पंद्रह मिनट की बस पकड़ने के लिए समय पर डेनकनिकोट्टा पहुंचने का भरसक प्रयास किया। वह किसी तरह एक बजे होसुर पशु फार्म के टेलीग्राम कार्यालय पहुंचा।

रंगास्वामी और चरवाहे द्वारा मुझे तुरंत खबर भेजने के लिए उनकी सराहना करते हुए, अब मुझे यह तय करना था कि मैं टॉर्च की रोशनी में शिकार पर बैठे पैंथर का पीछा करने की कोशिश करूं या अगली शाम तक शिवानीपल्ली में उसका इंतजार करूं। पहली योजना पूरी तरह से जोखिम भरी थी क्योंकि इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि जब मैं वहां पहुंचूंगा तो पैंथर शिकार पर होगा या उसके आसपास कहीं भी होगा। साथ ही, अगले चौबीस घंटे गांव में निष्क्रिय बैठे रहने का कोई ठोस बहाना भी मेरे पास नहीं था।

मैंने पता लगाया कि शिकार कहाँ हुआ था और मुझे बताया गया कि यह गाँव से पश्चिम की ओर लगभग आधा मील दूर था, जहाँ से ज़मीन ढलान से होते हुए लगभग तीन मील दूर नदी के तल तक जाती थी। यह जगह बहुत ही नज़दीक लग रही थी और इसलिए मैंने रंगास्वामी और चरवाहे से कहा कि अगर वे मुझे उस जगह से एक चौथाई मील दूर तक ले जाकर शिकार की दिशा बता दें, तो मैं उसी रात उस पैंथर को पकड़ने की कोशिश करूँगा जब वह अपना शिकार खा रहा होगा। मुझे लगा कि मैं अपनी सुनने की शक्ति और विवेक पर भरोसा कर सकता हूँ कि वे मुझे वहाँ से आगे ले जाएँगे।

वे दोनों इस योजना के खिलाफ थे और अगली शाम तक इंतजार करने की पुरजोर वकालत कर रहे थे, लेकिन मैंने कहा कि मैं फिर भी इसे आजमाना चाहूंगा।

यह सारी बातचीत खत्म होते-होते आठ बजने में दस मिनट बाकी थे और समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था, क्योंकि पैंथर शायद उसी समय खाना खा रहा होगा। मैंने अपनी तीन सेल वाली, फिक्स्ड फोकस वाली इलेक्ट्रिक टॉर्च, जिसे मैंने काला रंग दिया था ताकि वह दिखाई न दे, अपनी राइफल पर लगा दी और तीन अतिरिक्त सेल और पांच अतिरिक्त गोलियां अपनी

जेब में रख लीं। मैंने राइफल में चार और गोलियां भरीं, तीन मैगज़ीन में और एक ब्रीच में रखी। हालांकि 405 विंचेस्टर राइफल मैगज़ीन में चार गोलियां और एक ब्रीच में रखने के लिए डिज़ाइन की गई है, मैं हमेशा मैगज़ीन में एक गोली कम भरता हूँ ताकि जाम न हो, जो रीलोडिंग के दौरान अंडर-लीवर को बहुत तेज़ी से चलाने पर हो सकता है। आखिर में, मैंने अपने जूते बदलकर हल्के रबर के सोल वाले भूरे रंग के 'खेड़' जूते पहन लिए। ये जूते मुझे हल्के और बिना आवाज़ किए चलने में काफी मदद करेंगे। उस समय मैंने खाकी पैंट और कमीज़ पहनी हुई थी, और मैंने काली कमीज़ पहन ली जो मैं आमतौर पर मचान पर बैठते समय पहनता हूँ।

रंगास्वामी और चरवाहा मेरे साथ एक सूखी नदी तक आए। फिर चरवाहे ने मुझे बताया कि यह नदी लगभग सीधे पश्चिम की ओर बहती है और रास्ते में केवल दो मोड़ लेती है, जहाँ तक पहुँचने पर पैंथर ने शिकार किया था। उसने बताया कि मरी हुई गाय को बाद में नदी के दूसरे मोड़ के ठीक उत्तर दिशा में जंगल के अंदर लगभग दो सौ गज तक घसीटा गया था।

उनके निर्देश काफी स्पष्ट थे और नदी के दो मोड़ों के कारण ही वे इतने सटीक निर्देश दे पाए थे, इसके लिए मैं उनका आभारी था। मैंने उन लोगों को वापस जाने के लिए कहा, क्योंकि मैं अंततः शिवानीपल्ली जाने का अपना रास्ता खुद ही ढूंढ लूंगा, और इस तरह मैंने अपना प्रयास शुरू किया।

मैंने सबसे समझदारी भरा और शांत तरीका यही समझा कि इस सूखी नदी के तल पर चलना, इसके किनारों के ऊपर चलने की बजाय, बेहतर होगा। अनजाने में मेरे द्वारा की गई कोई भी हल्की सी आवाज़ दब जाएगी और पैंथर को कम सुनाई देगी। दूसरा, नदी के तल पर चलने से मैं आसानी से इसके मार्ग का अनुसरण कर सकता था, बिना टॉर्च जलाए यह देखने की ज़रूरत के कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, जबकि अगर मैं किनारे पर चलता तो मुझे टॉर्च जलानी पड़ती, जहाँ वनस्पति मुझे रोकती, खासकर इसलिए कि बहुत अंधेरा था और आसमान पूरी तरह से बादलों से घिरा था, बादल तारों को और उनकी हल्की रोशनी को भी पूरी तरह से छिपा रहे थे।

इसलिए मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा और जल्द ही मुझे नदी का पहला मोड़ महसूस हुआ, जो दक्षिण-पश्चिम दिशा में था। थोड़ी देर बाद नदी फिर से उत्तर की ओर मुड़ने लगी और फिर सीधी होकर पश्चिम की ओर बहने लगी। मैं चरवाहे द्वारा बताए गए दो मोड़ों में से पहला मोड़ पार कर चुका था।

कुछ ही देर बाद सड़क दूसरी बार मुड़ी, लेकिन इस बार उत्तर दिशा में। मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा ताकि किसी ढीले पत्थर या चट्टान से टकराकर आवाज़ न हो। हालाँकि मुझे जो जानकारी दी गई थी, उससे मुझे पता था कि शिकार अभी भी लगभग तीन सौ गज दूर है, लेकिन पैंथर की सुनने की शक्ति बहुत तेज़ होती है, और अगर मेरा शिकार आस-पास कहीं भी होता, भले ही वह शिकार को खा न रहा हो, तो भी वह मुझे सुन लेता और शायद फिर से भाग जाता।

सौभाग्यवश, नदी के इस हिस्से में लगभग कोई बड़े पत्थर या झाड़ियाँ नहीं थीं, जिससे मुझे चुपचाप आगे बढ़ने में मदद मिली। थोड़ी देर बाद, इसने उत्तर की ओर अपना मोड़ पूरा कर लिया और दक्षिण की ओर मुड़ने लगी। कुछ गज आगे जाकर यह फिर से सीधी हो गई और अपनी मुख्य पश्चिमी दिशा में बहने लगी।

मैं रुक गया। मैं उस जगह पहुँच गया था जहाँ पैंथर ने गाय को मारा था और जहाँ से वह शिकार को घसीटते हुए जंगल में उत्तर दिशा में लगभग दो सौ गज दूर ले गया था। मैं जानता था कि अब मुझे छोटी नदी को छोड़कर घनी झाड़ियों में जाना होगा ताकि शव और हत्यारे को ढूँढ़ सकूँ, जिसे मैं खाते हुए रंगे हाथों पकड़ने की उम्मीद कर रहा था। घोर अंधकार में मुझे रास्ता दिखाने के लिए केवल मेरी सुनने की शक्ति ही सहारा थी।

मैं दबे पांव नदी के उत्तरी किनारे की ओर बढ़ा, जो उस स्थान पर केवल छाती तक ही गहरा था। अपने पैर रेतीले तल पर रखते हुए, मैंने राइफल को किनारे पर धीरे से रख दिया और अपनी बाहों को छाती पर मोड़कर, उस पर झुककर ध्यान से सुनने लगा।

पांच मिनट बीत गए, लेकिन सन्नाटे को भंग करने वाली कोई आवाज़ नहीं आई। शायद शिकार इतनी दूर था कि मैं पैंथर को खाते हुए नहीं सुन पाया; यानी, अगर वह शिकार पर था और खा रहा था।

अपने हाथों पर भार डालते हुए, मैंने धीरे से खुद को किनारे के शीर्ष पर खींच लिया, और ऐसा करते समय मैंने कोई आवाज़ नहीं की। फिर मैंने राइफल उठाई और बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। अंधेरा घना था। साथ ही, मुझे पता था कि अगर पैंथर मुझे देख भी ले, तो मुझे उससे डरने की कोई खास ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह आदमखोर नहीं था और उसने कभी भी इंसानों को परेशान करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई थी। फिर भी, यह मेरा काले पैंथर के साथ पहला अनुभव था और मैंने उनके बेहद खतरनाक और आक्रामक होने के बारे में कई आम कहानियाँ सुनी थीं। सच कहूँ तो, इससे मैं काफी घबरा गया था।

धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, मैं हर कुछ गज पर रुककर उन आवाज़ों को सुनने की कोशिश करता था जिनसे पता चलता कि पैंथर खाने में व्यस्त है। केवल वही आवाज़ें मेरा मार्गदर्शन कर सकती थीं, क्योंकि टॉर्च की मदद के बिना कुछ भी देखने की उम्मीद करना बेकार था, और टॉर्च का इस्तेमाल तभी किया जा सकता था जब मैं उसके काफी करीब पहुँच जाऊं। टॉर्च की हल्की सी रोशनी भी अगर पैंथर को दिख जाती तो वह भाग जाता।

मैं इसी तरह चलता रहा, मानो अंतहीन समय बीत रहा हो। शायद मैं पचहत्तर गज या उससे अधिक ही आगे बढ़ा था कि कई बार रुककर सुनने के दौरान, मुझे लगा कि सामने से थोड़ा दाहिनी ओर से एक हल्की सी आवाज़ आ रही है। मैंने कुछ देर तक फिर से ध्यान से सुना, लेकिन वह आवाज़ दोबारा नहीं आई।

मेरे चारों ओर झाड़ियाँ और पेड़ घनी तरह से उग रहे थे, और घनी झाड़ियों से होकर गुजरते समय, पूरी सावधानी बरतने के बावजूद, मेरे शरीर से कुछ आवाज़ आ रही थी। हर कदम पर मेरे पैरों से भी आवाज़ आ रही थी। मैंने उन्हें ज़मीन से उठाकर और घसीटते हुए आगे बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन फिर भी मैं पूरी तरह से चुप नहीं हो पा रहा था। मैंने ऐसा न केवल आवाज़ को रोकने के लिए किया, बल्कि पैंथर के सुनने पर अपने मानवीय कदमों की आहट को छिपाने के लिए भी किया। वह निश्चित रूप से किसी भी घिसटने या रेंगने की आवाज़ को किसी इंसान से नहीं जोड़ेगा, बल्कि उसे घास और झाड़ियों में घूमते हुए किसी छोटे निशाचर जीव की आवाज़ समझेगा; जबकि एक सामान्य कदम की आवाज़ से तुरंत पता चल जाता कि आस-पास कोई इंसान है। मेरे मन में एक अप्रिय विचार आया कि कहीं मैं अंधेरे में किसी ज़हरीले साँप पर पैर न रख दूं, और मेरे रबर के जूते मेरे टखनों की रक्षा नहीं कर रहे थे। मैंने उस विचार को मन से निकाल दिया और अपने सामने उगने वाली झाड़ियों और पौधों के चारों ओर से निकलने की कोशिश की। इस वजह से मुझे उस मृत गाय की ओर जाने वाले उत्तरी मार्ग से कुछ हद तक भटकना पड़ा, जिसका अनुसरण करने का मुझे निर्देश दिया गया था।

मैं बीच-बीच में रुककर सुनता रहा, लेकिन जो आवाज़ मैंने आखिरी बार सुनी थी, वह दोबारा नहीं सुनाई दी। कुछ समय बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं उस छोटी नदी से दो सौ गज की दूरी से बहुत आगे निकल चुका था, जहाँ शिकार के पड़े होने की बात कही जा रही थी, और साथ ही मैं दिशा का सारा ज्ञान खो चुका था, क्योंकि मैं घने पेड़ों और झाड़ियों के बीच, बादलों से घिरे आसमान के नीचे था।

फिर अचानक। मुझे वह आवाज़ सुनाई दी जिसे सुनने की मुझे बहुत लंबे समय से उम्मीद थी —मांस के फटने और हड्डियों के चूर-चूर होने की स्पष्ट आवाज़।

मैं वाकई भाग्यशाली था। उस समय पैंथर अपने शिकार पर था और उससे भी बड़ी बात यह थी कि वह खाने में पूरी तरह मग्न था। अब मुझे बस इतना करना था कि उसके काफी करीब रेंगकर जाऊं ताकि टॉर्च जलाकर तस्वीर खींच सकूं। लेकिन यह सब सिर्फ सिद्धांत में ही संभव था। विचार जितना आसान था, उसे अमल में लाना उतना आसान नहीं था।

सबसे पहले तो, आवाज़ें उस दिशा से नहीं आ रही थीं जिस दिशा में मैं जा रहा था, बल्कि मेरे बाईं ओर और कुछ दूरी पर पीछे से आ रही थीं, जिससे पता चलता है कि मैंने अंधेरे में सीधा रास्ता नहीं लिया था। मैं दाईं ओर मुड़ गया था, शिकार को पार करते हुए। शायद पहले मुझे खाने की आवाज़ इसलिए नहीं सुनाई दी क्योंकि पैंथर अभी-अभी लौटा था। या—और यह एक बहुत ही बेचैन कर देने वाला विचार था जो मेरे मन में आया—हो सकता है कि उसने अंधेरे में मेरे गुजरने की आवाज़ सुन ली हो और जानबूझकर चुप रहा हो।

मैं कुछ क्षणों के लिए रुका और आवाज़ों की दिशा का पूरी तरह से पता लगाने के लिए ध्यान से सुनने लगा। अंधेरे में मैंने अनुमान लगाया कि पैंथर पचास से सौ गज की दूरी पर कहीं होगा।

अब मैंने बहुत धीरे-धीरे और बहुत सावधानी से अपने पैरों को उस आवाज की ओर बढ़ाना शुरू किया।

अगर पैंथर अपने शिकार को किसी झाड़ी में या उसके पीछे घसीटकर ले जाता, तो मेरे लिए मनचाहा निशाना लगाना नामुमकिन हो जाता। दूसरी ओर, अगर मैं गोली चलाकर उसे घायल कर देता, तो सारा फायदा पैंथर को ही मिलता, और अगर वह हमला करता, तो स्थिति बेहद अप्रिय हो जाती।

साथ ही, मैंने खुद को यह याद दिलाकर प्रोत्साहित करने की कोशिश की कि इससे पहले इस पैंथर ने कभी किसी इंसान को परेशान नहीं किया था, और जब मैं आखिरकार अपनी टॉर्च की रोशनी चमकाऊंगा, तो वह डर से भर जाएगा और मुझ पर हमला करने से रुक जाएगा, भले ही वह जानवर को पूरी तरह से भगा न दे।

उसके बाद के क्षणों का सटीक वर्णन करना या मैंने वास्तव में क्या किया, यह बताना कठिन है। मेरा मन और इंद्रियाँ इतनी सजग और सतर्क थीं कि मैंने पेड़ों और झाड़ियों जैसी बाधाओं को सहजता से पार कर लिया। मुझे पता था कि जब तक मैं पैंथर के भोजन करते समय आने वाली आवाज़ें सुन सकता हूँ, तब तक मैं निश्चित हो सकता हूँ कि वह पूरी तरह से अपने काम में लगा हुआ है और उसे मेरे आने का पता नहीं है। ये आवाज़ें बंद होते ही मुझे सतर्क होना पड़ा, क्योंकि तब पैंथर ने मुझे सुन लिया था और वह भोजन करना छोड़कर मेरी बात सुनने लगा था।

आवाजें आती रहीं और मैं भी धीरे-धीरे, सावधानी से आगे बढ़ता रहा, हर कदम को पैर की उंगली से परखने से पहले कभी पैर नहीं रखता था। जब मुझे अपने नीचे किसी पत्ते की सरसराहट सुनाई देती या महसूस होती, तो मैं चुपचाप चलने के लिए जगह ढूंढता। हर समय मेरी निगाहें सामने के अंधेरे पर टिकी रहतीं और मेरे कान जानवरों के चरने की आवाज़ों को सुनने के लिए चौकन्ने रहते।

फिर अचानक वे आवाजें बंद हो गईं, और एक भयानक सन्नाटा मुझे घेर लिया।

क्या पैंथर ने अपनी मर्जी से कुछ देर के लिए खाना बंद कर दिया था? क्या उसने खाना खत्म कर लिया था और चला गया था? क्या वह बस जा रहा था? या उसने मेरे चुपके से आने की आहट सुन ली थी और उसी क्षण हमला करने की तैयारी कर रहा था? ये सारे विकल्प मेरे

दिमाग में कौंध गए और मैं भी रुक गया।

मैं कुछ देर तक चुपचाप और स्थिर खड़ा रहा। कितनी देर तक, मुझे ठीक से याद नहीं, लेकिन मुझे याद है कि मैं सोच रहा था कि अब मुझे क्या करना चाहिए। अब जब उसने खाना बंद कर दिया था, तो आगे बढ़ना पैंथर के सामने मेरी मौजूदगी का पता लगा देता—यानी, अगर उसे पहले से ही मेरी मौजूदगी का एहसास न हो। मैं चाहे कितना भी सावधान क्यों न रहूँ, अंधेरे में किसी इंसान के लिए इतनी खामोशी से चलना नामुमकिन था कि इतने तेज़ कानों वाले जानवर को मेरी आवाज़ सुनाई न दे। दूसरी ओर, अगर मैं वहीं रुका रहता और चुप रहता, तो शायद पैंथर के पास आने पर उसकी आवाज़ सुनाई दे जाती, हालाँकि पैंथर बिना आवाज़ किए चलने के लिए जाने जाते हैं।

दो विकल्पों में से मैंने दूसरा विकल्प चुना, इसलिए मैं वहीं खड़ा रहा। जैसा कि आगे चलकर घटनाओं से साबित हुआ, ऐसा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी।

कुछ क्षणों के लिए, मेरी कान लगाकर सुनने की कोशिश करने पर मुझे एक बहुत ही हल्की सरसराहट सुनाई दी। वह रुकी और फिर शुरू हो गई। कुछ हिल रहा था। कुछ भी हो सकता था। यह एक लगातार सी आवाज़ थी, जैसे कोई साँप घास और झाड़ियों में रेंगते हुए करता है। लेकिन एक पैंथर भी पेट के बल रेंगते हुए मेरी ओर आकर ऐसी ही आवाज़ पैदा कर सकता था। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि यह एक बहुत ही डरावना विचार था।

एक बात तो तय थी। यह आवाज़ किसी चूहे या मेंढक, या किसी छोटे जंगली जीव या रात के पक्षी की नहीं थी। अगर ऐसा होता, तो यह धीमी आवाज़ रुक-रुक कर आती; जैसे जीव के हिलने पर झटके लगते। लेकिन यह एक लगातार चलने वाली आवाज़ थी, रेंगने या सरकने जैसी धीमी लेकिन निरंतर प्रगति का संकेत। अब यह बात पूरी तरह से निश्चित हो गई थी कि यह आवाज़ इन दो चीज़ों में से किसी एक की थी: या तो साँप की या तेंदुए की।

मैंने अपने मन में उमड़ रहे अंतर्मन के विचारों को आपको बताने में कुछ समय लिया है। वास्तव में, वे इतनी तेज़ी से दौड़े कि उस भयावह, दबे पांव आने की आहट सुनते ही मैंने कुछ ही सेकंडों में अपना मन बना लिया था।

कुछ और सेकंड बीतने पर मैंने यह तय कर लिया कि पैंथर निश्चित रूप से मेरी ओर रेंग रहा है, लेकिन जब तक मैं उसकी आवाज़ सुन सकता था, मुझे पता था कि मैं किसी भी हमले से सुरक्षित हूँ। फिर अचानक आवाज़ बंद हो गई।

इसके बाद वही जानी-पहचानी फुफकार सुनाई दी, जो किसी गुस्से में भरे कोबरा के अचानक ज़ोर से साँस छोड़ने जैसी थी। पैंथर गुर्राने लगा था। थोड़ी ही देर में वह ज़ोर से गुर्राएगा, शायद घुरघुराएगा, और फिर हमला कर देगा। मैंने पहले भी कई बार ऐसी आवाज़ें सुनी थीं और मुझे पता था कि क्या होने वाला है। जल्दी से राइफल को कंधे पर उठाते हुए मैंने टॉर्च का बटन दबा दिया।

दो भयावह लाल-सफेद आंखें मेरी ओर घूर रही थीं, लेकिन मैं जानवर के बारे में कुछ भी नहीं देख पा रहा था जब तक कि मुझे याद नहीं आया कि मैं एक काले पैंथर से निपट रहा था, जो रात में लगभग अदृश्य होता है।

शायद शुरू में मेरे पास आने का उसका कोई बुरा इरादा नहीं था, बल्कि वह अपने शिकार के आस-पास की हलचल की आवाज़ सुनकर चुपके से आगे बढ़ा था। लेकिन जब उसने आवाज़ के स्रोत को एक नफ़रत भरे इंसान के रूप में पहचान लिया, तो उसकी गुर्राहट की फुफकार से पता चला कि काले पैंथर ने निश्चित रूप से आक्रामक होने का फैसला कर लिया था। उसकी आँखें बिना पलक झपकाए मेरी टॉर्च की रोशनी को घूर रही थीं।

मेरे पास सावधानीपूर्वक निशाना साधने के लिए काफी समय था। फिर मैंने गोली चला दी।

मेरी उम्मीदों के विपरीत, या कम से कम अपनी मृत्यु की पीड़ा में छटपटाने और संघर्ष करने के बजाय, पैंथर कर्कश दहाड़ों के साथ दूर भाग गया। क्या मेरा निशाना पूरी तरह चूक गया था, या मैंने जानवर को घायल कर दिया था?

मुझे पूरा यकीन था कि मुझसे चूक नहीं हुई होगी, लेकिन यह सवाल दिन की रोशनी में ही सुलझ सकता था। मैं वापस लौटने के लिए मुड़ गया।

इस बार, बेशक, मुझे अपनी टॉर्च का इस्तेमाल करने की आजादी थी, और उसकी मदद से मैं लगभग उसी दिशा में वापस चल पड़ा जहाँ से मैं आया था।

हालांकि, मेरा अनुमान गलत था, और मैं आधे घंटे तक भटकता रहा, लेकिन उस छोटी नदी तक वापस नहीं पहुंच सका जिसके पास मैं पहुंचा था।

मैंने आकाश की ओर देखा। आसमान में अभी भी बादल छाए हुए थे और मुझे एक भी तारा दिखाई नहीं दे रहा था जिससे मुझे शिवानीपल्ली गाँव की सही दिशा का अंदाज़ा लग सके। तभी मुझे याद आया कि गाँव से पश्चिम की ओर ज़मीन हल्की ढलान वाली थी, जो पश्चिम में बहने वाली दो नदियों द्वारा बनी खाई की ओर जाती थी। इसलिए, अगर मैं थोड़ी ऊपर की ओर जाने वाली दिशा में चलूँ तो मैं भटक नहीं सकता और गाँव के आस-पास ही कहीं पहुँच जाऊँगा।

मैंने पहाड़ी की ओर चलना शुरू किया।

लेकिन मैं शिवानीपल्ली या उसके आसपास कहीं भी नहीं पहुँच पाया। संक्षेप में, उस रात साढ़े ग्यारह बजे के बाद मैं वहाँ पहुँचा, शिवानीपल्ली या उसके आसपास के इलाके में नहीं, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, बल्कि सालिवरम की ओर उत्तर दिशा में जाने वाले रास्ते के आधे से ज़्यादा हिस्से में। उसके बाद, ज़ाहिर है, मुझे पता चल गया कि मैं कहाँ हूँ और आधे घंटे के भीतर गाँव पहुँच गया।

वहाँ मैंने रंगास्वामी को जगाया और सारी घटना बताई। उसके बाद सोने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

मैंने आपको पहले ही बताया है कि शिवानीपल्ली एक छोटा सा कस्बा था जहाँ मुश्किल से आधा दर्जन झोपड़ियाँ थीं। रंगास्वामी स्वयं कई विवाह कर चुके थे और उनके परिवार में कई महिलाएं और बच्चे थे, इसलिए मैं उनसे अपनी झोपड़ी में आमंत्रित करने की उम्मीद नहीं कर सकता था। इसलिए मैं मुख्य रास्ते से थोड़ा हटकर रखे एक भूसे के ढेर पर लेट गया और ओस से भीगी हुई भूसी को अपने ऊपर ओढ़ लिया ताकि ठंड से बच सकूँ।

अगर आप कभी दक्षिण भारत के जंगलों में बहुतायत में पाए जाने वाले नन्हे घास के कीड़ों द्वारा आधा खाए जाने का रोमांचक अनुभव लेना चाहें, तो मैं आपको शिवानीपल्ली में घास के ढेर में एक रात बिताने की सलाह दूंगा। आप निश्चित रूप से निराश नहीं होंगे। घास का कीड़ा एक छोटा सा जीव है जो आमतौर पर पिन की नोक से भी बड़ा नहीं होता। आपका खून चूसने के बाद यह काफी बड़ा हो जाता है। लेकिन यह बहुत ही कृतघ्न जीव है। यह न केवल आपका खून चूसता है, बल्कि एक छोटा सा घाव भी छोड़ जाता है जो तेजी से मवाद से भरे फोड़े में बदल जाता है। असहनीय खुजली को शांत करने के लिए आप जितना खुजलाते हैं, यह घाव उतना ही बड़ा होता जाता है और अंततः एक भयंकर फोड़े में बदल जाता है जिस पर भूरे रंग की पपड़ी जैसी परत जम जाती है और अंदर से पानी निकलता है। इसके अलावा, अगर एक साथ कई कीड़े आप पर हमला कर दें, तो आपको घावों के साथ-साथ बुखार भी हो जाएगा।

उस भयानक रात के बाकी समय में मैं मुश्किल से ही सो पाया, बल्कि अंधेरे के बचे हुए घंटों में खुद को खुजलाता रहा। सुबह होते ही मैं बहुत थका हुआ, बहुत नाराज़ और बहुत दर्द से कराह

रहा था, क्योंकि उस रात दुश्मन से मेरा सामना हुआ था—और वो था लगभग सूक्ष्म आकार का घास का कीड़ा।

सबसे पहले तो मुझे गर्म चाय बनानी थी ताकि मेरा मनोबल बढ़े, जो काफी गिरा हुआ था। इसी सोच के साथ मैं रंगास्वामी की कुटिया की ओर गया, लेकिन दरवाजा कसकर बंद मिला। यह स्पष्ट था कि वहां रहने वाले लोग देर से उठने का इरादा रखते थे। यह मेरी योजना के बिल्कुल विपरीत था, इसलिए मैंने मजबूत लकड़ी के ढांचे पर जोर-जोर से दस्तक दी और बार-बार आवाज लगाई। काफी देर बाद मुझे अंदर से कुछ हलचल सुनाई दी। आखिरकार दरवाजे को अंदर से बंद करने वाली लकड़ी की छड़ हटाई गई, और बिखरे बालों वाला, नींद में डूबा हुआ रंगास्वामी बाहर आया।

मैंने उसे आग जलाने का निर्देश दिया, जिसे उसने गाँव की सड़क के दूसरी ओर तीन पत्थरों को त्रिभुज के तीन बिंदुओं पर रखकर और बीच में गीली लकड़ियों और भूसे से धुआँदार आग जलाकर शुरू किया। मैं अपने साथ पानी उबालने का कोई बर्तन नहीं लाया था, इसलिए मुझे उसके घर का एक मिट्टी का बर्तन उधार लेना पड़ा, जिसके बारे में उसने मुझे आश्वासन दिया कि वह बिल्कुल साफ है, हालाँकि मैं खुद उसकी इस बात पर पूरी तरह विश्वास करने को तैयार नहीं था।

लेकिन आखिरकार पानी उबल गया। मैंने अपनी पानी की बोतल खाली करके उसमें कुछ चाय की पत्तियां डालीं, फिर उबलता हुआ पानी डाला, ढक्कन लगाकर बोतल को हिलाया, न कि चम्मच से चलाया। इसी बीच दूसरी झोपड़ियों में रहने वाले लोग जाग उठे। वे मुझे उत्सुकता से देख रहे थे। किसी ने थोड़ा दूध दिया, और किसी ने गुड़ दिया, जिसके लिए मैं बहुत आभारी था, क्योंकि मैं चीनी लाना भूल गया था। हमने दूध उबाला और अपने मग में गुड़ के कुछ टुकड़े डाले, फिर उसमें चाय और उबलता हुआ दूध मिलाया। यकीन मानिए, उससे जो मिश्रण बना, वह चाय जैसा लग रहा था।

नाश्ते में मैंने कुछ अंडे खाए जिन्हें मैंने खरीदा और उसी चूल्हे पर उबाल लिया। पिछली रात उन घिनौने छोटे कीड़ों के साथ हुए भयानक अनुभव के बाद, लगभग सात बजे तक मेरी दिलचस्पी फिर से जाग उठी थी और मैंने पैंथर के बारे में कुछ करने का सोचा।

मैंने रंगास्वामी से कहा कि वह उस चरवाहे को बुलाए जो पिछली रात हमारे साथ था और जो उस सुबह तक दिखाई नहीं दिया था, या उसके किसी साथी को, यदि संभव हो तो भैंसों का झुंड इकट्ठा करने और उन्हें घनी झाड़ियों में ले जाकर पैंथर को भगाने के लिए कहे, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि मैंने अपने एक ही शॉट से उस जानवर को पूरी तरह से नहीं चूका था।

वहाँ मौजूद सभी लोगों ने जवाब दिया कि शिवानीपल्ली में भैंसें नहीं हैं; और कोई भी अपने मवेशियों को पैंथर के संभावित हमले में घायल होने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। तभी पिछली रात का मेरा लापता साथी—वह चरवाहा जो मेरे साथ आया था—मिल गया। उसने बताया कि सालिवराम में उसका एक दोस्त है जिसके पास एक पिस्तौल है। वह मुझसे मदद करने के लिए पिस्तौल उधार लेना चाहता था, और इसी उद्देश्य से वह उस सुबह अंधेरा रहते ही सालिवराम के लिए निकल पड़ा था। दुर्भाग्य से, उसका दोस्त अपनी पिस्तौल लेकर कहीं बाहर गया हुआ था, इसलिए वह उसे उधार नहीं ले सका। वह खाली हाथ लौट आया।

मैंने उनकी मदद करने की नेक मंशा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन मन ही मन मैं इस बात से बहुत खुश था कि वे मुझसे मजल-लोडर (बंदूक) उधार लेने में नाकाम रहे। एक अनुभवहीन व्यक्ति के लिए मजल-लोडर एक बेहद घातक हथियार बन सकता है और मैं मानता हूँ कि अगर वे और वह बंदूक मेरे पीछे होते तो मैं बहुत घबरा जाता।

भैंसों का इस्तेमाल न कर पाने के बाद, मैंने शिवानीपल्ली में मौजूद ऐसे ही देहाती कुत्तों के मालिकों का सहयोग लेने की कोशिश की। काफी आनाकानी के बाद, आखिरकार एक अकेली कुतिया मिली। वह दुबली-पतली कुतिया थी, जिसके कान जड़ से कटे हुए थे, पूरी तरह भूरे रंग की थी और उसकी पूंछ बहुत लंबी और मुड़ी हुई थी। वह गाँव के 'आवारा कुत्ते' का एक विशिष्ट उदाहरण थी, जिनके कान बचपन में ही काट दिए गए थे क्योंकि बाद में उन पर और अंदर कीड़े लग जाते। गाँव वालों के लिए यह समझना आसान है कि अपने कुत्तों के कान बचपन में ही काट देना, बाद में समय-समय पर उनमें से सैकड़ों कीड़े निकालने से कहीं कम मेहनत और कम समय लेता है।

एक अजीब संयोग से, इस कुतिया का नाम 'कुश' रखा गया, जिसने मुझे जंगल के दिनों के मेरे पुराने दोस्त* बायरा पुजारी के कुत्ते 'कुश कुश करिया' के नाम की याद दिला दी। मुझे नहीं पता कि यह नाम सलेम जिले के वन क्षेत्रों के कुत्ते पालकों के बीच लोकप्रिय है या यह सिर्फ किसी भी कुत्ते का ध्यान आकर्षित करने के लिए स्वाभाविक रूप से निकलने वाली ध्वनि जैसा लगता है। व्यक्तिगत रूप से, मैं दूसरे विचार की ओर अधिक झुकाव रखता हूँ। जो भी हो, मुझे तब यह नहीं पता था कि यह कुतिया कुश अपने नाम वाले बायरा के कुत्ते की तरह ही बेहद चंचल स्वभाव की होगी।

अंत में, चरवाहे रंगास्वामी, कुश और उसके मालिक के साथ, हम यह पता लगाने के लिए निकल पड़े कि उस पैंथर का क्या हुआ था।

हम पिछली रात के अपने कदमों के निशान पर वापस उसी स्थान पर गए जहां मेरे साथियों ने मुझे छोड़ा था, फिर नदी के दो मोड़ों के साथ-साथ अपने ही पदचिह्नों का अनुसरण किया और अंत में उस स्थान पर उसके उत्तरी किनारे पर चढ़ गए जिसे मैंने पिछली रात चुना था।

उसके बाद मैं राइफल ताने हुए आगे-आगे चल रहा था, कुश मेरे और उसके मालिक के बीच दौड़ रही थी, जो कतार में सबसे पीछे था। हमारे बीच में रंगास्वामी था, और उसके पीछे चरवाहा था।

जैसा कि मुझे पिछली रात ही पता चल गया था, झाड़ियाँ इतनी घनी थीं कि बारह घंटे पहले मैंने जिस रास्ते का अनुसरण किया था, उसका सटीक पता लगाना असंभव था; और दिन का उजाला होने के कारण, मैं उन पेड़ों या झाड़ियों में से किसी को भी पहचान नहीं पा रहा था जिनसे मैं अंधेरे में होकर गुजरा था, हालाँकि मुझे मोटे तौर पर पता था कि मैं किस दिशा में गया था।

चरवाहे को बेशक पता था कि शिकार कहाँ पड़ा है, लेकिन मैं सीधे वहाँ नहीं जाना चाहता था। मेरा इरादा था कि अगर मुमकिन हो तो उस जगह को ढूँढूँ जहाँ मैंने पैंथर पर गोली चलाई थी। मैं कामयाब नहीं हुआ: जो लोग जंगलों में रहे हैं, वे समझ सकते हैं कि दिन के उजाले में एक छोटी सी झाड़ी भी रात के उजाले की तुलना में आकार, आकृति और जगह में कितनी अलग दिखती है। अंधेरा जंगल में वस्तुओं के आकार को बहुत बड़ा कर देता है, उनकी आकृति को बिगाड़ देता है और दिशा के बारे में भ्रम पैदा करता है।

मुझे जो चाहिए था उसे ढूंढने में मदद के लिए, मैंने चरवाहे से कहा कि वह हमें मरी हुई गाय तक ले जाए, जिसे उसने आसानी से ढूंढ लिया। संयोग से, वह आधी खाई हुई थी, हालांकि उस समय यह जानना संभव नहीं था कि क्या पैंथर ने मेरे उससे मिलने से पहले खाना खा लिया था, या क्या मैंने उसे पूरी तरह से नहीं देखा था और वह मेरे जाने के बाद खाने के लिए वापस आया था। पैंथर कभी-कभी अपने शिकार को ढूंढने के लिए वापस आ जाते हैं यदि उन्हें कोई ढूंढ नहीं पाता है, हालांकि ऐसा व्यवहार, कम से कम मेरे अनुभव में, बहुत आम नहीं है।

शिकार तक पहुँचने के बाद, मैंने अब उस दिशा को याद करने और फिर से समझने की कोशिश की जहाँ से मैं आया था, ताकि मैं वहाँ से अपने ही पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए अंततः उस स्थान पर पहुँच सकूँ जहाँ मैंने गोली चलाई थी। दुर्भाग्य से, मुझे ठीक-ठीक पता नहीं था कि पैंथर कितनी दूर से मेरी ओर रेंगता हुआ आया था, बल्कि मुझे पूरी तरह से अपने अनुमान पर निर्भर रहना पड़ा कि जब मैंने पहली बार उसे चरते हुए सुना था तब वह कितनी दूर था। रात में जंगल में, जब ध्वनि सुनने वाला और ध्वनि का स्रोत दोनों ही आसपास की झाड़ियों से घिरे होते हैं, तो ध्वनि बहुत भ्रामक हो सकती है, और इसी कारण से यह अनुमान लगाना मुश्किल होता है कि वह कितनी दूर तक जा सकती है। मुझे लगा कि जहाँ तक मुझे याद है, मैं मृत गाय से पंद्रह से पचास गज की दूरी पर खड़ा हो सकता था।

मैंने अंदाज़ा लगाया कि मैं कहाँ खड़ा हो सकता था, और पंद्रह गज नापकर मैंने एक आदमी से एक छोटी सी शाखा झुकाकर उस जगह को चिह्नित करने को कहा। फिर मैंने पैंतीस गज और नापा ताकि पचास गज की अधिकतम दूरी पूरी हो जाए, जो मेरे अनुमान से उस पैंथर से मेरी दूरी का अधिकतम माप था जिसे मैंने पिछली रात चरते हुए सुना था। यहाँ हमने एक और शाखा झुकाई।

इन दोनों निशानों के बीच कहीं, और लगभग उसी दिशा में जहाँ मैं चल रहा था, मुझे पता था कि मुझे कोई न कोई सुराग ज़रूर मिल जाएगा जिससे पता चल सके कि मेरी गोली पैंथर को लगी थी या नहीं। अगर मुझे कुछ नहीं मिला तो मुझे यही मानना पड़ेगा कि गोली मारने का मेरा प्रयास पूरी तरह विफल रहा।

इस समय तक मुझे यह भी यकीन हो गया था कि अगर पैंथर घायल हुआ भी था, तो वह आस-पास कहीं छिपा नहीं था, क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह हमारी आवाजाही और बातचीत सुनकर अब तक कोई न कोई संकेत जरूर देता। वह संकेत गुर्राहट के रूप में होता, या शायद अचानक हमला भी कर देता। ऐसी किसी प्रतिक्रिया का न होना और पूरी तरह सन्नाटा छा जाना, मुझे इस निष्कर्ष पर ले आया कि अगर मैंने उसे मारा भी होता, तो घाव इतना गंभीर नहीं था कि वह वहां से भाग न सके।

मैंने अपने तीनों साथियों को चारों ओर घेरा बनाकर खून के निशान की सावधानीपूर्वक तलाश करने का निर्देश दिया। मैं भी उनके साथ शामिल हो गया, और थोड़ी ही देर में कुश किसी चीज़ को सूंघते हुए अपने मालिक का ध्यान आकर्षित करने लगी। उसने चिल्लाकर कहा कि उसे वह मिल गया है जिसकी हम तलाश कर रहे थे। उसके और कुतिया के चारों ओर इकट्ठा होकर हमने लेमनग्रास की एक पत्ती पर सूखे खून का एक लंबा धब्बा देखा।

मेरा मनोबल काफी बढ़ गया। यह इस बात का सबूत था कि मेरा निशाना नहीं चूका था। ज़मीन से खून के निशान की ऊंचाई से पता चलता था कि मैंने अपने शिकार को उसके शरीर के ऊपरी हिस्से में कहीं घायल किया था, और जैसा कि मुझे पता था कि मैंने उसकी आंखों के बीच गोली चलाई थी क्योंकि मेरी टॉर्च की रोशनी उसकी आंखों में पड़ रही थी, इसलिए मेरी गोली उसके सिर को छूकर निकल गई होगी। या फिर, अगर वह उस समय अपने पिछले पैरों को ऊपर उठाकर बैठा होता (जो कि रेंगते हुए पैंथर के लिए एक असामान्य स्थिति है), तो मेरी गोली उसकी पीठ के पिछले हिस्से में कहीं धंस गई होती।

यहीं पर कुश ने अपनी खूबी दिखाई। वह बिल्कुल अप्रशिक्षित कुतिया थी, लेकिन सहज रूप से उसे समझ आ गया कि उससे क्या अपेक्षा की जा रही है। थोड़ी देर तक वह बेतरतीब ढंग से इधर-उधर सूंघती रही, फिर रोने लगी और हमसे आगे दौड़ने लगी।

हमने उसका पीछा किया और पाया कि जहाँ से पैंथर गुजरा था, वहाँ पत्तियों और घास पर

खून के और भी धब्बे थे। झाड़ियों और ऊँची घास के गुच्छों के बीच ज़मीन पर भी खून के धब्बे थे। यह एक उत्साहवर्धक खोज थी, क्योंकि इससे पता चलता था कि जानवर का काफी खून बह रहा था, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि घाव केवल मामूली खरोंच नहीं था।

कुछ बेहद सुरक्षित स्थानों को छोड़कर, अधिकांश रक्त सूख चुका था। वहाँ यह इतना नम था कि उंगलियों से रगड़कर हटाया जा सकता था। हालाँकि, यह इतना गाढ़ा या गहरा नहीं था कि यह संकेत दे सके कि मेरी गोली किसी महत्वपूर्ण अंग, जैसे फेफड़े, में घुस गई थी।

कुश पश्चिम दिशा में बहुत तेज़ी से आगे बढ़ी, और यह स्पष्ट था कि वह एक ऐसे रास्ते का अनुसरण कर रही थी जो अंततः हमें ज़मीन की तीव्र ढलान तक ले जाएगा, जहाँ से उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली धारा का तल निकलता है, इससे पहले कि वह नीचे दूसरी धारा से मिलकर पश्चिम की ओर मुड़ जाए। संगम से पहले इस धारा को अनेकल वंका के नाम से जाना जाता है। इन दोनों धाराओं के मिलने से डोड्डा हल्ला कहलाता है, जिसका कन्नड़ भाषा में शाब्दिक अर्थ है 'बड़ी घाटी'। इसका यह नाम इसलिए है क्योंकि इसके कई हिस्से खाइयों और दर्रों से होकर गुजरते हैं और अनचेटी गाँव के पास से एक घुमावदार और कष्टदायक मार्ग बनाते हैं। वहाँ नदी अचानक अपना मार्ग बदल लेती है और गुंडालम से होते हुए दक्षिण की ओर मुड़ जाती है, और अंततः कावेरी नदी में मिल जाती है। यही डोड्डा हल्ला धारा कभी जोवलागिरी के आदमखोर बाघ का ठिकाना हुआ करती थी,* लेकिन यह एक अलग कहानी है। मैंने इसके हर हिस्से की खोजबीन की है, उस जगह तक जहाँ यह कावेरी नदी से मिलती है, और इसे 'गुप्त नदी' नाम दिया है। इसका एक कारण यह है कि इसके मार्ग पर कई मील की कठिन पैदल यात्रा करनी पड़ती है, इसलिए बहुत कम लोग इस रास्ते से गुजरते हैं, और यह बेहद शांत और मानव जाति की आवाज़ों से दूर है; दूसरा कारण यह है कि मैंने इसके किनारों पर भूवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहस्य खोजे हैं। मैं उन्हें प्रकट करने में संकोच करता हूँ, क्योंकि उनके सार्वजनिक होने से अगला आवश्यक पाप अपने आप ही हो जाएगा, यानी सलेम जिले के सबसे रमणीय और एकांत वन क्षेत्रों में से एक की पवित्रता का उल्लंघन।

उस सुबह घटी घटनाओं पर लौटते हैं। झाड़ियाँ बहुत घनी थीं, लेकिन कुश की अचूक प्रवृत्ति को ये कोई बाधा नहीं लग रही थीं। वास्तव में, परेशानी तो उसके साथ चलने में थी। उसका छोटा और फुर्तीला भूरा शरीर झाड़ियों और काँटों के बीच से तेज़ी से निकल रहा था। हमारे पैर, हाथ और बाँहें इन काँटों से बुरी तरह छिल गए थे क्योंकि हम कुश को नज़र में रखने के लिए मूर्खतापूर्ण गति से चल रहे थे, और घायल पैंथर के अचानक हमले से बचने के लिए ज़रा भी सावधानी नहीं बरत रहे थे, अगर वह हमारे ठीक आगे आ जाता। कभी-कभी कंटीली झाड़ियों और अन्य बाधाओं के कारण हमारी गति धीमी हो जाती थी, और कुश बहुत आगे निकल जाती और गायब हो जाती। तब उसे सीटी बजाकर वापस बुलाना ज़रूरी हो जाता था, और जब वह कुछ मिनटों बाद वापस आती थी, तो उसे फिर से हमारे रास्ते पर आने में कुछ कठिनाई होती प्रतीत होती थी।

हमारे पास रस्सी नहीं थी, इसलिए मैंने चरवाहे की पगड़ी उधार ली और कपड़े का एक सिरा कुश के गले में बांध दिया, और दूसरा सिरा उसके मालिक को दे दिया। लेकिन पगड़ी छोटी थी और कपड़ा भी कम पड़ रहा था। आदमी को पकड़ बनाए रखने के लिए झुकना पड़ा, जबकि कुश आगे बढ़ने की बेचैनी में छटपटाती, हांफती और खांसती रही।

इसी तरह हम आगे बढ़ते रहे और अंततः पठार के किनारे पर पहुँच गए, जहाँ से ज़मीन अचानक ढलान पर उतरकर अनेकल वंका नदी के तल तक पहुँचने लगी। नीचे पेड़ों की चोटियों के बीच से हमें नदी दिखाई दे रही थी, जिसकी चाँदी जैसी सतह पर सूरज की किरणें चमक रही

थीं और वह रेतीले तल पर इधर-उधर बहती जा रही थी। उस समय नदी तीन-चौथाई सूखी थी।

कुछ देर बाद हमें पहला ठोस सबूत मिला जिससे पता चला कि पैंथर को अपने ज़ख्मों का असर महसूस होने लगा था। वह बबूल के पेड़ के नीचे घास में लेट गया था और दर्द से कराह रहा था, क्योंकि जहाँ-जहाँ वह लेटा और करवटें बदल रहा था, वहाँ खून के धब्बे और निशान दिखाई दे रहे थे। कुश ने उस जगह पर काफी देर बिताई और खून चाटकर एक और असामान्य व्यवहार दिखाया। आम तौर पर गाँव का कुत्ता पैंथर से डरता है, लेकिन कुश, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, एक अनोखा जानवर था, और यह वाकई बहुत अच्छी बात थी कि उसका मालिक उसे साथ लाने को तैयार था। आम तौर पर, गाँव वाले जो एक पिल्ले के कान जड़ से काटने में भी संकोच नहीं करते, वे घायल पैंथर या बाघ का पता लगाने के लिए कुत्ते का इस्तेमाल करने को क्रूरतापूर्ण प्रथा मानते हैं और ऐसे किसी भी काम में शामिल होने से साफ इनकार कर देते हैं। लेकिन उस कुतिया की अमूल्य सहायता के बिना, हम उस सुबह खून के निशान का पीछा नहीं कर पाते। घनी झाड़ियों में यह सामान्य मानवीय दृष्टि से दिखाई नहीं देता।

जैसे-जैसे हम गहरी ढलान से नीचे उतरते गए, वनस्पति विरल होती गई और ज़मीन नंगी और पथरीली होती गई। हर जगह बड़े-बड़े पत्थर बिखरे हुए थे, जिनके बीच-बीच में कठोर, लंबी पत्तियों वाली लेमनग्रास के गुच्छे दिखाई दे रहे थे।

फिर हम एक ऐसे पड़ाव पर पहुँचे जहाँ केवल बड़े-छोटे पत्थर ही थे और ढलान लगभग समाप्त हो चुकी थी। मानसून के दौरान जब नदी में बाढ़ आती है, तब उसका जलस्तर इतना ही होता है।

यहां, वनस्पति के खत्म होते ही, निशान ढूंढना आसान हो गया। घायल जानवर से गिरे और चट्टानों पर छिटके खून की बूंदों से उसके गुजरने का पता चल रहा था। जितनी दूरी हम तय कर चुके थे और पैंथर के बहे खून की मात्रा को देखते हुए, ऐसा लग रहा था कि वह मेरी शुरुआती कल्पना से कहीं ज्यादा बुरी तरह घायल था। घाव गहरा रहा होगा और गोली शायद किसी धमनी में लगी होगी। अगर गोली कहीं और, खासकर जानवर के किसी मांसल हिस्से में लगी होती, तो संभव था कि त्वचा के नीचे मौजूद प्राकृतिक वसा के जमा होने और गोली से बने छेद को बंद करने से खून बहना कम हो जाता, या शायद पूरी तरह रुक भी जाता।

हम नदी के संकरे तल पर पहुँचे जहाँ पानी अभी भी बह रहा था। यहाँ पैंथर पानी पीने के लिए नीचे बैठा था, और वहाँ खून के दो निशान थे, एक पानी के किनारे के ज़्यादा करीब था। दूर वाले निशान पास वाले निशानों की तुलना में ज़्यादा खून बहने का संकेत दे रहे थे। यह बात अजीब थी और उस समय मुझे बहुत उलझन में डाल रही थी, क्योंकि मैंने पिछली रात सिर्फ़ एक गोली चलाई थी। इसका हल तो और भी ज़्यादा चौंकाने वाला था।

एक जगह पर पैंथर अपने ही खून में लथपथ हो गया था और नदी पार करने से ठीक पहले एक चट्टान पर अपने पदचिह्न छोड़ गया था। यह निशान जानवर के अगले पैर के एक पंजे से बना था और इसके आकार से पता चलता है कि पैंथर का आकार औसत दर्जे का था और वह संभवतः नर था। जब जानवर नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचा तब तक पैर से खून धुल चुका था, लेकिन पत्थरों और चट्टानों पर खून की सूखी बूँदें अभी भी मौजूद थीं।

नदी पार करने के बाद पैंथर ने अपना रास्ता बदल लिया और लगभग दो सौ गज तक पानी के किनारे-किनारे समानांतर चलता रहा, फिर वह बाईं ओर मुड़ा और विपरीत ढलान पर चढ़ने लगा। पत्थर और चट्टानें एक बार फिर तेजी से वनस्पतियों में तब्दील हो गईं, और हम फिर से लंबी घास, कांटेदार झाड़ियों, बिखरे हुए छोटे-छोटे बांसों और पेड़ों के घने झुरमुटों से होकर गुजरे।

पैंथर ऊपर की ओर चढ़ता चला गया था, और अब कुश भी उसी राह पर चल पड़ी, मानो

उसे इस काम के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया हो। आखिरकार हम उस सड़क पर आ गए जो डेनकनिकोट्टा से एंचेटी की ओर जाती है और नीचे की ओर जाते हुए जंगल को पार करती है। हम इस सड़क पर ठीक नौवें मील के पत्थर के सामने आ गए थे, जो अब सड़क के किनारे हमारे सामने दिखाई दे रहा था। संयोग से, यही वह सड़क थी जिस पर मैंने अपनी कार पाँचवें मील के पत्थर के पास खड़ी की थी जब मैं पिछली शाम शिवानीपल्ली जाने के लिए निकला था।

रात भर और उस सुबह तड़के कई बैलगाड़ियाँ उस सड़क से गुज़री थीं, और धूल के गुबार में कुछ पल के लिए गंध पूरी तरह खो गई थी। लेकिन कुश को दूसरी तरफ़ पहुँचने पर गंध पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई, और हम उसके पीछे-पीछे चल दिए।

घास और बांस धीरे-धीरे कम होते गए और उनकी जगह कांटेदार झाड़ियाँ और लैंटाना उग आए, जो हमारे कपड़ों और शरीर के हर उस हिस्से को चीरते हुए निकल रहे थे, जहाँ वे छूते थे। कुछ जगहों पर, जहाँ पैंथर लैंटाना और कांटेदार झाड़ियों के नीचे दुबका हुआ था, वहाँ हमारे सामने लगभग अभेद्य बाधा खड़ी हो गई थी। न तो आगे जाने का रास्ता था और न ही पीछे हटने का, इसलिए हमारे पास झाड़ियों के नीचे पेट के बल रेंगते हुए उसका पीछा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

ऐसी जगहों और हालातों में मेरी राइफल बोझ बन गई थी, और काँटे मेरे बालों और चेहरे को नोंच रहे थे और मेरे हाथों, शरीर और पैरों में धँस रहे थे, जिससे मैं कोस रहा था और गालियाँ दे रहा था। मेरे तीनों साथियों की हालत तो मुझसे कहीं ज़्यादा खराब थी, क्योंकि उन्होंने मुझसे कम और पतले कपड़े पहने थे। शायद उनकी चमड़ी ज़्यादा मोटी थी—मुझे ठीक से पता नहीं। लेकिन मुझे यकीन है कि हम चारों के मुँह से जो गालियाँ निकल रही थीं, उनसे बिलिंग्सगेट की किसी भी प्रतियोगिता में हमें इनाम मिल जाता। सिर्फ़ कुश ही बेफिक्र थी, और आगे खड़ी होकर वह बार-बार हमारी तरफ देख रही थी, साफ़ तौर पर हमारी धीमी और बेढंगी चाल से वह अधीर हो रही थी।

लेकिन इस बार यह भी स्पष्ट था कि घायल जानवर कुंदुकोट्टई नामक एक छोटे से गाँव से लगभग आधा मील पीछे स्थित एक बड़ी पहाड़ी की ओर जा रहा था। यह गाँव डेनकनिकोट्टा-अंचेट्टी सड़क पर सातवें और आठवें मील के पत्थर के बीच स्थित था, जिसे हमने अभी-अभी पार किया था। पहाड़ी की चोटी पर कई छोटी-बड़ी गुफाएँ थीं, और इससे भी बुरी बात यह थी कि कुछ बड़ी गुफाओं की मेहराबदार छतों को जंगली चट्टानों पर रहने वाली बड़ी मधुमक्खियों ने अपने छत्ते बनाने के लिए सुरक्षित और आदर्श स्थान के रूप में चुन लिया था। मैंने पहले भी कई बार अंचेट्टी जाने वाली सड़क पर गाड़ी चलाते हुए इन छत्तों को देखा था।

मुझे लगा कि काले पैंथर को पकड़ने की मेरी उम्मीदें बहुत कम होती जा रही हैं। उन गुफाओं में उसे ढूंढना भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जैसा था। इसके अलावा, अगर पैंथर का छिपने का स्थान मधुमक्खियों द्वारा चुनी गई कई गुफाओं में से एक होता, तो मधुमक्खियां उसकी रक्षा करतीं। मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि ये चट्टानी मधुमक्खियां, जब परेशान होती हैं, तो बेहद खतरनाक दुश्मन बन सकती हैं।

हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए और गुफाओं की कतार के नीचे झाड़ियों से बाहर निकले, जहाँ ढलान वाली चट्टानों की वजह से कांटेदार झाड़ियाँ कम हो गईं और उनकी संख्या घटने लगी। ये चट्टानें सदियों से ऊपर से बहते बारिश के पानी से घिसकर कांच की तरह चिकनी हो गई थीं।

गंध चट्टान की ढलान पर ऊपर की ओर बढ़ती हुई एक बड़ी गुफा की ओर जा रही थी जो हमारे ऊपर दिखाई दे रही थी। जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से हम गुफा की छत से लटके हुए कम से

कम आधा दर्जन मधुमक्खी के छत्तों के काले समूह देख सकते थे, जिनमें से प्रत्येक लगभग एक गज लंबा और लगभग दो फुट चौड़ा था। उनके बीच पुराने छोड़े हुए छत्तों के अवशेष बिखरे पड़े थे, मोम चट्टान से बाहर निकला हुआ था, जो गंदे पीले-सफेद रंग के चपटे त्रिकोणों के आकार का था, लगभग नौ इंच लंबा।

कैनवास के तले वाले मेरे जूतों की बदौलत मैं फिसलन भरी चट्टान पर आसानी से चढ़ गया, जबकि मेरे साथियों के नंगे पैरों ने उनकी और भी मदद की। कुश के पंजे हमारे आगे चट्टान पर चढ़ते समय हल्की सी क्लिक की आवाज़ कर रहे थे।

हम गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचे जहाँ एक धीमी सरसराहट की आवाज़ गूंज रही थी। यह लाखों मधुमक्खियों की हलचल से आ रही थी जो हमारे ऊपर लटके छत्तों में इधर-उधर रेंग रही थीं। इसके अलावा, एक लगातार हल्की भिनभिनाहट भी थी, जो व्यस्त कीड़ों के पंखों से उठ रही थी, जो जंगल से जंगली फूलों से शहद लेकर आ रहे थे, जिसे वे छत्तों में जमा कर रहे थे, और कुछ और शहद लाने के लिए रवाना हो रहे थे।

वे छोटे जीव अपने कर्तव्यों में मग्न थे और हमारी ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे थे, लेकिन हमें एहसास हुआ कि अगर हमने गलती से भी उन्हें परेशान किया, तो यही छोटे जीव, जो अभी इतने निर्दोष और शांत दिख रहे हैं, काले लावा की धारा की तरह हम पर विषैले हमले करेंगे और कुछ ही मिनटों में हमें डंक मारकर मौत के घाट उतार देंगे।

हम गुफा के प्रवेश द्वार के सामने खड़े थे, जहाँ खून के निशान, जो अब बहुत हल्के हो गए थे, दो छोटी सूखी बूंदों के रूप में अभी भी दिखाई दे रहे थे। इनसे पता चलता था कि घायल जानवर अंदर चला गया था।

गुफा के प्रवेश द्वार के पास काफ़ी बड़ी थी, लगभग बीस फीट चौड़ी और लगभग बीस फीट ऊँची। कुछ गज तक अंदर तक दिन की रोशनी आती थी, उसके आगे पूरी तरह अंधेरा था। मैंने गुफा के प्रवेश द्वार के पास छत से लटके हुए नौ अलग-अलग मधुमक्खी के छत्ते गिने, सभी बड़े आकार के थे। ज़मीन चट्टान की थी और ऐसी जगहों पर आमतौर पर पाई जाने वाली नमी से मुक्त प्रतीत होती थी। निस्संदेह इसी कारण से यह गुफा पैंथर और मधुमक्खियों का निवास स्थान थी। क्योंकि ये जानवर और कीड़े, विशेष रूप से पैंथर, नम जगहों को नापसंद करते हैं।

मैंने अपने तीनों साथियों से फुसफुसाकर कहा कि वे बाहर ही रहें और गुफा के प्रवेश द्वार के किनारे ढलान वाली चट्टान पर चढ़कर गुफा के ऊपर तक पहुँच जाएँ, और किसी भी हालत में नीचे न उतरें, क्योंकि अगर पैंथर मेरे पास से गुजरा तो वह उसी दिशा से मुझ पर हमला करेगा। वे चले गए, और कुश और मैं गुफा में प्रवेश कर गए।

उस पल से कुश को आहत हो गया कि आगे खतरा है। उसका पहले वाला साहस गायब हो गया था, और वह धीरे-धीरे मेरे पीछे-पीछे चलने लगी।

बाहर से छनकर आ रही धुंधली रोशनी में मैं जहाँ तक देख सकता था, आगे बढ़ता रहा। ज़्यादा से ज़्यादा तीस फीट ही चल पाया होगा। फिर हम रुक गए। मैं और आगे नहीं जा सका क्योंकि मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि मेरा शिकार ऐसी गुफा में जाएगा, इसलिए मैं गाँव से टॉर्च लाना भूल गया था।

अब मेरे पास दो विकल्प थे: या तो घायल जानवर को जगाने की कोशिश करना, या मशाल लेने के लिए शिवानीपल्ली वापस जाना और अपने साथियों को ऊपर अपेक्षाकृत सुरक्षित स्थान से निगरानी रखने के लिए कहना ताकि मेरे लौटने से पहले पैंथर चुपके से बाहर न निकल जाए। मुझे बेशक दूसरा विकल्प चुनना चाहिए था। यह न केवल सुरक्षित था, बल्कि अधिक निश्चित भी था। असल में, मुझे लगता है कि मैं इतनी दूर जाकर वापस आने में बहुत आलसी महसूस कर

रहा था। इसलिए मैंने सोचा कि पहले विकल्प को आजमा कर देखूं और यदि संभव हो तो लंबी पैदल यात्रा की परेशानी से बच जाऊं।

मैंने सीटी बजाई और जोर से चिल्लाया। कुछ नहीं हुआ। मैंने फिर चिल्लाया। कुश, जो पहले मुस्कुरा रहा था, अचानक भौंकने लगा। फिर भी कुछ नहीं हुआ।

गुफा प्रवेश द्वार पर लगभग आधी चौड़ी हो गई थी। हमारे प्रयासों का फल केवल सन्नाटे के रूप में मिला। गहरा, अंधेरा भीतरी भाग किसी कब्र की तरह शांत था।

क्या घायल जानवर गुफा के अंदर ही मर गया था? यह असंभव लग रहा था, क्योंकि अनेकल वंका नदी पार करने से पहले आराम करने के बाद पैंथर के दोबारा लेटने का कोई सबूत नहीं था। क्या वह हमारे आने से पहले गुफा से निकल गया था? ऐसा आसानी से हो सकता था; लेकिन फिर से, ऐसा होने का कोई सबूत नहीं था।

मैंने फेंकने के लिए कुछ ढूंढने के लिए चारों ओर देखा। मेरे पैरों के पास ही एक बड़ा पत्थर पड़ा था। मैंने उसे अपने बाएं हाथ में उठाया और पाया कि वह भारी है।

मैं बाएं हाथ से काम करता हूं, फेंकने के लिए, हालांकि मैं दाहिने कंधे से निशाना लगाता हूं। मैंने अपनी राइफल पहले ही तैयार कर ली थी, और उसे अपने दाहिने हाथ के मोड़ में संतुलित करते हुए, मैंने पूरी ताकत से पत्थर को बगल से फेंका। वह गुफा के अंधेरे में गायब हो गया। मैंने उसे चट्टानी सतह पर एक धीमी सी धमक के साथ टकराते हुए सुना और फिर वह कई छोटी-छोटी उछालों के साथ आगे बढ़ गया।

अगले ही पल, वही जानी-पहचानी खाँसी और दहाड़ों की गूँज सुनाई दी, जैसे कोई पैंथर अँधेरे से निकलकर मुझ पर झपटा हो। काला पैंथर होने के कारण, मैं उसे तब तक नहीं देख पाया जब तक वह अंधेरे से निकलकर मेरी राइफल के ठीक दो-तीन गज आगे नहीं आ गया। मैंने गोली चलाई—लेकिन उसके हमले की तेज़ी से ऐसा लगा जैसे पैंथर मेरी ओर फिसल रहा हो। मैंने फिर गोली चलाई। गुफा के अंदर दो गोलियों की गूँज गूंज उठी।

फिर अचानक अफरा-तफरी मच गई। मधुमक्खियों की आवाज़, जो अब तक लगभग अचेतन रूप से मेरे कानों में एक हल्की भिनभिनाहट के रूप में दर्ज हो रही थी, अचानक चरम पर पहुँच गई। गुफा के प्रवेश द्वार से आने वाली दिन की रोशनी अनगिनत काले, तेज़ी से भागते धब्बों से भर गई, जिनकी संख्या आवाज़ की तीव्रता बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती गई। वे काले कण मुझ पर झपटने लगे। हवा उनसे जीवंत हो उठी थी।

मैंने मधुमक्खियों का प्रकोप भड़का दिया था। जैसे ही मैंने अपनी खाकी जैकेट उतारी, उसे अपनी नंगी पीठ और चेहरे के चारों ओर लपेटा और प्रवेश द्वार की ओर तेज़ी से बढ़ा, पैंथर का ख्याल मेरे दिमाग से गायब हो गया।

मधुमक्खियाँ मुझ पर हिमस्खलन की तरह टूट पड़ीं। उन्होंने मेरे हाथों को डंक मारा। वे जैकेट की सिलवटों से अंदर घुस गईं और मेरी गर्दन, सिर, चेहरे पर डंक मारा। एक तो मेरी कमीज़ के कॉलर के नीचे घुस गई और मेरी पीठ पर डंक मारा।

डंक लगने से असहनीय दर्द हुआ।

मैं उस ढलान वाली चट्टान से नीचे फिसल गया जिस पर हम कुछ ही देर पहले चढ़े थे। दूर से मुझे कुश की दर्द भरी चीखें सुनाई दे रही थीं। मेरी गति जितनी तेज़ थी, मेरे पंख वाले वश में करने वाले जीव उससे भी तेज़ गति से चलने लगे; हवा उनसे भरी हुई थी, वे बेरहमी से मुझ पर हमला कर रहे थे। मुझे याद आया कि मैंने उनकी तुलना जापान के आत्मघाती पायलटों से की थी, जिन्होंने दुश्मन पर खुद को झोंक कर अपनी जान और अपने विमान दोनों कुर्बान कर दिए थे। ठीक उसी तरह, उस दिन मुझे डंक मारने वाली हर मधुमक्खी ने स्वतः ही अपनी जान कुर्बान कर

दी, क्योंकि हर मधुमक्खी के डंक का सिरा कांटेदार होता है, और दुश्मन को डंक मारने के बाद डंक के सिरे को निकालने की कोशिश में कीड़ा अपने डंक को ज़हर की थैली समेत फाड़ देता है। ये ज़हर की थैली पीड़ित की त्वचा में धंसी रह जाती है। इस प्रकार, डंक मारने से मधुमक्खी खुद को अपूरणीय क्षति पहुंचाती है, जिसके प्रभाव से वह बहुत जल्द मर जाती है।

मैं ढलान वाली चट्टान के तल तक पहुँचा, मधुमक्खियाँ अभी भी मेरे चारों ओर थीं। हताशा में, मैं रेंगकर सबसे घनी लैंटाना झाड़ी के नीचे घुस गया। मैंने हमेशा इस झाड़ी को जंगल की वनस्पति के लिए एक भयानक अभिशाप और मनुष्य के लिए एक कीट माना था, क्योंकि यह हमेशा जंगलों और खेतों दोनों पर अतिक्रमण करती है, साथ ही शिकार के रास्तों पर चुपचाप और आराम से चलने में बाधा डालती है; लेकिन उस क्षण मैंने अपने श्राप वापस ले लिए और लैंटाना पर आशीर्वाद बरसाया। इसने मेरी जान बचाई। मधुमक्खियाँ उड़ते समय ही हमला करती हैं और डंक मारती हैं, जो उन्हें ऊपर बताए गए हमलावर पक्षियों से एक और समानता प्रदान करता है। वे जितनी चालाक होती हैं, उनमें बैठने और फिर आगे बढ़कर हमला करने की समझ नहीं होती। उनका नियम है गोता लगाना, डंक मारना और मर जाना। लैंटाना की झाड़ियों के घने जाल ने उन्हें सीधे मेरे शरीर पर हमला करने से रोक दिया। और इस तरह मैं उस निश्चित मौत से बच गया होता, अगर उस इलाके में वह हानिकारक लैंटाना न होता जिसे मैं पहले अक्सर कोसता था।

मैं चाहे जितनी भी तेजी से दौड़ता, मधुमक्खियां मुझसे भी तेज उड़तीं और हजारों की संख्या में मुझ पर टूट पड़तीं।

अब तक नौं छत्ते बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो चुके थे, और मेरे ऊपर हवा में गुस्से से भरी मधुमक्खियों की भिनभिनाहट गूंज रही थी। मैं लैंटाना की सुरक्षात्मक झाड़ी के नीचे चुपचाप लेटा रहा, भागते समय उन जीवों द्वारा किए गए कई डंकों से मुझे दर्द हो रहा था।

मधुमक्खियों की भिनभिनाहट शांत होने और उन्हें दोबारा काम पर लौटने में दो घंटे से अधिक समय लग गया। मुझे बहुत नींद आ रही थी और अगर डंक के दर्द ने मुझे जगाए न रखा होता तो मैं सो ही जाता। जैसे-जैसे हर घाव के आसपास की त्वचा सूजती गई, जलन और बढ़ती गई।

दोपहर के तीन बज चुके थे जब मैं लैंटाना की झाड़ियों से रेंगकर बाहर निकला और किसी तरह ढलान से नीचे सड़क तक पहुँचा; वहाँ से मैं कुंडुकोट्टई गाँव तक पैदल गया। वहाँ मुझे मेरे तीन साथी मिले। गुफा के प्रवेश द्वार के ऊपर अपने सुविधाजनक स्थान पर बैठे वे मधुमक्खियों के हमले से लगभग पूरी तरह बच गए थे। मधुमक्खियों ने स्पष्ट रूप से अपना हमला अपने ठीक सामने चल रहे दुश्मनों पर केंद्रित कर दिया था—मुझ पर और बेचारी कुश पर, जो अब उन तीनों आदमियों के साथ थी। उसे बुरी तरह डंक लगा था, और मुझे पूरा यकीन था कि पैंथर पर भी मधुमक्खियों ने तीखे हमले किए होंगे।

हम सब चलकर उस कार तक गए जहाँ मैंने उसे एक दिन पहले छोड़ा था। कार में बैठने के बाद मैं डेनकनिकोट्टा के लिए निकल पड़ा, जहाँ एक स्थानीय निधि अस्पताल और औषधालय था। शाम काफी देर हो चुकी थी जब हमने डॉक्टर को जगाया। वह हमें अस्पताल के अपने क्लिनिक में ले गए और चिमटी की मदद से कुश और मेरे शरीर में धंसे डंक निकाले। गुफा में उन छोटे शैतानों ने हमें क्रमशः उन्नीस और इकतालीस डंक मारे थे। डॉक्टर ने हमारे घावों पर अमोनिया लगाया।

हमने डेनकनिकोट्टा के वन बंगले में रात बिताई। वहाँ के बिस्तर लोहे के थे, गद्दे नहीं थे। इसलिए मैं एक कुर्सी पर लेटा। तीनों आदमी कुश के साथ बरामदे में सोए।

डंकों के कारण मुझे मलेरिया और बुखार हो गया। कुश भी तकलीफ में थी और मैं उसकी सिसकियाँ सुन सकती थी। मेरी गर्दन, चेहरा और हाथ अभी भी सूजे हुए थे। एक मधुमक्खी ने मेरी बाईं आँख के कोने के पास डंक मार दिया था, जिससे मेरी आँख थोड़ी बंद हो गई थी।

भोर के समय मेरी सूजी हुई आंख और फूला हुआ चेहरा उस बंगले में मौजूद एकमात्र धुंधले दर्पण के सामने खड़े होने पर मेरी दयनीय स्थिति दिखाई दे रही थी।

हमने दस बजने तक इंतज़ार किया और फिर नौवें मील के पत्थर तक वापस गाड़ी चलाई। अपने कदमों के निशान पर चलते हुए—लेकिन इस बार मवेशियों और जंगली जानवरों के रास्तों से, जहाँ चलना अपेक्षाकृत आसान था—हम उस चट्टानी टीले के नीचे उस जगह पर पहुँचे जहाँ हम एक दिन पहले खड़े थे।

मधुमक्खियाँ एक बार फिर अपने छत्तों में व्यस्त थीं। चारों ओर शांति और सुकून का माहौल था।

तीनों ग्रामीणों को वहीं छोड़कर, मैं कुश के साथ दूसरी बार ढलान पर चढ़ा और सावधानी से गुफा की ओर बढ़ा। मुझे पता था कि जब तक मैं मधुमक्खियों को दोबारा परेशान नहीं करता, तब तक मैं उनसे सुरक्षित हूँ। और मुझे लगभग यकीन था कि पिछले दिन मेरे द्वारा चलाई गई दो गोलियों ने पैंथर को मार डाला था। अगर ऐसा नहीं भी होता, तो मधुमक्खियाँ वह काम पूरा कर देतीं।

मैं सही था। कुछ कदम अंदर, गेंद की तरह सिकुड़ा हुआ, काला पैंथर पड़ा था, मरा हुआ और बिल्कुल अकड़ा हुआ। कुश उससे एक गज दूर खड़ी रही, सूंघती और गुर्राती रही। मैंने उसका मुंह अपने हाथ से ढक दिया ताकि वो चुप हो जाए, कहीं वो भयानक मधुमक्खियां परेशान न हो जाएं और हम पर फिर से हमला न कर दें।

गुफा से बाहर निकलते हुए मैंने आदमियों को अपने पास आने का इशारा किया। हम सब मिलकर पैंथर को ढलान से नीचे खींच लाए। चरवाहे ने, जिसके पास चाकू था, एक शाखा काट दी जिससे हमने लता की मदद से उसके पैरों को बांध दिया। फिर हम चारों ने मिलकर बोझ उठाया और उसे इंतज़ार कर रही कार तक ले गए, जहाँ मैंने मरे हुए जानवर को बोनट और मडगार्ड के बीच लटका दिया।

डेनकनिकोट्टा वन बंगले में मैंने खाल उतारी। यह एक नर पैंथर था, सामान्य आकार का, जिसकी लंबाई छह फीट सात इंच थी। काले बालों के नीचे उसके धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। यह पहला और संयोगवश एकमात्र काला पैंथर था जिसे मैंने कभी मारा था।

काले बालों में धंसे मधुमक्खी के डंकों का पता लगाना मुश्किल था, लेकिन मैंने कर्मचारियों को निकाले गए डंकों की सावधानीपूर्वक गिनती करने को कहा, जिसकी मैंने स्वयं जाँच की। निकाले गए डंकों की संख्या से पुष्टि हुई कि उस जानवर में 273 डंक थे। निश्चित रूप से और भी कई डंक रहे होंगे जो हमारी नज़र से बच गए।

मैंने उन लोगों को उनकी सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया और मधुमक्खियों द्वारा किए गए दंड की भरपाई करते हुए बैंगलोर लौट आया—क्योंकि मेरे पास एक काले पैंथर की खाल थी, जो कि बहुत ही दुर्लभ वस्तु है—और मेरे पास कुश नाम का एक अद्भुत बुद्धिमान कुत्ता था, जिसे मैंने उसके मालिक से सात रुपये में खरीदा था।

एक बात मैं बताना लगभग भूल ही गया था। आपको याद होगा कि अनेकल वंका नदी में जहाँ पैंथर पानी पीने के लिए रुका था, वहाँ मुझे खून के दो अलग-अलग निशान मिले थे। उनमें से एक में दूसरे की तुलना में ज़्यादा खून बह रहा था, और क्योंकि मैंने सिर्फ़ एक गोली चलाई थी, इसलिए उस समय मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ था। अब कारण बिल्कुल स्पष्ट हो गया है। मेरी

एक गोली, जो आँखों के बीच में लगी थी, निशाने से चूक गई, कनपटी और कान को पार करते हुए जानवर के जांघ में जा धँस गई। दूसरा घाव ही था जिससे बहुत ज़्यादा खून बह रहा था। पहला घाव सिर्फ़ ऊपरी तौर पर था। ज़ाहिर है, उस रात जब मैंने गोली चलाई थी, तब पैंथर उछलने के लिए थोड़ा मुड़ा और झुक गया था, और मैंने ठीक समय पर गोली चलाई थी।

गुफा में चलाई गई दो गोलियों में से एक (पहली) पैंथर की छाती में लगी थी, और दूसरी, जब पैंथर मेरी ओर फिसल रहा था, तो उसके खुले मुंह में घुस गई और गर्दन के पिछले हिस्से से बाहर निकल गई।

---

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

पाँच

सांप और अन्य जंगली जीव

भारतीय जंगलों के जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, जो उन लोगों के लिए बेहद दिलचस्प है जिनके लिए किसी भी प्रकार का जानवर और कोई भी जंगल एक गुप्त आकर्षण का स्रोत होता है। डनबर-ब्रैंडर, चैंपियन, ग्लासफर्ड, बेस्ट, कॉर्बेट और कई अन्य जैसे प्रख्यात लेखकों ने इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई है और इन जानवरों की आदतों को अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर दर्ज किया है। इनमें से कुछ ने लगभग पचास साल पहले लिखा था, उस समय, यह याद रखना महत्वपूर्ण है, भारतीय प्रायद्वीप के जंगल शिकार, विशेष रूप से मांसाहारी जानवरों से भरे हुए थे। उनके लेखन की हमेशा सराहना की गई है, लेकिन अब जाकर उनके महत्वपूर्ण कार्यों का वास्तविक आंतरिक मूल्य सामने आ रहा है, और यह कहना उचित होगा कि जैसे-जैसे वर्ष बीतते जाएंगे और भारत का वन्य जीवन अतीत की बात बन जाएगा, इन महान व्यक्तियों के अभिलेखों का महत्व लगातार बढ़ता जाएगा, जो भावी पीढ़ियों के लिए ऐसे ज्ञान को संरक्षित करेंगे जिसे कोई धन-दौलत कभी नहीं खरीद सकती।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारत के शिकारी और यहाँ तक कि अफ्रीका के महान श्वेत शिकारी, जिन्होंने अपने करियर की शुरुआत ट्रॉफी इकट्ठा करने वाले या, बाद के मामले में, पेशेवर के रूप में की थी, अपने जीवनकाल में उन वन्य जीवों के प्रति प्रेम विकसित करते रहे, जिनका वे कभी शिकार करते थे और जिन्हें वे अपने बल्ले से सजाते थे। उनमें से अधिकांश ने शिकार करने की आदत को त्यागकर वन्य जीवों की फोटोग्राफी और प्रकृति के अध्ययन की अधिक सार्थक लेकिन कठिन कला को अपनाया।

आरंभिक वर्षों में शिकार के लिए जंगल में प्रवेश करना एक बेहद जोखिम भरा कार्य माना जाता था। जानवरों से होने वाले खतरों के अलावा, जिन्हें बहुत अधिक माना जाता था, विभिन्न विषैले सांपों, बिच्छुओं, मकड़ियों और अन्य जीवों का खतरा भी था, साथ ही मलेरिया, काला पानी बुखार आदि जैसी जंगली बीमारियों से स्वास्थ्य को भी खतरा था।

उदाहरण के लिए, मेरे पिता के ज़माने में नीलगिरी पर्वतमाला की तलहटी में स्थित जंगलों की यात्रा, या मैसूर राज्य के शिमोगा और कादुर ज़िलों के घने जंगलों की यात्रा, या पश्चिमी घाट के आसपास के इलाकों की यात्रा, बहुत जोखिम भरी मानी जाती थी। सुबह-सुबह इन इलाकों को ढकने वाले कोहरे को ब्रोंकाइटिस, निमोनिया और विशेष रूप से मलेरिया का प्रत्यक्ष कारण माना जाता था। कहा जाता था कि जंगल के जानवर बेहद निडर और डरावने होते हैं।

इसके विपरीत, प्राचीन लेखकों ने हमें दिखाया है कि जंगली जीव स्वभाव से आक्रामक नहीं थे, और लगभग बिना किसी अपवाद के वे मानव जाति से भयभीत रहते थे। विज्ञान ने हमें यह सिखाया है कि भारत में कोई जहरीली मकड़ी, छिपकली या मेंढक नहीं पाए जाते हैं और केवल कुछ ही प्रकार के जहरीले सांप मिलते हैं; साथ ही यह भी कि ब्रोंकाइटिस और निमोनिया कहीं भी हो सकते हैं, यहाँ तक कि भारत के सबसे गर्म और शुष्क शहरों में भी। सर रोनाल्ड रॉस ने दिखाया है कि मलेरिया परजीवी को मच्छर की एक विशेष प्रजाति ले जाती है, न कि जंगलों की नम धुंध और हवा। यह परजीवी न केवल जंगलों में बल्कि पूरे देश में पाया जाता है। मलेरिया

फैलाने वाला मच्छर रुके हुए पानी और गंदी नालियों में पनपता है, और ऐसे स्थान बड़े से बड़े शहरों में भी बहुतायत में पाए जाते हैं। अधिकारियों द्वारा चलाए गए अभियानों और उपायों ने इन समस्याओं को काफी हद तक कम किया है, और चिकित्सा विज्ञान ने इन बीमारियों के लिए त्वरित और लगभग निश्चित इलाज विकसित किए हैं, जिससे अब वे उतना भय नहीं पैदा करते जितना पहले करते थे।

जंगली जानवरों और साँपों से होने वाले खतरों के बारे में, व्यक्ति का अपना अनुभव ही सबसे अच्छा शिक्षक रहा है और हमेशा रहेगा। लेकिन कुछ ही अपवादों को छोड़कर, और वे भी केवल कुछ खास जगहों पर, यह कहना सुरक्षित और सही है कि घने जंगलों में घूमने का खतरा किसी व्यस्त शहर की सड़क पार करते समय पैदल चलने वाले व्यक्ति के खतरे से कहीं कम होता है। अतीत के सभी लेखकों ने यह बात सिद्ध की है।

बेशक, खेल में नौसिखिया कभी-कभी कोई मूर्खतापूर्ण काम कर बैठता है जिससे वह मुसीबत में पड़ सकता है, लेकिन वह मुसीबत पूरी तरह से उसकी अपनी अनुभवहीनता और अज्ञानता का परिणाम होती है। अनुभव, विशेष रूप से उसके लिए जो न केवल सीखने के लिए इच्छुक है बल्कि उत्सुक भी है, आसानी से प्राप्त हो जाता है।

भारतीय जंगलों में शेर को राजा माना जाता है क्योंकि शेर गुजरात प्रायद्वीप के गिर वन को छोड़कर कहीं और नहीं पाया जाता, जहाँ उसे बहुत सख्ती से संरक्षित किया जाता है। बाघ एक भव्य, सुंदर और राजसी जानवर है, लेकिन वास्तव में भारतीय जंगलों का असली राजा हाथी है, जो अपने विशाल आकार, अपार शक्ति और कभी-कभी अप्रत्याशित स्वभाव के कारण प्रसिद्ध है। आमतौर पर वह बाघ से कहीं अधिक खतरनाक जानवर होता है, और जिन क्षेत्रों में ये दोनों जानवर बहुतायत में पाए जाते हैं, वहाँ के आदिवासी बाघ को (आदमखोर बाघ को छोड़कर) तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं, जबकि वे जंगली हाथी का अत्यंत सम्मान करते हैं। किसी भी आदिवासी के साथ जंगल के रास्ते पर चलें। यदि आप भाग्यशाली रहे और आपको बाघ या तेंदुआ दिख जाए, तो वह आपको बड़े ही सहज भाव से उसे दिखा देगा। लेकिन अगर उसे किसी शाखा के टूटने की आवाज सुनाई दे, तो वह तुरंत रुक जाएगा और अपनी स्थानीय भाषा में एक शब्द बोलेगा जिसका अर्थ 'हाथी' होता है, आवाज की दिशा का अनुमान लगाएगा और ऐसा रास्ता खोजने का प्रयास करेगा जिससे वह उस इलाके के पास से न गुजरे जहां हाथी चर रहा है।

यह स्वाभाविक सावधानी उनके पूर्वजों और स्वयं उनके द्वारा संचित वन अनुभव का परिणाम है। वे और वे इन शक्तिशाली जानवरों के अनिश्चित स्वभाव से परिचित हैं, इसलिए वे किसी भी अनावश्यक जोखिम से बचते हैं।

वास्तव में, जंगली हाथी आम तौर पर एक हानिरहित प्राणी होता है, जो मनोदशा और अचानक उत्तेजना, भय और चिड़चिड़ापन के अधीन होता है। इस सामान्यीकरण के चार अपवाद हैं।

इसके विपरीत, और अफ्रीकी हाथियों से बिल्कुल उलट, भारतीय हाथियों के झुंड में सदस्यों की संख्या जितनी अधिक होती है, उनसे खतरा उतना ही कम होता है। इसके चार अपवाद हैं: एक मान्यता प्राप्त 'विद्रोही' हाथी जिसने पहले ही किसी इंसान को मार डाला हो, एक 'मस्त' हाथी जो नर हाथी की विशेष यौन अवस्था में होता है, कभी-कभी झुंड से अलग चरने वाला एक अकेला नर हाथी, और एक मादा हाथी जिसके साथ उसका बच्चा हो और जिसकी रक्षा के लिए वह अपनी जान तक दे सकती है। यह ध्यान देने योग्य है कि इन चारों मामलों में खतरा झुंड से नहीं बल्कि एक ही जानवर से उत्पन्न होता है। कहा जाता है कि अफ्रीकी हाथी जरूरत पड़ने पर सामूहिक रूप से किसी शिकारी पर हमला करने की क्षमता रखते हैं। भारतीय हाथी ऐसा नहीं

करते।

लेकिन ऊपर दिए गए चारों मामलों में, वह जानवर बेहद खतरनाक और विनाशकारी हो सकता है। वह किसी इंसान का लगातार पीछा करेगा, कभी-कभी एक मील तक भी, बशर्ते इंसान इतनी दूर तक दौड़ सके, जब तक कि वह उसे पकड़ न ले। फिर वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा, या अपने पैरों से कुचलकर और जमीन पर रगड़कर उसका बुरा हाल कर देगा, या उसे किसी पेड़ के तने या जो भी चीज पास हो, उससे पटक देगा, या उसे हवा में उछाल देगा।

जंगल में गहरे पानी के कुंड पर बैठे-बैठे मैं अक्सर वहाँ रोज़ पानी पीने और नहाने आने वाले जंगली हाथियों का मज़ाक उड़ाता हूँ। कभी बाघ की तरह आवाज़ निकालता हूँ तो कभी पैंथर की तरह चीर-फाड़ करता हूँ। अगर हाथी झुंड में हों, तो वे ज़ोर से चिंघाड़ते हैं और डालियों व झाड़ियों के टूटने की आवाज़ के साथ तेज़ी से भाग जाते हैं। यह देखना बहुत आनंददायक होता है कि माँएँ अपने छोटे बच्चों को अपनी सूंड से सहारा देकर लगभग अपने आगे उठाती हैं और पानी के किनारे झाड़ियों में छिपे हुए बाघ से बचने के लिए भाग जाती हैं। अगर कोई हाथी अकेला आया हो, तो आवाज़ सुनते ही वह एकदम स्थिर खड़ा हो जाता है, अपने कान आगे करके आवाज़ सुनने की कोशिश करता है और अपनी सूंड से हवा को सूंघकर दुश्मन की मौजूदगी का पता लगाने की कोशिश करता है। फिर वह मुड़कर चुपचाप जंगल में चला जाता है। कभी-कभार कोई हाथी गुस्से में अपने पैर पटकता है और अपना सिर व सूंड इधर-उधर हिलाता है, लेकिन एक मिनट के भीतर ही वह भी वहां से गायब हो जाता है। मुझे आज तक एक भी ऐसा हाथी नहीं मिला जो बाघ की आवाज निकालते रहने पर भी अपनी जगह पर डटा रहा हो। जाहिर है, अपने आकार और ताकत के बावजूद, उनमें उस खूंखार बिल्ली जैसे जानवर के सामने टिके रहने का साहस नहीं होता। मैंने कहीं पढ़ा है कि हाथी की आंखें जिस चीज को देखती हैं उसे बड़ा करके दिखाती हैं। स्वाभाविक रूप से, इससे बाघ या इंसान हाथी को असलियत से कहीं ज्यादा बड़े दिखाई देते हैं। शायद यही असली वजह है कि हाथी बाघों, तेंदुओं और इंसानों से भी डरते हैं।

पैंथर की आवाज का असर कुछ अलग ही होता है। अगर हाथी झुंड में हों, तो नर हाथी आक्रामक हो जाते हैं और अपने बच्चों की रक्षा करने के संकेत देते हैं। लेकिन अकेला हाथी हमेशा भाग जाता है, हालांकि उतनी जल्दी में नहीं जितनी जल्दी में कोई बाघ की आवाज आती है। एक-दो हाथी पानी पर पैर पटकते हैं या अपनी सूंड से मारते हैं और फिर पानी पीते रहते हैं। लेकिन यह साफ था कि वे काफी घबराए हुए और असहज थे।

मेरे ये छोटे-छोटे मनोरंजक प्रयोग स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि हाथी अपने विशाल आकार और ताकत के बावजूद साहसी प्राणी नहीं होते। इसके विपरीत, वे बेहद डरपोक और कायर होते हैं। शायद यह कहना उचित होगा कि सभी 'धमकाने वालों' की तरह, वे केवल उसी स्थिति का पूरा फायदा उठाते हैं जिसमें उनका दुश्मन उनसे डरने के संकेत देता है। लेकिन ऊपर बताए गए चार अपवादों को छोड़कर, हमला करना, विशेष रूप से किसी भी ऐसी चीज पर जो पलटवार कर सकती है, आम हाथी के व्यवहार का हिस्सा नहीं है।

हाथियों को सफेद वस्तुओं से स्वाभाविक रूप से नफरत होती है। इसी कारण हाथी-ग्रस्त क्षेत्रों में सड़कों के किनारे लगे मील के पत्थर और पथ-पत्थर काले रंग से रंगे होते हैं, क्योंकि अगर ये वस्तुएं सफेद हों, तो हाथी की नजर पड़ते ही वे उन्हें उखाड़कर फेंक देंगे। इसी कारण हाथी-ग्रस्त जंगल में सफेद कपड़े पहनकर घूमना भी असुरक्षित है, क्योंकि इससे हमला होने का खतरा रहता है। बीते समय में सफेद, धूप से बचाने वाली टोपियां काफी चलन में थीं, क्योंकि धूप से बचाव के साथ-साथ ये सूर्य की किरणों को परावर्तित करके सिर को ठंडा रखती थीं। मेरे एक परिचित को एक बार जंगल में ऐसी ही सफेद टोपी पहने घूमते देखा गया था। मुझे नहीं पता कि

उन्होंने जंगल में इसे क्यों पहना था, क्योंकि हाथियों की अरुचि के अलावा यह बहुत ही ध्यान खींचने वाली होती और किसी भी जीव का शिकार करने की संभावना को खत्म कर देती। खैर, उन्होंने इसे पहना था। वह और उसका साथी, एक शोलागा, एक पहाड़ी की चोटी पर चल रहे थे, तभी उन्होंने लगभग दो सौ गज की दूरी पर एक हाथी को देखा, जो पहाड़ी पर थोड़ी ऊँचाई पर एक खुले मैदान के दूसरी ओर चर रहा था। उसी क्षण हाथी ने उन्हें देख लिया। सामान्यतः इतनी दूरी से हाथी उन्हें नहीं देख पाता, क्योंकि हाथियों की दृष्टि बहुत कमजोर होती है, और हवा उनकी ओर बह रही थी, इसलिए हाथी को उनकी गंध भी नहीं आई होगी। लेकिन जंगल के हरे-भरे और भूरे रंग के बीच वह चमकता हुआ सफेद हेलमेट किसी से छिपा नहीं था। हाथी ने चिंघाड़ मारी और उनका पीछा करने लगा। शिकारी और शोलागा दुम दबाकर भाग निकले। सौभाग्य से शोलागा एक अनुभवी शिकारी था, जिसे वर्षों का अनुभव था और वह 'साहिबों' को जंगल में ले जाने में प्रतिष्ठित था। उसने अपने शिष्य को नहीं छोड़ा, बल्कि उसके पीछे-पीछे दौड़ता रहा और उसे दिशा बताता रहा। हाथी तेजी से उनके करीब आ गया। तभी शोलागा ने शिकारी को पकड़ लिया, उसकी सफेद टोपी छीनकर जमीन पर फेंक दी, और साहब को दौड़ते रहने के लिए प्रेरित किया। हाथी टोपी तक पहुंचा और उनका पीछा करने में उसकी रुचि खत्म हो गई। कहने की जरूरत नहीं है कि जब हाथी ने उस टोपी को खाया, तब तक उसका आकार भी पूरी तरह बिगड़ चुका था। उसे उनका पीछा करने या उन्हें नुकसान पहुंचाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन उस भयानक सफेद वस्तु को सहन करना उसके लिए असहनीय था। उसे बस उसे मिटाना ही था।

नर हाथियों के बीच लड़ाई तीन दिनों तक चलती रहती है, जिसमें बीच-बीच में आराम के लिए कुछ ही विराम मिलते हैं। कभी-कभी यह लड़ाई किसी ताकतवर मादा हाथी के प्रति आकर्षण के लिए प्रतिद्वंद्वी नर हाथियों के बीच भी हो सकती है, हालांकि ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं। अक्सर ऐसा तब होता है जब मदमस्त नर हाथी का झुंड की मादा हाथियों के प्रति आकर्षण बहुत बढ़ जाता है और उसे झुंड से बाहर निकालना पड़ता है। ज्यादातर यह तब होता है जब एक युवा नर हाथी, अपने जीवन के चरम पर पहुंचकर, झुंड के मुखिया नर हाथी को नेतृत्व के लिए चुनौती देता है।

ऐसे संघर्षों के दौरान, बैल एक-दूसरे को बुरी तरह घायल कर देते हैं, अपने दांतों से दुश्मन के शरीर के किसी भी हिस्से पर वार करते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि इन लड़ाइयों के दौरान और बाद में, प्रतियोगी बेहद गुस्से में होते हैं और जो भी जीवित प्राणी उन्हें दिखाई देता है, उसका बुरा हाल होता है।

सलेम जिले के वन विभाग में कार्यरत एक वनपाल ने सलेम जिले की डोड्डा हल्ला घाटी के दुर्गम इलाकों में दो सांडों को आपस में लड़ते हुए देखा। उस घटना में एक विचित्र घटना घटी। दोनों सांडों ने अपनी दुश्मनी भुला दी और एक साथ उस पर टूट पड़े। कुछ दिनों बाद जब उसके विभागीय सहकर्मियों ने उसका शव देखा तो वह बुरी तरह घायल था।

मैंने अपनी पिछली कुछ कहानियों में 'हिंसक' हाथियों के बारे में लिखा है, इसलिए मैं यहाँ उनके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगा, बस इतना कहूँगा कि वे जंगल में मिलने वाले सबसे खतरनाक जीव होते हैं। एक बार उनकी तुरही जैसी क्रोध और घृणा भरी चीखें सुन लें, और उनके विशाल शरीर को झाड़ियों और घनी वनस्पतियों के बीच से अपनी ओर आते हुए देख लें, जब उनकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी होती है, कान बाहर निकले होते हैं और छोटी पूंछ खड़ी होती है, तो यह अनुभव आपको जीवन भर याद रहेगा। अगर वे किसी इंसान को पकड़ लेते हैं, तो उसे दी जाने वाली सजा अलग-अलग हो सकती है। नीलगिरी की तलहटी में एक हिंसक हाथी ने एक वन रक्षक को हवा में उछाल दिया। गिरते समय वह बांस के टूटे हुए तने पर फंस गया और अंततः

उसकी मृत्यु हो गई। सेगुर का हिंसक हाथी, जिसे रेवरेंड बुल ने गोली मार दी थी, तुलनात्मक रूप से छोटा जानवर था, लेकिन फिर भी अपनी चतुराई और क्रूरता के लिए जाना जाता था। वह सचमुच किसी इंसान का पीछा करता था या किसी चट्टान या बांस के झुंड के पीछे से उस पर हमला कर देता था। उसने सेगुर रोड पर एक कुली महिला को पकड़ा, उसे पैरों से कुचलकर ज़मीन पर रगड़ा और फिर शरारत में उसके हाथ में पहनी चांदी की पायल और गले में लकड़ी की माला दोनों को तोड़कर कुछ गज दूर फेंक दिया। कोयंबटूर जिले में एक बीमार वनपाल का मामला था, जो गिनी-कृमि से पीड़ित था। लंबे समय तक बीमारी की छुट्टी पर रहने के बाद, वह इतना आलसी हो गया कि वह काम नहीं करना चाहता था—या शायद कर ही नहीं सकता था। उसका तबादला बिलिगिरिरंगन पर्वत श्रृंखला में कर दिया गया, जो हाथियों से भरा इलाका है। उस समय वहाँ एक दुष्ट हाथी भी रहता था, जिसे लंबे समय से दुष्ट घोषित किया गया था, लेकिन कभी मारा नहीं गया था। एक दिन उस आदमी का दुर्भाग्य से उस दुष्ट हाथी से सामना हो गया। वह उसका पीछा करने लगा। भागते समय एक नाला पार करते हुए उसका टखना मुड़ गया। दुष्ट हाथी ने उसे पकड़ लिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इसके बाद तीन दिनों तक वह उसके बिखरे हुए अवशेषों के आसपास उत्पात मचाता रहा और किसी भी वाहन को गुजरने नहीं दिया। अंत में उसने दया दिखाते हुए वहां से जाने का फैसला किया और उसके परिजनों को अंतिम संस्कार के लिए बचे हुए अवशेषों को इकट्ठा करने दिया। उसी जिले के बैलूर के पास एक और बदमाश था जिसने बैलगाड़ी को उसके बैलों सहित सड़क से नीचे गिरा दिया था। उसे मैसूर के प्रसिद्ध पशुकृत करने वाले श्री वैन इंगन ने मार डाला था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ऊपर वर्णित घटनाएँ शरारती हाथियों द्वारा की गई थीं और इसलिए असामान्य हैं। जैसा कि मैंने दिखाने का प्रयास किया है, सामान्य हाथी एक डरपोक, एकांतप्रिय प्राणी होता है जिसमें साहस या वीरता का कोई लक्षण नहीं होता।

निडर और अदम्य साहस के मामले में, घायल जंगली सूअर भारतीय जंगल का सबसे बड़ा दिलदार जानवर है। अपने अपेक्षाकृत छोटे आकार के बावजूद, बड़े जानवरों की तुलना में, वह इतना साहस, इतनी क्रूरता, इतना दृढ़ संकल्प और सबसे बढ़कर, इतना जोश, इतनी सहनशक्ति और शिकार करने की इतनी प्यास रखता है जितना मैंने किसी और जानवर में नहीं देखा। घायल हाथी, बाइसन, यहाँ तक कि बाघ और तेंदुआ भी पहले तो भागने की कोशिश करते हैं और घिर जाने पर ही पलटवार करते हैं। लेकिन अगर आप बूढ़े जंगली सूअर को घायल कर दें और उसे अपनी स्थिति का पता चलने दें, तो वह आप पर टूट पड़ेगा। बालाक्लावा में किसी भी भाले वाले ने इतनी बहादुरी और दृढ़ संकल्प से हमला नहीं किया होगा जितना कि अगर आप उसे घायल कर दें और फिर अपनी स्थिति बता दें तो वह आप पर टूट पड़ेगा।

भारत के जंगलों में हाथी के बाद बाघ का स्थान सबसे दिलचस्प जानवरों में आता है। मुझे लगता है कि बाघ बेहद आकर्षक है। कुछ आदमखोर बाघों को छोड़कर, जो कभी-कभार इंसानों को मारकर खा जाते हैं और कुछ सौ वर्ग मील के क्षेत्र में आतंक मचा देते हैं, बाघ को 'सज्जन' कहना बिल्कुल उचित है।

उसका शिकार करना वाकई में सभी खेलों का राजा माना जा सकता है। घायल बाघ का पीछा करना वाकई एक जोखिम भरा काम है और शिकारी को जंगल में माहिर होना चाहिए। लेकिन घायल बाघ को जंगल में बिना मारे छोड़ देना न केवल क्रूरता है, क्योंकि घायल जानवर दर्द सहता रहता है, बल्कि कायरता भी है, क्योंकि उस इलाके में और उसके आसपास रहने वाले गरीब लोगों का भी ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि वही घाव उसके जीवन का वो मोड़ हो सकता है जो उसे आदमखोर बना दे। इसके अलावा, वह एक बहादुर प्रतिद्वंद्वी है। वह पहले तो संघर्ष से

बचने की कोशिश करता है, लेकिन अगर उसका पीछा किया जाए और उसे बहुत ज्यादा परेशान किया जाए, तो वह पलटकर आखिरी दम तक लड़ता है।

बैंगलोर के एक जाने-माने सैन्य अधिकारी, रेवरेंड श्री जर्विस, एक बार शिमोगा जिले के कुम्सी में एक घायल बाघ का पीछा कर रहे थे। बाघ ने उन पर हमला किया और उनकी बांह को बुरी तरह चबा डाला। उनके भारतीय कार चालक, जो उनके साथ बंदूक भी लिए हुए थे, लेकिन दुर्भाग्य से उन्हें बंदूक चलाना नहीं आता था, ने बड़ी बहादुरी से बाघ को अपने मालिक से दूर भगाया। उन्होंने अपने पास रखी अतिरिक्त शॉटगन के बट से बाघ पर हमला किया। इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए चर्च के सदस्यों द्वारा उन्हें जो पुरस्कार दिया गया, वह पूरी तरह से उनके योग्य था। घायल पादरी को कुम्सी स्थित खानाबदोशों के बंगले में ले जाया गया, जहां स्थानीय डॉक्टर ने उस समय उपलब्ध सर्वोत्तम साधनों से उनकी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त बांह को काट दिया। बाद में उस बांह को बंगले के परिसर में एक पेड़ के नीचे दफना दिया गया। बैंगलोर जाने वाली अगली ट्रेन में एक विशेष डिब्बा जोड़ा गया और रेवरेंड श्री जर्विस को वापस भेज दिया गया, हालांकि अगले दिन बैंगलोर के बोरिंग अस्पताल में उनका निधन हो गया और उन्हें पूरे सैन्य सम्मान के साथ दफनाया गया।

आकार, शक्ति या भव्यता में पैंथर बाघ के बराबर नहीं होता। वह एक बेहद क्रूर दुश्मन भी हो सकता है। मैंने पहले भी कहा है कि आदमखोर पैंथर भी, भले ही उन्हें इंसानी मांस खाने का शौक हो, आम तौर पर इंसानों से वही डर रखते हैं जो उनकी प्रजाति के बाकी सदस्यों में पाया जाता है। वे शायद ही कभी सामने से हमला करते हैं, बल्कि लगभग हमेशा ही अपने शिकार पर पीछे से चुपके से हमला करते हैं, और आमतौर पर ऐसे हमले के लिए वे अंधेरे के समय को प्राथमिकता देते हैं।

आम तौर पर पैंथर को कुत्ते का मांस बहुत पसंद होता है, जिसे वह एक स्वादिष्ट व्यंजन मानता है। कोयंबटूर जिले के कोललेगल कस्बे से मुश्किल से एक मील दूर एक छोटे से मंदिर वाले टीले पर दो पैंथर रहते थे। वे उस पहाड़ी की तलहटी के पास रहने वाले अमेरिकी मिशनरियों के लिए एक बड़ी मुसीबत बन गए थे, क्योंकि वे उनके कुत्तों को इतनी तेजी से खा जाते थे कि मिशनरी उनकी जगह नए कुत्ते ला ही देते थे। आखिरकार पैंथर इतने उपद्रवी हो गए कि स्थानीय पुलिस सब-इंस्पेक्टर ने कस्बे के कुछ युवकों के साथ मिलकर उन्हें उस गुफा से बाहर निकालने का जिम्मा उठाया, जिसमें वे रहते थे। पहले चरण में, उस इलाके की घास में आग लगाई गई। जब इससे भी वे नहीं निकले, तो गुफा में जलती हुई मशालें फेंकी गईं। इससे वे और भी तेजी से बाहर आ गए, और इस झड़प में एक पैंथर मारा गया और कुछ लड़के घायल हो गए। दूसरा पैंथर दल के एक बुजुर्ग सदस्य को बुरी तरह घायल करने के बाद भाग गया। बुकानन नाम का एक मिशनरी उसका पीछा करने गया लेकिन उस पर हमला हुआ, जबकि पैंथर भाग निकला।

दक्षिण भारतीय जंगलों में पाया जाने वाला 'ब्रुइन' नाम का सुस्त भालू कमज़ोर नज़र वाला और गुस्सैल स्वभाव का जानवर है; वह बिल्कुल भी बहादुर नहीं है, बल्कि बेहद उत्तेजित हो जाता है। आम तौर पर वह डरपोक होता है। हाल ही में तीन सुस्त भालुओं का एक परिवार - पिता, माता और एक बड़ा सा बच्चा - क्लोज़पेट के पास एक गुफा में घुस गया, जहाँ एक पैंथर पहले से ही अपना डेरा डाले हुए था। पैंथर ने तीनों भालुओं पर हमला कर दिया। बच्चा तुरंत भाग गया। दो बड़े भालुओं ने उसका विरोध करने की कोशिश की, लेकिन क्रोधित पैंथर के तेज़ धार वाले पंजों के सामने उनका साहस पानी की तरह बह गया और वे भी भाग गए। इतना ही नहीं, नर भालू भागने की इतनी जल्दी में था कि उसने देखा तक नहीं कि वह कहाँ जा रहा है और लगभग सौ फीट ऊँची चट्टान से लुढ़क गया जिससे उसके दोनों अगले पैर टूट गए। अगले दिन सुबह

ग्रामीणों ने भाले से उसका शिकार कर लिया।

अगर वह आपको आते हुए देख या सुन ले तो सुस्त भालू तेज़ी से भाग जाएगा। अगर आप अचानक किसी मोड़ पर उससे मिलें, तो वह बिना किसी उकसावे के हमला कर देगा—बहादुरी से नहीं, बल्कि डर और आपकी मौजूदगी से दूर भागने की चाहत से। शायद उसे लगता है कि आप उसे रोकने की कोशिश करेंगे, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप ऐसा न कर पाएं, वह आप पर हमला कर देता है। और वह ऐसा बहुत बुरी तरह से करेगा, उसका लक्ष्य हमला करने वाले की आंखें और चेहरा होगा, जिसे वह हमेशा अपने चार इंच लंबे नुकीले पंजों से नोंच डालेगा। और वह काटने का काम भी करेगा। मैंने जंगल में रहने वाले लोगों को भालुओं के हमले का शिकार होते देखा है: उनके घाव सचमुच भयानक थे, जिससे पीड़ितों के चेहरे जीवन भर के लिए बिगड़ गए।

जड़ों को खोदते समय या दीमकों के घोंसलों में बिल बनाते समय ब्रुइन अक्सर मसखरे जैसा व्यवहार करता है। उसकी आवाज़ें बैगपाइप की फुलाहट से लेकर हवाई जहाज की भिनभिनाहट तक, गुस्से में ततैया की भिनभिनाहट से लेकर लोहार की धौंकनी की आवाज़ तक, किसी भी प्रकार की पृष्ठभूमि ध्वनि जैसी हो सकती हैं; धौंकनी की आवाज़ें उसकी भिनभिनाहट और गुनगुनाने की आवाज़ों के साथ-साथ चलती रहती हैं। वह अपने शरीर को हर आकार में मोड़ता-मरोड़ता है, बशर्ते उसे वे स्वादिष्ट जड़ें या वे बेहद लज़ीज़ दीमक मिल जाएं। वह गहरी नींद सोता है, अक्सर ज़मीन में खोदे गए उथले गड्ढों में, चट्टानों के बीच, गुफाओं में, छायादार पेड़ों के नीचे और घास वाले इलाकों में सोता है। उसके खर्राटे इतने ज़ोरदार होते हैं कि दूर से भी साफ़ सुनाई देते हैं। जब वह खर्राटे नहीं ले रहा होता है, तो कोई अनजान आदमी उसके जागने से पहले लगभग उस पर पैर रख देता है। अचानक जागने पर वह चौंककर बिना सोचे समझे हमला कर देता है।

कोयंबटूर के शोलागा लोग भालुओं से निपटने में बेहद साहसी होते हैं। वे अपनी छोटी, धारदार कुल्हाड़ियों से कई भालुओं की खोपड़ी चीरने के लिए जाने जाते हैं। भालू अपने शिकार के चेहरे तक पहुँचने के लिए पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता है, जिससे उसका अपना सिर, चेहरा, गला और छाती सामने आ जाती है और वह एक शक्तिशाली और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति द्वारा चलाई गई कुल्हाड़ी के वार के लिए असुरक्षित हो जाता है। शोलागा आमतौर पर अपनी बाईं बांह पर लपेटे हुए छोटे, काले ऊनी कंबल को ही एकमात्र ढाल के रूप में रखते हैं।

वैसे तो 'ब्रुइन' स्वभाव से शाकाहारी या कीड़े-मकोड़े खाने वाला है, लेकिन उसे सड़ा हुआ मांस खाने में भी कोई आपत्ति नहीं है। मैंने उसे कई बार बाघ या तेंदुआ के शिकार से सड़ा हुआ मांस चुराते हुए पकड़ा है।

किसी भी जंगल का एक संभावित खतरा कई प्रकार के जहरीले सांप होते हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे जंगलों में पाए जाते हैं। वास्तव में, पर्यटकों को सुनाई जाने वाली सांपों से जुड़ी अधिकांश कहानियाँ बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई जाती हैं। आमतौर पर, जंगल वाले इलाकों में सभी प्रकार के सांप अपेक्षाकृत कम होते हैं और अक्सर दिखाई नहीं देते। खेतों और गांवों के आसपास इनकी संख्या कहीं अधिक होती है, क्योंकि इन जगहों पर अनाज उगाया जाता है। लाखों चूहे जमीन में बिल बनाकर अनाज खाते हैं। और सांप इन चूहों को खाते हैं।

इसके अलावा, मनुष्यों की बात करें तो, पूरे प्रायद्वीप में केवल पाँच प्रकार के विषैले साँप ही हैं जो घातक विष की खुराक दे सकते हैं। विषैले साँपों की अन्य प्रजातियाँ भी हैं, लेकिन उनके काटने से केवल स्थानीय सूजन और कुछ दर्द होता है। घातक प्रजातियों में किंग कोबरा या हमाद्र्याद, कोबरा, रसेल वाइपर, सॉ-स्केल्ड वाइपर या 'पुरसा' और करैत शामिल हैं। कोरल साँप

का डंक बहुत विषैला होता है, लेकिन उसका मुँह इतना छोटा होता है कि वह मनुष्य को पकड़ नहीं पाता; इसके अलावा, उसका स्वभाव बहुत शांत होता है। पिट वाइपर सभी विषैले होते हैं, लेकिन उनके काटने से कभी मृत्यु नहीं होती, सिवाय बहुत ही दुर्लभ मामलों के जहाँ काटे गए व्यक्ति का हृदय कमजोर हो और वह विष के प्रभाव से अधिक सदमे से मर जाए। अधिकांश समुद्री साँप अत्यंत घातक होते हैं, उनमें से कुछ का विष कोबरा के विष से बारह गुना अधिक शक्तिशाली होता है; लेकिन निश्चित रूप से वे केवल समुद्र में ही पाए जाते हैं।

मोटे तौर पर कहें तो, सांपों के जहर की तीव्रता और उससे होने वाली मृत्यु दर इस प्रकार है: रसेल वाइपर का जहर सॉ-स्केल्ड वाइपर के जहर से लगभग दोगुना घातक होता है; कोबरा का जहर रसेल वाइपर के जहर से तीन गुना अधिक शक्तिशाली होता है; और करैत कोबरा के जहर से लगभग दोगुना जहरीला होता है। किंग कोबरा का जहर साधारण कोबरा के जहर जितना शक्तिशाली नहीं होता, लेकिन आकार में पंद्रह फीट या उससे भी अधिक लंबा होने के कारण, यह अपनी इस मामूली कमी को मात्रा से पूरा कर लेता है। यह कोबरा की ग्रंथियों में मौजूद जहर की मात्रा से लगभग चार गुना अधिक जहर इंजेक्ट करता है, इसलिए इस सांप का काटना, जो संयोगवश दुनिया का सबसे बड़ा जहरीला सांप है, साधारण कोबरा के काटने की तुलना में लगभग तीन गुना तेजी से मृत्यु का कारण बनता है।

हमाद्र्याड सांप केवल पहाड़ी क्षेत्रों में सदाबहार जंगलों के बीच में पाया जाता है, जहाँ भारी वर्षा होती है। यह पूरी तरह से जंगलों में रहता है और जहाँ तक संभव हो मानव बस्तियों से दूर रहता है। इसका भोजन अन्य सांप होते हैं, जिसके कारण इसे कैद में रखना बहुत मुश्किल होता है। हाल ही में मैसूर चिड़ियाघर में एक सांप की एक साल तक भूख से तड़पने के बाद मृत्यु हो गई। इस दौरान उसे विभिन्न प्रकार के विषरहित सांप खिलाने का हर संभव प्रयास किया गया, लेकिन उसने उनमें से किसी को भी खाने से लगातार इनकार कर दिया और अंततः भूख से मर गया। उसकी मृत्यु ने मैसूर के प्रेस में काफी विवाद खड़ा कर दिया, जहाँ शहर के कुछ लोगों ने धार्मिक आधार पर चिड़ियाघर के अधिकारियों के इस क्रूर कृत्य की कड़ी निंदा की।

जैसा कि मैंने बताया, हमाड्रायड एक विशालकाय सांप है, जो आमतौर पर जैतून-हरे रंग का होता है और उस पर सफेद धारियाँ होती हैं। बर्मा और मलय क्षेत्र में नर सांप लगभग गहरे काले रंग का होता है, हालांकि उस पर सफेद धारियाँ बनी रहती हैं। आम कोबरा की तुलना में इसकी लंबाई के अनुपात में इसका फन उतना विकसित नहीं होता और इस पर प्रसिद्ध 'वी' का निशान भी नहीं होता। कहा जाता है कि यह बहुत आक्रामक होता है और देखते ही हमला कर देता है, खासकर मादा सांप अपने अंडों की रक्षा करते समय। मादा अपने अंडे गिरे हुए, सड़े हुए पत्तों से बने घोंसले में देती है। हालांकि, मैंने खुद इस आक्रामकता का अनुभव नहीं किया है, हालांकि मैं दो बार हमाड्रायड के बहुत करीब से सामना कर चुका हूँ। पहली बार मैं बैंगलोर में अपने बगीचे के लिए पेड़ के फर्न खोद रहा था, और उसी समय पश्चिमी घाट की एक घाटी में, अगुम्बे नामक स्थान के पास, एक धारा में तैर रही कुछ दुर्लभ लाल पूंछ वाली मछलियों को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। ये मछलियाँ मेरे घर के एक्वेरियम के लिए थीं। मैंने देखा कि झाड़ियों के बीच से एक इगुआना छिपकली का सिर मेरी ओर झाँक रहा था। उस समय मैं नदी के तल में चल रहा था और उसे करीब से देखने के लिए आगे बढ़ा, तभी वह हमाद्र्याद (एक प्रकार की छिपकली, इगुआना नहीं जैसा मैंने सोचा था) अचानक ऊपर उठा और किनारे पर अपनी ऊँची जगह से लगभग छह फीट ऊपर मेरे सामने खड़ा हो गया। वह सरीसृप गुस्से से काँप रहा था और उसकी काली आँखें चमक रही थीं, जैसे ही उसने अपने शरीर से ज़ोर से हवा छोड़ी। मेरे पास एक छड़ी भी नहीं थी, इसलिए मैं बिल्कुल स्थिर खड़ा रहा। कुछ क्षणों बाद उसका काँपना शांत हुआ, फूला

हुआ फन नीचे आया, साँप नीचे झुका और नदी के उस पार पाँच फीट से भी कम दूरी पर रेंगता हुआ चला गया। आधे रास्ते में रुका और मुझे फिर से देखा कि मैं क्या करने वाला हूँ। मैंने कुछ नहीं किया और अभी भी नहीं हिला। फिर वह अपने रास्ते पर चल पड़ा और दूसरे किनारे पर झाड़ियों के बीच गायब हो गया।

दूसरी बार मैं बाबा बुदान पहाड़ियों पर संतावेरी के पास जंगल की आग बुझाने वाली पट्टी पर एक पेड़ के पीछे बैठा था, जब बाघों की तलाश चल रही थी। अचानक मुझे अपने पीछे जंगल से एक अजीब सी सीटी की आवाज़ सुनाई दी। यह कुछ-कुछ बैल-बाइसन के चेतावनी संकेत जैसी थी, और इसलिए मुझे लगा कि बाइसन दिखाई देगा, तभी एक हमाद्र्याड (एक प्रकार का सांप) झाड़ियों से निकला और आग बुझाने वाली पट्टी को पार करते हुए मेरे बिल्कुल करीब से गुजरा। हालांकि, उस स्थिति में, मुझे संदेह है कि सांप ने मुझे देखा भी होगा क्योंकि मैं बिल्कुल भी नहीं हिला।

जिन लोगों को मैंने ये दोनों घटनाएँ सुनाई हैं, उनमें से ज़्यादातर का कहना है कि मैंने न हिलकर अपनी जान बचाई, और अगर मैं हिल जाता तो साँप तुरंत हमला कर देते। इन बड़े सरीसृपों में से किसी के हमले का शिकार न होने के कारण मैं कोई राय नहीं दे सकता। हालाँकि, इसमें कोई शक नहीं कि मैं उस बदकिस्मत जर्मन प्राणी विज्ञानी से ज़्यादा भाग्यशाली था जो कुछ साल पहले चिड़ियाघर के लिए दो हमाद्र्याड पकड़ने अगुम्बे आया था। उसने पहले नर को बिना किसी परेशानी के पकड़ लिया। कुछ दिनों बाद उसने मादा को पकड़ने की कोशिश की। मादा ने उसे काट लिया। उसकी वहीं जंगल में मौत हो गई। उस घटना में यह पुरानी कहावत कि 'प्रजाति की मादा नर से ज़्यादा खतरनाक होती है' अक्षरशः सच साबित हुई। इसके विपरीत, मुझे कई साल पहले बर्मा के मेम्यो में एक सड़क किनारे सपेरे का करतब याद है। संयोग से वह एक बर्मी महिला थी, और बहुत सुंदर थी, जैसा कि मुझे आज भी याद है। उसने एक टोकरी से एक हमाद्र्याड निकाला और उसके सामने तब तक नाचती रही जब तक कि वह अपना फन फुलाकर ज़मीन से कुछ फीट ऊपर न उठ गया। फिर उसने जानबूझकर उसके मुंह पर चुंबन किया। मैंने बाद में सांप की जांच की। उसमें विष ग्रंथियां और उसके दांत मौजूद थे। लेकिन मुझे याद है कि वह हमाद्र्याद नर था, और जैसा कि मैंने कहा, वह एक बहुत ही प्यारी बर्मी महिला थी। शायद इसीलिए उसके साथ उस दुर्भाग्यशाली जर्मन वैज्ञानिक की तुलना में अधिक सम्मानजनक व्यवहार किया गया।

आम भारतीय कोबरा इतना प्रसिद्ध है कि इसके बारे में ज़्यादा बताने की ज़रूरत नहीं है। प्रचलित कहानियों के विपरीत, इसकी लंबाई शायद ही कभी छह फीट से ज़्यादा होती है। भारत में इसकी दो किस्में पाई जाती हैं: पहली, जिसमें व्यापक रूप से चर्चित 'वी' आकार का निशान होता है, जिसे 'बायोसेलेट' किस्म कहा जाता है, और दूसरी, जिसके फन पर केवल एक सफेद धब्बा होता है, जिसके चारों ओर काला घेरा होता है। इसे 'मोनोसेलेट' किस्म के नाम से जाना जाता है। कहीं-कहीं ऐसे नमूने भी देखने को मिलते हैं जिनमें कोई निशान नहीं होता, हालांकि उनका फन भी उतना ही विकसित होता है।

कोबरा की पहचान के लिए रंग एक बहुत ही अविश्वसनीय तरीका है, क्योंकि ये गहरे काले से लेकर विभिन्न प्रकार के भूरे और यहाँ तक कि लाल, सफेद या हरे रंग के भी पाए जाते हैं। भूरा और धूसर रंग सबसे आम हैं। यहाँ तक कि नवजात कोबरा, जब वे अंडे से निकलते हैं और मात्र छह इंच लंबे होते हैं, तब भी बेहद विषैले होते हैं। अपने जीवन के पहले दो वर्षों में वे कहीं अधिक आक्रामक होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनका स्वभाव शांत हो जाता है, और बहुत बूढ़े कोबरा बिना अत्यधिक उकसावे के काटते नहीं हैं। इस उम्र में, जब उनके दांत और विष की थैली

पूरी तरह से मौजूद होते हैं, तब उन्हें पूरी तरह से वश में किया जा सकता है।

कोबरा लगभग पंद्रह नरम खोल वाले अंडे देते हैं, जिनमें से प्रत्येक कबूतर के अंडे के आकार का होता है। ये अंडे उथले गड्ढे में या सड़ते हुए पत्तों के बीच में दिए जाते हैं। इन अंडों को सफलतापूर्वक सेने के लिए सूर्य की अप्रत्यक्ष गर्मी और पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। नमी के बिना ये अंडे सिकुड़ जाते हैं।

करैत सांप की औसत लंबाई लगभग तीन फीट होती है और यह पतला, काला सांप होता है जिसके शरीर पर सफेद छल्ले होते हैं। यह बहुत फुर्तीला होता है, लेकिन साथ ही बहुत शर्मीला और घबराया हुआ भी होता है और आमतौर पर पकड़े जाने के एक या दो दिन के भीतर ही बिना किसी स्पष्ट कारण के मर जाता है।

किंग कोबरा, कोबरा और करैत को 'कोलुब्राइन' सांपों के रूप में जाना जाता है, और इनका जहर पूरे तंत्रिका तंत्र को ध्वस्त कर देता है, जो इसका प्राथमिक लक्षण है। इन सभी के दो स्थिर दांत होते हैं, जिनमें से सामान्य कोबरा के दांत की लंबाई लगभग एक चौथाई इंच, हैमाड्रायड के दांत की लंबाई लगभग आधा इंच और करैत के दांत की लंबाई लगभग एक-आठवां इंच होती है।

'विशालकाय' साँपों में रसेल वाइपर और सॉ-स्केल्ड वाइपर शामिल हैं। इनके भी दो नुकीले दाँत होते हैं, एक-एक दोनों तरफ। इस्तेमाल न होने पर ये मुँह के पिछले हिस्से से चिपके रहते हैं, लेकिन इन्हें खड़ा किया जा सकता है और इनके आधार को अक्ष मानकर घुमाया जा सकता है। एक बड़े रसेल वाइपर के दाँत पूरे एक इंच तक बढ़ते हैं और नरम चमड़े के जूते, पुट्टी, पैंट या मोटे ऊनी मोजे को भी छेद सकते हैं। कोबरा या करैत के दाँत स्थिर होते हैं और घूम नहीं सकते, इसलिए ऐसा नहीं कर सकते। रसेल वाइपर खुद एक मजबूत साँप है जिसकी लंबाई पाँच फीट से थोड़ी अधिक होती है और इसकी पीठ पर हीरे के आकार के निशानों की तीन पंक्तियाँ होती हैं (एक बीच में और एक-एक दोनों तरफ), जो एक श्रृंखला की तरह आपस में जुड़ी होती हैं और गहरे भूरे रंग की होती हैं। इसी कारण इसे कभी-कभी 'चेन-वाइपर' भी कहा जाता है।

आरी के आकार का तना मुश्किल से दो फीट से अधिक लंबा होता है और यह भूरे रंग का सांप होता है जिसकी पीठ पर सफेद धारियां होती हैं। इसकी विशिष्ट विशेषता इसकी खुरदरी, उभरी हुई खाल है। जब यह उत्तेजित होता है, तो यह अपने शरीर पर गोल-गोल कुंडली बना लेता है, जिससे खालों से काफी तेज कर्कश ध्वनि निकलती है। इसी कारण इसे भारतीय भाषा में 'पुरसा', 'पूरसा' या 'फूर्सा' कहा जाता है, जो इसकी कर्कश खालों से निकलने वाली ध्वनि का उच्चारण है।

कोलुब्राइन सांपों के दांतों के पिछले हिस्से में खांचे होते हैं, जिनसे जहर की थैली से निकलने पर जहर रिसता है। वहीं, वाइपर सांपों के दांतों के बीचोंबीच हाइपोडर्मिक सिरिंज की सुई की तरह खांचे होते हैं, जिनसे जहर निकलता है। इसी वजह से मोटे मोजे, पट्टियां, लंबी पतलून और मुलायम जूते पहनने से वाइपर सांप के काटने से बचाव नहीं होता, हालांकि कोलुब्राइन सांप के काटने से बचाव हो सकता है। खुले रहने पर, अधिकांश जहर कपड़े में समा जाता है या जूते के चमड़े पर फैल जाता है। इन दोनों घातक सांपों के लंबे, घूमने वाले, हाइपोडर्मिक सिरिंज जैसे दांत यह सुनिश्चित करते हैं कि शिकार को जहर की घातक खुराक लगभग पूरी तरह से वैसे ही मिले जैसे वह जहर ग्रंथियों से निकलती है। रसेल वाइपर के मामले में यह विशेष रूप से सच है, जिसके बेहद लंबे दांत किसी भी सामान्य कपड़े को भेद सकते हैं।

सांप के जहर का मुख्य प्रभाव रक्तस्राव पैदा करना है, जिससे पीड़ित को काफी दर्द होता है।

बेशक, इन सरीसृपों में से किसी के भी काटने से मनुष्य की मृत्यु होने में लगने वाले औसत

समय से अधिक समय बताना असंभव है। इसमें शामिल अन्य कारक हैं पीड़ित की आयु, स्वास्थ्य, शारीरिक बनावट और शारीरिक संरचना; सांप का आकार और क्या उसने हाल ही में किसी अन्य जीव को काटा है; और पीड़ित के रक्त में प्रवेश कर चुके विष की मात्रा। आमतौर पर मृत्यु होने का औसत समय इस प्रकार हो सकता है:

हमाद्र्याड के मामले में, लगभग नब्बे मिनट; करैत के मामले में, दो से तीन घंटे; कोबरा के मामले में, चार से छह घंटे; रसेल के वाइपर के मामले में, बारह से छत्तीस घंटे; और सॉ-स्केल्ड वाइपर के मामले में, तीन से सात दिन तक का समय लग सकता है।

भारत में विषैले न होने वाले साँपों की संख्या बहुत अधिक है। शायद सबसे रोचक साँप अजगर या चट्टानी साँप है, जिसकी लंबाई अठारह फीट तक हो सकती है, जबकि मलाया में पाई जाने वाली प्रजाति पैंतीस फीट तक लंबी होती है। यह अपने शिकार को कुंडली मारकर कुचलकर मार डालता है, जिसके बाद यह पूरे जानवर को निगल जाता है। इसके शिकार आकार में चूहे, खरगोश, सूअर और छोटे हिरण तक हो सकते हैं, जो साँप के आकार और क्षमता पर निर्भर करता है। जापानियों के विरुद्ध बर्मा अभियान के दौरान चालीस फीट से अधिक लंबे एक 'रेटिकुलेटेड अजगर' (मलेशियाई प्रजाति, जो बर्मा में भी पाई जाती है) को मारे जाने का वृत्तांत मिलता है। अपनी मृत्यु की पीड़ा में इसने एक जापानी सैनिक का शव, हेलमेट सहित, उगल दिया जिसे इसने निगल लिया था। हालाँकि यह कहानी समाचार पत्रों में छपी थी, मैं इसकी सत्यता की गारंटी नहीं देता। यह धारणा कि अजगर अपने शिकार को निगलने से पहले उसे चिपचिपे पदार्थ से ढक देता है, पूरी तरह से गलत है। अन्य सभी साँपों की तरह, इसके जबड़े आपस में जुड़े हुए नहीं होते, बल्कि पूरी तरह से अलग-अलग इकाइयाँ होती हैं। इसकी बाहरी त्वचा अत्यधिक लचीली होती है, इसलिए यह आसानी से समझा जा सकता है कि एक साँप अपने सिर और परिधि से कई गुना बड़े जीवों को निगल सकता है।

अन्य विषरहित साँपों में कई प्रकार के ज़मीनी साँप; कई प्रजातियाँ, बेहद पतले, चाबुक जैसे और तेज़ गति से चलने वाले वृक्षीय साँप; मोटे, सुस्त, कीड़े जैसे दिखने वाले रेतीले साँप; और बड़ी संख्या में मीठे पानी के साँप शामिल हैं। एक प्रकार के रेतीले साँप की पूंछ कुंद होती है जो दूसरे सिर जैसी दिखती है, इतनी अधिक कि आज भी व्यापक रूप से यह माना जाता है कि इस सरीसृप के दो सिर हैं, एक दूसरे के दोनों सिरों पर।

मुझे सांपों से हमेशा से ही लगाव रहा है, और बिना किसी स्पष्ट कारण के, आठ साल की उम्र में ही मैंने उन्हें पालतू जानवर के रूप में रखना शुरू कर दिया था। नतीजतन, लड़कियों के बीच मुझे काफी डरावना माना जाता था और स्कूल में तो मैं एक तरह का आतंक ही था। मुझे सिनेमाघरों में, संडे स्कूल में और यहाँ तक कि चर्च में भी सरीसृपों को छोड़ने में बहुत मज़ा आता था। 'सांपों को वश में करने वाला एंडरसन' का नाम आज भी, मेरे साथ जुड़ा हुआ है, भले ही मैं अड़तालीस साल का हो गया हूँ।

सांप के जहर के कई औषधीय उपयोग हैं, और मुझे पूरा यकीन है कि यह कई बीमारियों और स्थितियों के लिए एक अनछुआ इलाज है। असल बात यह है कि इस क्षेत्र में अभी तक पूरी तरह से शोध और उपयोग नहीं किया गया है, क्योंकि मनुष्यों पर इस जहर का प्रयोग करना खतरनाक हो सकता है। वाइपर के जहर को कम मात्रा में पतला करके और होम्योपैथी के नियमों के अनुसार इस्तेमाल करने पर, जहां किसी विशेष जहर की कम मात्रा उसी जहर की अधिक मात्रा के प्रभाव को कम कर देती है, यह साबित हो चुका है कि यह अत्यधिक रक्तस्राव को रोकने में बहुत कारगर है, खासकर तब जब इसकी अधिक या घातक मात्रा दी जाती है। दांत निकालने या छोटे ऑपरेशन के बाद अत्यधिक रक्तस्राव को रोकने के लिए दंत चिकित्सकों और

अन्य लोगों द्वारा इस जहर का उपयोग किया जाता है।

इसी प्रकार, कोलुब्राइन विष, जो अधिक मात्रा में लेने पर तंत्रिका तंत्र को पूरी तरह से निष्क्रिय कर देता है, मिर्गी और अन्य तंत्रिका संबंधी विकारों के मामलों में बहुत कम मात्रा में प्रभावी होता है।

बॉम्बे स्थित हैफकिन संस्थान सभी पाँच विषैली प्रजातियों के काटने के विषनाशक के रूप में विषरोधी इंजेक्शनों की एक श्रृंखला तैयार करता है। ये इंजेक्शन प्रत्येक प्रजाति के लिए अलग-अलग उपलब्ध हैं, बशर्ते कि काटने वाले साँप की पहचान हो चुकी हो; या यदि यह निश्चित न हो कि किस साँप ने काटा है, तो सभी प्रजातियों के लिए संयुक्त रूप में उपलब्ध हैं। सीरम को तैयार करने के लिए घोड़ों को धीरे-धीरे साँप के विष की बढ़ती मात्रा का इंजेक्शन दिया जाता है, जिसकी शुरुआत बहुत कम मात्रा से होती है, जब तक कि वे प्रतिरक्षित न हो जाएँ और घातक खुराक से तीन से चार गुना अधिक खुराक को बिना किसी दुष्प्रभाव के सहन करने में सक्षम न हो जाएँ। फिर प्रतिरक्षित घोड़े की जांघ की नस से रक्त निकाला जाता है, और इस रक्त से अंततः विषरोधी सीरम तैयार किया जाता है।

जब मुझे पता चला कि सीरम कैसे तैयार किया जाता है, तो मैं बहुत उत्सुक हुआ और अपना खुद का स्टॉक तैयार करने का निश्चय किया। मैंने दो बूढ़े टट्टू और एक गधा ऐसे स्रोतों से प्राप्त किए जिनका खुलासा करने में मुझे आज भी संकोच होता है और उन्हें कोबरा के जहर की प्रारंभिक खुराक देकर प्रतिरक्षित करना शुरू किया, जिसे मैंने इस उद्देश्य के लिए खरीदी गई एक छोटी 3 सीसी हाइपोडर्मिक सिरिंज से इंजेक्ट किया। दुर्भाग्य से, उन दिनों मुझे दी जाने वाली प्रारंभिक खुराक का ज्ञान बहुत कम था, जिसके परिणामस्वरूप कुछ ही घंटों के भीतर मुझे उन दोनों टट्टुओं और गधे के शवों के निपटान की व्यवस्था करनी पड़ी। मुझे यह भी याद है कि मेरे पिता बहुत नाराज थे।

पिछले विश्व युद्ध से ठीक पहले, मैं अमेरिका में इच्छुक संस्थानों को क्रिस्टलीकृत रूप में सांप का जहर निर्यात करके अच्छा खासा कारोबार कर रहा था, खासकर कोबरा का जहर। एक औसत कोबरा लगभग हर चार से पांच दिन में एक घन सेंटीमीटर जहर पैदा करता है, जिसका क्रिस्टलीकरण होने पर वजन लगभग एक ग्राम होता है, जिसके लिए मुझे लगभग डेढ़ डॉलर मिलते थे। मेरे पास बीस कोबरा थे, जिनसे मुझे हर पांच दिन में तीस डॉलर का जहर मिलता था, यानी एक सौ अस्सी डॉलर प्रति माह। यह बुरा कारोबार नहीं था, क्योंकि सांपों को खिलाने में मुझे कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता था, सिवाय हर दस दिन में एक मेंढक या छिपकली के। ये सांप मेरे लिए एक पंद्रह वर्षीय भारतीय लड़के द्वारा पकड़े जाते थे, ऐसे नौकर को 'चोकरा' कहा जाता है। इस काम के लिए उसका वेतन सात रुपये प्रति माह था, जो अंग्रेजी मुद्रा में दस शिलिंग के बराबर है।

सांप की गर्दन पकड़कर, उसके मुंह को पतले रबर या मूत्राशय की त्वचा से ढके कांच के कप पर दबाकर उससे विष एकत्र किया जाता है। सांप रबर को काटता है और ऐसा करने से उसकी ग्रंथियों से विष निकलता है, जो कप में टपकता है। बहुत पतले रबर का उद्देश्य सतह पर विष के नुकसान को रोकना है। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि सांप अपने दांत कांच पर न तोड़ ले, जिससे उसे चोट न लगे। कप के किनारे पर विद्युत रोधक टेप की कुछ परतें इस उद्देश्य को पूरा करती हैं।

कोबरा को आसानी से संभाला जा सकता है, क्योंकि वे अपने सिर को जमीन से लगभग एक तिहाई ऊपर उठाकर और अपने फन को फुलाकर बाहर निकाल लेते हैं। इसके बाद, फन के पिछले हिस्से पर एक छड़ी को मजबूती से दबाकर सांप को जमीन पर गिराना और उसकी गर्दन

के पिछले हिस्से से पकड़ना अपेक्षाकृत आसान होता है। रसेल वाइपर, सॉ-स्केल्ड वाइपर और करैत कहीं अधिक खतरनाक होते हैं, क्योंकि वे अपने सिर को अपने शरीर की कुंडलित परतों के नीचे छिपा लेते हैं और साथ ही, वे गति में बेहद तेज होते हैं, जो कोबरा से कहीं अधिक है। इसके अलावा, रसेल वाइपर के बेहद लंबे और घूमने वाले दांत उसे एक खतरनाक जीव बनाते हैं, जिसके लिए बहुत सावधानी से संभालने की आवश्यकता होती है।

आम तौर पर कोबरा को आसानी से पालतू बनाया जा सकता है। घुमंतू सपेरों की टोकरी में मौजूद कोबरा के दांत और विष-कोश निकाल दिए जाते हैं, जिससे वे हानिरहित हो जाते हैं। दांत लगभग एक महीने में फिर से उग आते हैं, लेकिन विष-कोश निकाल देने के बाद सरीसृप जीवन भर हानिरहित रहता है, क्योंकि विष स्रावित नहीं हो पाता। रसेल वाइपर के विष-कोश को नहीं निकाला जा सकता क्योंकि वे मस्तिष्क के बहुत पास और मुंह की एक बड़ी धमनी के निकट स्थित होते हैं। विष-कोश निकालने के ऑपरेशन से न केवल खून की कमी होती है, बल्कि मस्तिष्क में चोट भी लगती है, जिससे कुछ ही समय में उसकी मृत्यु हो जाती है। इसलिए सपेरे ऊपरी और निचले होंठों को दोनों कोनों से सुई और धागे से सिल देते हैं, और सप्ताह में एक बार मुंह के बीच से गले में डाली गई हड्डी की कीप के माध्यम से इस बेचारे सरीसृप को भोजन कराते हैं। आमतौर पर इसे अंडा खिलाया जाता है। यही कृत्रिम और जबरन भोजन कराने की विधि उन कोबरा पर भी अपनाई जाती है जो कैद में रहने पर अक्सर अपना प्राकृतिक भोजन निगलने से इनकार कर देते हैं।

कम खाने की आदत ही सांपों को पालने में इतना आसान बनाती है। आमतौर पर, चूहे, मेंढक, छिपकली या छोटे पक्षी का एक भोजन सांप के आकार के अनुसार एक सप्ताह या दस दिनों के लिए पर्याप्त होता है। इस मामले में, आश्चर्यजनक रूप से, छोटी प्रजातियाँ बड़ी प्रजातियों की तुलना में अधिक पेटू होती हैं। अजगर कम बार खाते हैं, पंद्रह दिनों से लेकर एक महीने के अंतराल पर, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्होंने आखिरी बार किस आकार का भोजन किया था।

साँपों के इस लंबे विवरण को लिखने का मेरा उद्देश्य उनमें से प्रत्येक की रोचक विशेषताओं का वर्णन करना था। एक विशेषता सभी साँपों में समान है, चाहे वे विषैले हों या गैर-विषैले, सिवाय हमाद्र्याद के; कि वे सभी मनुष्य से डरते हैं और उनसे दूर रहते हैं। वे जानबूझकर किसी मनुष्य पर हमला या उसे काटने की कोशिश नहीं करते, बल्कि किसी के आने की आहट सुनकर जितना हो सके रेंगकर नज़रों से ओझल हो जाते हैं, और केवल तभी काटते हैं जब उन पर पैर रख दिया जाए। वे ऐसा डर और आत्मरक्षा के कारण करते हैं। संयोगवश, यह जानना उपयोगी है कि साँपों में कान जैसे किसी अंग के माध्यम से सुनने की क्षमता नहीं होती। उनकी 'सुनने की क्षमता' उनके शरीर के माध्यम से कंपन को महसूस करने की क्षमता में निहित है। इसलिए, सपेरे की बांसुरी और अन्य वाद्य यंत्रों और ध्वनियों से कोबरा को 'वश में' करने की जो कहानियाँ हम सुनते हैं, वे मिथक हैं। सांपों का संगीत सांपों का ध्यान आकर्षित नहीं करता, बल्कि वाद्य यंत्र बजाते समय उसके शरीर, सिर और हाथों का लयबद्ध हिलना-डुलना उन्हें आकर्षित करता है। यही हिलना-डुलना सांपों को देखते हुए उनके साथ-साथ इधर-उधर हिलने पर मजबूर करता है। इस हिसाब से, भारत में किसी अंधेरी पगडंडी पर चलते समय चिल्लाना, गाना या सीटी बजाना किसी छिपे हुए सांप को डरा नहीं सकता, जबकि भारी जूतों की आवाज या जमीन पर छड़ी पटकने से वह निश्चित रूप से डरकर भाग जाएगा।

हर सांप साल में दो से तीन बार अपनी बाहरी त्वचा की परत उतारता है। यह त्वचा मोजे या दस्ताने उतारने की तरह अंदर से बाहर की ओर निकलती है, और ऐसा सांप द्वारा किसी खुरदरी

सतह या बाधा पर खुद को रगड़ने और कुंडली बनाने से होता है।

विषैले और गैर-विषैले दोनों प्रकार के साँपों को सामान्यतः दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है—अंडे देने वाले या बच्चे पैदा करने वाले। विषैले साँप अंडे देते हैं, जिनसे कुछ दिनों बाद बच्चे निकलते हैं, जबकि गैर-विषैले साँप सीधे बच्चे पैदा करते हैं। विष की उपस्थिति या अनुपस्थिति का इस वर्गीकरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि प्रत्येक श्रेणी में विषैली और हानिरहित दोनों प्रकार की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, कोबरा अंडे देता है, जबकि रसेल वाइपर और अजगर सीधे बच्चे पैदा करते हैं।

पांचों विषैले साँपों में से, साधारण कोबरा मनुष्यों के काफी करीब रहता है और हर खेत या घर के पास चींटियों के टीलों और अन्य बिलों में पाया जाता है। हैरानी की बात है कि यह जंगल में बहुत कम ही देखने को मिलता है। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, हैमाड्रायड इसके ठीक विपरीत है और पूरी तरह से जंगल में ही रहता है। रसेल के विषैले साँप मानव बस्तियों के पास की तुलना में जंगलों और घास के मैदानों में अधिक पाए जाते हैं। करैत कहीं भी बहुत आम नहीं हैं, और आरी-पपड़ीदार विषैला साँप ज्यादातर शुष्क, रेतीले क्षेत्रों में रहता है।

जंगल में, विषनाशक इंजेक्शन की ट्यूब साथ ले जाने के अलावा, जिन्हें वैसे भी रेफ्रिजरेटर में रखना पड़ता है क्योंकि वे जल्दी खराब हो जाते हैं, विषैले सांप के काटने का एकमात्र विश्वसनीय उपाय है: घाव को तुरंत एक तेज चाकू से गहरा काटना, और फिर आसपास के जितना संभव हो उतना विषैला खून चूस लेना, ताकि अवशोषित विष की मात्रा कम से कम हो। वैसे, निगलने पर कोई भी विष विषैला नहीं होता, इसलिए विषैले खून को चूसने से किसी भी तरह के दुष्प्रभाव का कोई खतरा नहीं है। दरअसल, भारत के इस हिस्से में मुसलमानों द्वारा अक्सर आयोजित की जाने वाली कृत्रिम लड़ाइयों में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित मुर्गों और तीतरों को कोबरा का विष खिलाया जाता है ताकि वे अधिक आक्रामक हो जाएं। विजेता पर बड़ी रकम का दांव लगाया जाता है, और यह जैकपॉट जीतने के सामान्य तरीकों में से एक है।

घाव के ठीक ऊपर प्रभावी ढंग से पट्टी बांधने में समय और कौशल की आवश्यकता होती है। साथ ही, यदि व्यक्ति के धड़ पर कहीं भी घाव हो तो यह विधि अव्यावहारिक हो जाती है। किसी भी स्थिति में, पट्टी को प्रभावी ढंग से कसने से पहले ही विष रक्त में प्रवेश कर चुका होता है। घाव पर पोटेशियम परमैंगनेट के क्रिस्टल डालने से रासायनिक क्रिया द्वारा विष को कुछ हद तक बेअसर करने में मदद मिलती है, लेकिन क्रिस्टल के ऊतकों में प्रभावी ढंग से प्रवेश करने और अपना काम करने से पहले गहरे चीरे लगाने पड़ते हैं। इसी कारण मैं जंगल में हमेशा अपनी जेब में एक छोटा, तेज धार वाला चाकू रखता हूँ।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे कोबरा ने पैर में काट लिया था। वह शिकारी था और उसने सूझबूझ दिखाते हुए अपनी बंदूक के थैले में रखे बारूद का ढेर काटकर उसके कटे हुए हिस्से पर डाल दिया। फिर उसने माचिस से बारूद में आग लगा दी, जिसके परिणामस्वरूप उसके पैर में एक गहरा घाव हो गया, जिससे वह आज भी थोड़ा लंगड़ाकर चलता है। लेकिन वह बच गया। मैं एक और व्यक्ति को जानता हूँ, जो सपेरा था, जिसे कोबरा ने अंगूठे में काट लिया था। उसने दूसरे जोड़ पर चाकू रखा और अपने दूसरे हाथ से चाकू के पिछले हिस्से पर एक भारी पत्थर से ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे अंगूठा काटने में एक से अधिक प्रहार लगे। उसे बहुत पीड़ा हुई होगी और लगभग खून बहने से उसकी जान निकल गई होगी; फिर भी, वह बच गया और आज जीवित है। एक तीसरी घटना में, मैं एक बार मुत्तूर वन बंगले में डेरा डाले हुए था, जब एक व्यक्ति ने मुझे भोर में जगाकर बताया कि लगभग एक घंटे पहले उसे कोबरा ने पैर में काट लिया था। उसने बताया कि वह एक गाड़ीवाला था और कटे हुए बांसों से भरी गाड़ी लेकर पेन्नाग्राम

लौट रहा था। पिछली शाम सड़क किनारे उसका सामना जंगली हाथियों के झुंड से हुआ था। डर के मारे उसने अपनी गाड़ी मोड़ दी और वापस मजदूरों के शिविर में लौट आया। उस सुबह करीब 4 बजे वह फिर से निकला, गाड़ी के पीछे-पीछे चल रहा था ताकि हाथियों से दोबारा सामना होने पर आसानी से बच सके। शायद गाड़ी का पहिया सांप के ऊपर से गुजर गया और उसे चोट लग गई। उसने बताया कि उसे तेज दर्द हुआ और नीचे देखा तो एक सांप उसके पैर से लिपटा हुआ था। उसने लात मारी, और सांप ने पैर छोड़ दिया और भाग गया, लेकिन भागने से पहले ही उसने उसके फूले हुए फन से पहचान लिया कि वह एक कोबरा था। सांप के काटने के बाद वह दो मील चलकर बंगले तक आया, इस उम्मीद में कि कोई उसकी मदद कर सके। मैंने तुरंत घाव को चीरा लगाकर साफ किया और एक वन रक्षक की मदद से उसे कोमा में जाने से बचाने के लिए बरामदे में इधर-उधर घुमाया। लेकिन जल्द ही मुझे समझ आ गया कि मेरी सारी कोशिशें बेकार जाएंगी। दुर्भाग्यवश, उस बैलगाड़ीवाले के मुँह से लार टपकने लगी, उसकी आँखें ऊपर की ओर घूम गईं, वह शराबी की तरह लड़खड़ाने लगा और उसकी वाणी अस्पष्ट हो गई। मैंने किसी तरह उसका और उसके परिवार का नाम पता कर लिया, जो पेन्नाग्राम से एक मील दूर एरिगोल्लनूर गाँव में रहते थे। फिर अचानक वह हमारी बाहों में बेजान सा हो गया। वह बेहोश हो गया था। सुबह 8:30 बजे तक उसकी मृत्यु हो गई। मैंने वन रक्षक को उसके रिश्तेदारों और पेन्नाग्राम पुलिस को सूचित करने के लिए भेजा। रिश्तेदार दोपहर 2 बजे तक बैलगाड़ी में आए और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। फिर पुलिस आई। वे जानना चाहते थे कि जिस वन बंगले में हम उस आदमी को घुमाने ले गए थे, उसके फर्श पर खून के निशान क्यों थे; मैंने उसे क्यों काटा था; उसकी मृत्यु क्यों हुई। अंत में शव को बैलगाड़ी में डालकर पुलिस स्टेशन ले जाया गया और मुझे भी साथ चलने के लिए कहा गया। मैंने साफ इनकार कर दिया। मुख्य कांस्टेबल ने मेरे इनकार पर कुछ देर विचार किया और फिर समझौता करते हुए मुझे निर्देश दिया कि मैं शव परीक्षण की रिपोर्ट आने तक वन बंगले में ही रहूँ। मैंने तुरंत सहमति दे दी। फिर दल सात मील दूर स्थित पेन्नाग्राम के लिए रवाना हुआ, जहाँ से शव को बस द्वारा बयालीस मील दूर स्थित सलेम कस्बे के जनरल अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। तीन दिन बाद रिपोर्ट आई। गाड़ीवान की मौत कोबरा के काटने से हुई थी। चौथे दिन पुलिस ने मुझे सूचित किया कि अब मुझ पर कोई संदेह नहीं है।

पिछले उनतीस वर्षों में, जब से मैं साँपों को संभाल रहा हूँ, मुझे केवल एक बार साँप ने काटा है, और वह भी एक कोबरा ने। यह घटना 1939 में घटी थी। मैंने साँप को पकड़ा ही था कि वह मेरे हाथ से फिसल गया और मेरे बाएँ हाथ की दूसरी उंगली पर काट लिया। लेकिन मैं अभी भी जीवित हूँ; न तो मुझे अपनी उंगली को विस्फोट से उड़ाना पड़ा और न ही काटना पड़ा। सौभाग्य से, यह घटना मेरी ज़मीन पर हुई, जो बैंगलोर से नौ मील दूर है, और मैं अपनी कार से अस्पताल पहुँच सका और विष रोधी दवा का इलाज करवा सका। परिणामस्वरूप, साँप के काटने से कोई अप्रिय लक्षण नहीं हुए; लेकिन इंजेक्शन से ज़रूर हुए, क्योंकि तीसरे दिन मुझे बहुत गंभीर प्रतिक्रिया हुई और मेरे दोनों पैर अस्थायी रूप से आंशिक रूप से लकवाग्रस्त हो गए। हालाँकि, कैल्शियम और अन्य इंजेक्शनों से एक दिन के भीतर ही सब ठीक हो गया।

अंत में, मैं दक्षिण भारत में प्रचलित एक विचित्र मान्यता का उल्लेख करना चाहूंगा, जिसके अनुसार मद्रास शहर से कुछ ही दूरी पर स्थित दक्षिणी रेलवे के पोलरेड्डीपालयम स्टेशन पर कार्यरत नरसिया नामक एक स्टेशन मास्टर किसी भी व्यक्ति को जहरीले सांप के काटने से ठीक कर सकते थे, बशर्ते उन्हें टेलीग्राम द्वारा सूचना दी जाए। यह मान्यता इतनी व्यापक हो गई थी कि रेलवे अधिकारियों ने अपने टेलीग्राफ सिस्टम पर इस स्टेशन मास्टर को संबोधित किसी भी संदेश को प्राथमिकता दी। मैंने प्रामाणिक स्रोतों से उनके चमत्कारी उपचारों के कई किस्से सुने हैं, और

आज दक्षिण भारत में सैकड़ों लोग जीवित हैं जिनकी जान उन्होंने बचाई थी। कार्यप्रणाली यह थी कि जैसे ही श्री नरसिया को किसी के काटे जाने की सूचना वाला टेलीग्राम मिलता, वे स्टेशन प्रांगण में उगने वाले एक विशेष पेड़ के पास जाते, अपनी धोती या लंगोटी का एक टुकड़ा फाड़कर पेड़ की एक शाखा से बांधते, प्रार्थना करते और फिर उत्तर में एक टेलीग्राम भेजकर पीड़ित को सूचित करते कि यदि वह तंबाकू, शराब और कॉफी से परहेज करे तो वह जीवित रहेगा। हमेशा पीड़ित बच जाता था।

अफसोस! श्री नरसिया को स्वयं ईश्वर की शरण में जाना पड़ा और वे अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। मुझे नहीं पता कि उनका रहस्य उनके साथ ही समाप्त हो गया या नहीं, लेकिन मुझे आशंका है कि ऐसा ही हुआ है, क्योंकि तब से मुझे सांप के काटने के उपचार के क्षेत्र में उनके काम को आगे बढ़ाने वाले किसी उत्तराधिकारी के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है।

छह

हैदराबाद का हत्यारा

ब्रिटिश राज के दिनों में, मैसूर राज्य के उत्तर में बेल्लारी, अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल जिले स्थित थे, जो पूर्व मद्रास प्रेसीडेंसी के अंतर्गत आते थे। इनके उत्तर में हैदराबाद राज्य था, जो हैदराबाद के निज़ाम के अधीन था। निज़ाम ब्रिटिश शासन के कट्टर सहयोगी थे और दिल्ली के कभी सर्वशक्तिमान रहे मुगल सम्राट के वंशज थे।

हैदराबाद राज्य अब अस्तित्व में नहीं है और निज़ाम के विशाल साम्राज्य के कुछ हिस्से अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल के साथ मिलकर आंध्र प्रदेश के भाषाई तेलुगु राज्य का एक हिस्सा बन गए हैं, जो नए भारत संघ में लगभग दूसरा सबसे बड़ा राज्य है, क्षेत्रफल में यह उत्तर में स्थित मध्य प्रदेश से ही छोटा है।

हालांकि, यह कहानी बहुत पहले की है जब ये क्षेत्र, हालांकि मुख्य रूप से तेलुगु भाषी थे, मद्रास के अंतर्गत आते थे।

उन दिनों ये जिले काफी हद तक अविकसित थे क्योंकि यहाँ वर्षा कम होती थी, साल के दस महीने भीषण गर्मी पड़ती थी (बाकी दो महीने बस असहनीय गर्मी होती थी) और जनसंख्या घनत्व भी न के बराबर था। अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल कस्बों को छोड़कर, जिनके नाम पर उन जिलों का नाम पड़ा जिनकी वे राजधानियाँ थीं, बाकी का इलाका छोटे-छोटे गाँवों से आबाद था जो दूर-दूर तक फैले हुए थे।

बंबई से मद्रास तक जाने वाली रेल लाइन जिलों को जोड़ने वाली प्रमुख मार्ग थी। यह गुंटकल जंक्शन नामक रेलवे कॉलोनी से होकर गुजरती थी। यह मुख्य मार्ग ब्रॉड गेज का था, जिसकी पटरियों के बीच 5 फीट 6 इंच की दूरी थी। गुंटकल से तीन अलग-अलग मीटर गेज की धाराएँ निकलती थीं। एक पश्चिम की ओर बेल्लारी और हुबली की ओर जाती थी; दूसरी दक्षिण की ओर मैसूर राज्य के बैंगलोर की ओर जाती थी; तीसरी पूर्व की ओर द्रोणचेल्लम और नंदीयाल से होते हुए बेजवाड़ा तक जाती थी, और फिर वहाँ से भारत के पूर्वी तट तक पहुँचती थी। बेजवाड़ा में यह मद्रास और कलकत्ता को जोड़ने वाली एक अन्य ब्रॉड गेज मुख्य धारा से जुड़ती थी, जबकि द्रोणचेल्लम में एक मीटर गेज लाइन उत्तर-पूर्व की ओर सिकंदराबाद और हैदराबाद की ओर मुड़ जाती थी। मीटर गेज के इंजन और रोलिंग स्टॉक ब्रॉड गेज लाइनों की तुलना में स्वाभाविक रूप से छोटे और काफी हल्के होते थे।

गुंटकल, द्रोणाचेल्लम और नंदीयाल से आगे बढ़ते हुए, पूर्वी मीटर-गेज लाइन पांच स्टेशनों तक वन क्षेत्र से होकर गुजरती है, जिनके नाम क्रमशः गज़ुलापल्ली, बसवपुरम, चेलामा, बोगारा और दिगुवमेटा हैं, और फिर बेज़वाड़ा की ओर जाती है। यह वन क्षेत्र, जो मेरी कहानी का आधार है, लगभग उस जंगल पट्टी के बीचोंबीच स्थित है जो उत्तर की ओर कृष्णा नदी के पार पूर्व हैदराबाद राज्य तक और दक्षिण की ओर कडप्पा शहर तक फैली हुई है।

मीटर गेज की ट्रेनें धीमी होती हैं, और रात में गुजरने वाली ऊपर और नीचे जाने वाली मेल ट्रेनों के ड्राइवरों के लिए यह अभी भी एक आम अनुभव है कि इंजन की हेडलाइट की रोशनी में जंगली जानवर पटरियों को पार करते हुए दिखाई देते हैं, या अंतिम समय में पार करने की

कोशिश करने वाले जंगली सूअर या हिरण को कुचल देते हैं।

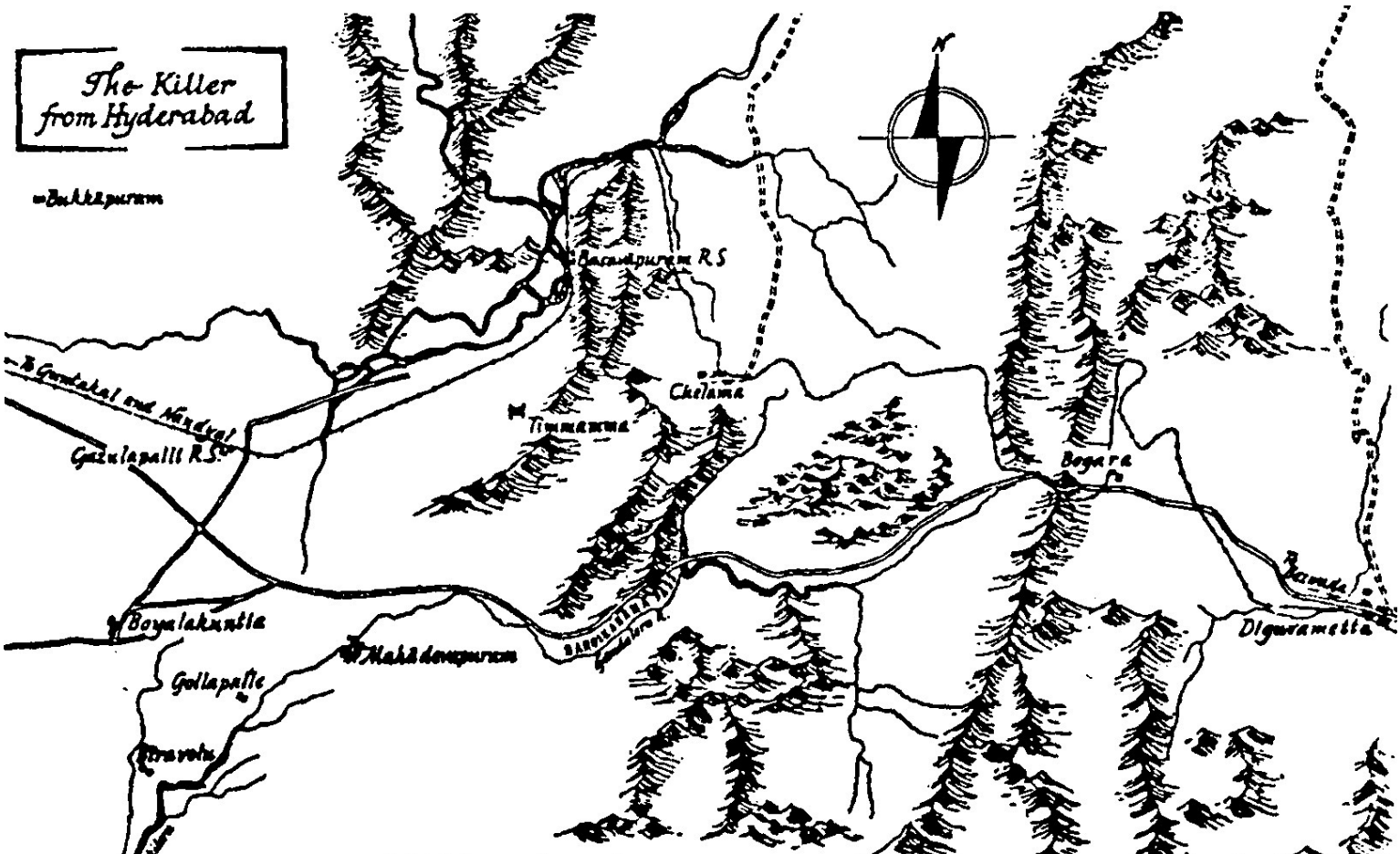
The Killer from Hyderabad
Bakkapuram
Bacchalpuram R.S
Chelama
Timmapuram
Gazulapalli R.S
Boyalakuntla
Gollapalle
Begura
Digurametla
N

मैंने जिन पाँच स्टेशनों का नाम लिया है, वहाँ से केवल ऊबड़-खाबड़ और पथरीले बैलगाड़ी के रास्ते और पैदल पगडंडियाँ ही आसपास के जंगल में जाती हैं। उन दिनों मोटर योग्य सड़कें नहीं थीं। यह उन मुख्य कारणों में से एक था जिसने इस क्षेत्र के जीव-जंतुओं को बुरी तरह से शिकार होने से बचाने में मदद की, जैसा कि अच्छी सड़कों वाले जंगली क्षेत्रों में हुआ है। उत्साही लेकिन गुमराह और खेल भावना के विरुद्ध शिकारी इन अच्छी सड़कों का उपयोग शाम से सुबह तक मोटरगाड़ियों से जंगल में स्पॉटलाइट चमकाकर और किसी भी जानवर पर गोली चलाकर करते हैं जिसकी आँखों में रोशनी पड़ती है। अक्सर ये शिकारी उस जानवर की प्रजाति या स्वभाव से भी अनभिज्ञ होते हैं जिस पर वे गोली चलाते हैं। इस मनमानी और दुष्ट प्रथा ने जंगली जानवरों को भारी नुकसान पहुँचाया है और यह नुकसान लगातार बढ़ता जा रहा है, क्योंकि सभी प्रजातियों की मादाओं और बच्चों का अंधाधुंध वध किया जा रहा है, जबकि उससे भी कहीं अधिक संख्या में जानवर बुरी तरह घायल होकर जंगल में तड़प-तड़प कर दर्दनाक मौत मर जाते हैं। ब्रिटिश सरकार ने अपने समय में इस अवैध शिकार को रोकने का प्रयास किया था, और भारतीय सरकार अभी भी प्रयास कर रही है। पहला प्रयास और दूसरा प्रयास दोनों ही पूरी तरह असफल रहे हैं, और भयानक तबाही अभी भी जारी है। इससे भी बुरी बात यह है कि यह स्थिति तब तक बनी रहेगी जब तक या तो जनता इस तथ्य के प्रति जागरूक नहीं हो जाती कि वन्य जीवन एक राष्ट्रीय धरोहर है और इसे अंधाधुंध नष्ट नहीं किया जाना चाहिए; या फिर जब तक वन्य जीवन पूरी तरह से विलुप्त नहीं हो जाता।

हालांकि, जैसा कि मैंने कहा है, सौभाग्य से मोटर योग्य सड़कों के अभाव के कारण, गाज़ुलापल्ली-दिगुवामेटा क्षेत्र अब तक रात में गश्त करने वाले मोटरगाड़ी हत्यारों के प्रकोप से कुछ हद तक बचा हुआ है, और वहां कोई जंगल में इस बात को लेकर आश्वस्त होकर डेरा डाल सकता है कि उसे किसी कार की गूंज, उसके बाद तेज रोशनी की किरण, कार के रुकने पर अचानक आवाज का बंद होना, बंदूक या राइफल की आवाज और शायद किसी घायल या मरते हुए जानवर की दर्द भरी चीख सुनाई नहीं देगी।

इस क्षेत्र के मूल निवासी तेलुगु भाषी चेंचु जनजाति के लोग हैं। अन्य आदिवासियों की तरह, वे भी कम वस्त्र पहनते हैं; पुरुषों और महिलाओं दोनों के मुख्य वस्त्र फटी और गंदी धोती होती है। पुरुष धनुष और बाण रखते हैं, और उनमें से अधिकांश अपने गले में मोतियों या पंखों का आभूषण पहनते हैं। विशेष अवसरों पर मोर पंख उनके बालों में लगाने का पसंदीदा आभूषण है। वे मादक पेय के शौकीन हैं, जिसे वे चिपचिपे महोवा फूल के रस या बबूल के पेड़ की छाल से बनाते हैं। वास्तव में, महोवा के पेड़ की बहुतायत के कारण, ये लोग ब्रिटिश शासनकाल में आबकारी अधिकारियों के लिए हमेशा एक बड़ी समस्या रहे हैं, और आंध्र सरकार के लिए तो ये और भी बड़ी समस्या हैं, जहाँ राज्य के कुछ हिस्सों में शराबबंदी लागू है।

हालांकि, यह कहानी न तो कारों से रात में गोलीबारी के विरोध में लिखी गई है, न ही 'निषेध' की नीति पर चर्चा के लिए; और न ही यह चेन्चू समुदाय के जीवन का कोई चित्रण है। यह कहानी एक आदमखोर बाघ के बारे में है जिसने लगभग चार वर्षों तक इस क्षेत्र में आतंक मचा रखा था। इस जानवर ने हैदराबाद राज्य के जंगलों में अपनी गतिविधियां शुरू कीं, जहां उसने छह महीने तक चेन्चू समुदाय के लोगों और अकेले यात्रियों को अपना शिकार बनाया, फिर वह दक्षिण की ओर भटक गया और चेलामा में अपने आगमन की घोषणा करते हुए एक ऐसे गैंगर को उठाकर खा गया जो एक सुबह रेलवे लाइन पर पश्चिम की ओर बसवपुरम की दिशा में नियमित गश्त पर निकला था।

उन दिनों, विशेष रूप से, उस क्षेत्र में बाघों की अच्छी-खासी संख्या रहती थी, लेकिन

प्राकृतिक शिकार की प्रचुर उपलब्धता के कारण, वे स्थानीय लोगों को शायद ही कभी परेशान करते थे, सिवाय कभी-कभार मवेशियों को चुरा ले जाने के। इसलिए, उस समय गैंगर के गायब होने का कारण आदमखोर बाघ को नहीं माना गया, क्योंकि उसके अवशेष कभी नहीं मिले, और यह सोचा गया कि वह अपने निजी कारणों से उस क्षेत्र से चला गया था। इसके बाद के महीनों में, जब चेन्चू लोग इधर-उधर गायब होने लगे, तब संदेह पैदा हुआ कि कुछ गड़बड़ हो रही है, और लोगों को लगने लगा कि इन गायब होने की घटनाओं का कारण बाघ हो सकता है। तब भी इस आदमखोर बाघ की उपस्थिति का कोई पुख्ता सबूत नहीं था, क्योंकि जंगल के रास्तों पर बाघों के पदचिह्न आम थे और लापता गैंगर और अन्य चेन्चू लोगों को हैदराबाद राज्य के भीतर जंगल के सुदूर उत्तरी भागों में पहले के शिकारों से जोड़ने वाली कोई बात नहीं थी।

गैंगर की घटना के लगभग तीन-चार महीने बाद इस बाघ ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। एक शाम दो कोयला बनाने वाले जंगल के किनारे पर स्थित वडापल्ली नामक एक छोटे से गाँव की ओर लौट रहे थे। वे एक के पीछे एक चल रहे थे, तभी अपने गंतव्य तक पहुँचने से लगभग आधा मील पहले, आगे चल रहे व्यक्ति ने एक ऊँचे पेड़ पर बने घोंसले से एक चित्तीदार कोयल को उड़ते हुए देखा। अब आप सोच रहे होंगे कि मैं इस बात पर ज़ोर क्यों दे रहा हूँ कि यह चित्तीदार पंखों वाली कोयल थी। इसका कारण यह है कि नर कोयल बिल्कुल काला होता है और इसलिए मादा कोयल से उसकी पहचान करना मुश्किल होता है, जो गहरे भूरे रंग की होती है और उस पर सफेद धब्बे होते हैं। कोयल शायद कोयल परिवार का सबसे बड़ा सदस्य है, भारतीय 'दिमाग-बुखार पक्षी' दूसरा सबसे बड़ा सदस्य है। सभी कोयलों की तरह, कोयल अपना घोंसला खुद नहीं बनातीं, बल्कि दूसरे पक्षियों के घोंसलों में अंडे देती हैं और अंडों को सेने का काम उन पर छोड़ देती हैं।

अब, चेनचू जनजाति के मुखिया ने चितकबरी मुर्गी को घोंसले से उड़ते हुए देखा था, जो इस बात का अकाट्य प्रमाण था कि उसने अभी-अभी वहाँ अंडा दिया था। चेनचू जनजाति के लोगों को कोयल के अंडे न केवल मुश्किल से मिलते हैं, क्योंकि वे किसी भी पक्षी के घोंसले में दिए जा सकते हैं, बल्कि वे उन्हें एक बड़ा व्यंजन भी मानते हैं। उसने अपने साथी का ध्यान इस सौभाग्यपूर्ण घटना की ओर आकर्षित किया। दूसरा व्यक्ति, जो उससे छोटा था, अंडों को चुराने के इरादे से पेड़ पर चढ़ने लगा। वह लगभग अपने लक्ष्य तक पहुँच ही गया था कि उसे नीचे से एक चीख सुनाई दी। नीचे देखने पर वह यह देखकर दंग रह गया कि एक बाघ उसके साथी को अपने मुँह से लटकाए हुए और मदद के लिए चिल्लाते हुए जंगल की ओर भाग रहा है।

पेड़ पर बैठा आदमी किसी तरह उसकी सबसे ऊपरी शाखाओं पर चढ़ गया, जबकि बाघ अपने अभी भी कराहते हुए शिकार को लेकर नजरों से ओझल हो गया।

रात हो गई, लेकिन पेड़ पर बैठा चेनचु नीचे आने का जोखिम नहीं उठा सका। उसने अगले बारह घंटे वहीं बिताए, डर और ठंड से कांपता हुआ, और हर पल बाघ के लौटने की आशंका करता रहा। अगली सुबह, जब सूरज पूरी तरह निकल आया, तो वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, इस उम्मीद में कि वाडापल्ली के बाहरी इलाके में कोई उसे सुन ले। संयोग से हवा उसी दिशा में बह रही थी और अंततः उसकी चीखें सुनाई दीं, जब ग्रामीणों का एक समूह यह पता लगाने के लिए निकला कि आखिर क्या हो रहा है।

इस प्रकार उस आदमखोर ने आधिकारिक तौर पर चेलामा क्षेत्र में अपनी उपस्थिति की घोषणा की।

वडापल्ली के चेनचु समुदाय ने चेलामा स्टेशन मास्टर को यह खबर दी, जिन्होंने इसे तार द्वारा नंदीयाल तक पहुंचाया। नंदीयाल से यह खबर पुलिस, वन विभाग, रेलवे अधिकारियों और जिले

के कलेक्टर तक पहुंची। अफवाहें फैलने लगीं और चार महीने पहले अन्य चेनचु समुदाय के सदस्यों और उस गिरोह के सरगना के रहस्यमय ढंग से गायब होने की घटनाओं को आपस में जोड़कर उस आदमखोर सांड पर दोष मढ़ दिया गया।

सामान्यतः, जब जंगल के किसी विशेष क्षेत्र में आदमखोर जानवर की उपस्थिति की पुष्टि हो जाती है, तो वन विभाग शिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए आसपास के जंगलों को बिना लाइसेंस के 'खुले शिकार' के लिए खोल देता है, ताकि शिकारी उस खूंखार जानवर को मार सकें। यह कदम स्वतः ही उठाया गया, लेकिन वन विभाग की घोषणा को कोई खास प्रतिक्रिया नहीं मिली, क्योंकि बहुत कम शिकारी ऐसे जिले में आदमखोर जानवर का शिकार करने की हिम्मत कर रहे थे, जहाँ सड़कें लगभग न के बराबर हैं और उन्हें बिना किसी वाहन के पैदल ही एक-एक इंच चलना पड़ता।

एक-दो रेलवे अधिकारियों ने गज़ुलापल्ली और चेलामा के बीच रेल पटरी पर भरी हुई राइफलें लेकर आधे-अधूरे मन से चक्कर लगाए। उन्हें उम्मीद थी कि शायद उन्हें पटरी के किनारे बैठा कोई बाघ मिल जाए, जो गोली लगने का इंतज़ार कर रहा हो। लेकिन उनकी उम्मीदें और आशाएं पूरी नहीं हुईं, न ही आदमखोर बाघ ने उनकी कृपा का फल दिया। इतना ही नहीं, उन्हें बाघ दिखाई भी नहीं दिया, बल्कि हर हफ्ते और भी चेंचू लोग उस अदृश्य शैतान का शिकार होते चले गए, यहाँ तक कि मरने वालों की संख्या, बाघ सहित, ग्यारह तक पहुँच गई। इनमें से केवल दो पीड़ितों की तलाश में लाठियों, कुल्हाड़ियों और तीर-कमानों से लैस ग्रामीणों के समूह पहुँचे और उनके बिखरे हुए अवशेष बरामद किए गए। बाकी के अवशेषों का कोई सुराग नहीं मिला, क्योंकि इलाका दुर्गम था और लोग अपनी जान जोखिम में डालकर उन शवों को बचाने की कोशिश नहीं करना चाहते थे जो पहले से ही आधे खाए जा चुके थे।

ऐसे व्यवहार को उदासीनता और संवेदनहीनता माना जा सकता है। लेकिन मैं पाठक को याद दिलाना चाहूंगा कि ये बेचारे लोग निहत्थे थे और आदमखोर से निपटने के लिए संगठित भी नहीं थे। जंगल का विशाल क्षेत्र घना था, जिसमें घनी झाड़ियों, पत्थरों के ढेर और चारों ओर फैली जंगली घाटियों से होकर गुजरने वाले कुछ ही पगडंडियां थीं। हर कोई जानता था कि अगर आदमखोर किसी समूह पर हमला करने की हिम्मत करे, तो उनमें से कम से कम एक व्यक्ति उसका शिकार होगा। कोई भी वह शिकार नहीं बनना चाहता था। तो भला उन्हें बाहर न निकलने के लिए कौन दोषी ठहरा सकता है? सच्ची पूर्वी विचारधारा में तो पहले से ही मृत व्यक्ति के शव को खोजने के लिए दूसरे जीवन का बलिदान करने का कोई अर्थ नहीं था।

इन ग्यारह हत्याओं के बाद, आदमखोर कुछ समय के लिए उस इलाके से गायब हो गया था, क्योंकि तीन-चार महीनों तक वहाँ ऐसी कोई घटना दर्ज नहीं हुई, हालाँकि कृष्णा नदी के पास वे फिर से दिखने लगे। तब जाकर यह बात स्पष्ट हुई कि हैदराबाद का पूर्व आदमखोर और चेलामा का आदमखोर एक ही जानवर थे।

हैदराबाद राज्य में बाघ को मारने के लिए शिकारियों से की गई अपील को व्यापक समर्थन मिला और एक-दो मुस्लिम नवाबों (या जमींदारों) ने बाघ के खिलाफ सक्रिय अभियान शुरू कर दिए। अंततः बाघ ने अपनी हद पार कर दी और मदिकोंडा नामक एक छोटे से गाँव के पास ही एक यात्री को मार डाला। इस घटना में बाघ को अपने शिकार का एक टुकड़ा भी खाने का मौका मिलने से पहले ही भगा दिया गया और घटना की खबर कुछ मील दूर स्थित शिविर में मौजूद इलाके के नवाब तक पहुँच गई।

नवाब ने पुकार सुनी और तुरंत मौके पर पहुंचे। सौभाग्य से, वे पीड़ित के शव को दाह संस्कार के लिए ले जाने से पहले ही वहां पहुंच गए थे। उन्होंने पास के एक पेड़ पर मचान

बनाकर बाघ के अपने शिकार के पास लौटने का इंतजार किया। घुमंतू होने के कारण, पीड़ित का कोई रिश्तेदार आसपास नहीं था जो उसके शव को लेने आ सके, और इसी कारण बाघ को अब तक गोली लगने का एकमात्र मौका मिला था।

लेकिन इस समय नवाब का सौभाग्य अचानक आए तूफान से भंग हो गया, जो लगभग बाघ के लौटने के साथ ही आया था। या कम से कम नवाब का यही दावा था। कारण चाहे जो भी हो, दुर्भाग्यवश गोली चलाने पर वह बाघ को मार नहीं पाए, और सुबह की रोशनी में खून के कुछ निशान दिखाई दिए जो बारिश से मिट नहीं पाए थे। कम से कम उन्हें इस बात की तसल्ली तो थी कि उन्होंने बाघ को निशाना बनाया था, हालांकि अगले दिन कोई भी उसकी लाश को ढूंढने में कामयाब नहीं हुआ। नवाब को उम्मीद थी कि बाघ मर चुका होगा, और बाकी सभी को भी यही उम्मीद थी।

फिर कुछ सप्ताह बीत गए। गज़ुलापल्ली के पास तीतर और जंगली मुर्गे पकड़ने का काम करने वाला एक चेंचु दोपहर के भोजन के लिए घर नहीं लौटा। वह उस सुबह जंगल के विभिन्न हिस्सों में लगाए गए अपने जालों को देखने के लिए निकला था और उसने कहा था कि वह दोपहर तक लौट आएगा, जैसा कि उसकी आदत थी। लेकिन दोपहर बीत गई और शाम हो गई, फिर भी वह नहीं लौटा, और उसकी पत्नी और इकलौते बीस वर्षीय बेटे की चिंता बढ़ गई। उन्होंने चेलामा के आसपास हुई हत्याओं के बारे में तो सुना था, लेकिन वे कुछ महीने पहले हुई थीं और तब से सभी लोग उन घटनाओं को भूल चुके थे। अब, परिवार के भरण-पोषणकर्ता, उस शिकारी के न होने से, उनकी आशंकाएँ और भय फिर से प्रबल हो गए।

आदमखोरों के कारनामों का वर्णन करते समय यह बात ध्यान देने योग्य है कि उनकी घटनाएँ लगभग एक नियमित क्रम में घटित होती हैं। कहानी का मुख्य खलनायक, यानी आदमखोर, अचानक प्रकट होता है, आमतौर पर किसी शिकारी द्वारा घायल किए जाने के बाद अपने प्राकृतिक शिकार का पीछा करने में असमर्थ हो जाता है। बहुत कम मामलों में, वह (या अक्सर वह मादा) यह आदत अपने ऐसे माता-पिता से सीखता है जिन्हें मानव मांस खाने की लत थी। शुरुआत में मनुष्यों की हत्याएँ कम होती हैं, लेकिन जैसे-जैसे जानवर अपनी शक्ति और मानव जाति की असहायता पर अपनी ताकत का विश्वास बढ़ाता है, वैसे-वैसे इनकी संख्या बढ़ती जाती है। सभी आदमखोरों, चाहे वे बाघ हों या तेंदुआ, में एक विचित्र विशेषता यह है कि मानवता के प्रति उनकी बढ़ती घृणा के बावजूद, एक सूक्ष्म छठी इंद्री जैसी सतर्कता, जिसे कुछ शिकारी कायरता समझते हैं, उनके पूरे स्वभाव में व्याप्त होती है। वे हमेशा शिकार पर अचानक हमला करते हैं, आमतौर पर तब जब वह अकेला हो या कम से कम लोगों के समूह के अंत या अग्रभाग में हो। ऐसे मौके बहुत ही कम देखने को मिलते हैं जब कोई आदमखोर जानवर लोगों के समूह पर हमला करता है। दूसरी ओर, ऐसे कई उदाहरण हैं जिनमें शिकार बनने की कोशिश करने वाले जानवर ने प्रतिरोध किया और किसी तरह अपनी जान बचाई, लेकिन आदमखोर जानवर ने हमला बीच में ही छोड़ दिया और भाग गया। यह स्थिति बाघों की तुलना में पैंथरों में अधिक देखने को मिलती है, क्योंकि बाघ इतने शक्तिशाली जानवर होते हैं कि एक बार हमला हो जाने के बाद उनमें से कुछ ही बच पाते हैं। यही स्वाभाविक सावधानी या कायरता, आप इसे जो भी नाम दें, सभी आदमखोर जानवरों की एक सामान्य विशेषता है और यही कारण है कि उन्हें जल्दी मारना एक बहुत ही मुश्किल काम है। जब उन्हें चकमा देने के कई प्रयास किए जाते हैं और असफल हो जाते हैं, तो शिकार किया जाने वाला जानवर स्वाभाविक रूप से अधिक से अधिक सतर्क और चालाक हो जाता है, क्योंकि उसे यह एहसास होने लगता है कि उसके सिर पर एक विशेष इनाम रखा गया है।

आदमखोर बाघ की एक खास राह या मार्ग का अनुसरण करने की आदत होती है, जो सैकड़ों मील तक फैला हो सकता है। वह गांवों या बस्तियों के आसपास एक-दो सप्ताह रुकता है और फिर आगे बढ़ जाता है। इस तरह, वह न केवल तब बच निकलता है जब हालात उसके लिए प्रतिकूल हो जाते हैं, बल्कि वह नए चरागाहों और अवसरों की तलाश में भी पहुंच जाता है, जहां के निवासी उसके आने से अनभिज्ञ होते हैं। इसी तरह, जब वह किसी इलाके को छोड़ देता है और शिकार बंद हो जाते हैं, तो ग्रामीणों की स्वाभाविक उदासीनता और भूलने की आदत उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि खतरा टल गया है और वे अपनी गतिविधियों में लापरवाह हो जाते हैं, जिससे बाघ के लिए एक और आसान शिकार तैयार हो जाता है जब वह अंततः उस रास्ते से दोबारा आता है। क्योंकि वह इलाके में एक विशाल और अनियमित घेरे में घूमता है, और अपने क्षेत्र की सीमा के अनुसार वह निश्चित रूप से उस रास्ते से फिर से गुजरेगा—शायद एक-दो महीने बाद, या शायद उससे भी अधिक समय बाद।

जैसा कि मैंने इस पुस्तक में पहले भी उल्लेख किया है, यदि किसी के पास धैर्य हो और पर्याप्त जानकारी उपलब्ध हो (जो अक्सर प्राप्त करना अत्यंत कठिन होता है), तो क्षेत्र के मानचित्र की सहायता से और प्रत्येक मानव वध स्थल को घटना की तिथि के साथ चिह्नित करके, न केवल बाघ के कार्यक्षेत्र की संपूर्ण सीमा और क्षेत्रफल का आकलन किया जा सकता है, बल्कि प्रत्येक स्थल पर उसके पखवाड़े भर के भीतर लौटने का अनुमान भी लगाया जा सकता है। यह उन प्रमुख कारकों में से एक है जो आदमखोर बाघ को मारने की वैज्ञानिक योजना बनाने वाले शिकारी को अपने लक्ष्य को पूरा करने में मदद करता है।

पैंथर के मामले में, नियमित क्षेत्र में रहने का कोई प्रमाण नहीं है। वह यहाँ, वहाँ और हर जगह मौजूद रहता है। वह मुख्य रूप से रात में शिकार करता है और दिन के उजाले में बहुत कम ही शिकार करता है। छोटा होने के कारण, आदमखोर पैंथर कहीं भी छिप सकता है। जैसे-जैसे वह अधिक साहसी होता जाता है, वह अक्सर उस अवस्था तक पहुँच जाता है जहाँ वह हमला करता है और झोपड़ियों में रहने वालों को घसीट कर बाहर निकाल लाता है। मेरा मानना है कि बाघों द्वारा ऐसा करने के कुछ ही प्रामाणिक मामले हैं। दूसरी ओर, बाघ दिन के किसी भी समय अपने मानव शिकार पर हमला कर सकता है, चाहे वह जंगल के रास्तों के किनारे हो या गाँव के बाहरी इलाके के पास घात लगाकर बैठा हो।

मैंने 'चेलामा आदमखोर' या, जैसा कि वह बाद में 'हैदराबाद का हत्यारा' के नाम से मशहूर हुआ, उसके आगमन की कहानी बताई है, जिसे मैंने बहुत बाद में तथ्यों को जोड़कर लिखा है। गज़ुलापल्ली में रहने वाले चेंचु पक्षी-शिकारी को मारने और उसका कुछ हिस्सा खाने के बाद उसके कारनामों का विस्तृत वर्णन आपको शायद उबाऊ लगे। संयोग से उसके अवशेष उसके बेटे को मिले थे। हर घटना लगभग एक जैसी थी, बाघ बार-बार दक्षिण में गज़ुलापल्ली-चेलामा क्षेत्र और उत्तर में हैदराबाद में कृष्णा नदी के बीच अपना ठिकाना बदलता रहता था। जैसा कि आप मानचित्र पर नज़र डालने से समझ जाएंगे, उसका यह कार्यक्षेत्र बहुत विशाल था। इसके अलावा, मदिकोंडा में नवाब द्वारा घायल किए जाने के बाद, उसने अपनी सामान्य आदमखोर जैसी सतर्कता को और भी बढ़ा दिया, यहाँ तक कि उसे साक्षात शैतान—एक प्रकार का अलौकिक राक्षस—के रूप में ख्याति प्राप्त हो गई। उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कारण उसने अपने शिकार को मारने के तुरंत बाद उसके शरीर का जितना हो सके उतना हिस्सा खाने की आदत अपना ली, फिर वह शव को वहीं छोड़ देता और बहुत कम ही दोबारा खाने के लिए लौटता। इस आदत ने न केवल उसका पीछा करने वाले कुछ शिकारियों की मुश्किलें बहुत बढ़ा दीं, बल्कि हत्याओं की संख्या भी तेजी से बढ़ने लगी क्योंकि बाघ को अपनी भूख मिटाने के लिए सामान्य से अधिक

बार नए शिकार पर हमला करना पड़ता था, और हर बार वह पिछले शिकार के अवशेषों को वहीं छोड़ देता था। इलाका बड़ा और दूरदराज होने के कारण, जानवर के अत्याचारों को ज्यादा प्रचार नहीं मिला; और जब कभी प्रचार मिलता भी था, तो वह स्थानीय समाचार पत्रों में एक संक्षिप्त पैराग्राफ के रूप में ही प्रकाशित होता था, जो कभी-कभार ही प्रकाशित होता था और उदासीन जनता को सूचित करता था कि आदमखोर बाघ ने एक और शिकार को मार डाला है। इस तरह, लगभग साढ़े तीन वर्षों में, बाघ ने लगभग अस्सी लोगों की जान ले ली, इससे पहले कि उसके द्वारा उत्पन्न वास्तविक खतरे को गंभीरता से लिया जाने लगा।

एक ही बाघ के जबड़ों में अस्सी लोगों की मौत किसी शहर में रहने वाले व्यक्ति के लिए भयावह लग सकती है। पश्चिमी मानकों के हिसाब से तो यह वाकई भयावह है। लेकिन भारत जैसे विशाल देश में, जहाँ औसत जीवन प्रत्याशा वर्तमान में तीस वर्ष से काफी कम है, और पहले तो इससे भी कहीं अधिक थी—जहाँ अकाल, बाढ़ और बीमारियों से हर साल हजारों लोगों की जान जाती है; जहाँ साँप के काटने से हजारों और लोगों की मौत हो जाती है; और जहाँ शुरुआती मृत्यु दर और मृत्यु के अन्य सभी कारणों के बावजूद जन्म दर हर साल चिंताजनक स्तर तक बढ़ रही है—वहाँ अस्सी लोगों का बाघ द्वारा खाया जाना समुद्र में एक बूंद के समान है, और चिंता की कोई बात नहीं है। वास्तव में, तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो, यह बाघ की मानव मांस खाने की कुशलता को दर्शाता है, क्योंकि उसने यह संख्या लगभग 1300 दिनों में ही हासिल की थी। इससे न केवल उसे मनुष्यों का बहुत संयमित भक्षक बताया गया, बल्कि शिकारी के लिए जो बात बहुत महत्वपूर्ण थी, वह यह संकेत देती थी कि वह स्पष्ट रूप से पालतू और जंगली दोनों प्रकार के जानवरों का शिकार करके अपने मानव आहार में विविधता ला रहा था। इसलिए, यदि शिकारी उसे मौका देता, तो वह चारा लेने से भी परहेज नहीं करता।

आदमखोर बाघ के अलावा, हैदराबाद के जंगलों और दक्षिण में भी कई अन्य बाघ और तेंदु सक्रिय थे, जिसके कारण हर साल मारे जाने वाले मवेशियों और अन्य पालतू जानवरों की संख्या हमेशा बहुत अधिक होती थी। इन परिस्थितियों में यह अनुमान लगाना भी असंभव था कि इनमें से कितनी 'प्राकृतिक' हत्याएं आदमखोर बाघ द्वारा की गई थीं और कितनी अन्य मांसाहारी जानवरों द्वारा; लेकिन यह निश्चित था कि इनमें से कई हत्याओं के लिए आदमखोर बाघ ही जिम्मेदार था, क्योंकि जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, वह इतने लंबे समय तक केवल मानव हत्याओं पर ही जीवित नहीं रह सकता था। यहाँ एक और अनुकूल बात थी। आदमखोर बाघ को बंधे हुए मवेशियों से लुभाया जा सकता था, बशर्ते शिकारी उसके 'पीट' क्षेत्र का अनुमान लगा सके और उसके आगमन की निर्धारित तिथि से पहले और बाद में लगभग दो सप्ताह का अंतर रखकर उसके आने का पूर्वानुमान लगा सके। यह अंतर उसके द्वारा पहले की गई हत्याओं के रिकॉर्ड से मानचित्र पर निकाला जा सकता था।

मैंने समय-समय पर प्रेस में इस जानवर के उत्पातों के बारे में पढ़ा था, और वन विभाग के अधिकारियों से मुझे इसे पकड़ने का प्रयास करने के लिए कई पत्र भी मिले थे। मैंने इन पर ध्यान नहीं दिया, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि मेरे लिए अपने काम से समय निकालकर लंबी यात्रा करना मुश्किल था, और इसलिए भी क्योंकि जिस क्षेत्र में यह सक्रिय था वह बैंगलोर से बहुत दूर था, जिससे किसी विशेष इलाके में इसके आने या किसी मानव हत्या की खबर मिलने के बाद समय पर वहाँ पहुँच पाना मेरे लिए संभव नहीं था। साथ ही, मुझे हमेशा से आदमखोर जानवरों, चाहे वह तेंदुआ हो या बाघ, और हिंसक हाथियों की गतिविधियों में दिलचस्पी रही है। इस मामले में, मैंने पहले ही मद्रास प्रेसीडेंसी और हैदराबाद राज्य दोनों के वन विभाग और पुलिस अधिकारियों को पत्र लिखकर जानवर के बारे में सभी संभावित जानकारी प्राप्त करने का अनुरोध

किया था, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण डेटा भी शामिल था: वे इलाके जहाँ मानव हत्याएँ हुई थीं और घटनाएँ किस तारीख को हुईं थीं। यह डेटा मैंने प्रत्येक घटना के स्थान और तारीख को मानचित्र पर अंकित कर लिया था। इसके बाद, नक्शे के अध्ययन से पता चला कि यह जानवर गज़ुलापल्ली और चेलामा के बीच दो से तीन महीने बिताता था, फिर अगले चार महीनों के लिए उत्तर की ओर हैदराबाद चला जाता था। फिर यह वापस लौट आता था। गज़ुलापल्ली से बसवपुरम की दूरी छह मील है, और बसवपुरम से चेलामा की दूरी पाँच मील है, और जंगल के कुछ हिस्सों के ओवरलैप होने को ध्यान में रखते हुए, इन क्षेत्रों के बीच का पूरा जंगल लगभग पंद्रह मील लंबा था। ये स्टेशन न केवल हैदराबाद के दूर के क्षेत्रों की तुलना में बैंगलोर के बहुत करीब थे, बल्कि क्षेत्रफल में भी छोटे थे, और मीटर-गेज रेलवे लाइन के एक हिस्से से बैंगलोर से जुड़े हुए थे। हैदराबाद के हिस्से इससे जुड़े हुए नहीं थे, और उन्हें जोड़ने वाली कोई मोटर योग्य सड़क भी नहीं थी। अंत में, दक्षिणी क्षेत्र अधिक आबादी वाला था, और इसलिए मुझे हैदराबाद के जंगल में ऑपरेशन शुरू करने की तुलना में वहाँ अधिक सहयोग और शिकार की सूचना जल्दी मिलने की उम्मीद थी।

तो अब आप समझ ही गए होंगे कि मैं काफी समय से इस बारे में सोच रहा था, लेकिन अंत में बाघ ने ही मेरे इस असमंजस को खत्म कर दिया। यह तब हुआ जब रेलवे का एक स्थायी मार्ग निरीक्षक (पीडब्ल्यूआई) एक सुबह चेलामा से बसवपुरम की ओर जाने वाली पटरी का नियमित निरीक्षण ट्रॉली से कर रहा था। भारतीय रेलवे में ये ट्रॉलियां दो पहियों वाले साधारण लकड़ी के प्लेटफॉर्म होते हैं। प्लेटफॉर्म की लंबाई मुश्किल से छह फीट होती है, जिसके ऊपर एक खुरदरी बेंच होती है जिस पर रेलवे अधिकारी बैठता है। इसे दो कुली धकेलते हैं जिन्हें 'ट्रॉली-मैन' कहा जाता है, जो नंगे पैर पटरियों पर दौड़ते हैं। अभ्यास से वे पटरियों पर पैर रखने में माहिर हो जाते हैं, और यह इसलिए भी जरूरी हो जाता है क्योंकि अगर वे पटरी से फिसलकर गिट्टी पर पैर रख दें तो उन्हें बहुत दर्द होगा। वे ट्रॉली को चढ़ाई पर पैदल चलने की गति से धकेलते हैं, समतल जमीन पर लगभग आठ मील प्रति घंटे की रफ्तार से पटरियों पर दौड़ते हैं, और ढलान आने पर ट्रॉली के पीछे कूद जाते हैं। अधिकारी हैंडब्रेक की मदद से ट्रॉली की गति को नियंत्रित करता है, और ट्रेनों के गुजरने के लिए रास्ता बनाने के लिए स्टेशनों पर पूरी असेंबली को लाइन से ऊपर उठा लिया जाता है।

उस दिन ट्रॉली एक ऊँची ज़मीन से होकर गुज़र रही थी, तभी एक प्रत्यक्षदर्शी ने ब्रेक लगाकर उसे रोक दिया ताकि वह नीचे उतरकर पटरी के दोनों ओर बारिश का पानी निकालने वाली नालियों का मुआयना कर सके। दल के पास काफ़ी समय था, क्योंकि अगली ट्रेन दो घंटे बाद आने वाली थी। ट्रॉली चलाने वालों में से एक ट्रॉली पर ही बैठा रहा, जबकि प्रत्यक्षदर्शी नाली के किनारे-किनारे चलने लगा। दूसरा आदमी लगभग सात फ़ीट ऊँची नाली के किनारे पर चढ़ गया, ऊपर बैठ गया और एक बीड़ी निकाली। यह बिना पकाए तंबाकू से बनी सस्ती भारतीय सिगरेट होती है, जिसे उसी के पत्ते में लपेटा जाता है। उसने संतुष्टि से उसे जलाया और धूम्रपान करने लगा।

पी.डब्ल्यू.आई. ट्रॉली से और दूर चला गया, उस पर बैठा आदमी लेट गया और ऊंघने लगा, जबकि किनारे पर बैठा धूम्रपान करने वाला अपनी पहली बीड़ी का बचा हुआ हिस्सा फेंककर दूसरी बीड़ी लेकर जलाई, धुएं को अपने फेफड़ों में गहराई तक खींचा और अपने वरिष्ठ अधिकारी को उदासीन निगाहों से देखते हुए अपनी नाक से धुआं बाहर निकाला।

खाई का कटाव बहुत अधिक नहीं हुआ था और लगभग सौ गज चलने के बाद, प्रत्यक्षदर्शी (P.W.I.) रेखा पार करने और दूसरी ओर वापस लौटने के लिए मुड़ा ताकि वहाँ खाई का

निरीक्षण कर सके। ऐसा करते समय, उसने पीछे मुड़कर देखा और उसे ट्रॉली दिखाई दी जिस पर कुली सो रहा था, और फिर उसने ऊपर देखा तो दूसरा कुली कटान के ऊपर बैठा अपनी दूसरी बीड़ी पी रहा था। दोनों ओर जंगल रेखा से पचास गज की दूरी तक फैला हुआ था, लेकिन कुछ झाड़ियाँ इधर-उधर उग आई थीं और काफी पास तक बढ़ गई थीं। प्रत्यक्षदर्शी (P.W.I.) ने ऐसी ही एक झाड़ी देखी—जो थोड़ी बड़ी थी—जो बीड़ी पीने वाले से थोड़ी दूर उग रही थी और उसके एक तरफ से एक गोल सी 'चीज़' निकली हुई दिखाई दी। यह 'चीज़' हिली। सूरज की चमक झाड़ी की पत्तियों से अनगिनत टिमटिमाते बिंदुओं के रूप में परावर्तित हो रही थी। इसके विपरीत, झाड़ी का निचला हिस्सा और गोल 'चीज़' छाया में थी। रहस्यमयी वस्तु फिर से हिली, और प्रत्यक्षदर्शी (P.W.I.) मैं उसे घूरता रहा, सोचता रहा कि आखिर यह क्या हो सकता है। फिर ऐसा लगा जैसे वह चपटा होकर जमीन में समा गया हो और आंखों से ओझल हो गया।

वह पटरी पार करके ट्रॉली की ओर वापस चलने लगा। अब उसकी नज़रें सामने वाली खाई पर टिकी थीं। उसने उस चीज़ को अपने दिमाग से निकाल दिया था। लेकिन यह केवल कुछ सेकंड के लिए ही था। तभी उसे एक तेज़ चीख सुनाई दी। उसने ऊपर देखा तो तटबंध पर खड़ा कुली पीछे की ओर खिंचता हुआ और फिर चीखता हुआ आँखों से ओझल होता हुआ दिखाई दिया। उस आदमी के साथ क्या हुआ होगा, यह सोचकर, प्रत्यक्षदर्शी (PWI) बेहतर दृश्य पाने के लिए खाई के किनारे पर दौड़ पड़ा, तभी उसने एक बड़े बाघ को कुली को मुँह से लटकाए, उसके हाथों और पैरों को बेजान तरीके से हिलाते हुए, जंगल की ओर शांति से जाते हुए देखा। फिर बाघ और वह आदमी दोनों ही कहीं नज़र नहीं आए।

प्रत्यक्षदर्शी इतना सदमे में था कि हिल भी नहीं पा रहा था, लगभग एक मिनट तक वहीं स्थिर खड़ा रहा। फिर अचानक उसमें हरकत जागी। वह तेजी से ढलान से नीचे रेलवे ट्रैक की ओर भागा और जितनी जल्दी हो सके ट्रॉली की ओर वापस दौड़ने लगा। इसी बीच, सो रहा कुली अपने साथी की चीखों से जाग गया था। स्तब्ध मन से वह यह नहीं समझ पा रहा था कि किस आवाज ने उसे जगाया है या क्या हो रहा है। उसने ऊपर देखा तो उसका अधिकारी उसकी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था।

जब प्रत्यक्षदर्शी (पीडब्ल्यूआई) ट्रॉली के पास पहुँचा, तो उसने अचंभित कुली पर चिल्लाते हुए कहा, 'बाघ रेड्डी कु लैक्का गैया' (एक बाघ रेड्डी को ले गया है) और फिर बोला, 'ट्रॉली कु धक्कलाओ, जुल्धी' (ट्रॉली को जल्दी धकेलो)। इसके बाद कुली को और किसी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं पड़ी। दोनों ने मिलकर ट्रॉली को पटरी पर पूरी ताकत से धकेलना शुरू कर दिया, जब तक कि वह ढलान पर नहीं पहुँच गई और अपने आप लुढ़कने लगी। फिर वे उस पर कूद पड़े और उसे उस भयानक जगह से दूर, बेतहाशा नीचे की ओर जाने दिया।

इस ताजा हत्या को प्रेस में खूब प्रचारित किया गया, और P.W.I. की हर तरफ से कड़ी आलोचना हुई। उसे जरूरत के समय एक साथी इंसान को छोड़ने के लिए कायर, नैतिक हत्यारा और ऐसा व्यक्ति कहा गया जिसे इंसान के बजाय कीड़ा होना चाहिए था। मुझे आश्चर्य होता है कि अगर उसके आलोचक उसकी जगह होते तो उनमें से कितने अलग तरह से व्यवहार करते। आपको याद रखना चाहिए कि यह सब इतनी अचानक हुआ था। इसके अलावा, वह पूरी तरह निहत्था था।

मुझे लगा कि अब इस आदमखोर से मिलने का समय आ गया है। इसलिए उस रात मैं बैंगलोर से रवाना होने वाली ट्रेन में बैठ गया और अगले दिन दोपहर को गाज़ुलापल्ली में उतर गया।

मुझे लगा कि क्षेत्र के एक छोर से काम शुरू करना और बसवपुरम और चेलामा की ओर

बढ़ना सबसे समझदारी भरा कदम होगा, बजाय इसके कि दूसरे छोर से शुरू किया जाए। बीच में कहीं से भी बेतरतीब ढंग से शुरू करना अव्यवस्थित था और भाग्य पर बहुत अधिक निर्भर था। इसके अलावा, और सबसे महत्वपूर्ण बात, मुझे स्थानीय मदद और एक मार्गदर्शक की आवश्यकता थी, क्योंकि जिले के बारे में मुझे बहुत कम जानकारी थी, मैं पहले केवल एक बार ही यहाँ आया था। मैं अपने साथ वह नक्शा लाया था जिस पर मैंने बाघ के क्षेत्र को चिह्नित किया था, और मुझे उम्मीद थी कि मैं उस पक्षी-शिकारी के बेटे का पता लगा पाऊँगा जो आदमखोर बाघ के पहले शिकारों में से एक था। मुझे लगा कि वह युवक एक आशाजनक और उपयोगी सहयोगी साबित होगा।

जैसे ही ट्रेन स्टेशन से निकली, मेरी स्टेशन मास्टर और उस छोटे से स्टेशन पर तैनात रेलवे कर्मचारियों से दोस्ती हो गई। जब उन्हें मेरे आने का पता चला, तो वे सब मेरे चारों ओर जमा हो गए और बोले कि उन्हें बहुत खुशी है कि मैं आया हूँ, और वे मेरी हर संभव मदद करेंगे। मुझे थोड़ी परेशानी इसलिए हुई क्योंकि वहाँ की स्थानीय बोली तेलुगु थी, जिसके मैं कुछ ही शब्द बोल पाता था। लेकिन इसकी कुछ हद तक भरपाई इस बात से हो गई कि वहाँ के ज्यादातर लोग थोड़ी-बहुत तमिल और हिंदुस्तानी समझते थे, और ये दोनों भाषाएँ मैं अच्छी तरह से बोल लेता हूँ। किसी तरह हम एक-दूसरे को समझ पाए और हमारी बातचीत चलती रही। स्टेशन मास्टर को अंग्रेजी तो आती ही थी, और वे मेरे मुख्य दुभाषिए बन गए।

सबसे पहले, मैंने समझाया कि मुझे इस बाघ के बारे में और अधिक जानना आवश्यक है, विशेषकर उसकी बनावट या आदतों से संबंधित कोई विशेष बात, ताकि मैं उसे अन्य बाघों से अलग पहचान सकूँ। इस पर स्टेशन कर्मचारियों ने जवाब दिया कि वे केवल इतना जानते हैं कि वह एक बहुत बड़ा बाघ है। बेशक, उन्होंने समय-समय पर बाघों को रेलवे ट्रैक पार करते देखा था, लेकिन उन्हें ऐसी कोई विशेष विशेषता नहीं पता थी जिससे इस बाघ को अन्य बाघों से अलग पहचाना जा सके। लेकिन, उन्होंने सुझाव दिया कि गाँव में रहने वाले दो वन रक्षकों में से कोई एक बेहतर जानता हो और मेरी मदद कर सके।

इस मौके पर मैंने उनसे पूछा कि क्या वे उस शिकारी के बेटे को बुला सकते हैं जिसे बाघ खा गया था। उन्होंने जवाब दिया कि वे उसे जानते तो हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि वह जंगल में कहीं रहता है, बस इतना पता है कि वह ठीक कहाँ रहता है। उन्हें पूरा भरोसा था कि वन रक्षक इस बारे में मुझे और जानकारी दे सकेंगे।

मेरे कहने पर एक सिपाही को वन रक्षकों को बुलाने के लिए भेजा गया, और लगभग बीस मिनट में ये लोग आ गए। उनमें से एक अली बेग नाम का मुसलमान था, जिससे मैं हिंदुस्तानी में बात कर सकता था। दूसरा कृष्णप्पा नाम का चेंचु था, जो केवल तेलुगु बोलता था। मैंने उन्हें थाने के पीछे उग रहे एक बड़े आम के पेड़ की छाँव में बुलाया, उन्हें ज़मीन पर बैठाया, मैं खुद भी बैठ गया और फिर अपने काम में लग गया।

अली बेग को चेनचू वन रक्षक के लिए दुभाषिया बनाकर, मैंने आदमखोर बाघ से संपर्क करने के खेल में पहला दांव खेला। मैंने उसे बाघ तक पहुंचने की जानकारी देने वाले को भारी इनाम देने की पेशकश की। यह सुनकर दोनों सज्जन चौकन्ने हो गए। अली बेग ने कहा कि वह मुझे बाघ तक ले जाएगा, चाहे इसके लिए उसे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े। चेनचू ने अली बेग के माध्यम से कहा कि वह भी ऐसा ही करेगा, लेकिन वह अपनी जान गंवाना नहीं चाहता, और शर्त यह है कि उसे बाघ का सही-सही पता हो, ताकि वह मुझे वहां तक ले जा सके।

मुझे वह स्पष्ट जवाब अच्छा लगा। सभी आदिवासियों की तरह, मुझे भी लगा कि चेनचू व्यक्ति सच बोल रहा था और व्यावहारिक भी था।

मैंने उनसे बाघ के बारे में पूछताछ शुरू की। दोनों ने उसे देखने का दावा किया। जब से हत्याएं शुरू हुई थीं, तब से वे कभी अकेले जंगल में नहीं गए थे, बल्कि हमेशा साथ-साथ कुल्हाड़ी लेकर जाते थे। न ही वे गांव से बहुत दूर गए थे। लगभग दस दिन पहले उन्होंने एक बाघ को लगभग एक मील दूर आग की रेखा पार करते देखा था। बाघ ने भी उन्हें देख लिया था और तुरंत जंगल में कूद गया था। एक महीने पहले, सुबह लगभग नौ बजे, एक पानी के गड्ढे के पास उनका सामना एक और बाघ से हुआ था। जब वे नज़र आए तो वह भी भाग गया था। उससे पहले की घटना - लगभग चार महीने पहले की बात होगी - उनका सामना गांव से मुश्किल से एक चौथाई मील दूर एक बाघ से हुआ था; उसने उन्हें कुछ पल के लिए चिंतित कर दिया था, क्योंकि वह अन्य बाघों की तरह भागा नहीं था। बल्कि, वह घूम गया, आधा झुका हुआ था, और ज़ोर से गुर्राया था। वे अपनी जान बचाने के लिए भागने ही वाले थे। लेकिन चेंचु रक्षक कृष्णप्पा ने अली बेग से फुसफुसाकर कहा कि उन्हें एक साथ चिल्लाना चाहिए। उन्होंने ऐसा ही किया। बाघ ने जवाब में गुर्राया लेकिन हमला नहीं किया। वह झिझका और फिर दूर चला गया, बीच-बीच में पीछे मुड़कर उन्हें देखता रहा और गुर्राता रहा। जब वह नज़रों से ओझल हो गया तो वे जल्दी से गाँव की ओर लौट गए।

मेरे दिमाग में अचानक एक विचार आया: चार महीने! यह अंतराल मानचित्र पर मेरी गणनाओं से मेल खाता था, और जानवर के असामान्य व्यवहार ने इस विचार की पुष्टि कर दी। उन्होंने निस्संदेह गज़ुलापल्ली की अपनी पिछली यात्रा के दौरान आदमखोर को देखा था।

वे दोनों भी यही सोचते थे।

इससे भी ज़्यादा रोमांचक बात यह थी कि चार महीने का चक्र फिर से दोहराया गया: बाघ ने चेलामा और बसावपुरम के बीच ट्रॉली-कुली को मार डाला था, और वह आखिरी शिकार था। अगर मेरी गणना सही थी और भाग्य मेहरबान था, तो बाघ उस समय बसावपुरम और गज़ुलापल्ली के बीच कहीं होना चाहिए था। मैं और भी उत्साहित हो गया। ऐसा लग रहा था कि भाग्य मेरा साथ दे रहा है। लेकिन क्या यह सिलसिला कायम रहेगा?

मैंने उनसे उस बाघ के बारे में और गहराई से पूछताछ की जिसने उन पर गुर्राया था। क्या उन्होंने उसमें कुछ अजीब देखा था? अली बेग ने कहा कि वह एक विशाल बाघ था। कृष्णप्पा को पूरा यकीन था कि वह नर बाघ था। उन्होंने सोचा कि उसका रंग आम बाघों की तुलना में हल्का और पीला था। 'याद रखिए साहब,' उन्होंने समझाया, 'हम उस समय बहुत डरे हुए थे और हमें लगा था कि बाघ हम पर हमला कर देगा। भला ऐसी बातों पर कौन ध्यान देता?'

फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या वे उस लड़के को जानते हैं जिसकी मुझे तलाश थी, उस चेंचु शिकारी का बेटा जिसके बारे में मैंने बहुत पहले पढ़ा था कि उसे बाघ ने मार डाला था। बेशक वे उसे जानते थे। वह अपनी माँ, पत्नी और एक बच्चे के साथ जंगल में दो मील से अधिक उत्तर दिशा में एक झोपड़ी में रहता था। वह अपने पिता का पेशा, पक्षी पकड़ने का काम, आगे बढ़ा रहा था, हालाँकि इस 'शैतान' के मंडराने के बावजूद वह यह कैसे कर रहा था, यह उनकी समझ से परे था। वन विभाग के नियमों के अनुसार आरक्षित वन में पक्षियों को पकड़ना गैरकानूनी था, और अपने जीवनकाल में कई बार उनके पिता पर मुकदमा भी चला था। लेकिन हर बार मुकदमा खत्म होने के बाद भी उन्होंने अपना पेशा जारी रखा, और उनका बेटा भी अब यही कर रहा था। अतीत में, समय-समय पर उन्हें अपने पेट भरने के लिए एक मोर या दो जंगली मुर्गे मिल जाते थे, और इस वजह से वे अक्सर पिता और पुत्र दोनों के गैरकानूनी कामों को नज़रअंदाज़ कर देते थे। अब ये भेंट भी बंद हो गई थीं। लेकिन बेचारे लड़के को कौन दोष दे सकता था? इन दिनों उसे अपने परिवार के लिए पक्षियों को पकड़ना मुश्किल लग रहा होगा, यह जानते हुए कि यह शैतानी बाघ

कहीं भी, किसी भी झाड़ी के पीछे या अंदर हो सकता है।

मुझे यह सोचकर खुशी हुई कि मेरी पहली ज़रूरत पूरी हो गई है—ऐसे सहयोगी जो मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करेंगे। मैं झट से खड़ा हुआ और अपनी .405 पिस्तौल कंधे पर टांगकर दोनों वन रक्षकों से उस लड़के तक ले जाने के लिए कहा।

हमने रेल की पटरी पार की और जंगल में घुमावदार पगडंडी पर चलने लगे। हल्की झाड़ियाँ धीरे-धीरे घने जंगल में बदल गईं और जल्द ही हम एक कतार में चलने लगे। कृष्णप्पा आगे-आगे चल रहे थे, अली बेग उनके ठीक पीछे, जबकि मैं सबसे पीछे था। मैंने एहतियात के तौर पर अपनी राइफल में गोलियां भर ली थीं और उसे अपनी दाहिनी बांह में दबाकर रखा था, ताकि किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहूँ। ऐसा नहीं था कि हमें उम्मीद थी कि बाघ उस समय हमला करेगा, क्योंकि हम तीन ही लोग थे; लेकिन अगर उसने हमला करने का फैसला कर लिया, तो असली खतरा या तो आगे चल रहे कृष्णप्पा में से किसी एक में होगा, या फिर कतार के अंत में चल रहे मुझमें से किसी एक में। अली बेग दल के मध्य में होने के कारण पूरी तरह सुरक्षित थे।

मुझे लगा कि हमने दो मील के बजाय लगभग तीन मील की दूरी तय की है। फिर हमने एक पथरीली नहर पार की, जिसमें से पानी की एक छोटी सी धारा बह रही थी। हम एक छोटी पहाड़ी पर चढ़े और अपनी मंज़िल पर पहुँच गए। लगभग बीस साल का एक हंसमुख लड़का खुले दरवाज़े पर बैठा था और तेज़ चाकू से बांस तराश रहा था। पास ही में एक अधूरा बना हुआ उपकरण पड़ा था, जिसे मैंने चिड़ियों को पकड़ने का जाल समझ लिया।

हमारे पास आते ही वह उठ खड़ा हुआ और आदरपूर्वक सलाम किया। कृष्णप्पा ने तेलुगु में मेरा उससे परिचय कराया, और लड़के ने मधुर स्वर में उत्तर दिया। फिर अली बेग ने दुभाषिया की भूमिका निभाते हुए मुझे बताया कि लड़के का नाम बाला है। झोपड़ी से दो महिलाओं के सिर निकले, एक बूढ़ी औरत का, जिसे मैंने लड़के की माँ समझा, और दूसरी लगभग सोलह-सत्रह वर्ष की एक लड़की का। उसकी बांह के सहारे, लगभग एक वर्ष का एक नग्न शिशु संतुष्ट भाव से उसकी छाती से दूध पी रहा था। निःसंदेह, ये लड़के की पत्नी और पुत्र थे।

हम झोपड़ी से कुछ ही दूरी पर घास पर बैठ गए और मैंने सवाल पूछना शुरू किया। अली बेग ने हर सवाल का लड़के को तेलुगु में अनुवाद किया और उसके जवाब का भी अनुवाद किया। कृष्णप्पा बीच-बीच में टोकते रहे और किसी न किसी बात को स्पष्ट करते रहे जो किसी को समझ में नहीं आ रही थी। हाँ, वह सफेद दोराई बाघ को मारने में मदद करने के लिए ज़रूर तैयार थे, क्योंकि क्या बाघ ने उनके पिता को नहीं खाया था? नहीं, वह किसी भी रूप में पैसा या इनाम नहीं लेंगे। अगर उन्होंने ऐसा किया तो उनके पिता की आत्मा उनसे बहुत नाराज़ होगी, क्योंकि अपने इकलौते बेटे के रूप में, आत्मा उनसे उम्मीद करती थी कि वे अपने हत्यारे से सीधे तौर पर बदला लें, या कम से कम किसी तरह बाघ की मौत का कारण बनें। हाँ, उन्होंने आदमखोर बाघ को कई बार अपनी आँखों से देखा था। एक बार तो वह उसी छोटी नदी तक गए थे जिसे हमने अभी पार किया था, झोपड़ी में पानी का घड़ा लाने के लिए। दोपहर का समय था, परिवार के दोपहर का भोजन करने से ठीक पहले। जैसे ही उसने घड़ा नदी में डुबोया, तभी उसकी नज़र ऊपर उठी और उसने देखा कि एक बाघ नदी के दूसरी ओर रेंगता हुआ आ रहा है। सौभाग्य से उसने समय रहते ही उस जानवर को देख लिया, जो शायद सौ गज दूर था और सीधे उसकी ओर बढ़ रहा था। उसने पानी का घड़ा वहीं छोड़ दिया और झोपड़ी की शरण में भागा, जहाँ परिवार ने कंटीली झाड़ियों से बने दरवाजे को जितना हो सके बंद कर दिया था, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि आदमखोर बाघ किसी भी क्षण उस कमज़ोर ढाँचे पर हमला कर सकता है। लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसने अक्सर रात में बाघ की आवाज़ सुनी थी और वह अक्सर नदी में पानी पीने आता

था। वह एक बड़ा नर बाघ था, जिसका रंग हल्का पीला था। क्या साहब जानना चाहते हैं कि क्या उसने इस बाघ में कुछ खास देखा है? फिर बाला ने सोचते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं; अंत में उसने आशा भरी नज़रों से ऊपर देखा। वह बस इतना ही कह सका कि हल्के भूरे-पीले रंग की त्वचा पर बनी काली धारियाँ असामान्य रूप से पतली थीं। क्या इससे दोराई को कुछ मदद मिलेगी? उन्होंने अपने छोटे से जीवन में बहुत सारे बाघ देखे थे, लेकिन उन्हें याद नहीं था कि उन्होंने कभी इतने पतले धारियों वाला कोई दूसरा बाघ देखा हो।

उसने आखिरी बार बाघ कब देखा था? कुछ देर सोचने के बाद बाला ने जवाब दिया, 'लगभग चार महीने पहले।' क्या उसने उसके बाद कोई बाघ देखा था? ज़रूर देखा था; दो बार। लेकिन वे साधारण बाघ थे, उसके पिता के हत्यारे नहीं। उसे यह कैसे पता चला? दरअसल, वे छोटे और गहरे रंग के थे, और उसे देखते ही गायब हो गए थे।

फिर बाला वह खबर लेकर आया जिसका मुझे बेसब्री से इंतज़ार था। उसे लगा कि बाघ फिर से आसपास ही है, क्योंकि उसने उसे देखा या सुना तो नहीं था, लेकिन नदी के किनारे थोड़ी दूर पर उसे बाघ के बड़े-बड़े पदचिह्न मिले थे। ये बड़े पदचिह्न पहले भी आदमखोर बाघ के आने के समय से मेल खाते थे। ये पदचिह्न उसके पिता के अधोभुने अवशेषों के आसपास मौजूद थे।

मैंने खड़े होकर अपनी इच्छा ज़ाहिर की कि मैं इन पदचिह्नों को स्वयं देखना चाहता हूँ। बाला ने एहतियात बरतते हुए महिलाओं को झोपड़ी के अंदर रहने और उसकी अनुपस्थिति में दरवाज़ा बंद करने को कहा, और फिर हमें लगभग उसी जगह पर वापस नदी के पास ले गया जहाँ से हम आते समय नदी पार कर रहे थे। वह मुड़ा और हमें नदी के बहाव की दिशा में ले जाने लगा। लगभग तीन फर्लांग आगे नदी चौड़ी हो गई, हालाँकि पानी बीच में ही बहता रहा। चौड़ी होने के कारण, दोनों ओर रेत का एक संकरा किनारा बन गया था। दो रात पहले एक बाघ इसे पूरब से पश्चिम की ओर पार कर गया था। बाघ के पदचिह्न इतने बड़े थे कि वहाँ पहुँचने से बहुत पहले ही मुझे साफ़ दिखाई दे रहे थे।

ये पदचिह्न किसी बहुत बड़े जानवर के थे, निस्संदेह नर के। जब मैं नीचे से उन्हें देख रहा था, तो मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि नरम रेत में फैले पदचिह्नों के कारण दिखने में थोड़ी अतिशयोक्ति को ध्यान में रखते हुए भी, जिस जानवर ने ये पदचिह्न बनाए थे, वह असाधारण रूप से बड़ा था।

हम झोपड़ी में लौट आए, जहाँ मैंने बाला से कहा कि वह कम से कम मेरे प्रवास के दौरान अपने परिवार को गाज़ुलापल्ली गाँव ले जाए। इससे वह निश्चिंत होकर मेरी सहायता कर सकेगा। उस बूढ़ी औरत, उसकी बहू और उसके नवजात बेटे, और स्वयं बाला के बारे में सोचना भी भयानक था, जो जंगल के भीतर उस दयनीय झोपड़ी में बस उस दिन का इंतज़ार कर रहे थे जब उनमें से कोई एक आदमखोर का शिकार हो जाएगा। संघर्ष और युद्ध के इस आधुनिक दौर में, युद्ध के मैदान में वीरता की कहानियाँ पढ़ना आम बात है, जिनके लिए पुरुषों को पदक दिए जाते हैं, जिनकी प्रशंसा की जाती है। हमने उन जासूसों और एजेंटों की अकेली मौत के बारे में भी पढ़ा है जो स्वेच्छा से मौत के मुँह में चले गए और गोलीबारी के सामने अपने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया, एक गुमनाम कब्र में दफन हो गए, उनकी प्रशंसा अनसुनी रह गई। निस्संदेह, ये वीरता की रोमांचक कहानियाँ हैं जो हमारी रगों में जोश भर देती हैं। लेकिन उस दिन मेरे रक्त में इस छोटे से आदिवासी परिवार के प्रति विनम्र और सम्मानजनक प्रशंसा की भावना उमड़ आई, जिसने इतनी बहादुरी से लेकिन सादगी से उन लंबे महीनों का सामना अपने एकांत घर में उस हत्यारे के सामने किया, जो सचमुच उनके दरवाजे पर खड़ा था - वह हत्यारा जिसने पहले ही उनके परिवार के मुखिया और कमाने वाले सदस्य की जान ले ली थी।

चेनचु लोग काफी देर तक हिचकिचाते रहे, लेकिन जब मैंने कृष्णप्पा और अली बेग के

मजबूत समर्थन से उन पर और दबाव डाला, तो आखिरकार वे मान गए। मैं और दोनों वन रक्षक पास के एक पेड़ के नीचे बैठ गए और तब तक इंतजार करते रहे जब तक उन्होंने अपना थोड़ा-बहुत सामान तीन फटे-पुराने गठ्ठों में नहीं बांध लिया। फिर बाला ने झोपड़ी का कंटीला दरवाजा बंद कर दिया, और हम सब सिर पर एक-एक गठ्ठा लादकर, माँ अभी भी अपने बच्चे को दूध पिला रही थी, एक कतार में गाँव की ओर चल पड़े।

उस रात स्टेशन मास्टर ने मुझे अपने क्वार्टर में भोजन के लिए आमंत्रित किया। वे शाकाहारी थे, लेकिन उनकी पत्नी ने बड़ी मेहनत से एक ऐसा स्वादिष्ट शाकाहारी करी बनाया था जिसे चखने का सौभाग्य मुझे आज तक मिला है। एक बड़ा कटोरा स्वादिष्ट दही लाजवाब था, और उसके बाद बड़े-बड़े मग कॉफी परोसी गई। हमने भोजन के बाद आगे की रणनीति तय करने के लिए एक बैठक करने का निर्णय लिया था, और स्टेशन मास्टर श्री बालासुब्रमण्यम ने सुझाव दिया कि हम इसे स्टेशन परिसर में ही करें, क्योंकि रात में जब गुंटकल जाने वाली मेल ट्रेन और दो-तीन मालगाड़ियाँ वहाँ से गुजरेंगी, तब उनकी उपस्थिति आवश्यक होगी। इसलिए हम स्टेशन पहुँचे, जहाँ हम खुले प्लेटफार्म पर एक बेंच पर बैठ गए, और हमारे सामने दो वन रक्षक और बाला भी जमीन पर बैठे थे।

मेरे विचार से सबसे अच्छा तरीका यही था कि अगले दिन दो जीवित शिकार बांध दिए जाएं, एक उस जगह पर जहां बाघ ने पहरेदारों को धमकाया था, और दूसरा बाला की झोपड़ी और उस रेतीले टीले के बीच में बहने वाली धारा के किनारे, जहां हमने बाघ के पैरों के निशान देखे थे। बाला और कृष्णप्पा वहीं रुककर उन पर नज़र रखेंगे और अगर वे मारे जाते हैं तो सूचना देंगे, जबकि मैं अली बेग को दुभाषिया बनाकर आगे बढ़कर बसावपुरम और चेलामा में पूछताछ करूंगा। अगर दोनों में से कोई भी शिकार मारा जाता है, तो श्री बालासुब्रमण्यम को सूचना मिलेगी और वे मुझे बसावपुरम या चेलामा में, जहां भी मैं डेरा डाले रहूंगा, तार भेज देंगे।

मुझे अपने दफ्तर ले जाकर स्टेशन मास्टर ने दोनों स्टेशनों पर अपने सहयोगियों को फोन किया और जानकारी मांगी। उन्होंने बताया कि आदमखोर सांप के बारे में कोई नई खबर नहीं है, लेकिन सभी सतर्क हैं और रात में कोई भी बाहर नहीं निकलेगा। चेलामा स्टेशन मास्टर ने यह भी बताया कि ट्रॉली उनके स्टेशन पर वापस लाई गई है और फिलहाल वहां प्लेटफार्म पर खड़ी है। उन्होंने सुझाव दिया कि बालासुब्रमण्यम नंदीयाल स्थित पीडब्ल्यूआई (पुलिस एजेंसी) को टेलीग्राम भेजकर यह अनुरोध करें कि यदि मुझे स्टेशनों के बीच तत्काल परिवहन की आवश्यकता हो तो मुझे ट्रॉली का उपयोग करने की अनुमति दी जाए। मेरे मित्र बालासुब्रमण्यम ने तुरंत ही अपने सुझाव पर अमल करते हुए नंदीयाल स्थित पीडब्ल्यूआई को तत्काल संदेश भेजकर आवश्यक अनुमति मांगी। इन रेलवे अधिकारियों के उत्साहपूर्ण सहयोग से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। इस पूरी यात्रा में उन्होंने मेरी हर संभव मदद की। स्टेशन मास्टर को कुछ देर के लिए उनके काम पर छोड़कर मैं अपने तीन साथियों को लेकर गांव चला गया। हालांकि रात काफी हो चुकी थी, लेकिन हम अगले दिन किसी भी तरह की देरी नहीं चाहते थे, इसलिए हम एक पशुपालक के घर गए, उसे नींद से जगाया और समझाया कि हमारा मकसद चारे के रूप में इस्तेमाल करने के लिए दो अधपके बैल खरीदना था।

बैंगलोर के आसपास के जंगलों में, और विशेष रूप से मैसूर राज्य में, इस उद्देश्य के लिए जानवरों की खरीददारी करना हमेशा बेहद मुश्किल होता है और इसमें अत्यंत सावधानी बरतनी पड़ती है, क्योंकि वहां के पशुपालक जीवित जानवरों को बाघ या तेंदुआ द्वारा मारे जाने के लिए बांधना एक बुरा काम मानते हैं, भले ही इसका उद्देश्य किसी ऐसे जानवर को खत्म करना हो जिसने किसी इंसान की जान ली हो। लोग इस उद्देश्य के लिए जानवर बेचने में रुचि नहीं रखते,

और उनका सहयोग प्राप्त करने में कई बार घंटों लग जाते हैं। आधी रात को किसी पशुपालक से इस तरह की बिक्री के लिए संपर्क करना आमतौर पर एक निष्फल प्रयास होता। लेकिन इस विशेष क्षेत्र के लोगों का दृष्टिकोण काफी व्यावहारिक प्रतीत हुआ। जैसे ही चरवाहे को मेरे उद्देश्य का पता चला, वह तुरंत सहमत हो गया। वह उत्साहित भी हो गया और उसने मुझे अपनी पसंद के जानवर चुनने के लिए आमंत्रित किया।

उसके घर के पीछे मवेशियों का बाड़ा था, और मैंने अपनी टॉर्च की मदद से दो अधेड़ भूरे बैल चुने। मालिक ने उन्हें मुझे पैंतीस रुपये प्रति बैल के हिसाब से बेच दिया—जो अंग्रेजी मुद्रा में तीन पाउंड से भी कम था। मैंने उसे पैसे दिए, उसकी मदद के लिए धन्यवाद दिया और उससे विनती की कि वह जानवरों को सुबह तक उसके झुंड के साथ रखने दे, जब मेरे अनुयायी उन्हें लेने आएंगे। वह तुरंत मान गया।

हम स्टेशन लौटे तो देखा कि एक मालगाड़ी आकर पटरी पर खड़ी थी। एंग्लो-इंडियन ड्राइवर बालासुब्रमण्यम के दफ्तर में उनसे बातचीत कर रहा था, एक हाथ में कॉफी का थर्मस था और दूसरे हाथ में मग से कॉफी पी रहा था। जाहिर है स्टेशन मास्टर ने मेरे बारे में उससे बात की थी, क्योंकि मेरे पास आते ही उसने अपना परिचय विलियम रॉजर्स के रूप में दिया, मुझे अपना कॉफी का मग दिया और बताया कि चार रात पहले उसने नंदीयाल की दिशा में, पटरी से लगभग एक मील दूर एक बाघ को कूदते हुए देखा था। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने बाघ या उसके रंग में कुछ खास देखा था। उसने मुझे याद दिलाया कि इतनी दूरी पर उसके इंजन की हेडलाइट से ऐसी बारीकियां नहीं दिखतीं, लेकिन बाघ काफी बड़ा लग रहा था। उसने यह भी बताया कि अगर मैं चीतल या सांभर हिरण, या जंगली सूअर का शिकार करना चाहूँ, तो वे इस स्टेशन के आसपास की तुलना में दिगुवामेटा के आसपास अधिक संख्या में मिलते हैं।

मैंने श्री रॉजर्स को उनकी जानकारी के लिए धन्यवाद दिया और उनसे कहा कि बाघ को ठिकाने लगाने के बाद मैं हिरण का शिकार करने पर विचार करूँगा। उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया, स्टेशन मास्टर से 'लाइन-क्लियर' टोकन लिया, हमें अलविदा कहा और अपने इंजन की ओर चले गए। एक मिनट बाद ही उसकी तीखी सीटी ने सन्नाटा तोड़ दिया, और ज़ोरदार आवाज़ और खड़खड़ाहट के साथ मालगाड़ी आगे बढ़ गई, मोड़ से गुज़रते ही पीछे की लाल बत्ती नज़र से ओझल हो गई। एक बार फिर स्टेशन पर सन्नाटा छा गया।

तभी नंदीयाल से टेलीग्राम द्वारा जवाब आया, जिसमें चेलामा स्टेशन पर खड़ी ट्रॉली के उपयोग के लिए पी.डब्ल्यू.आई. की सहमति व्यक्त की गई थी।

स्टेशन मास्टर ने प्रतीक्षाकक्ष खोला। मैंने माचिस जलाकर छत से लटक रही इकलौती तेल की बत्ती जलाई। बाला मेरी राइफल, पलंग, पानी की बोतलें और टिफिन की टोकरी लेकर आया। बाथरूम में पानी नहीं था, और बालासुब्रमण्यम से पानी मंगवाने का अनुरोध करने में बहुत देर हो चुकी थी। कमरे में कोई बिस्तर भी नहीं था, बस एक मेज, दो बिना भुजाओं वाली कुर्सियाँ और एक बीच में छेद वाली कुर्सी थी। कम से कम सिर पर छत तो थी, इस बात से मैं संतुष्ट था। मैंने बत्ती बुझाई और कुर्सी की ओर बढ़ा। मेरा आधा पिछला हिस्सा बेंत के तले में बने छेद में धंस गया, लेकिन बाकी का हिस्सा ऊपर ही रहा। मैंने अपने जूते उतारे, कुर्सी पर लेट गया, सावधानी से अपने पैर उठाकर टांगों को सहारा देने वाले स्टैंड पर रखे, और मुझे पता भी नहीं चला कि मैं सो गया।

लगभग 4:30 बजे एक और मालगाड़ी गुजरी। उसके बाद मैं फिर सो गया, लेकिन कुछ ही मिनटों बाद बाला कमरे में आया और मुझे धीरे से पुकारा। मैं जागा तो देखा कि उजाला हो चुका था। मुझे पता चला कि बालासुब्रमण्यम कुछ घंटे आराम करने के लिए अपने क्वार्टर में गए थे;

इसलिए, जब बाला मेरे निर्देशों पर प्लेटफार्म के अंत में तीन पत्थर लाने, कुछ लकड़ियाँ ढूँढ़ने और मेरी यात्रा केतली में चाय बनाने के लिए आग जलाने में व्यस्त हो गए, तो मैंने अपना छोटा फोल्डिंग प्राइमस स्टोव निकाला, उसे जलाया और कुछ बेकन तल लिया। बेकन खत्म होने तक चाय का पानी अभी उबल भी नहीं पाया था, इसलिए मैं प्लेटफार्म के दूसरे छोर पर स्थित 'पानी के स्तंभ' की ओर चला गया, जो प्यासे इंजनों को पानी की आपूर्ति करता था। मैं अपने साथ तौलिया, टूथब्रश, टूथपेस्ट, साबुन और कपड़े ले गया था। इन वस्तुओं को पानी के स्तंभ से कुछ दूरी पर रखकर, मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए और तौलिये को अपनी कमर के चारों ओर बाँध लिया। फिर मैं चमड़े की नली के नीचे गया और एक हाथ से पहिया घुमाकर वाल्व खोला और पास ही स्थित चार पत्थर के खंभों पर खड़े दस हजार गैलन के ऊंचे टैंक से पानी खंभे में बहने लगा। अचानक मुझ पर जो पानी गिरा, वह इतना ज़बरदस्त था कि मैं लगभग गिर ही गया। फिर भी, मैंने अपने नहाने का आनंद लिया और इसे अपनी सुबह की ब्रश करने की दिनचर्या के साथ मिला लिया। हालाँकि मैं आमतौर पर जंगलों में दाढ़ी नहीं बनाता, लेकिन साफ़-सुथरा रहना और तरोताज़ा महसूस करना बहुत ज़रूरी है। मेरे पास खुद को सुखाने के लिए दूसरा तौलिया नहीं था, क्योंकि मेरी कमर पर लिपटा तौलिया गीला था, लेकिन इसकी कोई परवाह नहीं थी, क्योंकि सुबह बिल्कुल भी ठंडी नहीं थी। कुछ ही मिनटों में मैं सूखे कपड़े पहनकर बाला वापस चला गया, जहाँ केतली में पानी उबल रहा था। चाय, बेकन और बैंगलोर से लाई गई चपातियों के बचे हुए टुकड़े, जो तब तक बिल्कुल सूख चुके थे, 'छोटाहज़री' के रूप में परोसे गए, जो भारत में नाश्ते के लिए गोरों का दिया जाने वाला एक खास नाम है। हिंदुस्तानी विशेषण 'छोटा' का अर्थ 'कम' होता है, जबकि 'हज़री' का अर्थ 'भोजन' होता है।

जब तक मैंने यह सब काम खत्म किया, तब तक दोनों वन रक्षक उस गाँव से लौट आए थे जहाँ वे रात का आखिरी हिस्सा बिताने गए थे। फिर हम चारों ने पिछली रात खरीदे गए दो युवा बैलों को इकट्ठा किया और उन्हें उन जगहों पर बाँधने के लिए निकल पड़े जो हमने पहले से तय कर रखी थीं। अगर आपको याद हो, तो इनमें से पहली जगह वह थी जहाँ दोनों रक्षकों ने उस बाघ को देखा था जिसने इतना खतरनाक रवैया अपनाया था। यह गाँव से एक मील के भीतर एक संकरी आग-रेखा पर स्थित एक जगह थी। कृष्णप्पा ने अपनी कुल्हाड़ी से एक शाखा काट दी, लगभग तीन फीट काट कर उसका एक सिरा तेज कर दिया। हमने एक ऐसा पेड़ चुना जिस पर मचान आसानी से बाँधा जा सके, बशर्ते बाघ चारा बनकर हमें मार डाले। हमने कृष्णप्पा द्वारा अभी बनाई गई खूंटी को लगभग पंद्रह गज दूर एक उपयुक्त जगह पर जमीन में गाड़ दिया और भूरे रंग के एक बैल को उसके पिछले पैर से बाँध दिया, जिसके लिए हमने अपने बिस्तर में लाई हुई मजबूत सूती रस्सी का इस्तेमाल किया। फिर हम वापस स्टेशन की ओर चले, रेल की पटरी पार की और बाला की झोपड़ी के पास वाली धारा तक तीन मील का सफर तय किया। वहाँ बाघ के कोई ताजे पदचिह्न नहीं दिखे, इसलिए हमने दूसरे बछड़े को धारा के ढलान पर एक और पेड़ के नीचे बाँध दिया, उस रेतीले टीले से लगभग पचास गज पहले जहाँ बाघ ने अपने पदचिह्न छोड़े थे।

हम दोपहर से कुछ ही पहले स्टेशन वापस आ गए, तभी स्टेशन मास्टर ने मुझसे फिर से दोपहर का भोजन करने की ज़िद की। उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाने के लिए मैंने बहुत विनम्रता से मना कर दिया, क्योंकि मैं जानता था कि एक उच्च जाति के व्यक्ति होने के नाते उनके घर में मेरी उपस्थिति उन्हें अप्रिय लग रही थी, हालाँकि उन्होंने बड़ी शिष्टता से इसे ज़ाहिर न करने की कोशिश की। इसके बजाय, मैं गार्डों के साथ गाँव गया और गाँव के एक कमरे वाले साधारण से ढाबे से किसी तरह का भोजन प्राप्त कर लिया, जिसकी छत तंतुओं और घास से

बनी थी। भोजन करने के बाद, हम सभी स्टेशन लौट आए, जहाँ मैंने उन दो चेंचुओं को निर्देश दिए जिन्हें चारे को खिलाने-पिलाने का काम सौंपा गया था: उन्हें स्टेशन मास्टर को सूचित करना था यदि उनमें से कोई भी मारा जाता। श्री बालासुब्रमण्यम को यह याद दिलाने की आवश्यकता नहीं थी कि यदि ऐसा कुछ होता है तो उन्हें मुझे संदेश भेजना था।

मैं इस सज्जन के सहयोग के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ। मैं जानता था कि मेरी सहायता करना, मुझे उकसाना या किसी भी तरह से बैल या गाय की मृत्यु करवाना, जो उनकी जाति में पवित्र पशु हैं, उनके धार्मिक सिद्धांतों के घोर विरुद्ध था। लेकिन व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने अपने सिद्धांतों को दरकिनार कर मेरी सहायता करने के लिए हर संभव प्रयास किया।

मुझे अगले स्टेशन, बसवपुरम (जो छह मील दूर था) तक ले जाने वाली ट्रेन दोपहर 2:30 बजे पहुंची। मैंने ड्राइवर से इंजन पर उसके साथ यात्रा करने की अनुमति मांगी, जिसे उसने तुरंत दे दी। मैं ऐसा इसलिए करना चाहता था ताकि पटरी के दोनों ओर के जंगल को देख सकूं। अली बेग पीछे वाले पहले तृतीय श्रेणी के डिब्बे में बैठ गया और हम चल पड़े।

ट्रेन को उन छह मील की दूरी तय करने में पच्चीस मिनट लगे। जैसे ही मैंने उस घने जंगल को देखा जिससे होकर हम गुज़र रहे थे, मेरी सफलता की उम्मीदें बहुत कम हो गईं। यह एक विशाल क्षेत्र था, घने जंगलों से भरा हुआ, और बाघ कहीं भी हो सकता था।

बसावपुरम रेलवे स्टेशन गजुलापल्ली से काफी मिलता-जुलता था। जब मैं उतरा और ड्राइवर को धन्यवाद दिया, तो मुझे लगा कि गजुलापल्ली में उन दो चारे को बांधकर मैंने वाकई बहुत ज्यादा आशावादी होने का नाटक किया था, क्योंकि हो सकता है बाघ बसावपुरम में ही हो, या फिर अगले स्टेशन चेलामा में, जो यहाँ से पाँच मील आगे है।

यहां का स्टेशन मास्टर भी अपने समकक्ष की तरह ही मददगार निकला। वह मसिलमोनी नाम का एक गैर-जातीय तमिल था, और अपने पहले अभिवादन के शब्दों से मुझे सहज महसूस कराने के बाद, उसने मुझे अपने प्रतीक्षालय में ही रुकने का आग्रह किया, यह कहते हुए कि प्रभावित जिले का केंद्र बसवपुरम होने के कारण बाघ निश्चित रूप से वहीं मिलेगा।

एक बार फिर मैंने स्टेशन कर्मचारियों और गांव से आए एक वन रक्षक से पूछताछ करने का अपना नियमित क्रम दोहराया। वह तेलुगु था और उसने मसिलमोनी के माध्यम से मुझे बताया कि उसके साथ इलाके की देखरेख का जिम्मा संभालने वाला दूसरा वन रक्षक मलेरिया से बुरी तरह पीड़ित था और छुट्टी लेकर नंदीयाल चला गया था। उन सभी ने अलग-अलग समय पर बाघ देखे थे और हर किसी ने दावा किया कि उसने आदमखोर बाघ को देखा था। लेकिन किसी ने भी उसके आकार या शरीर पर बने निशानों में कुछ खास नहीं देखा था। किट्टू नाम के इस वन रक्षक ने मुझे बताया कि रेलवे लाइन के उत्तर में, लगभग एक मील दूर, एक पानी का गड्ढा है, जहां उसने अक्सर बाघों के पैरों के निशान देखे थे जब वे पानी पीने आते थे।

उस शाम हम पानी के गड्ढे तक गए, जहाँ मैंने बाघ के कुछ पुराने पदचिह्न देखे, साथ ही एक बड़े तेंदुआ के हाल ही के पदचिह्न भी। मुझे तेंदुआ देखकर गुस्सा आया, क्योंकि मुझे लगभग यकीन था कि बाघ के आने से बहुत पहले ही वह मेरे द्वारा वहाँ बाँधे गए किसी भी चारे को चट कर जाएगा। तेंदुआ के आने-जाने वाली जगह पर बाघ को चारा डालना परेशानी का सबब है, क्योंकि चारा लगभग निश्चित रूप से तेंदुआ के हाथ लग जाएगा।

मैंने रात प्रतीक्षाकक्ष में बिताई और अगली सुबह गाँव से एक अधेड़ भैंस का बच्चा खरीदा। हमने उसे पानी के स्रोत से आधा मील पहले जंगल में एक खुले स्थान पर बाँध दिया, और मैंने किट्टू को निर्देश दिया कि वह हर सुबह अपने दोस्तों के साथ वहाँ जाए, उसे खाना-पानी दे, और

अगर वह मर जाए तो स्टेशन मास्टर को सूचित करे। मसिलमोनी ने बालासुब्रमण्यम का अनुसरण करने और जैसे ही उसे खबर मिले मुझे संदेश भेजने के लिए तुरंत सहमति दे दी।

एक बार फिर मैंने दोपहर की ट्रेन पकड़ी, जो थोड़ी देर से यानी 3.15 बजे आई, और इंजन पर बैठकर चेलामा तक पाँच मील का सफर तय किया। ट्रेन चालक, जो एक भारतीय था, ने जब हम उस जगह से गुज़रे, तो मुझे वह कटाव दिखाया जहाँ ट्रॉली चालक को ले जाया गया था। उसने बताया कि वह दोनों स्टेशनों के लगभग बीचोंबीच था।

हम चेलामा स्टेशन पर उतरे और लगभग उसी प्रक्रिया का पालन किया। स्टेशन मास्टर ने आकर मेरा अभिवादन किया और बताया कि जिन स्टेशनों से मैं हाल ही में निकला था, वहाँ के उनके साथियों ने उन्हें मेरे आने की सूचना दी थी। उन्होंने दो स्थानीय वन रक्षकों को भी मेरे आने की प्रतीक्षा करने के लिए कहा था; वे वास्तव में प्लेटफार्म पर ही मौजूद थे।

इसके बाद हुई बैठक के परिणामस्वरूप मुझे बताया गया कि उस मालगाड़ी के गार्ड ने, जो उस सुबह बसावपुरम से गुज़री थी जब मैं वहाँ के प्रतीक्षालय में सो रहा था, यह सूचना दी थी कि दिगुवामेटा में, जो कि जंगल क्षेत्र के पूर्वी छोर पर स्थित है और बसावपुरम से सोलह मील आगे है, एक महिला की हत्या कर दी गई है। गार्ड बसावपुरम में हममें से किसी को भी इस बारे में नहीं बता सका, क्योंकि उसकी ट्रेन स्टेशन पर बिना रुके आगे निकल गई थी।

इस ताज़ा खबर ने मेरे सारे अनुमानों को गलत साबित कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे मेरी सारी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं। इससे न केवल आदमखोर बाघ की तलाश का दायरा बहुत बढ़ गया, बल्कि बाघों के शिकार के लिए बनाई गई मेरी सारी योजना भी पूरी तरह से उलट गई। मुझे लगभग पूरा यकीन था कि आदमखोर बाघ गज़ुलापल्ली के आसपास ही कहीं होगा। लेकिन उसने दिगुवामेटा में शिकार किया, जो यहाँ से सत्ताईस मील दूर था।

फिर मुझे याद आया कि सत्ताईस मील की दूरी, आखिरकार, एक बाघ के लिए कोई लंबी पैदल यात्रा नहीं होती।

मैंने स्टेशन मास्टर से अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो दिगुवामेटा को मोर्स लाइन के माध्यम से समाचार की पुष्टि करें। लगभग पंद्रह मिनट तक टेलीग्राफ कुंजी दबाने के बाद, उन्होंने बताया कि दिगुवामेटा के स्टेशन मास्टर ने अपने गाँव के स्थानीय पुलिसकर्मी से इसकी पुष्टि कर ली है। पुलिसकर्मी को सूचना मिली थी कि जंगल के किनारे महोवा फूल इकट्ठा कर रही एक चेंचु महिला परसों की सुबह लापता हो गई थी। उसके गाँव के लोगों को उसकी आधी भरी टोकरी मिली थी, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। दिगुवामेटा के स्टेशन मास्टर ने यह भी सलाह भेजी कि चूंकि उन्होंने सुना था कि मैं विभिन्न स्टेशनों पर जीवित चारा बाँध रहा हूँ, इसलिए मुझे दिगुवामेटा और चेलामा और दिगुवामेटा के बीच स्थित छोटे से स्टेशन बोगड़ा में भी ऐसा करना नहीं भूलना चाहिए।

यह मामला वाकई पेचीदा था। ऐसा लग रहा था मानो उस मायावी बाघ को पकड़ने के लिए मुझे इस पूरी लाइन के हर स्टेशन पर चारा बांधना पड़ेगा।

अगली सुबह चेलामा में मैंने चारा कैसे बांधा, इसकी विस्तृत जानकारी देना शायद उतना रोचक न हो। शायद आप सोच रहे होंगे कि मैं अगली ट्रेन से दिगुवामेटा के लिए क्यों नहीं रवाना हुआ, लेकिन आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि उस महिला की हत्या को दो दिन बीत चुके थे, और मेरे पहुँचने तक बाघ उसकी हड्डियाँ पूरी तरह से खा चुका होता—बशर्ते कि मैं उन्हें ढूंढ पाता। इसलिए मैंने चेलामा के लिए चारा बांधने का काम पूरा करना बेहतर समझा, इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूँ।

लेकिन उसी दोपहर मैंने बोगड़ा के लिए ट्रेन पकड़ी, जहाँ मैंने शाम को एक और चारा बाँधा

और फिर सुबह तड़के दिगुवामेटा के लिए मालगाड़ी पकड़ी। वहाँ मैंने दो जानवर बाँधे, एक उस जगह के पास जहाँ उस महिला को ले जाया गया था, और दूसरा उस जगह पर जहाँ जंगल की सीमा रेखा, एक बड़ी नदी और जंगल में जाने वाला मवेशियों का रास्ता मिलते थे। दिगुवामेटा में एक वनपाल था, जो एक बुद्धिमान और बहुत मददगार भारतीय ईसाई था। उस आदमी ने मुझे भरोसा दिलाया कि बीते वर्षों में कई बाघों को उस जगह पर उगने वाले 'होंगी' के पेड़ की शाखाओं में लगे मचानों से मारा गया था जहाँ मैंने दूसरा चारा बाँधा था।

मैं इस इलाके में करीब पांच दिन बिता चुका था, सात बार चारा लगा चुका था, जितना खर्च करना चाहता था उससे कहीं ज्यादा खर्च कर चुका था, और इस मायावी बाघ की दहाड़ सुने बिना, यहाँ तक कि किसी भी बाघ की दहाड़ सुनकर भी, मैं उसके बारे में सिर्फ कहानियां सुनकर काफी थक चुका था। मेरे आने के बाद से जंगल में असाधारण सन्नाटा छाया हुआ था।

जिस दिन मैंने दिगुवामेटा में दो जाल बांधे थे, उसी शाम मैं भारतीय ईसाई वनपाल जोसेफ के साथ जंगल में लंबी सैर पर निकल गया। चूंकि वह मेरी ही तरह मांसाहारी और अविवाहित था, इसलिए उसके निमंत्रण और इस आश्वासन पर कि मेरी उपस्थिति से उसे कोई असुविधा नहीं होगी, मैंने दिगुवामेटा में कम से कम कुछ दिन रुकने और उसके क्वार्टर के बरामदे में सोने का फैसला किया। स्टेशन मास्टर ने पहले स्टेशन के प्रतीक्षालय का उपयोग करने की पेशकश की थी, लेकिन रात में गुजरने वाली ट्रेनों की आवाज़ मुझे परेशान करती थी। जोसेफ का मलयाली नौकर, जिसे वह कालीकट से अपने साथ लाया था, जो उसका खाना बनाता था और उसकी कुछ ज़रूरतों का ध्यान रखता था, मुझे हर दिन उस बोझ और समय की बर्बादी से मुक्ति दिलाएगा जो मुझे अब तक अपने भोजन को तैयार करने में लगाना पड़ता था, जो कि बहुत कम और जल्दी-जल्दी बनता था।

दिगुवामेटा को अपने शिविर स्थल के रूप में चुनने का एक और कारण, कम से कम फिलहाल के लिए, यह था कि यहीं पर बाघ ने तीन दिन पहले आखिरी शिकार किया था। आप शायद फिर से सोच रहे होंगे कि हमने उस बेचारी महिला के अवशेषों को खोजने का कोई गंभीर प्रयास क्यों नहीं किया। पहली बात तो यह कि इससे कोई फायदा नहीं होता। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, बाघ के पास उसे पूरी तरह से खा जाने के लिए पर्याप्त समय था, और ज़्यादा से ज़्यादा हमें कुछ कुतरी हुई हड्डियाँ ही मिल पातीं। दूसरी बात, जंगल बेहद सूखा था, और हालाँकि मैंने अपने जीवित शिकार (एक बछड़े) को बाँधते समय खोजबीन की थी, लेकिन बाघ उसे किस दिशा में ले गया, इसका कोई सुराग नहीं मिला। हमने दो सौ गज से अधिक के दायरे में पूरे क्षेत्र की छानबीन की, लेकिन कुछ भी नहीं मिला, यहाँ तक कि उसके वस्त्र का फटा हुआ टुकड़ा भी नहीं। अंत में, जैसा कि मैंने अभी कहा है, इतनी देर से उसके अवशेषों को खोजने का कोई उद्देश्य नहीं था, इसलिए मैं उस क्षेत्र को और अधिक परेशान नहीं करना चाहता था, क्योंकि उस क्षेत्र को पहले ही उन लोगों के दल ने परेशान कर दिया था जो लड़की की तलाश में आए थे और उन्हें उसकी टोकरी मिली थी।

आस-पास का जंगल बेहद खूबसूरत था और सचमुच पक्षियों और हिरणों के लिहाज से शिकारियों के लिए स्वर्ग समान था। जंगल के खुले मैदानों में हमें चीतलों के कई झुंड दिखाई दिए। लंबी भाला घास बिल्कुल सूखी थी और उसके तने के सिरे कांटेदार सूखे बीजों के भार से ज़मीन की ओर झुके हुए थे। इस वजह से हमारी दृश्यता काफी बढ़ गई और हम पेड़ों के तनों के बीच से होते हुए खुले मैदानों तक देख पाए। हमें एक भव्य सांभर नर भी दिखाई दिया जिसके सींग बहुत सुंदर थे, और हमारे पास आते ही वह भाग गया। शाम के समय सांभर का दिखना थोड़ा जल्दी था। फिर भी, नर सांभर की उपस्थिति से यह स्पष्ट हो गया कि जंगल में कोई

हलचल नहीं थी, लेकिन प्राकृतिक शिकार की इतनी अधिकता से बाघ के मेरे किसी भी चारे को खाने की कोई संभावना या कारण नहीं दिखता था। इसी तरह, इतनी अधिक मात्रा में भोजन उपलब्ध होने के कारण, बाघ के कभी भी आदमखोर बनने का कोई कारण नहीं दिखता था।

मैंने अली बेग का टिकट खरीदा और उन्हें निर्देश दिया कि वे रात की मेल ट्रेन से गज़ुलापल्ली लौट जाएँ, क्योंकि उनकी उपस्थिति अब आवश्यक नहीं थी। मैं खुद भी जल्दी सो गया। कम से कम यूसुफ के बरामदे में मुझे ट्रेनों की खड़खड़ाहट से कोई परेशानी नहीं हुई, इसलिए मैं दस घंटे चैन से सोया और अगली सुबह काफी आशावादी मन से जागा। जब हम सो रहे थे, तब मलयाली नौकर ने कमाल कर दिया था। कड़क चाय का एक जग और 'हॉपर्स' और 'पुट्टू-राइस' से भरी एक थाली तैयार थी। 'हॉपर्स' बारीक पिसे हुए चावल के आटे से बनते हैं, और 'पुट्टू-राइस' एक विशेष किस्म के चावल के साबुत दानों से। ये मद्रास की खासियत हैं, और उस सुबह मेरे सामने इनकी मौजूदगी से यह संकेत मिला कि मेरे नए दोस्त और मेज़बान यूसुफ निस्संदेह उसी शहर से आए थे। यह एक स्वादिष्ट और बेहद सुखद भोजन साबित हुआ।

फिर मैंने घर की दीवार से सटाकर बनाए गए उस विशेष स्थान में ठंडे पानी से स्नान किया, जिसकी तीनों भुजाएँ लगभग पाँच फुट चौड़ी बाँहों की चटाइयों से बनी थीं। वहाँ कोई छत नहीं थी।

जब मैं कपड़े पहन रहा था, तब जोसेफ तैयार होकर इंतज़ार कर रहा था। फिर हम उन दो चारे के पास गए जिन्हें हमने एक दिन पहले बांधा था। हमारे साथ जोसेफ के अधीन काम करने वाले वन रक्षक भी थे, जिन्हें उसने इन जानवरों को खिलाने-पिलाने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। दोनों चारे जीवित थे और उन्हें किसी ने छुआ नहीं था।

अब मेरे पास आगे की स्थिति का इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। इलाका इतना विशाल था कि बाघ को संयोग से देख पाने की उम्मीद में जंगल में लंबी पैदल यात्रा करना व्यर्थ था। बाघ दिगुवामेटा और गज़ुलापल्ली के बीच कहीं भी हो सकता था, जो सत्ताईस मील दूर था, और उसकी खोज करना समय और ऊर्जा की बर्बादी होती। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, अब तक मेरा किसी भी बाघ से कोई संपर्क नहीं हुआ था, लेकिन मैंने काफी मेहनत की थी, और मुझे उम्मीद है कि कुछ ही समय में मुझे उसका फल मिलेगा।

और एक बार शुरू हो जाने के बाद, वाकई घटनाएँ घटने लगीं। अगली सुबह लगभग नौ बजे टेलीग्राफ की तारें बज उठीं जब बसावपुरम के स्टेशन मास्टर मसिलमोनी ने खबर दी कि पिछली रात मेरे चारे को किसी ने मार डाला था। यह सूचना पाकर मैं बहुत उत्साहित नहीं हुआ, क्योंकि आपको याद होगा कि यही वह जगह थी जहाँ मुझे पानी के गड्ढे के पास ताज़े तेंदुए के पदचिह्न मिले थे, और मैंने जानबूझकर अपने चारे को कुछ दूरी पर बाँध दिया था ताकि संभव हो तो वह उस तेंदुए की पहुँच से दूर रहे।

मैंने दिगुवामेटा के स्टेशन मास्टर से मसिलमोनी से बात करने और वन रक्षक किट्टू से पूछताछ करने के लिए कहा, ताकि पता चल सके कि मेरे चारे को बाघ ने खाया था या तेंदुआ ने। कुछ ही देर में जवाब आ गया; मसिलमोनी ने बताया कि जब वह संकेत दे रहे थे, किट्टू उनके बगल में टेलीग्राफ उपकरण पर था। किट्टू ने बताया कि चारे को तेंदुआ ने मार डाला है और मुझे सलाह दी कि मैं आकर उसे गोली मार दूँ, क्योंकि अन्यथा मेरे द्वारा बांधे गए अन्य चारे भी इस जानवर के हाथों उसी भाग्य का शिकार हो जाएंगे।

यह तर्कसंगत था। साथ ही, मेरे पास उस क्षेत्र के लिए नियमित शिकार लाइसेंस नहीं था, बल्कि मैं केवल आदमखोर पैंथर का शिकार करने के विशेष अनुरोध पर आया था, और कुछ नहीं। यह अनुरोध सीधे मद्रास के मुख्य वन संरक्षक ने किया था, जिन्होंने मेरी यात्रा के लिए

परमिट जारी किया था। मैंने तय किया कि मैं बाद में मुख्य वन संरक्षक को पत्र लिखकर पैंथर को मारने का कारण समझाऊंगा, और किसी भी आपत्ति की स्थिति में शिकार लाइसेंस शुल्क का भुगतान करने की पेशकश करूंगा। इसलिए मैंने मसिलमोनी के बुलावे का जवाब देने का निश्चय कर लिया।

दिन के समय बसवपुरम की ओर कोई यात्री ट्रेन नहीं थी, लेकिन सौभाग्य से उसी सुबह लगभग ग्यारह बजे एक मालगाड़ी वहाँ से गुजरने वाली थी। स्टेशन मास्टर ने मेरे लिए ट्रेन रोक दी और मैं गार्ड के डिब्बे में बैठकर बसवपुरम चला गया। जोसेफ ने मेरे साथ जाने की जिद की।

कित्तू मुझे शिकार के पास ले गया, जिस पर एक तेंदुए के काम के सारे निशान थे, गले में दांतों के निशान से लेकर पेट में बने उस बड़े छेद तक, जहाँ आंतें और मांस सब आपस में मिलकर एक दावत बन गए थे। तेंदुए ने पिछली रात खूब खाया था, और इसी वजह से मुझे डर था कि वह देर से लौटेगा। कित्तू ने मुझे अपनी चारपाई उधार देने की पेशकश की, इसलिए मचान बनाने के बजाय हम उसे लेने वापस चले गए। लौटकर उसे बांधने में मुश्किल से दो घंटे लगे, और चार बजे तक सब कुछ तैयार हो गया था।

अभी सुबह जल्दी उठना बहुत जल्दबाजी थी, इसलिए हम स्टेशन लौट गए, जो मुश्किल से एक मील दूर था, और हमने जल्दी से नाश्ता किया जिसमें बिस्कुट, चपाती, केले और कई कप चाय शामिल थी। जोसेफ ने मेरे साथ देर तक जागने की तीव्र इच्छा व्यक्त की, इसलिए हम दोनों वापस लौटे और शाम 5:30 बजे तक मचान पर अपनी जगह पर बैठ गए।

मैंने कहा था कि मुझे पैंथर के देर से आने की उम्मीद थी। मैं गलत था। मचान में बैठे हुए हमें मुश्किल से बीस मिनट ही हुए थे और मैं आराम से पीछे झुककर बैठा था, तभी मुझे नीचे एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। मैंने नीचे देखा। पैंथर अपने शिकार के पास अपने पिछले पैरों पर बैठा उसे निहार रहा था। वाकई एक शानदार नमूना, मुझे उसे बख्श देने का मन हुआ। लेकिन मैंने इस लालच पर काबू पा लिया क्योंकि उसकी मौजूदगी मेरे चारे में लगातार बाधा डालती। मैंने उसे बाएं कंधे के पीछे गोली मार दी।

स्टेशन पर हमारी जल्दी वापसी ने किट्टू और मसिलमोनी दोनों को आश्चर्यचकित कर दिया। खबर सुनकर मसिलमोनी ने मुझसे कहा कि अगर मुझे खाल की ज़रूरत न हो तो मैं उसे दे दूं, जिस पर मैं सहमत हो गया और हम एक पेट्रोमैक्स टॉर्च और चार कुलियों के साथ मृत पैंथर को लेने वापस चले गए। मैं निगरानी कर रहा था जबकि मसिलमोनी उत्सुकता से खाल उतारने की प्रक्रिया देख रहा था। मैंने उसे सिखाया कि खाल को कॉपर-सल्फेट और नमक के घोल में अस्थायी रूप से कैसे सुरक्षित रखा जाए, जब तक कि वह उसे बैंगलोर के किसी टैक्सिडर्मिस्ट के पास न भेज दे।

अगली सुबह मैंने मरे हुए चारे की जगह दूसरा चारा खरीदा। हम उसे उस पानी के गड्ढे के पास ले गए जहाँ मैंने बाघ के पुराने पदचिह्न देखे थे और वहाँ हमने उसे बाँध दिया।

पैंथर का शिकार करने के बाद मेरा इरादा जोसेफ के साथ दोपहर की ट्रेन से दिगुवामेटा लौटने का था, लेकिन जब हम नया चारा लगाने के बाद बसवपुरम स्टेशन पर वापस आए, तो मसिलमोनी ने मुझे बताया कि उसे चेलामा स्टेशन के स्टेशन मास्टर से एक मोर्स संदेश मिला है, जिसमें कहा गया है कि पिछली रात मेरे द्वारा लगाए गए चारे को एक बाघ ने खा लिया था।

यह सूचना मुझे रात दस बजे से पहले मिली। चेलामा जाने वाली ट्रेन कम से कम चार घंटे बाद ही आने वाली थी। इसलिए मैंने चेलामा तक पाँच मील पैदल चलने का फैसला किया, जिस पर जोसेफ तुरंत सहमत हो गया। हम रात 11:30 बजे के कुछ देर बाद वहाँ पहुँच गए।

संदेश पहुंचाने वाले स्टेशन मास्टर और उसे लाने वाले दो वन रक्षक हमारे आने का इंतजार

कर रहे थे। वे सभी बहुत उत्साहित थे और रक्षकों ने बताया कि जब वे उस सुबह चारा डालने और पानी देने गए थे, तो उन्हें उसका आधा खाया हुआ अवशेष और आसपास की मिट्टी में एक बड़े बाघ के पदचिह्न मिले थे। उन्होंने कुछ देर रुककर कुछ शाखाएँ काटीं और गिद्धों से बचाने के लिए मृत जानवर के शव पर रख दीं, फिर जल्दी से स्टेशन लौटकर अपना संदेश भेज दिया।

अब सभी सात मामलों में, चारा बांधते समय, मैंने प्रत्येक स्थान का चुनाव बहुत सावधानी से किया था और यह सुनिश्चित किया था कि प्रत्येक जानवर को ऐसे पेड़ के पास रखा जाए जिस पर मचान बांधना सुविधाजनक हो। इस सावधानी ने पैंथर का शिकार करते समय मेरा काम आसान कर दिया था।

वन रक्षकों ने मेरे लिए चारपाई लाने की पेशकश की, जबकि मैं और जोसेफ, स्टेशन मास्टर के साथ, दोपहर के भोजन के लिए गाँव के इकलौते भोजनालय में गए। भोजन के दौरान जोसेफ ने कहा कि वह मेरे साथ फिर से जागना चाहेंगे, और बड़ी मुश्किल से मैंने उन्हें बिना उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाए मना किया। पैंथर के मामले में उनका साथ एक बात थी, लेकिन बाघ के मामले में बिल्कुल अलग बात थी, खासकर तब जब वह जानवर वही आदमखोर बाघ हो जिसकी हम सब तलाश कर रहे थे। मचान में बैठे किसी व्यक्ति की हल्की सी भी आवाज या लापरवाही भरी हरकत हमारी मौजूदगी का पता लगा सकती थी और जानवर को भगा सकती थी। मुझे पहले भी ऐसे साथियों का अनुभव हो चुका था जो मेरे साथ मचान में बैठे थे और अनजाने में ऐसी आवाजें निकाल देते थे जिससे हमारी निगरानी बेकार हो जाती थी। ऐसा होने की संभावना तब और भी बढ़ जाती है जब जागना रात भर चलता रहे और व्यक्ति बेचैन और अशांत हो जाए। इतने बड़े क्षेत्र में चारा बाँधने में मैंने जो मेहनत की थी, उसके बाद मैं यह जोखिम नहीं उठाना चाहता था।

शिकारगाह स्टेशन से लगभग एक घंटे की पैदल दूरी पर और जंगल के अंदर लगभग तीन मील दूर थी। वहाँ पहुँचने के लिए एक घुमावदार पगडंडी से होकर जाना पड़ता था और फिर ढलान से नीचे की ओर एक शॉर्टकट लेना पड़ता था। मैंने दोपहर 3:30 बजे से काफी पहले ही चारपाई लगा दी थी, लेकिन चूंकि उसे ढकने के लिए पत्तियाँ दूर से लानी पड़ीं ताकि आस-पड़ोस में कोई परेशानी न हो, और साथ ही वे उसी प्रजाति की होनी चाहिए थीं जिस पेड़ पर चारपाई लगाई गई थी (इस मामले में एक इमली का पेड़), इसलिए मुझे उसे सही जगह पर लगाने में लगभग एक घंटा और लग गया।

जब दोनों गार्ड मचान ठीक करने में व्यस्त थे, जोसेफ उनकी मदद कर रहा था और ज़मीन से डालियाँ ऊपर ला रहा था, तब मैंने शिकार और बाघ के छोड़े हुए लगभग आधा दर्जन पदचिह्नों का अध्ययन किया। ज़मीन काफ़ी सख्त थी, इसलिए निशान आंशिक रूप से ही दिखाई दे रहे थे, और हर निशान में पंजे का गोला स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था। मैं देख सकता था कि बाघ बड़ा और नर था, लेकिन यह निश्चित रूप से कहना असंभव था कि वह वही जानवर था जिसके पदचिह्न मैंने गज़ुलापल्ली में बाला की झोपड़ी के पास धारा के किनारे देखे थे। वहाँ निशान नरम, नम रेत में बने थे, जिसने उन्हें फैलाकर कुछ हद तक बड़ा कर दिया था। लेकिन यहाँ ज़मीन सूखी और काफ़ी सख्त थी।

शाम के 4:30 बजने से ठीक पहले मैं चारपाई पर आराम से बैठ गया। मैंने कुछ मिनट चाय से भरी पानी की बोतल को पानी से भरी छोटी बोतल के पास रखने में बिताए। गाँव के 'होटल' ने रात के खाने के लिए केले के पत्ते में लपेटी हुई तीन बड़ी चपातियाँ दी थीं। मैंने इन्हें पेय पदार्थों की बोतलों के पास रख दिया; फिर मैंने अपनी अतिरिक्त टॉर्च और कारतूस निकाले। साल के इस समय रातें गर्म होती हैं, इसलिए मैं कंबल या ओवरकोट नहीं लाया था; केवल अपनी

बालाक्लावा टोपी लाया था, जिसे मैंने पहन लिया। अंत में मैंने टॉर्च को राइफल के साथ लगे क्लैंप में लगा दिया, और फिर सब कुछ तैयार था।

मैंने जोसेफ और गार्डों से कहा कि मैं स्टेशन वापस जाने का रास्ता खुद ढूंढ लूंगी। वे चले गए, और मुझे वहीं पहरा देने के लिए छोड़ दिया।

अंधेरा होने ही वाला था कि मुझे अपने ठीक नीचे घास पर दबी हुई आहट सुनाई दी। इमली के पत्ते छोटे और मुलायम होते हैं, इसलिए जब वे सूखकर ज़मीन पर गिरते हैं तो एक लचीली कालीन जैसी बन जाती हैं और उन पर चलने से कोई आवाज़ नहीं आती, बस हल्की-सी सरसराहट की आवाज़ आती है, जिसे पहचानना या परिभाषित करना मुश्किल होता है। इस लिहाज़ से सागौन के सूखे पत्ते किसी भी जीव, यहाँ तक कि चूहे के आने की आगाह करने का आदर्श माध्यम होते हैं, क्योंकि घुसपैठिए के दिखाई देने से बहुत पहले ही वे सरसराहट और चटकने की आवाज़ करते हैं। लेकिन मैं जानता था कि ये दबी हुई आवाज़ें बाघ के आने की सूचना देती हैं, इसलिए जब मैंने आगे झुककर नीचे देखा तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह लगभग तुरंत मेरे नीचे ही था। घास और गिरे हुए छोटे इमली के पत्तों पर उसके शरीर के भार के कारण ही वह हल्की सी आवाज़ आई थी जिससे उसके आने का आभास हुआ था।

कुछ सेकंड के लिए वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया, लेकिन जल्द ही फिर प्रकट हुआ और अपने मारे हुए बैल की ओर निडरता से बढ़ने लगा। वह मुझसे दूर जा रहा था, इसलिए मैं उसका सिर ठीक से नहीं देख पाया, बल्कि उसकी बाईं बगल, पिछला हिस्सा और पूंछ ही दिखाई दी। जैसा कि मैंने बताया, अंधेरा होने ही वाला था। जंगलों में ऐसे समय में रंग धुंधले पड़ जाते हैं और चीज़ें अपने वास्तविक आकार से कहीं बड़ी दिखाई देती हैं। जो भी व्यक्ति शाम के समय जंगल या इंग्लैंड के जंगलों में गया हो, वह यही बात कहेगा। मेरे नीचे दिख रहा जानवर असामान्य रूप से बड़ा लग रहा था, लेकिन मैं यह नहीं बता पाया कि उसका रंग हल्का था या गहरा। धारियाँ धुंधली थीं और मुश्किल से दिखाई दे रही थीं।

टॉर्च की मदद के बिना तस्वीर लेना बहुत मुश्किल था क्योंकि अंधेरा बहुत था। राइफल का निशाना भी ठीक से नहीं दिख रहा था। इसलिए मैंने अपने बाएं अंगूठे से टॉर्च का बटन दबाया। रोशनी निकली और बाघ के बाएँ हिस्से को रोशन करते हुए उसके आगे शिकार पर पड़ी। जैसे ही मैंने जल्दी से निशाना साधा, मुझे याद है कि बाघ को पता ही नहीं चला कि रोशनी उसके पीछे से आ रही है। बल्कि, उसे लगा जैसे रोशनी शिकार से ही आ रही हो। वह बस वहीं खड़ा रहा और देखता रहा।

मैंने उसके बाएं कंधे के पीछे गोली चलाई। वह मरे हुए बैल पर आगे की ओर गिर पड़ा और फिर अपनी दाहिनी ओर छटपटाने लगा। उसके पेट और छाती का सफेद हिस्सा दिखाई देने लगा। मैंने दोबारा गोली चलाई। जैसे ही मैंने टॉर्च की रोशनी उस पर डाली, बाघ मर गया।

मैंने लगभग बीस मिनट तक इंतजार किया, इस दौरान मैंने बार-बार अपनी टॉर्च जलाकर यह सुनिश्चित किया कि मैंने उसे मार ही दिया है। फिर मैं नीचे उतरा और अपने शिकार की बारीकी से जांच की।

वह अपने यौवन काल में एक विशाल नर बाघ था, लेकिन वह निश्चित रूप से वह जानवर नहीं था जिसका वर्णन बाला ने मुझे किया था। उसका शरीर गहरे रंग का था और उसकी धारियाँ असामान्य रूप से पतली नहीं थीं। क्या मैंने गलत बाघ को गोली मार दी थी, या यही असली आदमखोर था? क्या बाला ने जिस जानवर को देखा था वह कोई और साधारण, बूढ़ा बाघ था? ये सवाल मेरे मन में उठे, लेकिन मैं जानता था कि इसका जवाब तभी मिलेगा जब कोई और इंसान मारा जाए—या फिर कोई और इंसान शिकार न बचे।

टॉर्च की मदद से मैं घुमावदार पटरी ढूंढने में कामयाब रहा, जो मुझे रात 9 बजे से कुछ पहले रेलवे स्टेशन ले आई। जोसेफ प्रतीक्षालय में सो रहा था, जबकि दोनों गार्ड प्लेटफार्म पर चटाई पर लेटे हुए थे। मैंने उन्हें जगाया और सारी बात बताई। मेरे जल्दी लौटने पर उनकी हैरानी मेरी सफलता की खबर सुनकर खुशी में बदल गई, और जोसेफ ने गर्मजोशी से बधाई देते हुए मुझसे हाथ मिलाया।

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन कहा कि मुझे पक्का यकीन नहीं है कि मैंने आदमखोर बाघ को मारा है। उन्होंने पूछा क्यों, और मैंने उन्हें बता दिया। लेकिन वे और पहरेदार आशावादी थे और उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा यकीन है कि मैंने सही बाघ को ही मारा है।

इसके बाद स्टेशन मास्टर रात की ट्रेनों के आवागमन की निगरानी करने के लिए पहुंचे और वे भी यह खबर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। दोनों गार्ड सामान ढोने वाली टीम को बुलाने के लिए तुरंत रवाना हुए और लगभग एक घंटे बाद लगभग दस आदमियों, दो मजबूत बांस, रस्सियों और दो लालटेन के साथ वापस लौटे।

हम शिकार स्थल पर वापस गए और रात 1 बजे तक बाघ को लेकर लौट आए। मैंने शव को प्लेटफार्म के छोर पर, स्टेशन यार्ड की सीमा निर्धारित करने वाली लोहे की रेलिंग के ठीक बाहर रख दिया और जोसेफ द्वारा पकड़ी गई दो लालटेन और मेरी अतिरिक्त टॉर्च की सहायता से जानवर की खाल उतारना शुरू कर दिया। मैंने यह काम स्वयं किया क्योंकि पहरेदारों को इस कला की ज्यादा जानकारी नहीं थी, और मैं काम में इतना मग्न था कि जब गुंटकल जाने वाली रात की मेल ट्रेन स्टेशन पर आकर रुकी, तब तक मैं आधा काम कर चुका था।

उस ट्रेन में सवार सभी लोग, ड्राइवर से लेकर गार्ड तक और सभी यात्री भी, नीचे उतर गए और मुझे साफ़ देखने के लिए मेरे चारों ओर एक विशाल घेरा बनाकर खड़े हो गए। उस रात मुझे खूब प्रसिद्धि मिली और ट्रेन निर्धारित समय से पंद्रह मिनट से अधिक देरी से चली। ट्रेन के संचालकों ने देरी को मामूली बात समझा। वैसे भी, रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर आधी रात को एक विशाल बाघ की खाल उतारते देखना कोई आम नजारा नहीं है, यहाँ तक कि भारत में भी नहीं।

कॉपर सल्फेट और नमक के घोल का मानक अनुप्रयोग इसे मेरी यात्रा की अवधि के लिए अस्थायी रूप से संरक्षित रखेगा।

अगले दिन मैंने आराम किया, जबकि स्टेशन मास्टर ने चेलामा के दोनों किनारों पर स्थित स्टेशनों को खबर दी और सभी खुश थे। मैं खुद इतना खुश नहीं था और मैंने संभव हो तो एक

और सप्ताह रुकने का फैसला किया। चूंकि मैंने अपने जाल बिछा दिए थे और जरूरत पड़ने पर एक महीने तक रुकने की तैयारी के साथ आया था, इसलिए मुझे लगा कि बैंगलोर लौटने और फिर से जाल बिछाने के बजाय यहीं रहना बेहतर होगा। क्योंकि एक अजीब सी आशंका मुझे बार-बार परेशान कर रही थी कि आदमखोर सांप मरा नहीं है और बहुत जल्द किसी को मार डालेगा।

चार दिन बीत गए। फिर गज़ुलापल्ली से खबर आई कि बाघ ने बाला की जवान पत्नी को मार डाला है। मुझे पता नहीं था कि वह अपने परिवार को जंगल में अपनी झोपड़ी में वापस ले गया था, यह सोचकर कि अब खतरा टल गया है।

आखिरकार उस आदमखोर ने अपने तय कार्यक्रम का पालन किया।

इस बीच जोसेफ दिगुवामेटा लौट आए थे, इसलिए मैंने बालासुब्रमण्यम को संदेश भेजने के लिए बस कुछ देर इंतजार किया कि वह बाला को अपने पास रखें और चेलामा में ट्रॉली उधार लेकर, क्योंकि अगले चार घंटों तक कोई मालगाड़ी नहीं गुजरने वाली थी, दो ट्रॉली चालकों की मदद से गाजुलपल्ली के लिए रवाना हो गया।

वहाँ पहुँचने में हमें डेढ़ घंटे से थोड़ा अधिक समय लगा और हमने देखा कि बाला प्लेटफार्म के एक कोने में ज़मीन पर बैठकर रो रही थी। बालासुब्रमण्यम भी वहीं थे, और दो वन रक्षक, अली बेग और कृष्णप्पा भी मौजूद थे।

युवा चेनचू की कहानी जितनी संक्षिप्त थी, उतनी ही दुखद भी। यह सुनकर कि मैंने चेलामा में आदमखोर साँप को मार गिराया था, और चूंकि मेरे दोनों जीवित शिकारों को अब तक किसी ने छुआ तक नहीं था, उसने मान लिया था कि उनके जीवन पर खतरा टल गया है और दो दिन पहले ही वह अपने परिवार को अपनी झोपड़ी में वापस ले आया था। उसी सुबह भोर होते ही उसकी पत्नी उठी, अपने बच्चे को उसके पास लिटाया और शौच के लिए बाहर चली गई। कुछ ही क्षण बाद उसने उसकी हल्की सी चीख सुनी। यह समझते हुए कि कुछ भयानक हुआ है, उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और बाहर की ओर भागा। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

अभी सुबह नहीं हुई थी, और बाला ने कहा कि उसे कुछ भी होने का कोई सुराग नहीं मिला, सिवाय इसके कि उसकी जवान पत्नी वहाँ नहीं थी। उसने उसे पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। बेचैनी से खोजते हुए वह झोपड़ी के दूसरी तरफ गया, जहाँ उसे पता था कि वह अपने इरादे से गई होगी। फिर भी उसे कुछ नहीं मिला।

रात भर हुई ओस के कारण घास गीली थी, और जैसे-जैसे रोशनी तेज होती गई, वह उस रास्ते को देख सका जो किसी ऐसी चीज ने बनाया था जो घास से होते हुए जंगल में चली गई थी।

उसे खून का कोई निशान नहीं मिला, लेकिन वह जानता था कि वह गीली घास में बने उस रास्ते को देख रहा था जिस पर आदमखोर बाघ अपनी पत्नी को लेकर चला था। गीली घास में बना वह निशान साफ था, जहाँ बाघ और उसकी शिकार, दोनों भारी शरीरों के गुजरने से वह निशान दब गया था या हट गया था।

तब बाला ने एक बहुत ही साहसी और बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम किया था। अकेले, और केवल अपनी छोटी सी कुल्हाड़ी के साथ, वह निशान का पीछा करने निकल पड़ा था।

कुछ दूर रोशनी होने पर, कुछ फर्लांग चलने के बाद, उसे खून के निशान का पहला सुराग मिला, जहाँ बाघ ने अपने शिकार को पकड़ने के लिए ओस से भीगी झाड़ियों के बीच लेटकर उसे छुड़ाया था। इसके बाद, उस भयानक निशान का पीछा करना आसान हो गया, और उसने बाघ को एक पुराने सूखे पेड़ के नीचे भोजन करते हुए पकड़ लिया।

आदमखोर बाघ ने उसे देख लिया था। उसने अपने कान पीछे किए और गुर्राया। एक पल में ही वह उस पर हमला कर देता। लेकिन अपनी पत्नी को अपनी आँखों के सामने खाते हुए देखना युवा चेनचू के लिए असहनीय था। किसी निर्भीक और वीरतापूर्ण राक्षस ने उसे जकड़ लिया था, और घृणा से जलते हुए और चीखते हुए, वह अपनी छोटी कुल्हाड़ी लहराते हुए बाघ पर टूट पड़ा।

मैंने तुम्हें अक्सर बताया है कि सभी आदमखोरों में एक अजीब तरह की कायरता पाई जाती है। वे शिकार पर अचानक हमला तो कर देते हैं, लेकिन सीधे जवाबी हमले का सामना शायद ही कभी करते हैं। उस सुबह चेलामा का आदमखोर भी इस नियम का अपवाद नहीं था। वह तब तक हिचकिचाता रहा जब तक छोटा चेनचू लगभग उसके पास नहीं आ गया। फिर वह दुम दबाकर भाग गया।

सौभाग्यवश, अंततः बाला को अक्ल आ गई। यदि वह बाघ का पीछा करने का प्रयास करता, तो बाघ शायद अपना हौसला जुटाकर उसे मार डालता। इसके बजाय, उसने अपनी पत्नी का शव उठाया और उसे लेकर झोपड़ी की ओर भागा।

उस नन्हे आदिवासी द्वारा सरल शब्दों में सुनाई गई इस कहानी को सुनकर मेरा हृदय प्रशंसा और गर्व से भर गया कि भारत में ऐसे नायक मौजूद हैं, यहां तक कि उसकी सबसे विनम्र और बहिष्कृत जनजातियों के बीच भी।

झोपड़ी में पहुँचकर बाला ने आँसू बहाने में ज़रा भी समय बर्बाद नहीं किया। शव को अंदर छोड़कर, उसने अपनी बूढ़ी माँ को बच्चे को ले जाने के लिए कहा और दरवाज़ा जितना हो सके बंद करके मुझे सूचना देने के लिए रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा। यह सौभाग्य की बात थी कि उसने इतनी जल्दी कार्रवाई की, क्योंकि शेर के डर से उबरने और शव या झोपड़ी में वापस आने से पहले ही वह और उसकी माँ स्टेशन की ओर निकल पड़े थे।

यह कहानी सुनाते हुए वह छोटा बच्चा चुपचाप रो रहा था, और मैंने उसे सांत्वना देने की कोई कोशिश नहीं की। उसके आँसू उसके लिए अच्छे ही थे। वे प्रकृति की ओर से उसके गहरे मानसिक तनाव को कम करने वाला मरहम थे और शोक के सदमे के बाद उसकी दबी हुई भावनाओं को बाहर निकालने का एक ज़रिया थे। दूसरी ओर, मेरी दिखावटी सहानुभूति बिल्कुल बेकार थी। मैं उस दुखद खालीपन को भरने का बहाना भी नहीं ढूंढ सकता था जो उस नन्हे से जीवन में उस सुबह इतनी जल्दी आ गया था।

लेकिन आंसू ज्यादा देर तक नहीं टिके। आदिवासी स्वभाव से ही भाग्यवादी होते हैं। मैं उन्हें टोकना या जल्दबाजी करना नहीं चाहता था, लेकिन दस मिनट बाद बाला खड़े हो गए और कार्रवाई के लिए तैयार हो गए।

मैं तेज़ी से और गहराई से सोच रहा था, और मेरे मन में एक योजना बन रही थी। इसे अमल में लाने के लिए बाला को बहुत बड़ा बलिदान देना पड़ता, और मैं उससे यह बलिदान माँगने में हिचकिचा रहा था। शायद जंगल में बिताए वर्षों के कारण हमारे बीच विचारों की कुछ समानता थी, वह जन्म से और मैं अपनी मर्ज़ी से, जिसने हमें एक साथ बाँध रखा था। उसने मेरी ओर देखा, और एक बार फिर उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, उसने धीरे से सिर हिलाया। फिर अली बेग ने अनुवाद किया, 'वह मेरी पत्नी थी और मैं उससे प्यार करता हूँ, दोराई। लेकिन तुम्हें उसका शव चारा के रूप में इस्तेमाल करना होगा, ताकि मैं इस प्रियतम और अपने पिता की मृत्यु का बदला ले सकूँ।'

बहुत बातें हो चुकी थीं और बहुत समय बर्बाद हो चुका था। मैं उस भूमिका को निभाने के लिए दृढ़ संकल्पित था जो इस विनम्र लेकिन महान छोटे आदमी ने मुझे सौंपी थी। मैंने बस जल्दी से सब्जी की करी और चावल का भोजन किया, जो सदा ध्यान रखने वाले बालासुब्रमण्यम ने

अपनी पत्नी से मेरे लिए तैयार करवाया था। मैंने अपनी दोनों पानी की बोतलों में चाय और पानी भरा और दो वन रक्षकों और बाला के साथ चारपाई लेकर झोपड़ी की ओर चल पड़ा।

मृत लड़की का दृश्य दयनीय था। उसके शरीर पर जो थोड़े-बहुत कपड़े थे, वे बाघ ने फाड़ डाले थे, लेकिन बाला ने उसके पास मौजूद एकमात्र साड़ी से उसकी कमर ढक रखी थी। उस युवती के चेहरे पर एक अजीब सी शांति का भाव था। उसकी पीठ के घावों से खून रिसकर झोपड़ी के मिट्टी के फर्श पर फैल गया था, और उसके फटे हुए गले और स्तनों से खून की एक गहरी धारा रिसकर उसकी सांवली त्वचा पर सूख गई थी। हम चारों एक मिनट तक सम्मानपूर्वक मौन खड़े रहे, अपने सामने फर्श पर पड़े उन क्षत-विक्षत अवशेषों को देखते रहे, जो कुछ ही दिन पहले एक जीवित और खुशहाल माँ थी। फिर मैंने झोपड़ी का दरवाजा बंद कर दिया और बाला को इशारा किया कि वह हमें उस स्थान पर ले जाए जहाँ उसने बाघ को अपना शिकार शुरू करने की तैयारी करते हुए पाया था।

सूरज ओस को सोख चुका था, और आदमखोर बाघ और उसके शिकार के गुजरने से झुकी हुई भाला घास की कलियाँ फिर से सीधी खड़ी हो गई थीं, हल्की हवा में धीरे-धीरे हिल रही थीं। बाला उस जगह की ओर आगे बढ़ा जहाँ बाघ ने लड़की को पहली बार लिटाया था और अपनी पकड़ बदली थी। वहीं से खून के निशान शुरू हुए और थोड़ी ही देर में हमें एक पुराने सूखे पेड़ तक ले गए, जिसके नीचे बाघ ने लड़की को लिटाकर अपना भोजन शुरू किया था, तभी बाला ने उसे भगा दिया था।

हम चुपचाप चलते रहे और कुछ नहीं बोले, हालाँकि हम चारों सतर्क थे। लेकिन हमारी संख्या अधिक होने के कारण वास्तविक खतरा न के बराबर था। पेड़ के नीचे पहुँचकर हम रुके और ज़मीन की ओर देखा। ज़मीन सख्त थी और उस पर छोटी-छोटी सूखी घास उगी हुई थी। कोई भी पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे, और उन्हें खोजने की कोई आवश्यकता भी नहीं थी।

मुझे याद आया कि हैदराबाद में नवाब के हाथों घायल होने के बाद इस बाघ के बारे में यह मान्यता थी कि वह कभी किसी इंसान को अपना शिकार बनाने के लिए वापस नहीं लौटेगा। क्या वह अब लौटेगा? क्या उसके लिए जागते रहने का कोई फायदा होगा? ये सारे विचार निराशाजनक रूप से मेरे मन में कौंध गए। इस मामले में उम्मीद की एकमात्र किरण यही थी कि उसने लड़की का एक निवाला भी नहीं खाया था। लेकिन इसके विपरीत, बाला ने उसे डराकर भगा दिया था। सब कुछ देखते हुए, इस कोशिश के सफल होने की संभावना बहुत कम लग रही थी। लेकिन मुझे पता था कि मुझे कोशिश करनी ही होगी, क्योंकि कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

मैंने चारपाई रखने के लिए एक पेड़ की तलाश शुरू कर दी।

बाघ ने अपने भोजन के लिए घने जंगल में झाड़ियों और छोटी-छोटी वनस्पतियों से घिरी एक जगह चुनी थी। सूखे पेड़ के अलावा सबसे नज़दीकी पेड़ तीस गज दूर था। जब मैं बाघ की लगभग ऊँचाई पर घुटनों के बल बैठा, तो मुझे समझ आया कि घनी झाड़ियों के ऊपर से देखने और गोली चलाने का अच्छा मौका पाने के लिए मुझे बिल्कुल ऊपर बैठना होगा। संभवतः बाघ अंधेरा होने के बाद ही लौटेगा, अगर वह लौटा भी तो, और अगर मैं इससे नीचे बैठता तो टॉर्च की रोशनी झाड़ियों के पार नहीं जा पाती।

मैं तीस गज चलकर पेड़ तक गया और ऊपर देखा। उसकी ऊपरी शाखाएँ मेरी दो उंगलियों से भी पतली थीं और चारपाई पर बैठे मेरे वजन को संभालना उनके लिए नामुमकिन था।

अगला बड़ा पेड़ लगभग दस गज आगे था। मैं वहाँ पहुँचा और चढ़ने लगा। लेकिन मुझे केवल उस सूखे पेड़ के तने का ऊपरी हिस्सा ही दिखाई दे रहा था जहाँ बाघ था। कंटीली झाड़ियों ने उसके आधार और नीचे की हर चीज़ को छिपा रखा था।

यह एक पेचीदा सवाल था। मैं कहाँ बैठूँ?

मैं वापस उन तीनों आदमियों के पास गया और उस सूखे पेड़ के चारों ओर टहलने लगा। अपने समय में वह एक विशाल पेड़ रहा होगा और उसके तने का घेरा बारह से पंद्रह फीट था। उसके मरने का कोई स्पष्ट कारण नहीं था: शायद किसी बीमारी या कीट के हमले से। शायद उसकी जड़ें ज़मीन में ही गल गई हों। कारण जो भी हो, वह कुछ साल पहले ही नष्ट हो गया था; अब केवल उसकी सूखी शाखाएँ ही मेरे सिर के ऊपर बादलों से रहित आकाश में फैली हुई थीं।

दीमकों ने नीचे से विध्वंस का काम शुरू कर दिया था, और कुछ ही समय में कमजोर आधार मृत ढांचे का भार सहन नहीं कर पाएगा, और पूरा ढांचा जमीन पर गिरकर बिखर जाएगा और दीमकों तथा असंख्य लकड़ी के भृंगों और सभी प्रकार के कीड़ों का भोजन बन जाएगा जो फिर जमीन से उस पर हमला करेंगे।

मैं पेड़ के तने के और करीब गया। मेरे सिर के ठीक ऊपर एक जगह से मुख्य तने से तीन शाखाएँ फैली हुई थीं। नीचे व्यस्त दीमकों को सूखी मिट्टी की एक परत ने ढक रखा था। मैंने अपने पैर की उंगलियों के बल खड़े होकर तने के नीचे जाने वाले खोखले हिस्से में झाँका। पेड़ अंदर से खोखला था।

यह बात बाहर से, विशेषकर उस स्थान से जहां पीड़ित का शव रखा गया था, स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रही थी।

मैंने तीनों आदमियों को इशारा किया और अली बेग से फुसफुसाकर कहा कि वह बाला से कहे कि वह खोखले तने के अंदर जाकर देखे कि क्या मेरे लिए वहाँ कोई जगह बन सकती है। उसे भेजने से पहले, मैंने एहतियात के तौर पर अपनी अतिरिक्त टॉर्च से छेद में रोशनी डाली, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसमें कोई साँप, बिच्छू या कनखजूरा तो नहीं छिपा है। यह पक्का करने के बाद कि वहाँ दीमकों के अलावा कोई जीव नहीं है, बाला फुर्ती से नीचे उतर गया। मुझसे कम से कम एक फुट छोटा होने के कारण वह नज़र से ओझल हो गया, लेकिन फिर अचानक बाहर निकला और कहा कि उसके लिए तो वह जगह तंग है और मेरे भारी-भरकम शरीर के लिए उसमें जगह नहीं हो सकती। अंदर की जगह को बढ़ाना बिलकुल ज़रूरी है।

फिर मैंने देखा कि दीमकों ने दूसरी तरफ की लकड़ी को काफी अंदर तक कुतर दिया था।

बाला अंदर से धक्का दे रहा था और हम तीनों बाहर से अपने हाथों से खींच रहे थे, बीच-बीच में कृष्णप्पा की कुल्हाड़ी से हल्के-हल्के वार करते हुए, हमने उस छेद से सड़ी हुई लकड़ी को तोड़ना शुरू कर दिया जिससे बाला अंदर आया था। दीमकों ने पहले ही हमारा अधिकांश काम कर दिया था, और धीरे-धीरे हम छेद को बड़ा करते हुए नीचे जमीन की ओर बढ़ते गए। हमने प्रवेश द्वार का आकार न केवल ऊपर से बढ़ाया, बल्कि पेड़ के तने के दूसरी तरफ से लकड़ी हटाकर उस तरफ को घुटने तक पूरी तरह से खोल दिया। जैसे ही लकड़ी हटती गई और अंदर का हिस्सा खुल गया, हम अपने हाथ अंदर डाल पाए और बाला की छोटी मूठ वाली कुल्हाड़ी का भी इस्तेमाल कर पाए।

यह काफी मेहनत का काम था और इसमें लगभग दो घंटे लग गए, लेकिन आखिरकार मैं एक ऐसे छेद में पैर रखने में कामयाब हो गया जो मेरे पैरों को घुटनों तक अंदर डालने के लिए काफी बड़ा था। इसके बाद, मैं इतना स्वतंत्र हो गया कि मैंने अपने हाथों और राइफल को ट्रंक के दूसरी तरफ बनाए गए छेद से बाहर निकाल लिया।

मेरी स्थिति में कई गंभीर अड़चनें थीं। सबसे बड़ी अड़चन यह थी कि मेरी पीठ उस जगह की ओर थी जहाँ बाघ ने महिला को उतारा था, और जहाँ वह संभवतः वापस आता—यानी, अगर वह वापस आता। मैं मुड़कर उस दिशा में नहीं देख सकता था क्योंकि पेड़ का तना मेरे पीछे था।

इसके अलावा, हम तने के इस हिस्से से लकड़ी नहीं निकाल पाए थे, क्योंकि दीमकों ने दूसरी तरफ ज़्यादा खा लिया था, जैसा कि मैंने बताया है। ऐसा करने के लिए हमें लकड़ी को काटना पड़ता, जिसके लिए हमारे पास समय नहीं था, साथ ही इससे शोर भी होता।

इन सभी कमियों को देखते हुए यही लग रहा था कि जब हम अंततः कन्या-पत्नी के शव को उसकी जगह पर रखेंगे, तो वह उस स्थान पर नहीं हो सकता जहाँ बाघ ने उसे छोड़ा था। हमें उसकी स्थिति थोड़ी बदलनी ही पड़ेगी। अगर मैंने ऐसा नहीं किया और बाघ आ गया, तो या तो वह मेरे आने से पहले ही शव को हटा देगा, या वह मुझसे पाँच गज की दूरी पर बैठकर उसे खा जाएगा और मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा। बेशक, मैं छिपकर पेड़ के तने के चारों ओर रेंग सकता था। लेकिन मैं ऐसा करने से बहुत डर रहा था। इसके अलावा, अंधेरे में तने से बाहर निकलते समय शायद कुछ आवाज़ हो जाती। बाघ मुझे सुन लेता और शायद गायब हो जाता; या, इससे भी ज़्यादा डरावना, वह मुझे तने के बीच में ही मिल जाता। यह सोचकर मुझे बहुत डर लग रहा था।

दूसरी बड़ी असुविधा यह थी कि मुझे पूरी रात सीधा खड़ा रहना पड़ता। मैं उकड़ू भी नहीं बैठ सकता था, क्योंकि घुटने के नीचे का छेद मेरे पैरों के लिए बस इतना ही बड़ा था।

तीसरी बात, अगर बाघ लाश के पास आने से पहले जगह का जायज़ा लेता, जैसा कि हर समझदार बाघ करता है, तो हमारे द्वारा बनाए गए छेद के सामने आते ही वह सीधे मेरी तरफ देखता। बेशक, मैं अपने आदमियों को पत्तों और लताओं के रूप में कुछ छिपाने का इंतज़ाम करने को कहता, लेकिन अगर वह सीधे मेरी तरफ देखता, तो क्या मैं उसकी जंगल में पली-बढ़ी आँखों को धोखा दे पाता? कम से कम, क्या उसे इन पत्तों और दूसरी चीज़ों पर शक नहीं होता, जो अचानक उस पेड़ के तने पर उग आई थीं जो उसी सुबह बिल्कुल सूखा था?

फिर भी, अगर कोई कोबरा, बिच्छू या कोई और खतरनाक रेंगने वाला जीव ठंडी रात में खुद को गर्म रखने के लिए सूखे पेड़ के खोखले तने को चुन लेता, तो मैं सचमुच बड़ी मुसीबत में पड़ जाता। मुसीबत की इतनी सारी संभावनाएं थीं कि मैंने उन्हें नजरअंदाज कर दिया। मुझे जोखिम उठाना ही होगा, हालांकि सफलता की संभावना दस में से एक ही लग रही थी।

मैंने अपना कोट ज़मीन पर बिछाया और उस पर हमने सूखी लकड़ी का हर टुकड़ा, यहाँ तक कि आखिरी टुकड़ा भी, ढेर कर दिया। फिर हमने कोट को चारों कोनों से पकड़कर दूर ले जाकर मलबा फेंक दिया।

फिर हम झोपड़ी में लौट आए, जहाँ बाला ने बहादुरी से अपनी पत्नी का शव अपने कंधे पर उठा लिया। हम एक कतार में चुपचाप पेड़ की ओर वापस चले। मैंने उससे कहा कि वह शव को हमारे द्वारा बनाए गए छेद के थोड़ा बाईं ओर रख दे, ताकि बाघ उसे देखते समय छेद और मेरे सीधे संपर्क में न आए। खोखले हिस्से में मेरे और टॉर्च लगी राइफल के अलावा और कुछ रखने की जगह नहीं थी, इसलिए मैंने एक चपाती और अपनी पानी की बोतल से थोड़ी चाय पी ली और फिर उसे अली बेग को वापस ले जाने के लिए दे दिया।

मैं खोखले में दाखिल हुआ। बाला और कृष्णप्पा ने फिर खुले हिस्से पर कुछ लकड़ियाँ रख दीं, जिनके बीच उन्होंने पत्तियाँ और लताएँ इस तरह लपेट दीं कि मैं जितना हो सके छिप सकूँ। बाला ने इस काम को बड़ी गंभीरता से लिया, वह बार-बार पीछे हटकर अलग-अलग कोणों से देखता रहा कि कहीं मैं अंदर से दिखाई तो नहीं दे रहा। उसने मेरे सीने के स्तर पर खुले हिस्से के दोनों ओर एक बड़ी लकड़ी फंसा दी, ताकि गोली चलाते समय मैं अपनी राइफल उस पर टिका सकूँ। मैंने पाया कि मैं बिना कोई आवाज़ किए अपनी राइफल को धीरे-धीरे अपने शरीर के ऊपर से खिसकाकर उस लकड़ी के ऊपर से ले जा सकता था। दोनों चेंचुओं ने लकड़ी और तने को मेरे चेहरे के दोनों ओर लताओं से लपेट दिया, उन्हें पेड़ की दो ऊँची शाखाओं से नीचे की ओर लकड़ी

पर लटका दिया। अंत में, उन्होंने मेरे ऊपर फैली तीन शाखाओं के आधार पर पत्तियों और लकड़ी का एक बड़ा ढेर फंसा दिया। मैं सचमुच उस खोखले में पूरी तरह से बंद हो गया था।

जाने से पहले, बाला ने अपनी मृत पत्नी को अंतिम विदाई दी। उसने उसके ठंडे माथे को चूमा और उसके पैरों को भी चूमा। फिर वह शव के पास घुटनों के बल बैठ गया और ज़मीन पर हाथ रखकर प्रणाम किया, ताकि वह उस अपमान के लिए क्षमा मांग सके जिसका सामना वह उसके निर्धन शरीर को करा रहा था।

जब वह दोबारा उठा, तो उसकी आँखों में आँसू नहीं थे। उसका चेहरा दृढ़ था। उसने बिना कुछ कहे मेरी ओर देखा। एक बार फिर जंगल से प्रेम करने वाले लोगों का सहज संचार हुआ। उसकी नज़र ने, बोले गए शब्दों से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से कहा: 'मैंने अपनी पूरी कोशिश की है और अपने प्रियतम के शरीर का बलिदान भी दिया है। अब बाकी सब तुम पर निर्भर है।' मैंने निश्चय किया कि मैं उसे निराश नहीं करूँगा।

कुछ ही देर बाद मेरे तीनों अनुयायी झोपड़ी की ओर चले गए और मैं अकेला रह गया।

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। समय शाम के 4:45 बज रहे थे। झाड़ियों से छनकर आती तेज़ धूप की किरणें मृत महिला की लाल और काली साड़ी पर पड़ रही थीं, जिसे बाला ने उसकी कमर पर लपेटा हुआ था। उसके बाल ज़मीन पर बिखरे हुए थे, जो उसके सिर और चेहरे को घेरे हुए थे। अब चेहरा मेरी ओर मुड़ा हुआ था और उस पर शांति का भाव था। शरीर अकड़ चुका था और एक हाथ उसकी छाती पर अकड़ा हुआ पड़ा था, जहाँ शायद उसके पति ने सुबह उसके शरीर को झोपड़ी में लाते समय रखा था। दूसरा हाथ उसके बगल में पड़ा था। शाम की हल्की हवा घास को हिला रही थी और साड़ी के एक कोने को हल्के से फड़फड़ा रही थी या उसके काले बालों की एक लट को ऊपर उठा रही थी।

हवा से पत्तों और घास के हिलने के अलावा और कुछ भी नहीं हिल रहा था। मेरी घड़ी की हल्की टिक-टिक और एक धीमी सी धड़कन की आवाज़ के अलावा, जिसे पहचानने में मुझे काफी समय लगा, मुझे कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

मैंने धीरे-धीरे, इंच-इंच करके अपने पैर फैलाए और पीछे झुकते हुए उन्हें जितना हो सके आगे बढ़ाया। पूरी रात मेरे पैरों को ही मेरा भार उठाना था, और उनके प्रति मेरा सबसे कम कर्तव्य यही था कि मैं उस भार को यथासंभव समान रूप से वितरित करने का प्रयास करूं।

पैंतालीस मिनट बाद जंगल में हलचल मच गई, हमेशा की तरह मोर और जंगली मुर्गों की आवाजें सुनाई देने लगीं। एक भूरा मुर्गा मेरे सामने खुले मैदान में अकड़ते हुए आया और आखिरी दम तक चुनौती भरी बांग देता रहा। 'कुक क्य'आ क्य'आ खुक्'म', उसने पुकारा, और कुछ ही सेकंड में दूर से एक दूसरे जंगली मुर्गे ने उसकी आवाज का जवाब दिया। 'व्हीव, कुक खुक्'म', उसने उत्तर दिया। पहले मुर्गे ने अपने पंख फड़फड़ाए और उस दिशा में देखा जहाँ से जवाब आया था। तभी हवा का एक झोंका आया और साड़ी का कोना हिल गया। पंखों की तेज़ फड़फड़ाहट के साथ मुर्गा गायब हो गया।

'मी-इआओ मी-इआओ' की आवाज़ एक मोर ने लगाई, जिसका जवाब उसके साथियों ने भी इसी तरह की आवाज़ों से दिया, क्योंकि भारी-भरकम पक्षी एक-एक करके फड़फड़ाते हुए दूर के किसी पेड़ पर समूहों में आराम करने के लिए चले गए। झाड़ियों में स्पूरफाउल अपनी लड़ाई वाली आवाज़ें निकाल रहे थे, जबकि आखिरी तितलियाँ और भृंग अपने घर की ओर उड़ते या भिनभिनाते हुए उस खास पत्ते या अन्य आश्रय की ओर जा रहे थे जिसे उन्होंने उस रात के लिए चुना था।

सभी उष्णकटिबंधीय देशों की तरह दिन का उजाला तेज़ी से ढल रहा था। धूप में उड़ने वाले

मेरे साथी पक्षी निस्संदेह अपने सिर पंखों के नीचे छिपा रहे थे, या कम से कम बहुत जल्द ऐसा करने वाले थे। ढलती रोशनी के साथ, आकाश से कुछ कोमल सा उतरा और एक गज दूर ज़मीन पर आकर बैठ गया। यह एक नाइटजार था, जो भारतीय जंगल की रात का संदेशवाहक होता है। 'चक-चक-चक-चक' की आवाज़ उसके चहचहाने जैसी थी, और सूखी घास पर उसकी भूरी आकृति किसी पत्थर जैसी लग रही थी। फिर, अपने पंखों को खूबसूरती से फैलाकर वह उड़ गया। मेरे ठीक ऊपर से 'चीप-चीप-चीप' की आवाज़ आई। दो चमगादड़ पेड़ के चारों ओर तेज़ी से चक्कर लगा रहे थे, ताकि वे देर से आए दिन के कीड़ों को पकड़ सकें जो अभी आराम करने वाले थे, साथ ही रात के कीड़ों में से कुछ जल्दी आने वाले कीड़ों को भी।

मैंने यह सब पहले भी कई बार देखा और सुना था; दिन के जीवों की धीमी होती आवाज़ रात के जीवों की तेज़ होती आवाज़ में बदल जाती थी। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने पहले कभी ऐसी स्थिति और परिस्थितियों का सामना नहीं किया था, जैसी मैं अब कर रहा था।

फिर कुछ देर के लिए अंधेरा छा गया—पर ज्यादा देर नहीं, क्योंकि तारे अकेले और समूहों में ऊपर टिमटिमाने लगे, जिससे मेरे आस-पास के जंगल पर हल्की रोशनी फैल गई। उजाला होने तक यही मेरी एकमात्र रोशनी थी, क्योंकि यह सब अमावस्या की रातों में हुआ था।

मच्छरों को मुझे ढूंढने में थोड़ा समय लगा, लेकिन जब उनके जासूसों ने आखिरकार मुझे खोज निकाला, तो उन्होंने मुख्यालय को सूचना देने में जरा भी देर नहीं की। फिर तो बमवर्षक विमानों के पूरे दस्ते ने इसका पूरा फायदा उठाया। मैंने अपने होंठ फुलाकर उन्हें अपने चेहरे से भगा दिया और अपने हाथों को अपनी पतलून की जेबों में डाल लिया ताकि उन चालाक मच्छरों को चकमा दे सकूं जो मेरे तने के अंदर घुसकर मेरा खून चूसने पर तुले हुए थे।

आठ बज गए। मैंने एक-एक करके पैर उठाए और अपने कैनवास के जूतों के अंदर अपनी उंगलियों को हिलाया ताकि पैरों के तलवों में रक्त संचार बहाल हो सके। इस बाघ की यह बदनामी थी कि वह कभी भी अपने शिकार किए हुए इंसान के पास वापस नहीं आता था। और मैंने खुद को रात के लिए इस अजीब और असुविधाजनक स्थिति में डाल दिया था। तभी बाला का आँसुओं से भीगा चेहरा और वह मृत चेहरा, जो अब अँधेरे में मेरे इतने करीब पड़ा था लेकिन मेरी नज़रों से छिपा हुआ था, मेरे सामने आ गया, और मेरी बुद्धि ने मुझे आश्वस्त किया कि उस क्षण मैं जो कर रहा था वही मेरे लिए एकमात्र संभव उपाय था।

मेरे विचार कहीं भटक रहे थे कि अचानक मैं पूरी तरह सतर्क हो गया, मेरी हर नस तनाव में थी। मैंने कुछ नहीं देखा था; मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी थी। लेकिन जिस तरह मुझे अपना नाम याद था, उसी तरह मुझे पता था कि आदमखोर बाघ आस-पास ही है। मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मेरे पूरे शरीर में एक हल्की सी घबराहट दौड़ गई। किसी अनजानी और अवर्णनीय भावना ने मुझे चेतावनी दी थी। हाँ, निःसंदेह, बाघ वहीं था।

मैंने हर संभव कोशिश की कि कोई आवाज़ सुनाई दे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। हिरण या जंगल के अन्य जीवों की कोई चेतावनी भरी आवाज़ भी बिल्ली जैसी दिखने वाली इस प्रजाति की हलचल का संकेत नहीं दे रही थी।

इतनी खामोशी और लाश के पास जाने में इतनी देरी का मतलब सिर्फ एक ही था। बाघ को शक हो रहा था। क्या यह उस सुबह बाला द्वारा दिए गए डर का असर था, या उसने अपने आसपास कुछ देखा या महसूस किया था? सबसे बढ़कर, क्या उसने मुझे देखा या महसूस किया था?

मुझे आखिरी सवाल का जवाब जानने के लिए बहुत कुछ देने को तैयार था।

ऐसा लगा मानो अनंत काल बीत गया हो, फिर मुझे हल्की सी खरखराहट की आवाज सुनाई

दी; उसके बाद किसी चीज के घसीटे जाने की आवाज आई।

इसका केवल एक ही कारण हो सकता था। बाघ मृत महिला के शरीर को घसीटकर ले जा रहा था। अगले ही पल वह वहां से गायब हो जाएगा।

मैं सावधानी को दरकिनार करते हुए, अपनी मौजूदगी का खुलासा करने के लिए अपना हथियार निकालकर टॉर्च जलाकर गोली चलाने का जोखिम उठाने ही वाला था कि तभी अचानक घसीटना बंद हो गया। क्या बाघ शव के साथ गायब हो गया था?

फिर खाने की आवाज़ें और हड्डियों के चटकने की आवाज़ें आने लगीं। ये आवाज़ें पेड़ के दूसरी तरफ से और मेरे पीछे से आ रही थीं।

इसका स्पष्टीकरण आसान था। किसी अज्ञात कारण से आदमखोर बाघ शव को घसीटकर उसी जगह वापस ले आया था जहाँ उसने सुबह उसे छोड़ा था। शायद सहज प्रवृत्ति। कम से कम इससे एक बात तो स्पष्ट हो गई: बाघ को शक नहीं था और न ही वह डरा हुआ था, जैसा कि मैंने पहले सोचा था। अगर ऐसा होता, तो वह या तो चुपके से निकल जाता या शव को लेकर भाग जाता। अगर उसे मेरी मौजूदगी का एहसास हो जाता, तो वह हमला भी कर सकता था।

उसने इनमें से कोई भी काम नहीं किया था, जिससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि वह घबराया हुआ नहीं था, बल्कि वह केवल अपना भोजन वहीं खाना चाहता था जहाँ उसने उसे छोड़ा था। शायद उसने मन ही मन सोचा होगा कि किसी पहले आए मेहमान, जैसे कि सियार या लकड़बग्घा, ने उसे वहाँ से हटा दिया होगा।

मैंने राहत की सांस ली—लेकिन तभी मुझे याद आया कि अगर मुझे तस्वीर लेनी है तो मुझे अपने आश्रय से बाहर निकलकर खुले में जाना होगा और पेड़ के तने के चारों ओर घूमना होगा। तब मेरी सारी राहत गायब हो गई।

आपको याद होगा कि बाला और कृष्णप्पा ने मुझे लगभग लकड़ियों, पत्तों, लताओं आदि की मदद से घेर लिया था। बाहर निकलने के लिए मुझे पहले इन बाधाओं को हटाना पड़ता। ऐसा करने पर थोड़ी सी आवाज़ ज़रूर होती। बाघ सुन लेता। वह भाग सकता था, या इससे भी बुरा यह हो सकता था कि वह कारण जानने के लिए पेड़ के चारों ओर घूमकर मुझे ढूंढ लेता, इससे पहले कि मैं तैयार भी होता।

बस एक ही काम करना था, और मैंने वही किया। मैंने बाघ को बड़े चाव से अपना भोजन करने दिया।

जब भी वह मांस नोचता या हड्डी चबाता और शोर मचाता, मैं धीरे से एक पत्ता या लता को सुलझाता या एक टहनी निकालकर उसे खोखले पेड़ के अंदर से अपने पैरों की ओर सरका देता। इस तरह मैं बाघ के खाते समय बाहर निकलने का रास्ता साफ कर देता था।

फिर मैंने अपना दाहिना पैर हवा में उठाया और एक मिनट के लिए उसे स्थिर रखा ताकि रक्त संचार सामान्य हो सके, फिर उसे बहुत सावधानी से पेड़ के तने के बाहर निकाला। मैं इंतजार करता रहा; लेकिन बाघ अभी भी हड्डियाँ चबा रहा था। मैंने अपने बाएं हाथ से छेद को सहारा दिया और बहुत सावधानी से अपना बायां पैर अपने दाहिने पैर के पास ले आया।

कुछ क्षणों के लिए मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं तस्वीर नहीं ले पाया, और अगर उस आदमखोर ने मुझे देख लिया होता तो मेरे लिए वाकई बहुत दुर्भाग्यपूर्ण होता। लेकिन सौभाग्य से वह अपने भोजन में इतना मग्न था।

मैं धीरे-धीरे, पेड़ के तने के चारों ओर एक-एक इंच करके आगे बढ़ता गया। फिर वो पल आया जब एक और इंच आगे बढ़ने पर मैं दिख जाता। अगर बाघ पेड़ की ओर मुंह करके खड़ा होता तो वो मुझे ज़रूर देख लेता। अगर नहीं, तो शायद वो मुझे तुरंत देख न पाता।

कार्रवाई का समय आ गया था और मुझे जोखिम उठाना ही था। मैंने राइफल उठाई, आसमान की ओर निशाना साधा और उसका बट अपने कंधे पर टिका लिया। मैं हर कदम के साथ एक इंच आगे बढ़ा। फिर मैंने थोड़ा सा गर्दन घुमाकर धड़ के चारों ओर देखा।

मेरी आँखें धुंधली रोशनी की आदी हो चुकी थीं और मैंने बाघ को ज़मीन पर पूरी लंबाई में लेटे हुए देखा, जो उस काली लाश के ऊपर पड़ा था जो उस औरत का बचा हुआ हिस्सा था। वह मुझसे थोड़ा दूर झुका हुआ था, उस दिशा की ओर मुँह किए हुए जहाँ से हम उस शाम आए थे। उस रोशनी में राइफल का निशाना दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए मुझे गोली चलाने के लिए टॉर्च का इस्तेमाल करना पड़ा।

मैंने राइफल को दाएँ कंधे पर रखकर फायरिंग पोजीशन में लाने के लिए अपना बायाँ हाथ धीरे से उठाया। मेरा बायाँ अंगूठा बेचैनी से टॉर्च का स्विच ढूँढ रहा था। किसी चीज़ ने बाघ को आगाह कर दिया कि सब कुछ ठीक नहीं है। जैसे ही रोशनी की किरण उसके सिर और चमकती आँखों पर पड़ी, उसने पीछे मुड़कर देखा, जबकि उसके होठों से मांस और खून टपक रहा था।

मेरी पहली गोली उसकी गर्दन में लगी, और जैसे ही वह सिर के बल उछलकर गिरा, मैंने अपनी विंचेस्टर राइफल का निचला लीवर ऐसे चलाया जैसे मैंने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी नहीं चलाया था। वह बुरी तरह तड़प रहा था जब मैंने उस पर दूसरी गोली दागी, फिर तीसरी। उसके बाद क्या हुआ, यह मैं आपको बता नहीं सकता। बस वह गायब हो गया।

मेरी पहली गोली चलने के बाद से ही वह दर्द और गुस्से से दहाड़ रहा था। गोलियों की बौछार के दौरान भी वह दहाड़ता रहा। अब भी वह गुस्से और पीड़ा में दहाड़ रहा था और झाड़ियों को नोंच रहा था, लेकिन अब वह मुझे दिखाई नहीं दे रहा था। वह जंगल की ओट में कूद गया था।

मैं जितनी जल्दी हो सके सूखे पेड़ के खोखले तने में वापस घुस गया और आगे की स्थिति का इंतज़ार करने लगा। मैं अभी-अभी चलाई गई तीन गोलियों को बदलना चाहता था, ताकि मेरे पास पूरी मैगज़ीन तैयार रहे। लेकिन .405 विंचेस्टर राइफल इस तरह के काम के लिए उपयुक्त नहीं है। आधी खाली मैगज़ीन में और गोलियां डालने पर 'जाम' होने की संभावना रहती है। अगर ऐसा हुआ तो मैं बेबस हो जाऊंगा। मैंने इसे ऐसे ही छोड़ देने का फैसला किया। मेरे पास अभी भी एक गोली बची थी जिससे मैं बाघ को रोक सकता था। हालांकि मेरी राइफल की मैगज़ीन में पांच गोलियां आती हैं, लेकिन मैं आमतौर पर केवल चार ही भरता हूं, एक गोली ब्रीच में और तीन मैगज़ीन में रखता हूं जब मैं किसी मांसाहारी जानवर का शिकार करने के लिए बैठता हूं। यह 'जाम' से बचने के लिए एक अतिरिक्त सावधानी है।

मुझे यह सोचने लगा कि क्या पेड़ के अंदर वापस जाना मेरा सही फैसला था। शायद बाहर ही रहना बेहतर होता। कम से कम अगर बाघ हमला करता तो मैं उसे देख तो सकता था। अब तो मैं उसे तब तक नहीं देख सकता था जब तक वह झाड़ियों से निकलकर मेरे सामने न आ जाए।

लेकिन अब पछताने का कोई समय नहीं था। मैं वहीं खड़ा रहा। मेरा शरीर पसीने से भीग चुका था और राइफल पकड़े रहने से मेरे हाथ फिसल रहे थे। मुझे बहुत बेचैनी हो रही थी और सिर में तेज दर्द हो रहा था।

बाघ अभी भी दहाड़ रहा था और झाड़ियों को नोच रहा था, लेकिन कुछ समय बाद आवाज़ धीमी हो गई और फिर दूर जाकर गायब हो गई। वह जानवर मरा नहीं था, लेकिन कम से कम वह चला गया था और मैं सुरक्षित था। और मैं शुक्रगुजार था। फिर मुझे उल्टी आई—और इससे मुझे बहुत अच्छा लगा।

दुर्भाग्यवश, बाघ की दहाड़ की दिशा मेरी भ्रमित इंद्रियों को समझ नहीं आई और मैं

अनिश्चित था कि वह किस ओर गया है। ऐसी स्थिति में अंधेरे में बाला की झोपड़ी तक पैदल जाना आत्मघाती होता। मुझे वहाँ तक पहुँचने के लिए टॉर्च का इस्तेमाल करना पड़ता, और अगर आदमखोर बाघ झाड़ियों में छिपा हुआ होता तो टॉर्च मेरी राह में बाधा बन जाती।

इसलिए मैंने बाकी की रात उस सुनसान घाटी में, थके हुए पैरों पर लड़खड़ाते हुए बिताई। भोर होते ही मैं निराश हो गया, फिर मुझे याद आया कि मैं ज़िंदा रहने के लिए भाग्यशाली था। इस बात से मुझे खुशी हुई।

जैसे ही उजाला हुआ और दिखाई देने लगा, मैं खोखले पेड़ से बाहर निकला और बाहर ज़मीन पर बैठ गया। क्या आपने कभी तेरह घंटे तक लगातार पूरी रात खड़े रहने की कोशिश की है? कभी खुद करके देखिए।

लगभग पंद्रह मिनट तक, जब रोशनी तेज़ हुई, मैं आराम करता रहा। फिर मैं यह देखने के लिए उठा कि क्या दिखाई दे रहा है। बाघ के खाने के दौरान, मैंने खुद को टहनियों और पत्तों से मुक्त करने और पेड़ से बाहर निकलने में जो समय लगाया, वह शायद दस मिनट से ज़्यादा नहीं रहा होगा—ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह मिनट—लेकिन बाघ उस मृत महिला का आधे से ज़्यादा हिस्सा खा चुका था। उसका सिर और हाथ शरीर से अलग होकर घास पर बिखरे पड़े थे। एक जांघ और एक टांग भी वहीं थी, और दूसरे पैर का कुछ हिस्सा भी। बाकी का शरीर गायब था, सिवाय कुतरे हुए रीढ़ की हड्डियों के, जिनमें कुछ पसलियों की हड्डियाँ अभी भी जुड़ी हुई थीं।

जहां आदमखोर ने पीड़ा में जमीन को रौंद डाला था, वहां की ज़मीन फटी हुई थी। फिर वह कुछ गज दूर झाड़ियों में कूद गया। वहां झाड़ियों के तने कटे हुए थे और पत्तियां उसके खून से सनी हुई थीं। यही वह जगह थी जहां से मैंने उसकी दहाड़ और उत्पात की आवाज सुनी थी, जब मैं खोखले पेड़ में दुबका हुआ था। वहां से खून का निशान जंगल में दूर चला गया। मैंने कुछ गज तक उसका पीछा किया और पाया कि वह लगभग उत्तर दिशा की ओर जा रहा था। मैं अपेक्षाकृत सुरक्षित रूप से झोपड़ी में लौट सकता था।

मैंने वैसा ही किया। बाला और पहरेदारों ने झोपड़ी से गोलीबारी की आवाज़ सुनी थी, जहाँ वे जागते हुए लेटे हुए थे। उजाला होते ही वे लगभग एक फर्लांग आगे बढ़ गए थे और मेरा इंतज़ार कर रहे थे। दरअसल, चेन्चू लोग उस सूखे पेड़ तक आ जाते, लेकिन अली बेग ने उन्हें आगाह किया कि मैंने शायद बाघ को सिर्फ़ घायल किया हो और पता नहीं वह कहाँ छिपा होगा।

मैंने उन्हें उस भयानक रात में घटी सारी घटनाएँ बताईं।

मेरी घड़ी में सुबह के 6:25 बज रहे थे। मैंने बाघ पर पिछली रात करीब 8:30 बजे गोली चलाई होगी—दस घंटे पहले। मैंने सोचा, अब तक तो वह मर चुका होगा। या फिर, अगर मरा नहीं तो इतना खून बह गया होगा और ज़ख्मों से उसका शरीर इतना अकड़ गया होगा कि वह कहीं बुरी हालत में पड़ा होगा। मैं खून के निशान का पीछा करने से खुद को रोक नहीं पाया।

अली बेग निहत्था था, इसलिए मैंने उससे झोपड़ी में वापस जाकर हमारा इंतज़ार करने को कहा। उसने जवाब दिया कि उसे वहाँ अकेले रहने से डर लग रहा है और वह हमारे साथ चलना और जोखिम उठाना ज़्यादा पसंद करेगा। इसलिए हम वापस उस सूखे पेड़ के पास लौट गए।

मैंने बाला से कहा था कि मैं ऐसा करना नहीं चाहता था, लेकिन मजबूरी में मुझे बाघ को उसकी पत्नी का शव खाने देना पड़ा ताकि उसका ध्यान भटका सकूँ और मैं छलावरण में लगी लकड़ियों और लताओं से खुद को मुक्त कर सकूँ। उसने तब मेरी बात मान ली थी। लेकिन जब हम पेड़ के पास पहुँचे और उसने उस बेचारी औरत के क्षत-विक्षत अवशेष देखे, तो उसे गहरा सदमा लगा। वह छोटा सा आदमी पूरी तरह टूट गया और फूट-फूट कर रोने लगा।

उसने कहा कि जब तक वह शव का अंतिम संस्कार नहीं कर देता, तब तक वह आगे नहीं

बढ़ेगा। हम दोनों वन रक्षकों ने उसे वहीं पर यह काम शुरू करने से रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। वास्तव में, यह कहना मुश्किल है कि अगर अली बेग ने उसे साफ-साफ न कहा होता कि हम सब, और विशेष रूप से वह, स्थानीय पुलिस के शिकंजे में आ जाएंगे, तो हम सफल हो पाते। पुलिस घटना की रिपोर्ट मांगेगी, जिसके बाद वे किसी तरह की जांच करेंगे और शव का निरीक्षण करेंगे। अगर उसने शव को देखे बिना ही उसका अंतिम संस्कार कर दिया, तो पुलिस उसे बख्शेगी नहीं। इसलिए हमने डालियाँ तोड़कर घटनास्थल को ढक दिया ताकि गिद्ध न आ सकें, वरना वे तुरंत वहाँ पहुँच जाते।

हम सभी को उम्मीद थी कि हमें बाघ बहुत कम दूरी के भीतर, मृत या मरणासन्न अवस्था में मिल जाएगा, और हम जल्द ही वापस आकर पुलिस को आवश्यक सूचना दे सकेंगे।

यहीं पर हमसे बहुत बड़ी गलती हुई थी।

खून के निशान झाड़ियों से होकर गुजर रहे थे। जहाँ तक मेरी नज़र जा रही थी, बाघ को दो जगहों पर चोट लगी थी, जिनमें से एक ऊपरी हिस्से में थी—निस्संदेह मेरी पहली गोली से, जो मैंने उसकी गर्दन पर चलाई थी। दूसरे घाव से लगातार खून टपक रहा था, और जब हम उसका पीछा करते हुए आगे बढ़े तो हमें जमे हुए खून में झिल्ली का एक छोटा सा टुकड़ा मिला। मुझे लगा कि यह पेट में लगी चोट का संकेत था।

जानवर पहले मृत पेड़ से दो फर्लांग की दूरी पर एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। यहाँ उल्टी से निकले, खून से लथपथ मांस के ढेर—उस बेचारी औरत का मांस—यह दर्शाते हैं कि बाघ को उल्टी का गंभीर दौरा पड़ा था और इस बात की पुष्टि करते हैं कि मेरी एक गोली उसके पेट में घुस गई थी।

वहाँ से वह लगभग आधा मील और आगे बढ़ा, जहाँ वह घास पर लेट गया। खून के दो छोटे-छोटे धब्बे इस बात की पुष्टि करते हैं कि उसे दो बार गोली लगी थी। पेट का घाव ज़्यादा गंभीर प्रतीत होता था, क्योंकि वहाँ से बहुत अधिक खून बह रहा था।

फिर भी, जानवर चलता रहा। खून का निशान, जो शुरू में बहुत अधिक था, अब कम हो गया था। संभवतः बाहरी त्वचा, झिल्ली या वसा ने गोली के पेट में घुसने से बने बाहरी छेद को ढक लिया था, जिससे खून बहना बंद हो गया था। संभवतः केवल गर्दन के घाव से ही खून बहता रहा और यही कारण था कि निशान कम हो गया था।

हम दो पहाड़ियों के बीच एक धारा के पास पहुँचे जहाँ बाघ पानी में लेटा हुआ था, जिसमें अभी भी हल्का गुलाबीपन था। किनारे पर कीचड़ में थोड़ा सा खून फैला हुआ था। यहाँ पहली बार पूरे रास्ते में बाघ के पैरों के निशान साफ़ दिखाई दिए। ये एक बड़े नर बाघ के बड़े-बड़े, थाली के आकार के निशान थे।

फिर भी निशान जारी रहे, लेकिन खून बहना काफी कम हो गया था। जल्द ही बस कहीं-कहीं एक-दो बूँदें ही दिखाई दे रही थीं। मैं यह देखकर बहुत हैरान था।

मेरी पहली गोली बाघ की गर्दन पर लगी थी। मुझे पता था कि निशाना नहीं चूका, क्योंकि उसने पूरी तरह से पलटी मारी थी, जिससे पता चलता था कि उसे गोली लगी है। उसके बाद मैंने दो बार गोली चलाई और उनमें से एक गोली उसके पेट में लगी थी। उल्टी में निकले मांस की मात्रा ने भी इसकी पुष्टि कर दी थी। शुरुआत में हम खून के एक लंबे निशान का पीछा कर रहे थे, जो उस जगह से शुरू हुआ था जहाँ आदमखोर बाघ दर्द और गुस्से में झाड़ियों को चीर रहा था। उसके बाद वह दो से ज़्यादा बार आराम कर चुका था। इन सभी बातों और पिछले कई सालों के मेरे अनुभव से यही लगता था कि खेल के सभी नियमों के अनुसार बाघ को अब तक मर जाना चाहिए था, या लगभग खून बहने से मर जाना चाहिए था। हमें उसे किसी झाड़ी में बेहद कमजोर

हालत में पड़ा हुआ मिलना चाहिए था। वास्तव में, हमें लगा था कि निशान छोटा और आसान होगा।

इन सभी अपेक्षित घटनाओं के विपरीत, आदमखोर बाघ लगातार उत्तर दिशा की ओर बढ़ता जा रहा था। उसके घावों से टपकता या झाड़ियों पर फैलता खून अब ज़मीन और पत्तों पर कम ही दिखाई दे रहा था और उसके रास्ते का पता लगाना कठिन होता जा रहा था। हम पगडंडियों से बहुत दूर आ चुके थे और जंगल के भीतरी हिस्से में कई मील अंदर पहुँच चुके थे, जहाँ बस कहीं-कहीं जानवरों के चलने के रास्ते ही दिखाई दे रहे थे। इलाका बहुत पहाड़ी हो चुका था, गहरी, पत्थरों से भरी घाटियों से घिरा हुआ था, जिनमें से प्रत्येक में एक छोटी, रिसती हुई धारा बह रही थी। पानी की कोई कमी नहीं थी, और हमने देखा कि बाघ कई बार इन धाराओं से पानी पीने के लिए रुका था। जंगल के बड़े पेड़ घनी झाड़ियों में बदल गए थे, जिनमें ज्यादातर लैंटाना और अन्य कांटेदार किस्में थीं।

एक बजने में दस मिनट बाकी थे, लेकिन हम चारों ने चारों ओर फैलकर एक बड़े घेरे में खोजबीन की, फिर भी हमें खून की एक भी बूंद नहीं मिली। हम यात्रा के अंत तक पहुँच चुके थे और निशान पूरी तरह से गायब हो चुके थे। सूरज की गर्मी असहनीय थी।

हम सब चुपचाप गाज़ुलापल्ली की ओर वापस जा रहे थे, और मैं बुरी तरह थका हुआ था जब मैंने स्टेशन के प्रतीक्षालय में लगभग बिना तले वाली पुरानी कुर्सी पर खुद को गिरा दिया। जूते उतारने से पहले ही मुझे नींद आ गई।

श्री बालासुब्रमण्यम ने उसी रात पुलिस को टेलीग्राम द्वारा सूचना दी, और अगले दिन दोपहर की ट्रेन से नंदीयाल से अधिकारी पहुंचे। हम उनके साथ उस पुराने सूखे पेड़ के पास गए।

उस बदकिस्मत औरत का जो कुछ बचा था, उससे अब तक बदबू आने लगी थी। उसकी गंध दूर से ही आ रही थी। हमने बचे हुए टुकड़ों पर जो पत्ते डाले थे, उन पर नीली मक्खियों के झुंड जमा हो गए थे। लेकिन कम से कम वे गिद्धों से तो बच गई थीं। मैंने पुलिस के सब-इंस्पेक्टर को पेड़ के तने का वह खोखला हिस्सा दिखाया जहाँ मैं पिछली रात छिपा था, और फिर उन्हें अपनी कहानी सुनाई।

उसने जो नोट्स बनाए, वे लगभग तेरह पन्नों में फैले हुए थे। मेरा बयान ही छह पन्नों का था।

बाला ने शव जलाने की अनुमति मांगी। पुलिस अधिकारी का मानना था कि शव को पोस्टमार्टम के लिए नंदीयाल ले जाना चाहिए। मैंने कोई सलाह नहीं दी, क्योंकि मैं देख सकता था कि सब-इंस्पेक्टर को शव को चारागाह में छोड़ने का मेरा कार्य उचित नहीं लग रहा था। मुझे लगा कि अब मैं जो भी सलाह दूंगा, उससे वह ठीक विपरीत कदम उठा सकता है। इसलिए मैंने अपने काम से काम रखा। हालांकि, दो वन रक्षकों की उपस्थिति और गवाही ने अंततः बाला के पक्ष में स्थिति को पलट दिया और उसे शव जलाने की अनुमति मिल गई। हम मूक साक्षी बने रहे जब उसने और दोनों रक्षकों ने सूखी लकड़ियों का ढेर इकट्ठा किया, उस पर सड़े हुए शव को रखा, ढेर के ऊपर और लकड़ियाँ डालीं और फिर आग लगा दी। यह एक सरल और दुखद अनुष्ठान था, जिसमें जलते हुए सड़े हुए मांस की भयानक दुर्गंध के अलावा कोई और बात नहीं थी। बाला की भावनाओं का सम्मान करते हुए, मैं वहीं रुका रहा। पुलिस अधिकारी कुछ दूर जाकर एक पेड़ से टिक गया और बुरी तरह बीमार हो गया।

अगले दिन बाला की आँखों में आँखें डालकर देखना मेरे लिए मुश्किल हो गया। मुझे लगा जैसे मैंने उसे निराश कर दिया हो। लेकिन उस छोटे से आदमी की अंतरात्मा ने यह भांप लिया। वह बालासुब्रमण्यम के साथ प्रतीक्षालय में आया, जबकि मैं वहीं बैठा रहा और स्टेशन मास्टर से

पूछा कि वह क्या कहने वाला है। उसने बस इतना कहा, 'दोराही से कह देना कि वह बाघ को गोली न मार पाने पर परेशान न हो। मुझे पता है उसने अपनी पूरी कोशिश की। कोई और आदमी —नहीं, मैं भी नहीं—इससे ज़्यादा कर सकता था।'

और मेरी भावनाओं को शांत करने के लिए इससे अधिक कुछ भी कोई व्यक्ति नहीं कह सकता था। मुझे अच्छा लगा और मैंने बालासुब्रमण्यम को उनके कहे शब्दों और मेरे प्रति उनके द्वारा दिए गए सभी सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। उनकी सरल प्रशंसा मेरे द्वारा प्राप्त की गई सबसे अच्छी प्रशंसाओं में से एक थी।

मैं एक और सप्ताह तक गज़ुलापल्ली में ही रहा, लेकिन आदमखोर के बारे में मुझे कोई और खबर नहीं मिली। दिगुवामेटा में एक पैंथर ने मेरे एक शिकार को मार डाला। मैं इसकी पुष्टि करने वहाँ गया और यह सच साबित हुआ। जब मैंने पैंथर को उसी रात फिर से खाने के लिए शिकार के अवशेष छोड़ दिए, तो जोसेफ बहुत खुश नहीं हुआ।

उस सप्ताह के अंत में मैंने अपने उन सभी नए दोस्तों को विदाई दी जिन्होंने मेरी निस्वार्थ भाव से मदद की और मेरी यात्रा को इतना सुखद बनाया। मैंने अलग-अलग स्टेशनों पर तैनात वन रक्षकों को चारा बाँट दिया, और बाला के लिए भी कुछ अतिरिक्त रखा।

बैंगलोर लौटने के बाद तीन महीने बीत गए। फिर हैदराबाद राज्य में कृष्णा नदी के पास एक बाघ ने एक आदमी को मार डाला। तीन महीने बाद बोगरा रेलवे स्टेशन से कुछ मील उत्तर में एक चेंचु (एक प्रकार का बाघ) मारा गया। तब से लेकर अब तक इंसानों की हत्याओं की खबरें बहुत कम और छिटपुट ही आई हैं। लेकिन फिर भी आती रहती हैं।

क्या मेरे द्वारा घायल किया गया आदमखोर आखिरकार ठीक हो गया? क्या उसने फिर से हमले शुरू कर दिए हैं? क्या मेरी यात्रा के समय दो अलग-अलग आदमखोर सक्रिय थे? दिगुवामेटा में महोवा के फूल इकट्ठा कर रही महिला को ले जाने वाला आदमखोर, बाला की पत्नी की हत्या करने वाले से बिल्कुल अलग था?

क्या ये हालिया हत्याएं इन्हीं दो बाघों में से किसी एक का काम थीं—अगर वास्तव में कभी दो बाघ थे भी? या फिर ये किसी दूसरे बाघ ने की थीं, जो हाल ही में सामने आया था?

ये सवाल कभी-कभी मुझे परेशान कर देते हैं, क्योंकि मुझे इनका जवाब नहीं मिल पाता। लेकिन मैं इन्हें जानने के लिए बहुत कुछ कुर्बान करने को तैयार हूँ।

सात

गेडेसल का विशाल बैल बाइसन

यह किसी आम शिकार की कहानी नहीं है, जिसमें उस विशालकाय बैल बाइसन को गोली मारकर या घायल करके मार गिराया जाता है जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ। अगर आप ऐसा सोच रहे हैं, तो आप निराश होंगे, क्योंकि मैंने इस जानवर पर कभी गोली नहीं चलाई, और न ही कभी चलाऊंगा। क्योंकि मैं उसका बहुत सम्मान करता हूँ।

वह एक बहादुर और अनुभवी योद्धा थे, और अगर वह आज भी जीवित हैं तो वह अपने उस झुंड के स्वामी और नेता होने के खिताब के पूरी तरह हकदार हैं जिसकी उन्होंने इतनी निष्ठा से देखभाल की। अगर वह मुझे समझ पाते, तो मुझे उन्हें अपना मित्र कहने पर गर्व होता।

गेदेसाल उत्तरी कोयंबटूर जिले के जंगलों में स्थित एक छोटे से शोलागा गांव का नाम है, जो उस क्षेत्र के शीर्ष पर बसा है जिसे मैं 'बाइसन रेंज' कहता हूं। इसी नाम का एक वन बंगला सड़क के किनारे स्थित है, जब यह सड़क कोललेगल कस्बे से दिंबुम गांव की ओर दक्षिण की ओर जाते हुए चढ़ाई के शीर्ष पर पहुंचती है। गेदेसाल से दिंबुम को अलग करने वाली सात मील की दूरी में से पांच मील तक यह सड़क एक पहाड़ी की ढलान से नीचे जाती है। अंतिम दो मील के लिए यह फिर से ऊपर की ओर चढ़ती है। दिंबुम एक खड़ी ढलान के किनारे पर स्थित है। सड़क दिंबुम से दक्षिण की ओर नीचे के मैदानों तक कई तीखे मोड़ों के साथ तेजी से नीचे उतरती है, जहां से यह सत्यमंगलम नामक बड़े कस्बे तक लगभग समतल मार्ग पर आगे बढ़ती है।

गेदेसाल के पश्चिम में बिलिगिरिरंगन पर्वतमाला की विशाल श्रृंखला स्थित है, जिसकी ढलानें हरे-भरे घास के मैदानों के बीच उभरी हुई चट्टानों का एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती हैं। पहाड़ियों की घाटियों में और नीचे की ओर बहने वाली असंख्य जलधाराओं के किनारों पर पेड़ों के झुंड और घने जंगल उग आए हैं। इन्हें आमतौर पर 'शोला' या वन के एकांत द्वीप कहा जाता है, जो खुले घास के मैदानों या दुर्गम चट्टानों से घिरे होते हैं।

पूर्व दिशा में पहाड़ियों की एक और श्रृंखला है, जो पश्चिम में स्थित बिलिगिरिरंगन पर्वत श्रृंखला की तुलना में ऊंचाई, आकार और भव्यता में काफी छोटी है। ये नीची पहाड़ियाँ पूरी तरह से जंगल से ढकी हुई हैं, जिनमें मुख्य रूप से दस फीट तक ऊँची बाघ घास उगती है, और इनके बीच हजारों बौने जंगली खजूर के पेड़ फैले हुए हैं। साल के मध्य में इन पेड़ों के झुके हुए तनों के सिरों पर पीले जंगली खजूरों के लंबे गुच्छे लगते हैं—ये सूखे और बेस्वाद फल होते हैं, लेकिन पक्षियों और जानवरों दोनों को ही बहुत पसंद आते हैं।

इस प्रकार, स्थलाकृति, वनस्पति और खजूर के संयोजन से यह क्षेत्र बाइसन, सांभर और भालू के लिए एक पसंदीदा ठिकाना बन जाता है।

पहाड़ों और पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के बीच उत्तर से दक्षिण तक एक लंबी घाटी फैली हुई है, और इस घाटी के किनारे-किनारे कोललेगल से दिंबुम जाने वाली सड़क दक्षिण की ओर एकांत में अपना रास्ता बनाती है, जो गेदेसाल बस्ती और उसी नाम के वन बंगले के बीच से होकर गुजरती है।

यह इमारत जंगल में बने बंगले के हिसाब से काफी बड़ी है, और इसके पीछे वन विभाग में

काम करने वाले कर्मचारियों के रहने के लिए कई छोटे-छोटे मकान बने हुए हैं। इसके अलावा, इसमें एक बड़ा परिसर भी है, जहाँ जंगली पहाड़ी गुलाब के कुछ सुंदर पौधे उगते हैं, जिनके फूल गुच्छों में खिलते हैं और छोटे गुलदस्तों जैसे दिखते हैं।

बंगले के ठीक दक्षिण में एक नीचा भूभाग है, जिसमें एक छोटा तालाब और कुछ दलदली ज़मीन है। वहाँ उगने वाली हरी घास की कोमल कोंपलों के कारण—जो आसपास के क्षेत्र में पाई जाने वाली खुरदरी टाइगर घास से बिल्कुल अलग हैं—चित्तीदार हिरणों का एक छोटा झुंड लगभग हमेशा ही वहाँ रहता है। जब मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था, तो उनका नेतृत्व एक काफी बड़े नर हिरण द्वारा किया जा रहा था, जिसके सींगों का अच्छा-खासा गुच्छा था, उसके गहरे भूरे कंधे लगभग काले थे, जिन पर सफेद धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

मुझे उम्मीद है कि किसी भी शिकारी, चाहे वह इंसान हो या जानवर, ने उसे नहीं मारा होगा, और वह अभी भी उस हरे-भरे और ताजगी भरे नम, ठंडे घाटी में अपने झुंड के मुखिया के रूप में विचरण कर रहा होगा - उस जंगल की तरह ही प्रभुत्वशाली और स्वतंत्र, जिससे वह संबंधित है।

सड़क के पूर्व में स्थित पहाड़ियों की निचली श्रृंखला और पश्चिम में पहाड़ों की तलहटी के साथ फैली गहरी घाटी, इस क्षेत्र में रहने वाले बाइसन के कई अलग-अलग झुंडों को चरने के व्यापक अवसर प्रदान करती है। इस घाटी में एक बारहमासी, काफी चौड़ी धारा बहती है, और इसमें मिलने वाली विभिन्न सहायक नदियाँ समय-समय पर सड़क को पार करती हैं। इस प्रकार, भीषण गर्मी के मौसम में भी पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित रहती है, जो इन जानवरों को स्थायी रूप से यहाँ बसे रहने में योगदान देने वाला मुख्य कारक है।

बाइसन के इन झुंडों में बीस से चालीस या इससे भी अधिक बाइसन होते हैं, जिनमें से अधिकांश अलग-अलग उम्र की मादा बाइसन और उनके बच्चे होते हैं, और प्रत्येक झुंड में लगभग आधा दर्जन बड़े आकार के नर बाइसन भी होते हैं। सबसे बूढ़ा और परिपक्व नर बाइसन स्वतः ही अपने युवा प्रतिद्वंद्वियों पर श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है और उस झुंड का स्वामी बन जाता है, जब तक कि कोई युवा और अधिक शक्तिशाली नर उसे पदच्युत न कर दे, या जंगल के नियमों के अनुसार उसकी मृत्यु न हो जाए। कभी-कभी कोई बड़ा नर बाइसन झुंड से अलग होकर अपना एकांत जीवन व्यतीत करता है।

बाइसन 'रिंडरपेस्ट' जैसी बीमारियों से बुरी तरह प्रभावित होते हैं, जो अक्सर शोलागा जनजाति के पालतू मवेशियों के झुंडों को प्रभावित करती हैं, जो जंगल या आसपास के चरागाहों में रहते हैं। मवेशियों को जंगल में चरने के लिए छोड़ा जाता है और वे संक्रमण को बाइसन में फैला देते हैं। अक्सर बाइसन को 'फुट-एंड-माउथ' बीमारी से पीड़ित देखा जाता है, जो मवेशियों के लिए बेहद घातक होती है, या गिद्धों को देखकर किसी ऐसे बाइसन के शव तक पहुंचना आम बात है जो मवेशियों की इस सबसे घातक बीमारी से मर गया हो।

मेरी कहानी में जिस विशाल बैल का ज़िक्र है, वह कम से कम तीस जानवरों के झुंड का सरदार था। मैंने उसे अक्सर सुबह-सुबह देखा है, जब उगते सूरज की रोशनी में ओस की बूँदें चमकती थीं, और कभी-कभी शाम को लगभग 5:30 बजे, 39वें और 41वें मील के पत्थरों के बीच सड़क के किनारे चरते हुए। उसकी पहचान उसके मुड़े हुए बाएँ सींग से आसानी से हो जाती थी, जो स्पष्ट रूप से विकृत था और अंदर व आगे की ओर मुड़ा हुआ था।

शायद इस बूढ़े बैल की लंबी उम्र का कारण इसका यह विकृत अंग है, क्योंकि इसकी वजह से इसका सिर किसी भी तरह से ट्रॉफी के लायक नहीं है, हालांकि इसका दाहिना सींग बेहद खूबसूरत है। यह सच है कि कोई शिकारी या अनोखी चीजों का संग्रहकर्ता इसके सिर को एक अनूठे नमूने के रूप में महत्व दे सकता है, लेकिन सौभाग्य से अभी तक ऐसा कोई जिज्ञासु

व्यक्ति इससे नहीं मिला है। जैसा कि मैं आगे बताने वाला हूँ, युद्ध में इसका विकृत सींग एक अमूल्य हथियार साबित हुआ है। इसमें वे प्राकृतिक लाभ हैं जो किसी गेंडा (अगर यह पौराणिक जानवर सचमुच मौजूद होता) को मिलते, यानी यह सामने से किए गए हमले में प्रतिद्वंद्वी को स्तब्ध कर सकता है या अपने सिर को उछालकर उसे बुरी तरह घायल कर सकता है।

मैं अक्सर अंधेरी रात में उस सड़क पर गाड़ी चलाता था, और अपनी कार पर सीलबंद बीम वाली स्पॉटलाइट को इधर-उधर घुमाता था, यह देखने के लिए कि क्या दिखाई देता है और बस मजे के लिए। ऐसे मौकों पर दो-तीन बार एक बाइसन की दूर-दूर स्थित नीली आँखों में लैंप की किरणें प्रतिबिंबित हुईं और करीब से देखने पर मैंने पाया कि वे एक बूढ़े बैल की आँखें थीं।

कुछ साल पहले जब मैं बिलिगिरिरंगन पर्वतमाला की निचली ढलानों पर टहल रहा था, तब मेरा ध्यान पहली बार इस अनुभवी स्थल की ओर आकर्षित हुआ। मुख्य सड़क के पश्चिमी किनारे से जंगल के बीच से एक सड़क गुजरती है। यह गेदेसाल गांव के किनारे से होते हुए एक नाले को पार करती है और फिर पर्वत श्रृंखला की तलहटी पर चढ़ना शुरू करती है, जो अंततः एक घाटी में जाकर गायब हो जाती है और दूसरी ओर एक घाटी में उतर जाती है। अंत में यह एक खूबसूरत वन लॉज तक ले जाती है, जो श्री रैंडोल्फ मॉरिस की निजी संपत्ति है। श्री रैंडोल्फ मॉरिस दक्षिण भारत के सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली कॉफी बागान मालिकों में से एक हैं। वे शिकार के विशेषज्ञ और एक प्रसिद्ध शिकारी भी हैं, जिन्होंने बड़े जानवरों की आदतों और उनके शिकार पर कई मूल्यवान लेख लिखे हैं। वे इस क्षेत्र के मानद वन्यजीव संरक्षक थे, ब्रिटिश भारत के वायसराय और पूर्व गवर्नरों के बीच काफी लोकप्रिय थे, और दक्षिण के कुछ सबसे खूबसूरत और सुनियोजित कॉफी बागानों के मालिक हैं।

इस सड़क के पहाड़ी दर्रे से आगे बढ़ने से बहुत पहले, वन विभाग की संपत्ति के रूप में एक अस्थायी शेड बना हुआ है, जिसे दौरे पर गए विभाग के अधिकारियों की सुविधा और शिकार पर गए लाइसेंस प्राप्त खिलाड़ियों के उपयोग के लिए बनाया गया है। किसी समझदार व्यक्ति ने मजबूत, मुड़ी हुई लताओं से एक सीढ़ी बनाई है, जो इस शेड में रखी है और पेड़ों पर बने मचानों पर चढ़ने और उतरने में उन लोगों के लिए बहुत उपयोगी है जो इस वृक्षीय कला में स्वाभाविक रूप से निपुण या सक्षम नहीं हैं।

उस सुबह मैं इस लॉज के पास से गुज़र रहा था और एक कटोरे जैसी उथली घाटी के ऊपर एक पहाड़ी की चोटी पर चल रहा था, तभी मुझे एक ज़ोरदार टक्कर और धमाकों की आवाज़ सुनाई दी, जिसके बीच-बीच में गुस्से भरी गुर्राहटें आ रही थीं। ये आवाज़ें बाइसन की लड़ाई की ओर इशारा कर रही थीं, और मैं तेज़ी से, जो भी आड़ मिल रही थी, उसका सहारा लेते हुए, आवाज़ों की दिशा में चल पड़ा। थोड़ी ही देर में मैंने अपने नीचे घाटी में, लेकिन लगभग तीन सौ गज की दूरी पर, दो बड़े नर बाइसन को भयंकर लड़ाई में उलझे देखा। सींग उलझे हुए और माथे एक-दूसरे से सटे हुए, वे पूरी ताकत से एक-दूसरे को धकेल रहे थे, हर जानवर के फैले हुए तने हुए पैर यह दर्शा रहे थे कि वे अपने प्रतिद्वंद्वी को पीछे धकेलने के लिए कितना ज़बरदस्त प्रयास कर रहे थे। बीच-बीच में कोई एक जानवर अपने प्रतिद्वंद्वी से अपने सींग और सिर को क्षण भर के लिए अलग करता और फिर से उलझने से पहले एक छोटा सा तेज़ प्रहार करता, इससे पहले कि दूसरा जानवर वैसा ही प्रहार कर पाता।

फिर मैंने देखा कि उनमें से एक के पास एक विचित्र सींग था जो उसे अपने प्रतिद्वंद्वी पर एक स्पष्ट लाभ प्रदान करता था, जिसके गर्दन, कंधों और बगल में घावों से अत्यधिक खून बह रहा था।

अगले बीस मिनट तक लड़ाई बिना रुके भयंकर क्रोध के साथ जारी रही, जब तक कि मैंने

पहले जो क्रोध भरी गुर्राहट सुनी थी, उसकी जगह कराहने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं, और दोनों सांडों के पसीने और खून से लथपथ चमकदार किनारे, जो इतनी दूरी से भी स्पष्ट दिखाई दे रहे थे, यह दर्शाने लगे कि लड़ाई की भीषण गति और तनाव का असर दिखने लगा था। सांडों के मुंह से झाग टपक रहा था और उनके शरीर पर छिटककर ज़मीन पर गिर रहा था।

मैंने इससे पहले कभी बाइसन की लड़ाई नहीं देखी थी और यह जानने के लिए बहुत उत्सुक था कि इसका अंत कैसे होगा। सौभाग्य से मैं अकेला आया था। इसके अलावा, हवा मेरी दिशा में बह रही थी। इसलिए लड़ने वाले बाइसन मेरी उपस्थिति से पूरी तरह अनजान थे और उन्होंने प्राकृतिक परिस्थितियों में अपनी लड़ाई लड़ी।

सींग टूटा हुआ बैल भारी पड़ रहा था और उसका प्रतिद्वंदी पीछे हटता जा रहा था। उसके शरीर पर लगे कई घावों से खून बह रहा था और वह खून से लथपथ होकर लाल हो रहा था। बेशक, उसने भी अपने दुश्मन पर कई जोरदार वार किए थे, लेकिन टूटा हुआ सींग उसके मालिक को स्पष्ट रूप से श्रेष्ठता प्रदान कर रहा था। दस मिनट बाद, बुरी तरह घायल जानवर लड़खड़ाने लगा। वह कई बार घुटनों के बल गिरा और हर बार उसका सींग, जो किसी सींग जैसा लग रहा था, उसके शरीर के किसी न किसी हिस्से में धंस गया। आखिरकार, वह टूट गया, मुड़ा और लड़खड़ाते हुए भागा। विजेता ने उसका पीछा करते हुए और उसकी पीठ पर टक्कर मारते हुए इस बढ़त का फायदा उठाया। घाटी का निचला हिस्सा आसपास के जंगल में मिल जाता था, और दोनों जानवर एक जगह से ओझल हो गए।

जिज्ञासावश मैं हाल ही में हुए युद्ध स्थल तक गया। दोनों प्रतिभागियों के ज़ोरदार खुरों से ज़मीन बुरी तरह से उखड़ गई थी और लगभग बीस गज व्यास के एक गोल घेरे में खून और झाग के धब्बे बिखरे हुए थे।

उसके काफी समय बाद मैंने अपने बैल को दोबारा देखा। दूसरी बार, एक शाम को टहलते हुए, मैं सड़क के पूर्वी किनारे पर स्थित एक पानी के कुंड को देखने जा रहा था, जो 41वें मील के पत्थर से लगभग एक चौथाई मील की दूरी पर और लगभग उसी के बराबर था। गेदेसाल गाँव के शोलागा समुदाय के कुछ मवेशियों को एक बाघ ने मार डाला था। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने उसे कई बार शाम के समय उस आग की लकीर के किनारे चलते या उसे पार करते हुए देखा था, जो इस कुंड के पास से गुजरती है और फिर सड़क को पार करती है।

मैं उस दिन शाम लगभग 4:30 बजे पानी के गड्ढे के पास गया और यह देखने के लिए उसके किनारे-किनारे घूमा कि वहाँ कौन-कौन से जानवर आते-जाते थे। वहाँ हाथी, बाइसन, सांभर, चित्तीदार हिरण और कुछ जंगली सूअरों के सामान्य पदचिह्न थे। जहाँ तक मैं उसके पदचिह्नों की उम्र से अनुमान लगा सका, बाघ भी वहाँ लगभग तीन बार पानी पी चुका था, हालाँकि आखिरी बार वह मेरे आने से कम से कम तीन दिन पहले आया था।

बाइसन के पदचिह्नों के बीच, किसी विशालकाय बैल के नुकीले खुरों के निशान भी दिखाई दे रहे थे। उसके शरीर का भार इतना अधिक था कि वह तालाब के किनारे कीचड़ में लगभग एक फुट धंस गया था। उसके पदचिह्न आसपास के कई स्थानों पर भी दिखाई दे रहे थे, जिससे पता चलता है कि वह अक्सर इस तालाब पर आता था। यह बात कुछ अजीब थी, क्योंकि उसके पास नदी थी, जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, जहाँ वह अपनी प्यास बुझा सकता था।

मैंने उस शोलागा से पूछा, जिसने मुझे बाघ के बारे में बताया था और जो मेरे साथ आया था, कि क्या वह इस बैल के बारे में कुछ जानता है। उसने हाँ में जवाब दिया और बताया कि उसने और सभी ग्रामीणों ने उसे कई बार देखा है, और उसका बायाँ सींग विकृत है, जो आगे की ओर निकला हुआ है। तुरंत ही मेरा मन उस यादगार लड़ाई के दृश्य की ओर चला गया, जिसमें एक

विकृत सींग वाले बैल ने अपने प्रतिद्वंद्वी को पूरी तरह से हरा दिया था। मैंने सोचा कि क्या यह वही जानवर हो सकता है और मुझे लगा कि ऐसा ही होना चाहिए, क्योंकि ऐसी विकृति अत्यंत दुर्लभ है।

शोलागा ने मुझे बताया कि बैल अक्सर तालाब के पास आता था, क्योंकि वह उस इलाके में अपने झुंड की देखभाल करता था; शायद इसलिए कि तालाब के आसपास की निचली ज़मीन पर चरने के लिए बेहतरीन घास उपलब्ध थी। फिर उसने आगे कहा कि अगर मैं उसके साथ टहलने चलूँ, तो शायद हमें इस जानवर को देखने का सौभाग्य मिल जाए, या शायद बाघ भी दिख जाए।

उस समय मेरा मुख्य लक्ष्य बाघ था और मुझे बैल में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए मैंने उसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सहमति दी। वैसे भी, दिन के उजाले में बाइसन का पीछा करना एक जोखिम भरा काम है और यह हवा की दिशा, उपलब्ध आवरण और निश्चित रूप से इलाके की भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है।

हम बिना किसी उद्देश्य के टहलने निकल पड़े, मवेशियों के रास्तों और जंगली जानवरों के पगडंडियों पर चलते हुए और कई बार आग बुझाने वाली कतार को पार करते हुए। मुझे याद है कि हम एक संकरे रास्ते पर धीरे-धीरे चल रहे थे कि अचानक हमारे सामने, लगभग तीस गज की दूरी पर, लंबी घास हट गई और एक विशालकाय बैल बाइसन का सिर और कंधे दिखाई दिए, जो हमें बड़े आराम से और बेफिक्र होकर देख रहा था। वह मेरा दोस्त था, वही बाइसन जिसका सींग मुड़ा हुआ था।

उसमें डर का कोई लक्षण नहीं दिखा, वह बस हमें देखता रहा। हम दस गज और आगे बढ़े; फिर, सरकंडों वाली घास की तेज़ सरसराहट के साथ, वह मुड़ा और गायब हो गया। जैसा कि मैंने बताया, उस दिन के बाद मैंने उसे कई बार देखा, और फिर वह यादगार घटना घटी जिसने उसे मेरी ओर खींच लिया।

एक अज्ञात शिकारी, जो अवैध शिकार भी करता था, एक रात सड़क पर आया और उसने एक मादा बाइसन को गोली मार दी। इससे पहले कि वह समझ पाता कि वह कहाँ है, एक बैल ने उसकी जीप पर हमला कर दिया और अपने सिर को झटके से हिलाकर गाड़ी को सड़क के किनारे बने एक नाले में गिरा दिया, जो नदी की एक सूखी सहायक नदी में जा गिरा। सौभाग्य से बाइसन ने हमला जारी नहीं रखा, इसलिए अवैध शिकार करने वाले को केवल एक घायल पैर और टूटी हुई राइफल का ही नुकसान हुआ। उसके साथ मौजूद शोलागा, जो उस जीप के किनारे बैठा था जिस पर हमला हुआ था, ने बैल को स्पष्ट रूप से देखा था और उसने दावा किया कि वह विकृत बाएँ सींग वाला जानवर था।

कुछ महीनों बाद, अपनी अगली यात्रा के दौरान, मुझे इस घटना के बारे में पता चला और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि उस बूढ़े बैल ने इतनी सराहनीय कार्रवाई की थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि जीप को खाई में फेंकने के कारण उसने अपने बैल जैसे दिमाग में यह सोच लिया होगा कि उसने अपने दुश्मन का सफाया कर दिया है। अगर खाई न होती तो शायद वह अपने पहले हमले के बाद एक और हमला करता, अंदर बैठे आदमियों को ढूंढ निकालता और उन्हें पूरी तरह खत्म कर देता।

कुछ समय बाद, नवंबर 1953 में, मैं दिंबुम गया था। मेरा गेदेसाल में रुकने का कोई इरादा नहीं था और मैं गाड़ी चला रहा था तभी मेरी नज़र एक अकेले व्यक्ति पर पड़ी जो पैदल चल रहा था। पास आकर मैंने देखा कि वह शोलागा थे, जिनका नाम राचेन था, जिन्हें मैं उस बंगले में डेरा डालते समय हमेशा काम पर रखता था। गाड़ी रोककर और उनका अभिवादन करते हुए मैंने उनसे तमिल में पूछा: 'येन्ना सुंगधी'—जिसका अर्थ है: 'क्या खबर है?'

राचेन ने जवाब दिया कि दो रात पहले ही गाँव वालों ने गाँव से कुछ ही दूरी पर जंगल में एक बाघ और किसी दूसरे जानवर के बीच भयंकर लड़ाई की आवाज़ें सुनी थीं। लड़ाई की तीव्रता और घंटों तक चलने के कारण, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ का प्रतिद्वंद्वी जंगली सूअर नहीं हो सकता, क्योंकि मध्यम आकार का एकमात्र जंगली जानवर जो बाघ का मुकाबला करता है, और उन्हें लगा कि यह एक हाथी हो सकता है। लेकिन फिर, अगर यह हाथी होता, तो उन्हें पूरा यकीन था कि उन्होंने उसकी चिंघाड़ और चीखें सुनी होतीं, जो हाथी मुसीबत में होने पर, लड़ते समय या उत्तेजित होने पर हमेशा करता है।

रात के बाद के समय में आवाजें धीरे-धीरे कम हो गईं, लेकिन उससे पहले ही उन्होंने बाघ द्वारा मचाए जा रहे तेज शोर से यह अंदाजा लगा लिया था कि वह बुरी तरह घायल हो गया था।

अगली सुबह, जिज्ञासावश शोलागा लोग यह देखने गए कि क्या हुआ था और उन्हें वही दृश्य दिखाई दिया, जहाँ उन्होंने पिछली रात के भीषण संघर्ष के बारे में सुना था। लड़ाकों ने झाड़ियों को उखाड़कर रौंद डाला था, और इस अखाड़े के एक तरफ एक बाघ का शव पड़ा था, जिसे बाइसन ने बार-बार सींगों से घायल करके कुचल दिया था।

इसके बाद शोलागा जनजाति के लोगों ने तुरंत बाघ की खाल उतार ली और उसे गांव ले गए।

दोपहर के करीब मैंने यह कहानी सुनी और समय होने के कारण मैंने खुद उस जगह को देखने का मन बनाया। राचेन को अपने बगल में बैठाकर मैं गेदेसाल गाँव की ओर जाने वाले संकरे रास्ते पर गाड़ी चलाकर गया और देखा कि बाघ की खाल सूखने के लिए ज़मीन पर टांगी हुई थी। कच्ची खाल ऊपर की ओर थी और उस पर सूखी राख की मोटी परत लगी हुई थी, जो शोलागा लोगों के लिए एकमात्र संरक्षक है, क्योंकि वहाँ नमक उपलब्ध नहीं है।

बाघ काफी बड़ा जानवर था, लेकिन उसकी खाल के निचले हिस्से को देखकर लगता था कि बाइसन ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया था। शरीर पर कम से कम पाँच अलग-अलग छेद थे जहाँ शक्तिशाली सींगों ने वार किया था, और उनमें से एक, बाईं ओर, यह दर्शाता था कि एक घातक वार ने बाघ के दिल को भेद दिया था।

अब मेरी दिलचस्पी पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गई थी और मैंने उस जगह को देखने की तीव्र इच्छा ज़ाहिर की जहाँ लड़ाई हुई थी। अपनी कार छोड़कर, शोलागा समुदाय के लोगों की भीड़ के साथ मैं निकल पड़ा। आधे मील से भी कम दूरी पर हम घटना स्थल पर पहुँच गए।

इसे 'अखाड़ा' कहना ही सबसे सही होगा, क्योंकि सचमुच वहाँ एक भयंकर संघर्ष हुआ था। चारों ओर फैली घास और झाड़ियों पर खून के बड़े-बड़े छींटे पड़े थे, जो प्रतिभागियों के भार से चपटी हो गई थीं और सूखे खून से लाल हो गई थीं। शोलागा जनजाति ने उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ मरा हुआ बाघ पड़ा था।

खून की मात्रा देखकर स्पष्ट था कि बाइसन भी बुरी तरह घायल हो गया था। अचानक ही मैंने सोचा कि अगर संभव हो तो मैं उसका पीछा करके देखूँ कि वह जंगल में कहीं मरा हुआ है या मरणासन्न अवस्था में है। दोनों ही स्थिति में, मुझे लगता था कि अपनी इस हालत में वह लड़ाई वाली जगह से ज्यादा दूर नहीं जा सकता था।

एक नौसिखिए के लिए भी उस निशान का पता लगाना आसान होता, क्योंकि बाइसन ने जंगल में खून के चौड़े निशान छोड़े थे। वह ढलान से नीचे की ओर, नदी की तरफ जा रहा था, और मुझे पूरा यकीन था कि मैं उसे वहीं पानी के किनारे, संभवतः मृत अवस्था में पाऊंगा।

हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे, चुप रहने की परवाह भी नहीं की। उस भयानक खून के निशान पर डेढ़ घंटे की तेज़ चाल से चलते हुए हम धारा तक पहुँचे, और वहाँ हमें एक बाइसन उथले

पानी में खड़ा मिला, जो आंशिक रूप से डूबे हुए एक बड़े पेड़ के तने से टिका हुआ था। चट्टानों पर से बहते पानी के शोर के कारण उसने पहले तो हमारी आवाज़ नहीं सुनी, और उसके हमारी ओर मुड़ने से पहले ही हम काफ़ी दूर छिप चुके थे।

यह गेदेसाल का विशालकाय बैल बाइसन था, वह बैल जिसका सींग मुड़ा हुआ था।

जहां हम खड़े थे, नदी की चौड़ाई हमें अलग कर रही थी, वहां से हम बाघ के चेहरे, गर्दन, बगल और पीठ पर उसके दांतों और पंजों से हुए भयानक घावों को साफ देख सकते थे। उसका पेट भी बुरी तरह से फटा हुआ था, और उसमें से कुछ लाल रंग का निकला हुआ पानी में लटका हुआ था। शायद यह उसकी आंत का एक हिस्सा था, शायद त्वचा का फटा हुआ टुकड़ा; मैं अंधेरे में जहां वह खड़ा था, वहां ठीक से नहीं देख पा रहा था।

लेकिन दर्द से भरी आँखों के बावजूद, जब वह खड़ा होकर हमारी ओर देखने लगा, तो उसकी आँखें निर्मल और निडर थीं। फिर वह मुड़ा और लड़खड़ाते हुए जंगल की ओर चला गया।

मैंने उसे गोली मारकर उसकी पीड़ा से मुक्ति दिलाने का सोचा था, लेकिन इतनी भयानक कीमत पर मिली उसकी वीरतापूर्ण जीत के बाद ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। वैसे भी, मुझे उससे दोबारा मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी।

लेकिन हाल ही में मैंने गेडेसल का दौरा किया, और मुझे बहुत आश्चर्य और खुशी हुई जब एक शाम मैंने उसे अपने प्यारे झुंड से घिरा हुआ, 41वें मील के पत्थर से कुछ ही दूरी पर सड़क के पूर्वी किनारे पर स्थित पानी के गड्ढे के किनारे लंबी घास पर संतुष्टिपूर्वक चरते हुए देखा - जो उसका पसंदीदा ठिकाना था।

वह जिस जंगल का निवासी है, उसमें दीर्घायु हो।

आठ

चोर्डी का अयालदार बाघ

यह एक बहुत बड़े बाघ की कहानी है जिसने उस क्षेत्र में, जहाँ वह रहता था—या यूँ कहें कि उस क्षेत्र के मानव निवासियों के लिए—काफी परेशानी खड़ी की, और जिसका पीछा करना और अंततः उसे पकड़ना बहुत मुश्किल था।

शिकार की कहानियाँ सुनाते समय, कहानीकार का उद्देश्य श्रोताओं की रुचि बनाए रखना होता है। इसके लिए उसे अपने शिकार को मारने में सफल प्रयासों का वर्णन करना पड़ता है। मजबूरीवश उसे कई असफलताओं और निराशाओं को छोड़ना पड़ता है, क्योंकि यदि वह उन सभी का वर्णन करेगा तो श्रोता जल्द ही ऊब जाएंगे। लेकिन केवल सफलताओं का उल्लेख करने से यह धारणा बनती है कि आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, को मारने के प्रयास लगभग हमेशा सफल होते हैं, लगभग हमेशा आसान होते हैं, और लगभग हमेशा अपेक्षाकृत कम समय में - अधिक से अधिक कुछ दिनों में - पूरे हो जाते हैं।

वास्तव में, ये तीनों धारणाएँ सत्य से बहुत दूर हैं, और वास्तविक परिस्थितियाँ हमेशा इसके बिल्कुल विपरीत होती हैं। असफलताएँ बहुत अधिक होती हैं और शारीरिक, मानसिक और तंत्रिका संबंधी परिस्थितियाँ अत्यंत कठिन होती हैं; और अक्सर जानवर को सामान्य स्थिति में पहुँचने में महीनों और यहाँ तक कि वर्षों लग जाते हैं। कभी-कभी तो उसे गोली भी नहीं लगती।

तो इस कहानी में मैं एक ऐसे प्रयास के बारे में बताने जा रहा हूँ जो अनायास ही शुरू हुआ और जिसे पूरा होने में लगभग पाँच लंबे और थकाऊ साल लग गए। ज़ाहिर है, यह कोई निरंतर खोज नहीं थी, बल्कि छिटपुट प्रयासों की एक श्रृंखला थी। मेरे प्रयासों के अलावा, बैंगलोर और बॉम्बे के अन्य शिकारी भी थे, और स्थानीय धूर्त लोगों का तो कहना ही क्या, जिन्होंने इस चालाक प्राणी को हराने की कोशिश की। और हम सभी असफल रहे—जब तक कि वे पाँच साल बीत नहीं गए।

उसे 'बालों वाला बाघ' कहा जाता था क्योंकि उसकी गर्दन, कानों के पीछे और गले व ठोड़ी को ढके हुए बालों का एक असाधारण गुच्छा था। स्वाभाविक रूप से बालों के इस गुच्छे के कारण उसका सिर बहुत बड़ा दिखाई देता था, जिसे हमेशा 'इतना बड़ा' बताया जाता था, गवाह अपने हाथों को बगल में फैलाकर, उंगलियों को अंदर की ओर मोड़कर, हालांकि बहुत कम लोगों ने उसे देखा था और उसके बारे में बताने के लिए जीवित बचे थे।

ऐसा माना जाता है कि उसका मूल निवास स्थान चोर्डी के आसपास था, क्योंकि यही उस गांव का नाम था जहां उसे पहली बार देखा गया था और जिसके पास ही उसने पहली बार किसी इंसान की हत्या की थी।

चोर्डी एक छोटा सा गाँव है जो जंगल से घिरा हुआ है और कुम्सी नामक छोटे कस्बे से लगभग चार मील दूर सड़क के किनारे बसा है। कुम्सी स्वयं मैसूर राज्य के शिमोगा जिले की राजधानी से सोलह मील दूर है। शिमोगा बैंगलोर से अच्छी सड़क मार्ग से मात्र 172 मील दूर है। बैंगलोर की ओर वाली सड़क का लगभग सत्तर मील का हिस्सा कंक्रीट का है और बाकी तारकोल का है, इसलिए कुछ खतरनाक और अप्रत्याशित मोड़ों को छोड़कर, वाहन चालक

आमतौर पर सुरक्षित रूप से और काफी कम समय में शिमोगा पहुँच सकते हैं।

The Maned Tiger of Chordi

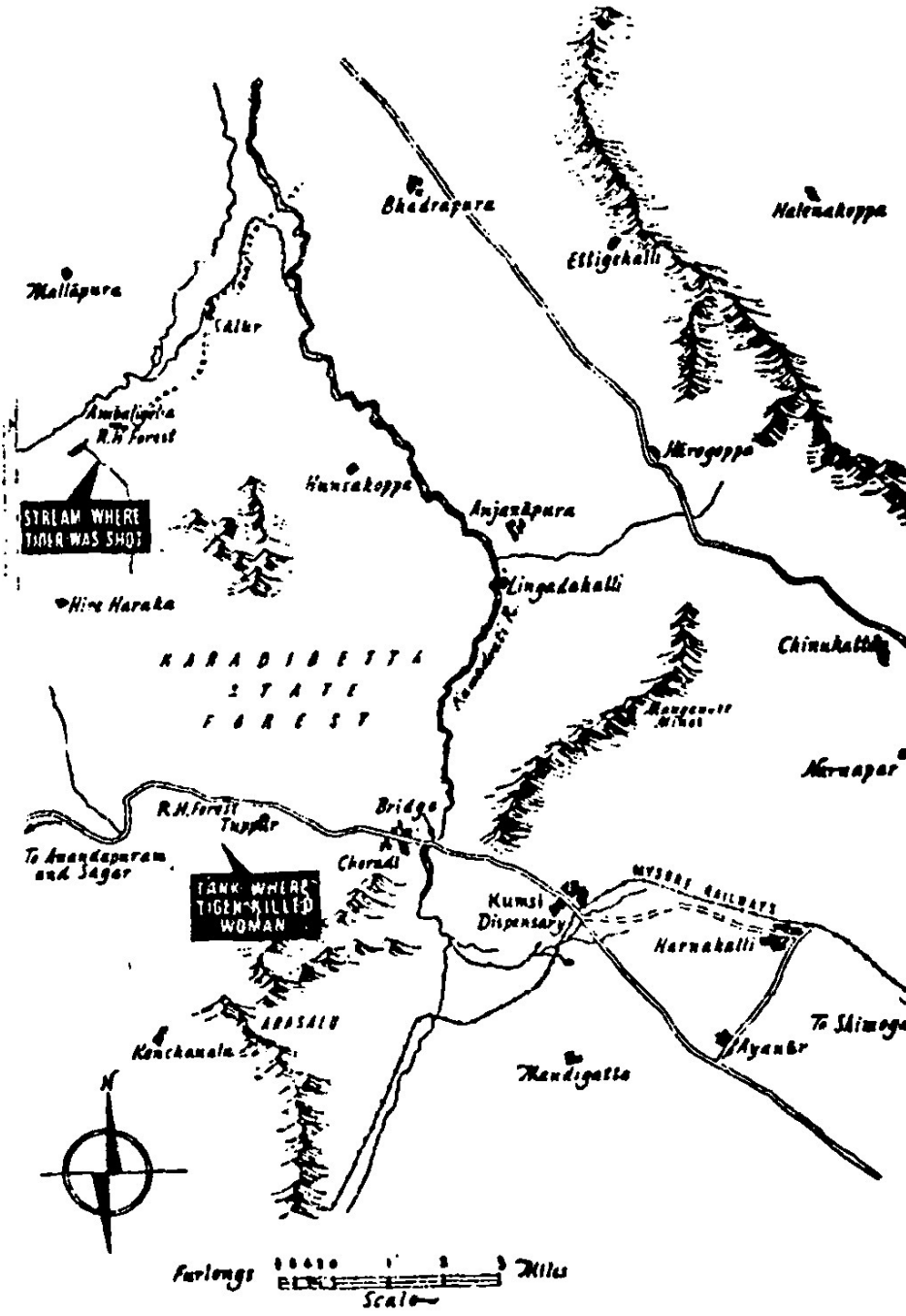

वहां से सड़क कुम्सी और चोर्डी की ओर जाती है, फिर लगभग नौ मील आगे आनंदपुरम गांव, फिर ग्यारह मील आगे सागर शहर और वहां से लगभग सोलह मील आगे, तलगुप्पा नामक एक अन्य गांव से गुजरते हुए, प्रसिद्ध गेरसप्पा जलप्रपात तक जाती है, जिसे कभी-कभी जोग जलप्रपात के नाम से भी जाना जाता है, जहां शरावती नदी का जल चार अलग-अलग झरनों में 950 फीट की ऊंचाई से गिरता है। यह एक अविस्मरणीय दृश्य है और ऐसा दृश्य है जो सबसे निर्मम और भौतिकवादी लोगों के हृदयों में भी विस्मय और श्रद्धा की भावना जगाता है।

जलप्रपात के शीर्ष पर दो घुमंतू बंगले हैं। शरावती नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित बंगला, जो कि कहीं अधिक आधुनिक इमारत है, मैसूर राज्य की सीमा में आता है और इसे 'मैसूर बंगला' कहा जाता है। नदी के दूसरी ओर, उत्तरी किनारे पर स्थित दूसरा बंगला बॉम्बे राज्य के अधिकार क्षेत्र में आता है। यह एक पुरानी इमारत है, जो बेहद एकांत में स्थित है और इसमें बहुत कम लोग रहते हैं—इसी कारण मैं इसे अधिक पसंद करता हूँ। इसे, ज़ाहिर है, 'बॉम्बे बंगला' के नाम से जाना जाता है।

दोनों बंगलों में समय-समय पर ठहरने वाले विभिन्न लोगों की कविता-रचनाओं से भरी हुई विज़िटर बुक मिलना काफी असामान्य और मनोरंजक है। निस्संदेह, झरनों की भव्यता ने उन लोगों के मन में छिपी हुई काव्यात्मक इच्छा को जगा दिया है जो शायद अब तक उदासीन रहे थे। उनकी कुछ रचनाएँ वास्तव में सराहनीय और प्रेरणादायक हैं; लेकिन बाकी के लिए मुझे लगता है कि कहीं और इतनी बेतुकी रचनाओं का संग्रह करना मुश्किल होगा।

बाघ की हिंसक हरकतें आदमखोरों के जीवन की सामान्य घटनाओं से काफी मिलती-जुलती थीं। जंगल में रहने वाले प्राकृतिक जंगली जानवरों का शिकार करने से लेकर, वह धीरे-धीरे मवेशी चोर बन गया, जिसका कारण निस्संदेह शिमोगा जिले के आरक्षित जंगलों में चरने वाली हजारों मोटी गायों की मौजूदगी थी। अन्य जंगली जानवरों पर चुपके से हमला करने की कठिनाइयों के विपरीत, इन गायों की मौजूदगी और आसानी से उनका पीछा करके उन्हें मार गिराने की क्षमता ने उसे एक हानिरहित शिकारी से चोर्डी के आसपास के चरवाहों के लिए एक बेहद विनाशकारी खतरा बना दिया।

एक के बाद एक हमले होते रहे और बाघों द्वारा मवेशियों को मार डाला गया, अंततः रखवालों की सामान्य सुस्ती इतनी बढ़ गई कि उन्होंने कुछ करने का फैसला किया। मामला तब और बिगड़ गया जब एक साहसी पशुपालक अपने पशुओं को चराने के लिए जंगल में ले जाते समय अपने साथ भरी हुई बंदूक ले गया, जबकि वन विभाग के नियमों के अनुसार बिना शिकार लाइसेंस के हथियार लेकर अभ्यारण्य में प्रवेश करना उसके लिए गैरकानूनी था।

हालांकि, उसने ठीक वैसा ही किया, और संयोगवश, उसी दिन अयालदार बाघ ने उस पर हमला कर उसके एक जानवर को मार गिराया। पेड़ के तने के पीछे छिपकर उसने अपनी बंदूक से गोलियां चलाईं, और एल.जी. छर्रों से बाघ के दाहिने हिस्से में गंभीर चोट आई। वह कुछ समय के लिए चोर्डी के आसपास से गायब हो गया, और सभी पशुपालक बंदूक के मालिक के आभारी थे कि उन्होंने उन्हें इस खतरे से छुटकारा दिलाया।

फिर कुछ मील दूर, आनंदपुरम की सीमा से लगे झाड़ीदार जंगल में वह अयालदार जानवर फिर से प्रकट हुआ। लेकिन वह अब भी अभ्यारण्य में चर रहे मवेशियों पर हमला करने की अपनी आदत पर अड़ा हुआ था। वह अभी तक बिगड़ा नहीं था—अभी तक आदमखोर नहीं बना था—क्योंकि उसके बगल में लगे घाव ने उसे किसी भी तरह से अक्षम नहीं किया था।

एक बार फिर उसकी अवांछित उपस्थिति ने मवेशी चराने वालों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया, और एक बार फिर वह घायल हो गया। इस बार उसके दाहिने अगले पैर में चोट आई, और

वह उस गाय के शव के पास पहुँच रहा था जिसे उसने कल ही मारा था। वह दूसरी बार गायब हो गया। एक बार फिर झूठी उम्मीदें जगीं कि उसका जाना स्थायी है, और एक बार फिर वह प्रकट हो गया।

लेकिन उसकी दूसरी वापसी में एक बड़ा बदलाव आया। अब वह वह घिनौना लेकिन फिर भी हानिरहित बाघ नहीं था जो मवेशियों के लिए इतना विनाशकारी था, लेकिन उनके रखवालों के लिए हानिरहित था। इस बार स्थिति उलट गई थी; मवेशी तो अपेक्षाकृत सुरक्षित थे, लेकिन चरवाहे खतरे में थे—बहुत बड़े और वास्तविक खतरे में—क्योंकि वह जंगल का सबसे बड़ा आतंक और विपत्ति बन चुका था: आदमखोर बाघ।

उसके दाहिने अगले पैर में लगी गेंद से एक हड्डी टूट गई थी। कुदरत ने हड्डी तो जोड़ दी, लेकिन पैर छोटा और टेढ़ा हो गया था। अब वह चुपचाप और असरदार तरीके से अपने शिकार का पीछा नहीं कर सकता था, न ही उन पर झपट्टा मारकर उनकी गर्दन तोड़ सकता था। उसका आना शोरगुल भरा होता था, हमला बेढंगा। उसके विकृत पैर की वजह से शिकार को पकड़ने की उसकी क्षमता बहुत कम हो गई थी, और अक्सर शिकार बच निकलते थे। यहाँ तक कि सुस्त मवेशी भी उसकी आहट सुनकर उससे बच निकलते थे, या हमला करने पर उसे अपनी पीठ से झटक देते थे।

अपनी विकलांगता के कारण वह दुबला-पतला और कमजोर हो गया, और उसे भुखमरी का सामना करना पड़ा। वह - विशाल अयाल वाला बाघ - बाँस के पेड़ों में दौड़ने वाले चूहों को पकड़ने के लिए मजबूर हो गया, लेकिन वे भी उससे बच निकले।

जंगल में जगह-जगह जमा हुए मैले पानी के तालाबों में रहने वाले चिपचिपे मेंढक और किनारे पर मिलने वाले नुकीले खोल वाले केकड़े ही ऐसे जीवित प्राणी थे जो उसकी रफ्तार को मात दे सकते थे। उसके लिए केवल मजबूरी ही थी, और कुछ नहीं, जिसने उसे मानव मांस के इस नए आहार को अपनाने पर मजबूर किया।

ये इस बाघ के बारे में वो तथ्य हैं जो मैंने समय-समय पर एकत्र किए हैं। उसके घाव की प्रकृति का पता मुझे वर्षों बाद तब चला जब मैंने उसे गोली मारने के बाद उसकी जांच की।

एक दिन एक व्यक्ति आनंदपुरम बस स्टैंड पर उतरा और तीन मील दूर एक छोटे से गाँव के लिए जंगल के रास्ते निकल पड़ा। वह पिछली सुबह शिमोगा शहर के लिए निकला था और अपनी पत्नी से कहा था कि अगले दिन उसका दोपहर का भोजन तैयार रखे, क्योंकि वह समय पर लौट आएगा। भोजन तैयार कर दिया गया था, लेकिन वह नहीं आया। इससे छोटे से घर में कोई चिंता नहीं हुई क्योंकि भारत में, विशेषकर छोटे शहरों में, व्यापारिक मामलों का निपटारा अक्सर लंबा चलता है। पूर्वी भारत में समय का कोई महत्व नहीं है।

उस शाम भी वह नहीं आया, और न ही अगले पूरे दिन। तीसरे दिन उसके सबसे बड़े बेटे, जो अब वयस्क हो चुका था, को शिमोगा भेजा गया ताकि पता चल सके कि उसके पिता को आने में देरी क्यों हुई। वहाँ उसे बताया गया कि लेन-देन तीन दिन पहले ही पूरा हो चुका था और उसके पिता अपने घर लौट गए थे।

फिर भी कोई अप्रिय चिंता नहीं जताई गई, क्योंकि ऐसा माना जा रहा था कि वह इसी मामले के सिलसिले में आनंदपुरम से परे स्थित सागर गया होगा।

इस प्रकार पाँच दिन बीत गए और कोई खबर नहीं मिली, जिससे परिवार सचमुच चिंतित और भयभीत हो गया। सबका यही मत था कि जंगल से घर लौटते समय बदमाशों या डाकुओं ने उस पर हमला कर उसे लूट लिया होगा और संभवतः उसकी हत्या कर दी होगी। पुलिस को सूचना दी गई और तलाशी अभियान चलाया गया, जिसमें उसके घर के गाँव की ओर जाने वाले

रास्ते के किनारे झाड़ियों में एक चप्पल पड़ी मिली।

घरवालों ने उस पुरानी चप्पल को लापता व्यक्ति की चप्पल बताकर पहचान लिया, जिससे डकैत होने की आशंका और पुख्ता हो गई। आनंदपुरम में रहने वाले कई कुख्यात डकैतों (के.डी.) को पुलिस स्टेशन ले जाया गया और उनसे पूछताछ की गई। उन्होंने अपनी बेगुनाही का दावा किया।

इसके बाद गहन और व्यापक तलाशी ली गई। कंटीली झाड़ियों और झाड़ियों पर कपड़ों के टुकड़े और सूखे खून के निशान मिले, और एक नाले के सूखे तल पर बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए। इसके बाद कोई सुराग नहीं मिला।

उन इलाकों में बाघ काफी आम थे—या यूं कहें कि उन वर्षों में आम हुआ करते थे—और चूंकि लापता व्यक्ति से पगडंडियों के निशानों को जोड़ने वाला कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था, इसलिए केवल एक अस्पष्ट संदेह था कि बाघ का उसके लापता होने से कुछ संबंध हो सकता है। पगडंडियों के निशानों की उपस्थिति महज एक संयोग भी हो सकती थी।

यह रहस्य कभी सुलझ नहीं पाया।

दो सप्ताह बाद एक अकेला साइकिल सवार कुम्सी से चोर्डी तक चार मील की दूरी तय कर रहा था। अपने गंतव्य से आधा मील पहले सड़क एक पुल से नदी पार करती है। पुल के दोनों ओर चूना पत्थर की एक दीवार बनी हुई थी। साइकिल चलाते हुए उसने देखा कि एक बाघ लगभग उसके नीचे पानी पी रहा है। वह जानवर से सुरक्षित दूरी पर था, इसलिए उसने ब्रेक लगाकर साइकिल पर बैठकर एक पैर दीवार पर रखा और बाघ को देखने लगा।

बाघ ने पानी पीना समाप्त किया, मुड़ा और किनारे पर वापस चढ़ने लगा। कुछ ही सेकंड में वह झाड़ियों में गायब हो जाता, इसलिए मज़ाक में साइकिल सवार ने 'शू-शू' चिल्लाया। बाघ रुका, अपने कंधे के ऊपर से पीछे मुड़कर साइकिल सवार की ओर देखा और गुर्राया।

उस आदमी ने बड़ी जल्दी से अपना पैर दीवार से हटाया, पैडल पर रखा और जितनी तेज़ी से हो सकता था, चोर्डी की ओर भागा। वहाँ उसने अपने दोस्तों को बताया कि रास्ते में उसकी मुलाकात एक बहुत ही खूंखार बाघ से हुई जिसने उस पर हमला करने की कोशिश की थी। भगवान की कृपा से ही वह बच पाया।

अगले लगभग एक महीने तक शांति छाई रही, और फिर पहली प्रमाणित मानव हत्या की घटना घटी। यह घटना तुप्पुर नामक स्थान पर हुई, जो चोर्डी और आनंदपुरम के लगभग मध्य में स्थित है। यह सड़क के किनारे बसा एक छोटा सा गाँव है, और वहाँ की एक महिला अपनी भैंस को गाँव के पीछे स्थित नदी में सुबह नहलाने के लिए ले गई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि भैंस पानी में लेटी हुई थी, केवल उसका सिर पानी से ऊपर था, जैसा कि भैंसों की सामान्य आदत होती है, तभी एक बाघ ने नदी के किनारे बैठी अपनी भैंस की देखभाल कर रही महिला पर हमला कर दिया। गाँव की एक अन्य महिला नदी से पानी भरकर आई थी और भैंस के पास बैठी महिला से कुछ बातें करके आगे बढ़ रही थी। वह मुश्किल से सौ गज ही चली थी कि उसने एक तीखी चीख सुनी और पीछे मुड़कर देखा तो एक बाघ उसकी भैंस को अपने मुँह में लिए हुए जा रहा था।

बाघ और पीड़ित महिला जंगल में गायब हो गए, जबकि दूसरी महिला ने अपना पानी का घड़ा नीचे फेंक दिया और झोपड़ियों की ओर दौड़ पड़ी।

इस तरह की अधिकांश घटनाओं में जो होता है, वही हुआ। महिला की तलाश में जाने के लिए पर्याप्त संख्या में साहसी पुरुषों को इकट्ठा करने में काफी समय लग गया। आखिरकार, वे वहाँ पहुँच गए और उन्होंने उसे, या यूँ कहें कि उसके बचे हुए अवशेषों को ढूंढ लिया।

यह शुरुआत थी, और उसके बाद मानव पीड़ितों का सिलसिला शुरू हुआ, जिनकी मौतें शरावती नदी के उस पार जोग जलप्रपात के पास बॉम्बे बंगले की ओर जाने वाली सड़क तक हुईं।

सरकारी कामकाज धीमी गति से चलता है, और इन क्षेत्रों में आरक्षित जंगलों को इस जानवर के शिकार के लिए जनता के लिए खोलने में काफी समय लग गया।

कई उत्साही लोग वहां पहुंचे और उनमें बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भी काफी प्रतिनिधि मौजूद थे। उन्होंने पूरी लगन और मेहनत से प्रयास किया, लेकिन भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया। यह बाघ जीवित चारे के रूप में बांधे गए मवेशियों और भैंसों से आकर्षित नहीं हुआ। इसी बीच, मानव हत्याएं जारी रहीं।

मेरे एक मित्र जैक हॉटन, जिन्हें उनके लगभग छह फुट चार इंच लंबे और उसी अनुपात में चौड़े शरीर के कारण 'लॉफ्टी' उपनाम से जाना जाता था, ने इस जानवर का शिकार करने का फैसला किया और मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा। जहाँ तक मुझे याद है, यह यात्रा बाघ के आदमखोर बनने के लगभग एक साल बाद की गई थी।

कुछ इस तरह हुआ कि किसी कारणवश—संभवतः इसलिए कि मैं अपनी बची हुई छुट्टी का उपयोग कर चुका था—मैं उनके साथ केवल एक सप्ताह के लिए गया, और उनसे कहा कि मुझे उस समय के बाद वापस लौटना होगा। हमने उनकी 1931 मॉडल की फोर्ड कार में यात्रा की, और यह तय हुआ कि सप्ताह समाप्त होने के बाद मैं ट्रेन से बैंगलोर लौट जाऊंगा, जबकि वे लगभग पूरे एक महीने तक वहीं रहेंगे।

हम बैंगलोर से शिमोगा के लिए कार से रवाना हुए और वहां आधे दिन के लिए रुके ताकि सागर वन रेंज के जिला वन अधिकारी से मिल सकें, जहां ये हत्याएं हो रही थीं, ताकि उन विभिन्न स्थानों के नाम और उन हमलों की सटीक तारीखों का पता लगाया जा सके जहां लोगों पर हमले हुए थे, ताकि हमलों के क्रम का अध्ययन करके, यदि संभव हो तो, इस बाघ द्वारा अपनाए जा रहे सटीक क्षेत्र का पता लगाया जा सके।

मैंने पहले ही समझाया है कि आदमखोर बाघ आमतौर पर एक निश्चित मार्ग या यात्रा कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं। मानचित्र पर उन गांवों या इलाकों के नाम और प्रत्येक घटना की तारीख नोट करके, जहां वे शिकार करते हैं, अक्सर स्वयं ही उनके क्षेत्र का पता लगाना और यह अनुमान लगाना संभव होता है कि बाघ किस दिशा या क्षेत्र में हो सकता है, जब आप उसे पकड़ने का प्रयास करेंगे।

मानचित्र पर घटनाओं के हमारे अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से पता चला कि यह बाघ सड़क के किनारे से कुछ मील की दूरी के भीतर ही रहा और कुम्सी और शरावती नदी के दूसरे किनारे के बीच, बॉम्बे बंगले तक, ऊपर-नीचे घूमता रहा।

यह एक बेहद घना जंगल वाला इलाका है जिसमें कई बिखरे हुए गाँव हैं, जिनके निवासी लगभग पूरी तरह से मवेशियों के बड़े झुंड चराने में लगे हुए हैं। इन इलाकों में हर महीने बड़ी संख्या में बाघ और तेंदुओं द्वारा इन जानवरों को मार डाला जाता है, इसलिए इस तथ्य के कारण यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि क्या हमारा आदमखोर जानवर मवेशियों को भी मारता था या नहीं। हमें लगभग यकीन था कि वह ऐसा करता था, क्योंकि इंसानों का शिकार बहुत कम और अनियमित था, जिससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह केवल इंसानी मांस खाकर ही जीवित रह सकता था। हमारी राय स्थानीय लोगों की राय से बिल्कुल विपरीत थी, जिनका मानना था कि वह किसी भी पालतू जानवर को हाथ नहीं लगाता था।

लॉफ्टी ने टुप्पुर बस्ती से आधा मील दूर स्थित एक छोटे से वन बंगले में अपना डेरा डालने

का फैसला किया। यह एक सुरम्य छोटा सा लॉज है, जो सड़क से लगभग दो सौ गज की दूरी पर जंगल में स्थित है, और आसपास का जंगल जंगली जानवरों, विशेष रूप से चित्तीदार हिरणों से भरा हुआ है। उस वर्ष कुछ नर हिरणों के सिर बहुत ही शानदार थे और हमें उनमें से कई उत्कृष्ट नमूने देखने को मिले।

लॉफ्टी ने हमेशा की तरह तीन जानवरों को चारा बनाकर अपना काम शुरू किया। इनमें से दो जवान भैंसें थीं और तीसरा एक बहुत बूढ़ा और कमजोर बैल था। एक भैंस को उस नाले के पास बांधा गया जहाँ साइकिल सवार ने बाघ को देखा था। बूढ़े बैल को लगभग उसी जगह बांधा गया जहाँ से तुप्पुर की महिला को अगवा किया गया था। बाकी बची भैंस को हमने आनंदपुरम के पास उसी रास्ते पर बांध दिया, जिस रास्ते से लापता व्यक्ति अपने घर जा रहा था।

इन व्यवस्थाओं को पूरा करने के बाद, हम जोग के लिए रवाना हुए और वहाँ दो भैंसों का चारा तैयार किया। हमने एक भैंस को बॉम्बे बंगले से लगभग आधा मील दूर और दूसरी को शरावती नदी के दक्षिणी किनारे पर, उस स्थान के पास बाँधा जहाँ मैसूर किनारे पर स्थित बंगले और बॉम्बे बंगले के बीच चलने वाली नौका नदी पार करती है। यह नौका जलप्रपात से लगभग एक मील ऊपर नदी पार करती है।

इसलिए लॉफ्टी के पास कुल पाँच चारागाह थे, और मुझे याद है कि उन पर उसका काफी पैसा खर्च हुआ था। योजना यह थी कि हम बारी-बारी से तुप्पुर फॉरेस्ट लॉज और बॉम्बे बंगले में रात बिताएंगे, और पिछली रात जहां बिताई थी उसके सबसे पास वाले चारागाह की जाँच करेंगे, फिर कार से उस बंगले के लिए रवाना होंगे जहां हमें अगली रात बितानी थी।

मानव वध की तारीखों की जाँच करने की विधि से किए गए मेरे अनुमानों से, जिनकी संख्या अब नौ हो चुकी थी, ऐसा प्रतीत होता है कि यह बाघ सागर और आनंदपुरम के बीच इस क्षेत्र के मध्य में कहीं हो सकता है।

इसलिए तीसरे दिन मैंने खुद एक भैंस खरीदी, जिसे मैंने इन दोनों जगहों के बीच लगभग आधे रास्ते में और मुख्य सड़क से एक फर्लांग की दूरी पर बांध दिया। हमने इस जानवर को दोपहर लगभग दो बजे तुप्पुर बंगले से जोग जाते समय बांधा।

अगली सुबह तड़के हमने झरने के पास बंधे दो चारे देखे। दोनों जीवित थे। इसलिए हम तुप्पुर के लिए निकल पड़े, रास्ते में रुककर उस भैंस को देखने गए जिसे मैंने पिछली दोपहर बांधा था। उसे एक बाघ ने मार डाला था।

लॉफ्टी, एक अच्छे खिलाड़ी होने के नाते और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मैंने इस भैंस के लिए पैसे दिए थे, इस बात पर अड़ा रहा कि मैं ही गोली चलाऊं। लेकिन मैं जानता था कि वह कितना उत्सुक था, इसलिए काफी बहस हो गई। आखिरकार हमने टॉस जीता और लॉफ्टी जीत गया।

उसे पेड़ पर असहज स्थिति में बैठा छोड़कर, मैं तुप्पुर लॉज के लिए रवाना हुआ ताकि उसका मचान ला सकूँ, जिसे हम दोनों उस महत्वपूर्ण दिन बड़ी लापरवाही से अपने साथ लाना भूल गए थे। लॉफ्टी का मचान बस चार फुट चौड़ा एक चौकोर बांस का ढांचा था, जिस पर चौड़ी नवारी टेप लगी हुई थी। चारों कोनों पर मोटी रस्सी के लूप लगे थे, जो इसे पेड़ से बांधने में मददगार थे। मैं तुप्पुर बस्ती से तीन आदमियों को भी अपने साथ लाया था ताकि वे इस मचान को खड़ा करने में मदद कर सकें।

हमने सड़क किनारे ठंडा दोपहर का भोजन किया, जबकि पुरुष मचान को ठीक करने और उसे शाखाओं से ढकने का काम कर रहे थे। इसके बाद लॉफ्टी कार की पिछली सीट पर चार बजे तक झपकी लेता रहा, जबकि मैं तीनों पुरुषों से बातचीत करता रहा। ऐसा इसलिए था क्योंकि

सड़क के पास होने के कारण, हम जानते थे कि बाघ रात होने से पहले दिखाई नहीं देगा।

चार बजे मैंने उसे जगाया और वह अपने सारे सामान के साथ मचान पर चढ़ गया। उसका हथियार 8 मिमी माउज़र राइफल थी—एक बेहद साफ-सुथरी और संतुलित राइफल—जिसे लॉफ्टी प्यार से 'शॉर्टी बिल' कहता था। उसे शुभकामनाएँ देते हुए और सुबह होने तक वापस आने का वादा करते हुए, मैं तुप्पुर के लिए रवाना हो गया, जहाँ मैंने तीनों आदमियों को छोड़ दिया और फिर वापस आकर आनंदपुरम के छोटे से डाक बंगले में रात बिताई, जो उस जगह के करीब था जहाँ मैंने लॉफ्टी को मृत भैंस के पास छोड़ा था।

अगली सुबह तड़के मैं सड़क पर उस जगह पहुँच गया जहाँ वह बैठा था और मैंने कार का हॉर्न बजाया। उसने भी मुझे हल्की सी आवाज़ में जवाब दिया, जो कि हमारे बीच विदा होने से पहले तय किया गया संकेत था, जिससे यह पता चलता था कि सब ठीक है।

मैं उसके पेड़ की ओर चल पड़ा और आधे रास्ते में उससे मिला, वह कार की ओर चल रहा था। उसने मुझे खुशखबरी सुनाई कि उसने बाघ को मार गिराया है, जो पिछली शाम हमारी उम्मीद से बहुत पहले, अंधेरा होने के ठीक बाद आ गया था।

मुझे उसकी सफलता पर बहुत खुशी हुई, वहीं लॉफ्टी खुद भी बेहद प्रसन्न और उत्साहित था। मैं उसके साथ बाघ को देखने गया, जो एक खूबसूरत, विशाल नर बाघ था और अपने जीवन के चरम पर था, साथ ही उस पर गहरे रंग की आकर्षक धारियाँ बनी हुई थीं।

लेकिन मैंने गौर किया कि वह एक बिल्कुल सामान्य बाघ था। उसमें वह विशिष्ट अयाल बिल्कुल नहीं था जिसे सरकारी अधिसूचना में आदमखोर बाघ की प्रमुख विशेषता बताया गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि अपनी सफलता के उत्साह में लॉफ्टी ने इस तथ्य को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया था और मेरा उसे यह बताने का मन ही नहीं हुआ।

मैंने उनकी सफलता पर उन्हें हार्दिक बधाई दी और पूरी ईमानदारी दिखाने की कोशिश की। फिर उन्हें उनकी बहुमूल्य उपलब्धि की रक्षा करने के लिए छोड़कर, मैं टुप्पुर वापस चला गया ताकि शव को उठाने के लिए चार आदमी और एक बांस का डंडा ला सकूँ।

आदमियों के साथ लौटकर, हमने बाघ के पैरों को खंभे से बांध दिया और उसे उल्टा करके गाड़ी तक ले गए। चूंकि लॉफ्टी के पास पीछे कोई ऐसा मजबूत कैरियर नहीं था जो इतना वजन सह सके, इसलिए हमने शव को गाड़ी के बोनट पर फैला दिया। इस प्रक्रिया में न केवल धातु मुड़ गई, बल्कि गाड़ी चलाना भी बहुत मुश्किल हो गया, क्योंकि अपनी ऊंचाई के बावजूद, बोनट पर पड़े शव के कारण लॉफ्टी को कुछ गज तक आगे सड़क दिखाई नहीं दे रही थी।

आनंदपुरम से गुजरते हुए, लॉफ्टी ने अपने पुरस्कार को वहाँ जमा हुए लोगों को दिखाने के लिए गाड़ी रोक दी, और तभी उसे घोर निराशा का सामना करना पड़ा। लोगों ने बाघ को देखते ही कहा, 'लेकिन साहब, यह आदमखोर बाघ नहीं है।' लॉफ्टी ने गुस्से से जवाब दिया, 'बेशक यह वही है। यह और कौन सा बाघ हो सकता है? और वैसे भी, आपको इतना यकीन कैसे है कि यह आदमखोर नहीं है?' लोगों ने सफाई देते हुए पूछा, 'इसकी गर्दन के बाल कहाँ हैं?'

‘बालों की अयाल?’ लॉफ्टी पहले तो खाली नज़र से देखने लगा। फिर उसकी आँखों में समझदारी झलकने लगी। आखिर में उसने इल्ज़ाम भरी निगाहों से मेरी तरफ देखा। ‘मैं अयाल के बारे में पूरी तरह भूल गया था,’ उसने स्वीकार किया। ‘मैंने गलत बाघ को गोली मार दी। तुम्हें तो पहले से ही पता था?’

‘हाँ, लॉफ्टी, मुझे पता था,’ मैंने स्वीकार किया। ‘लेकिन आज सुबह जब मैं तुमसे मिला और तुमने मुझे बताया कि तुमने आदमखोर बाघ को मार गिराया है, तो तुम इतने खुश थे कि मेरा तुम्हें निराश करने का मन ही नहीं हुआ। मैंने सबसे पहले उसकी गर्दन के बाल देखे। ज़ाहिर है, गोली

चलाने के अलावा तुम्हारे पास कोई चारा नहीं था।' और फिर, अपनी बात को और ज़्यादा विश्वसनीय बनाने के लिए, मैंने जल्दी से कहा: 'आखिरकार, बाघ तो अँधेरे में आया था, और तुम टॉर्च की रोशनी में भी उसकी गर्दन के बाल नहीं देख सकते थे। खैर, यह एक शानदार नमूना है और गर्व करने लायक ट्रॉफी है; तो खुश हो जाओ, दोस्त।'

लेकिन लॉफ्टी इतनी आसानी से शांत नहीं हुआ। हम तुप्पुर गए, जहाँ मैंने उसे इतना निराश पाया कि बाघ की खाल उतारने के काम की निगरानी में उसकी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, और उसने यह काम पूरी तरह से मुझ पर छोड़ दिया। मैं काम करने वाले लोगों को देखता रहा जबकि लॉफ्टी एक कुर्सी पर उदास बैठा रहा। मैंने कई बार उसका ध्यान जानवर के बड़े-बड़े दांतों और पंजों, उसके गहरे निशानों और अन्य विशेषताओं की ओर दिलाकर उसे खुश करने की कोशिश की, लेकिन उसे ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी और उसने बातचीत में शामिल होने से इनकार कर दिया। उसने बस इतना कहा: 'अगर मुझे पता होता कि यह आदमखोर बाघ नहीं है तो मैं इस बेचारे जानवर को गोली नहीं मारता।'

दिन बीतने के साथ-साथ लोफ्टी का उदास मन और भी गहरा होता गया, बजाय इसके कि वह अपनी निराशा को दूर कर पाए। फिर उसने घोषणा की कि यदि अगली सुबह तक कोई हत्या नहीं हुई, तो वह बैंगलोर लौटना चाहेगा।

अगले दिन हम सुबह जल्दी उठ गए, लेकिन हमारे जाल में फँसे तीनों भैंसें बिल्कुल सुरक्षित थीं। इसलिए, हमने पहले से तय समझौते के अनुसार उन्हें उनके पुराने मालिकों को वापस बेच दिया, लगभग उस कीमत के एक चौथाई दाम पर जो लॉफ्टी ने उनके लिए चुकाई थी। फिर हम शिकारगाह के जोग छोर पर गए, लेकिन वहाँ भी दोनों भैंसें जीवित थीं। हमने उनके मालिकों के साथ वही सौदा किया जो हमने तुप्पुर में किया था, और देर दोपहर हम 'ए' मॉडल गाड़ी में बैठकर बैंगलोर वापस आ गए।

इसके कुछ समय बाद तक मुझे इस बाघ के बारे में कोई खबर नहीं मिली। मुझे लगता है कि एक साल से भी अधिक समय बाद मैंने अखबारों में पढ़ा कि कुम्सी कस्बे के काफी पास और लगभग सड़क किनारे एक कोयला जलाने वाले को बाघ ने मार डाला और पूरा खा लिया था।

इसलिए मैंने शिमोगा के जिला वन अधिकारी (डीएफओ) को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो भविष्य में होने वाले शिकारों के बारे में मुझे टेलीग्राम द्वारा सूचित करते रहें।

शिमोगा जिले के जंगल, मैसूर राज्य के दक्षिण-पश्चिम और मद्रास एवं चित्तूर जिलों के जंगलों के विपरीत, घनी आबादी वाले गांवों और बस्तियों से भरे हुए हैं, और इनमें व्यापक रूप से खेती होती है, विशेष रूप से धान के खेत फैले हुए हैं। सड़कें भी वाहनों और पैदल यात्रियों द्वारा अत्यधिक उपयोग की जाती हैं। इन सब कारणों से, बाघ न केवल कहीं भी हो सकता है और उसे ढूंढना मुश्किल होता है, बल्कि उसका पीछा करना शिकारी के व्यक्तिगत कौशल पर निर्भर करता है। यह एक विचित्र तथ्य है कि भारत के अन्य जंगलों के विपरीत, इस क्षेत्र में कोई आदिवासी वन जनजाति निवास नहीं करती है। जंगलों में जाने वाले एकमात्र लोग मलयाली मूल के कुली हैं, जिन्हें भारत के पश्चिमी तट से बड़ी संख्या में काम पर रखा जाता है। संख्या में उनके बाद लंबानी जनजाति का स्थान आता है। ये भारत की 'खानाबदोश जनजाति' हैं, जो पश्चिमी दुनिया में अपने रोमानी रिश्तेदारों से विचित्र रूप से मिलती-जुलती हैं। लेकिन केवल महिलाएं ही रूप-रंग में विशिष्ट हैं। वे स्थानीय लोगों की तुलना में गोरे रंग की होती हैं और आकर्षक ढंग से सजी-धजी रहती हैं, जिनमें कई आभूषण, बड़ी-बड़ी सफेद हड्डियों की चूड़ियाँ, हर रंग, आकार और प्रकार के मोतियों के हार, नाक में नथनी, कान की बालियाँ, उंगलियों में अंगूठियाँ और पैरों की उंगलियों में

अंगूठियाँ शामिल हैं। वे भारत की अन्य महिलाओं की तरह साड़ी नहीं पहनतीं, बल्कि एक विशिष्ट पोशाक पहनती हैं, जिसमें एक बहुत चौड़ी पेटीकोट होती है, जिसके ऊपर एक बहुत ही कसी हुई, पीछे से खुली जैकेट होती है, जिसमें अक्सर उनका खुला हुआ सीना दिखाई देता है, और इसके ऊपर एक बड़ा शॉल जैसा कपड़ा लिपटा होता है जो सिर और कंधों को ढकता है। उनकी जैकेट के दोनों हिस्से पीछे से डोरियों से बंधे होते हैं।

दूसरी ओर, लम्बानी पुरुष महिलाओं की तुलना में अधिक सांवले होते हैं और बहुत ही साधारण कपड़े पहनते हैं। वास्तव में, वे लगभग बाकी स्थानीय ग्रामीणों की तरह ही कपड़े पहनते हैं, जो कन्नड़ भाषी हैं। वे साधारण ढीली पगड़ी और साधारण या हल्के सफेद सूती कमीज पहनते हैं, जिसके नीचे वे छोटी पैंट या कमर पर ऊँची बंधी हुई धोती पहनते हैं। उनके घुटने और पिंडली आमतौर पर खुले रहते हैं, लेकिन खुरदुरे चमड़े के सैंडल उनके पैरों को कांटों से बचाते हैं।

एक रोचक तथ्य यह है कि दक्षिण भारत के खानाबदोशों में पुरुष और महिलाएं चेहरे या अन्य शारीरिक बनावट में एक-दूसरे से बिल्कुल भी मिलते-जुलते नहीं हैं। अधिकांश महिलाएं जितनी सुंदर और आकर्षक होती हैं, पुरुष उतने ही भद्दे और साधारण दिखते हैं।

वे एक असाधारण जनजाति हैं और उन्होंने सदियों से अपनी विशिष्टता को अत्यंत दृढ़ता से संरक्षित रखा है। मैं स्वयं इस बात से आश्चर्यचकित हूँ, क्योंकि पुरुषों का आलस्य ऐसा है कि किसी को उम्मीद होगी कि उनकी जनजातीय विशिष्टता कई पीढ़ियों पहले ही लुप्त हो गई होगी। अपनी परंपराओं को संजोने, अपने आकर्षक पहनावे और रूप-रंग को बनाए रखने और जनजाति एवं उसके रीति-रिवाजों को इतने सुव्यवस्थित ढंग से कायम रखने का श्रेय पूरी तरह से महिलाओं को जाता है।

ये लंबानी लोग कुल मिलाकर घुमंतू होते हैं और एक जगह पर लंबे समय तक नहीं रुकते। वे नियमित गांवों में रहने के बजाय साफ-सुथरे स्थानों में घास-फूस की छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहना पसंद करते हैं। आम तौर पर वे ज्यादा कुशल नहीं होते और खोजबीन में तो बिल्कुल भी माहिर नहीं होते। साथ ही, यह भी सच है कि वे स्थानीय कन्नड़ लोगों की तुलना में कहीं अधिक सहयोगी होते हैं।

लंबानी समुदाय में पुरुष और महिलाएं दोनों ही अत्यधिक शराब पीने वाले होते हैं, वे बबूल के पेड़ की छाल से, या चावल, केले और भूरी चीनी के मिश्रण से, या जामुन को चीनी में भिगोने के बाद उससे, या यूं कहें कि लगभग किसी भी सामग्री से जो उन्हें मिल जाए, अपनी खुद की बहुत ही शक्तिशाली शराब बनाते हैं—और वे स्रोत खोजने में बेहद कुशल होते हैं।

वे पैसे के बदले में मजदूरी (मुख्य रूप से भोजन और पेय पदार्थ) पाकर अधिक खुशी से काम करेंगे, क्योंकि पैसा वैसे भी ज्यादातर शराब खरीदने में खर्च हो जाएगा, अगर वे खुद शराब बनाने में असमर्थ हों। हालांकि, वे अच्छे लोग हैं और भारत की कई रोचक जातियों और जनजातियों में से एक हैं, जिनकी अनोखी और विशिष्ट शारीरिक बनावट है।

पश्चिमी मैसूर के कॉफी बागान और संतरे के बागान काफी हद तक लंबानी समुदाय, विशेषकर महिलाओं के ऋणी हैं, जो उनके यहाँ काम करने वाले अधिकांश श्रमिकों का हिस्सा हैं। शेष श्रमिक पश्चिमी तट से आते हैं—मलयालम और मोपला मूल के लोग। इन पश्चिमी तट के मजदूरों में एक बात समान है। नारियल के पेड़ों, झीलों, नदियों और पश्चिमी तटों पर लहरों के बीच बसे अपने घरों से उनका अटूट लगाव है। यह वास्तव में एक खूबसूरत देश है, और मैं उनकी इस देश के प्रति लगाव को अच्छी तरह समझ सकता हूँ। उद्योग की कमी और किसी भी प्रकार के निश्चित काम के अभाव के कारण वे रोजगार की तलाश में भीतरी इलाकों में चले जाते हैं। लेकिन जैसे ही वे कुछ कमा लेते हैं और कुछ और बचा लेते हैं—क्योंकि लंबानी समुदाय के विपरीत, वे

बहुत मितव्ययी होते हैं—वे कुछ महीने आराम से बिताने के लिए अपने वतन लौट आते हैं। यह सर्वव्यापी विशेषता उन्हें बागानों में काम करने वाले मजदूरों के रूप में कुछ हद तक अविश्वसनीय बनाती है, क्योंकि जब तक उनके वेतन का एक हिस्सा एक प्रकार के बॉन्ड के रूप में रोक कर नहीं रखा जाता, तब तक उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित नहीं की जा सकती। कानून जागीरदारों के लिए इस प्रथा को प्रतिबंधित करता है, जबकि दूसरी ओर आम तौर पर मजदूरों को अग्रिम राशि दी जाती है ताकि वे चना और अन्य खाद्य सामग्री, कंबल और अन्य छोटी-मोटी चीजें खरीद सकें। जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, मलयाली मजदूर इसका स्वागत करते हैं, जो अपनी तनख्वाह और जो भी अग्रिम राशि उन्हें मिल पाती है, उसे लेकर अपने तटीय क्षेत्रों में छुट्टी पर चले जाते हैं।

इसलिए बागान मालिक विनम्र और आकर्षक लम्बानी खानाबदोश को प्रोत्साहित करते हैं और उस पर निर्भर हो गए हैं, क्योंकि वह उनकी जागीरों का एक मुख्य आधार है। उनके लिए वह लगभग एक 'अनिवार्य' व्यक्ति बन गया है।

इस स्थिति में मेरी निजी दिलचस्पी सिर्फ इस बात में थी कि अगर मैं कभी इस बाघ का पीछा करता, तो मुझे लगभग पूरी तरह से अपनी सूझबूझ पर ही निर्भर रहना पड़ता। हालांकि लम्बानी लोग जागीर के काम में माहिर हैं, लेकिन वे अन्य आदिवासी वन जनजातियों—जैसे पुजारी, शोलागा, करुम्बा और चेन्चू—की तुलना में निशान ढूंढने और जंगल के सामान्य ज्ञान में उतने कुशल नहीं हैं। काश यह बाघ किसी ऐसे वन क्षेत्र में होता जहां मुझे अनुभवी और मददगार लोग मिल जाते।

शिमोगा में रक्षा अधिकारी को पत्र लिखने के लगभग एक महीने बाद मुझे उनसे धन्यवाद पत्र और यह खबर मिली कि बाघ ने कुम्सी और चोर्डी के बीच लगभग मध्य में सड़क किनारे उगने वाले सागौन के पेड़ों से पत्तियां इकट्ठा कर रही एक महिला पर हमला कर उसे मार डाला था।

जिन लोगों ने सागौन का पेड़ या उसके पत्ते नहीं देखे हैं, उनके लिए मैं बता दूं कि ये पत्ते आकार में बड़े और रेशेदार होते हैं। ये आसानी से फटते नहीं हैं। इसलिए इनका इस्तेमाल पत्तों की थालियां बनाने में बहुत किया जाता है, जिन पर भारतीय होटलों में भोजन, खासकर चावल परोसा जाता है। ऐसी एक थाली बनाने में लगभग चार-पांच सागौन के पत्ते लगते हैं, जो पश्चिमी मानकों के हिसाब से बहुत बड़ी होती है। किनारों को सुई-धागे से सिलकर या फिर दो इंच लंबे घास के टुकड़ों से जोड़कर बनाया जाता है। मैसूर राज्य के कई भोजनालयों की मांग को पूरा करने के लिए लाखों की संख्या में ऐसी थालियों की आवश्यकता होती है। इसलिए, जिन इलाकों में सागौन के पेड़ बहुतायत में उगते हैं, वहां इनका निर्माण एक बड़ा उद्योग बन गया है। वन विभाग इन पत्तों को तोड़ने का अधिकार ठेकेदारों को बेचता है, जो नीलामी में बोली लगाकर यह अधिकार प्राप्त करते हैं। ठेकेदार बदले में महिला श्रमिकों को काम पर रखते हैं और उन्हें तोड़े गए हर हजार अच्छे पत्तों के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान करते हैं। इस काम के लिए पुरुषों की बजाय महिलाओं को नियुक्त किया जाता है क्योंकि वे पुरुषों की तुलना में लगभग आधी दर ही मांगती हैं।

रक्षा अधिकारी ने अपने लंबे पत्र का समापन इस कथन के साथ किया कि उन्हें उम्मीद है कि मैं कुम्सी आकर उस आदमखोर को मारने की कोशिश करूंगा।

जिस क्षेत्र में बाघ घूमता था, उसका विस्तार और उससे भी अधिक वे अन्य परिस्थितियाँ जिनका मैंने पहले ही विस्तार से वर्णन किया है, मुझे यह महसूस करा रही थीं कि इस स्तर पर खोज लगभग असंभव है। साथ ही, छुट्टी का सवाल भी एक बड़ी समस्या थी। ऐसी परिस्थितियों

में बाघ की खोज में कई सप्ताह, या शायद कुछ महीने भी लग सकते थे।

इसलिए मैंने एक बहुत ही कूटनीतिक जवाब लिखने का जिम्मा उठाया। वन अधिकारी को उनके पत्र के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हुए, मैंने उन्हें किसी विशेष इलाके में आदमखोर बाघ को ढूंढने या पकड़ने में लगने वाले समय के बारे में समझाने की कोशिश की। मैंने बताया कि मेरे पास उस समय लंबी यात्रा करने का समय नहीं था। मैंने यह भी सुझाव दिया कि वे क्षेत्र के सभी वन स्टेशनों और पुलिस स्टेशनों को सूचित करें कि वे निवासियों को आदमखोर बाघ से सावधान रहने की चेतावनी दें और केवल दिन के उजाले में और समूहों में मुख्य सड़कों पर ही चलें; साथ ही चरवाहों और ठेकेदारों के कुलियों को अस्थायी रूप से काम बंद करने के लिए कहें। यदि कोई और मानव हत्या की घटना होती है, तो मैंने सुझाव दिया कि वे पुलिस और अपने अधीनस्थों से पीड़ित के परिजनों से कहें कि वे शव को न छुएं और मुझे एक टेलीग्राम भेजें। मैंने यह भी सुझाव दिया कि वन विभाग आधा दर्जन भैंसों की खरीद को मंजूरी देकर और उन्हें उस क्षेत्र में कुछ-कुछ दूरी पर बांधकर आर्थिक सहायता कर सकता है जहां बाघ सक्रिय है। मैंने वादा किया था कि किसी नए शिकार (चाहे वह जानवर हो या इंसान) की खबर मिलते ही मैं आऊंगा, बशर्ते कि शिकार के शव को उसी स्थान पर छोड़ दिया गया हो जहां बाघ ने उसे आखिरी बार छोड़ा था।

इस पत्र का जवाब तीसरे दिन आया। इसमें मेरे न आ पाने पर गहरा खेद व्यक्त किया गया था और यह भी कहा गया था कि इतने बड़े क्षेत्र में रहने वाले सभी ग्रामीणों द्वारा मेरे द्वारा सुझाए गए एहतियाती उपायों का पालन सुनिश्चित करना असंभव होगा। इसके अलावा, रिश्तेदार अपने प्रियजन के शव को जंगल में आदमखोर बाघ को लुभाने के लिए चारा के रूप में छोड़ने पर सहमत नहीं होंगे। वे मांग करेंगे कि शव को तुरंत हटाकर उसका अंतिम संस्कार किया जाए। अंत में, उन्होंने कहा कि नियमों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जिसके तहत वन विभाग बाघ को लुभाने के लिए छह जीवित भैंसें खरीदने का खर्च उठा सके।

बेशक, मुझे इन दोनों सुझावों पर मिलने वाली प्रतिक्रियाओं का पहले से ही अंदाज़ा था। दरअसल, मैंने ये सुझाव सिर्फ़ इसलिए दिए थे ताकि अप्रत्यक्ष रूप से उस समस्या को उजागर कर सकूँ जिसका सामना मुझे बाघ को ढूंढने में करना पड़ रहा था, जो भूसे के ढेर में सुई ढूंढने जैसा था। उस पहले पत्र में, जिसमें मुझे तुरंत कुम्सी आने के लिए कहा गया था, ऐसा लगा जैसे लेखक ने शायद कुछ पेचीदगियों को नज़रअंदाज़ कर दिया हो, और मैं चाहता था कि वह मेरी बात को भी समझे।

अगले कुछ हफ्तों तक कुछ नहीं हुआ और फिर आदमखोर बाघ ने दोबारा हमला किया, इस बार चोर्डी और तुप्पुर के बीच दो शिकार किए। इस त्रासदी की खबर मुझे रक्षा कार्यालय (डीएफओ) के एक लंबे टेलीग्राम से मिली, जिसमें लिखा था कि बाघ ने चोर्डी के पास करादिबेट्टा बाघ अभ्यारण्य के सामने वाली मुख्य सड़क पर एक लकड़हारे और उसके बेटे पर हमला किया था। उसने आदमी को मार डाला और बेटे को उठाकर ले गया। क्या मैं तुरंत आ सकता हूँ?

करादिबेट्टा बाघ अभ्यारण्य यहाँ सड़क के उत्तरी किनारे पर स्थित है। यह सागौन और मिश्रित वन का एक विशाल क्षेत्र है, जिसे मैसूर के महाराजा और राज्य वन विभाग के आदेशानुसार एक अभयारण्य के रूप में अलग रखा गया है, जहाँ शिकार की अनुमति नहीं है।

इस राज्य के प्रबुद्ध शासक ने अपने दूरदर्शी और उतने ही प्रबुद्ध मुख्य संरक्षक की सलाह और सहयोग से मैसूर राज्य के विभिन्न जिलों में वन खंडों को वन्यजीव संरक्षण के लिए वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया है। इन स्थानों पर शिकार करना सख्त वर्जित है। मैसूर राज्य की यह प्रगतिशील नीति भारत के अन्य हिस्सों के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे एक दूरदर्शी शासक और उनके सक्षम सहायक ने वन्यजीव संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाई है। इस तरह की

पहल का अनुकरण पूरे उपमहाद्वीप में किया जा सकता है, जहाँ हर प्रकार के वन्यजीवों का तेजी से शिकार हो रहा है।

इस विशेष मामले में शायद आदमखोर बाघ ने नियमों का उल्लंघन किया था, क्योंकि उसने अभयारण्य में शरण ली थी, जो कि सभ्य और सामान्य बाघों का घर माना जाता है। मैंने सोचा कि मैं खुद जाकर देखूंगा, क्योंकि यह महत्वपूर्ण था कि अधिकांश मानव हत्याएं कुम्सी और आनंदपुरम के बीच हुई थीं। करादिबेट्टा अभयारण्य लगभग इस क्षेत्र के केंद्र में स्थित है।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं बैंगलोर से निकल गया, जंगल में दस दिन रहने के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करने के बाद, क्योंकि शहर से बाहर रहने की मेरी क्षमता इससे ज़्यादा लंबी नहीं थी। सड़क के बड़े हिस्से पर कंक्रीट बिछाने का काम चल रहा था, इसलिए मैं दोपहर दो बजे तक शिमोगा में रक्षा अधिकारी (डीएफओ) के पास पहुँच पाया, जहाँ मैंने उनसे मिली जानकारी के लिए धन्यवाद देने के लिए थोड़ी देर रुका।

उन्होंने कृपा करके मुझे और भी सहायता प्रदान की और अपने अधीनस्थों, कुम्सी और चोर्डी में तैनात वन रेंज अधिकारियों को संबोधित दो पत्र सौंपे। एक पत्र में उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे मेरी हर संभव सहायता करें, विशेष रूप से जीवित चारा खरीदने में, जो मैसूर राज्य में कभी-कभी थोड़ा मुश्किल होता है, जबकि दूसरे पत्र में उन्हें आदेश दिया गया था कि मुझे आदमखोर सांप का पीछा करने के लिए करादिबेट्टा के वन्यजीव अभ्यारण्य में हथियारबंद होकर जाने की अनुमति दी जाए।

मैंने एक बार फिर उन्हें धन्यवाद दिया और फिर कुम्सी के लिए सोलह मील की दूरी तय करने के लिए तेजी से गाड़ी चलाई। वहाँ के रेंज अधिकारी ने अपने वरिष्ठ अधिकारी का पत्र पढ़ने के बाद मुझे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और कहा कि वह मेरे साथ कार में चोर्डी तक चलेंगे ताकि वहाँ तैनात अपने साथी अधिकारी, रेंजर से मिल सकें।

हमने अगले कुछ मील का सफर बहुत कम समय में तय कर लिया। चोर्डी में तैनात रेंज अधिकारी मंगलौर के ईसाई थे; यानी वे पश्चिमी तट पर स्थित मंगलौर शहर से आए थे, जो भारत में ईसाई धर्म के सबसे पुराने केंद्रों में से एक है। वे मेरी मदद करने के लिए बहुत उत्सुक थे और उन्होंने तुरंत अपने अधीनस्थों को बुलाया और उनसे घटना के प्रत्यक्षदर्शी अन्य लकड़हारों को बुलाने के लिए कहा ताकि मैं उनसे बात कर सकूँ।

कुछ मिनटों बाद ये लोग वहाँ पहुँचे और उन्होंने निम्नलिखित कहानी सुनाई।

शिमोगा के एक ठेकेदार ने हाल ही में तुप्पुर से एक मील दूर जंगल के एक निश्चित हिस्से में लकड़ी काटने का अधिकार खरीदा था, जिसका इस्तेमाल लकड़ी जलाने के लिए किया जाना था। उसने उन दोनों के साथ-साथ मारे गए लकड़हारे और उसके सत्रह वर्षीय बेटे की सेवाएं भी ली थीं। उन सभी के घर शिमोगा में थे, लेकिन उन्होंने उस क्षेत्र में लकड़ी काटने का काम जारी रहने तक अस्थायी रूप से चोर्डी गांव में रहने का फैसला किया था।

जिस दिन यह हत्या हुई थी—यानी दो दिन पहले—उस दिन वे सुबह जल्दी उठ गए थे और पेड़ों की कटाई वाली जगह तक तीन मील पैदल चलकर जाने लगे थे। वे करादिबेट्टा ब्लॉक के पास से गुजर रहे थे, जो उनके दाहिनी ओर था, तभी बेटे ने अपने पिता से चबाने के लिए एक पान का पत्ता मांगा।

जो लोग नहीं जानते कि 'पान' का पत्ता क्या होता है, उनके लिए मैं अपनी कहानी को यहाँ एक-दो मिनट के लिए रोकना चाहूँगा। यह पान की बेल का लंबा, दिल के आकार का पत्ता होता है और दक्षिण भारत में सभी वर्गों के लोगों, विशेष रूप से मजदूरों के बीच बहुत लोकप्रिय है। इसे 'बीड़ा' कहा जाता है। फैले हुए पत्ते पर थोड़ा सा 'चूना', तीन-चार छोटे सुपारी के टुकड़े, शायद

नारियल के कुछ टुकड़े और थोड़ी सी चीनी रखी जाती है। फिर पान के पत्ते को इन सामग्रियों के चारों ओर लपेटकर अच्छी तरह चबाया जाता है। सफेद चूना और सुपारी के कारण मुंह में बहुत लार बनती है और उसका रंग गहरा लाल हो जाता है। चबाते हुए चलते समय ये लोग थूकते हैं, जिससे दीवारों, फुटपाथों और हर जगह खून जैसे लाल निशान बन जाते हैं। भारत में नवागंतुक यूरोपीय लोग, जो हर जगह इन लक्षणों के संकेत देखते हैं, आमतौर पर देश में उन्नत तपेदिक के मामलों की बड़ी संख्या को देखकर स्तब्ध रह जाते हैं।

अब कहानी पर लौटते हैं। पिता अपने बेटे को पत्ता देने के लिए रुका। ऐसा करने के लिए, उसे पहले उसे अपनी धोती के कोने से निकालना पड़ा जहाँ वह गाँठ लगाकर रखा हुआ था। इस बीच, बाकी दो आदमी आगे बढ़ चुके थे। उन्होंने एक दहाड़ सुनी और पीछे मुड़कर देखा तो बेटा सड़क पर पड़ा था और एक बाघ उसके ऊपर था, जबकि हैरान पिता वहीं खड़ा था, उसका हाथ अभी भी अपने बेटे को पत्ता देने के लिए बढ़ा हुआ था।

फिर उन्होंने पिता को एक अद्भुत कला का प्रदर्शन करते देखा—जो उनके जीवन का अंतिम प्रदर्शन और सर्वोच्च बलिदान था। बूढ़ा व्यक्ति आगे बढ़ा, अपने हाथ हिलाते हुए, बाघ को डराने के लिए उस पर चिल्लाया। इसके बाद जो हुआ वह बहुत तेज़ी से हुआ।

बाघ ने एक पल के लिए लड़के को छोड़ा और फिर पिता पर झपटा, उन पर कूद पड़ा और भयानक ढंग से उनके गले और छाती को काट डाला। पिता के गहरे घावों से खून फव्वारे की तरह बहने लगा। फिर उन्हें सड़क पर पड़ा छोड़कर बाघ वापस बेटे पर झपटा, जो स्तब्ध होकर अपने पिता को मरते हुए देख रहा था।

उस क्षण जादू टूट गया और दोनों आदमी पीछे मुड़े और जितनी तेजी से हो सके तुप्पुर की ओर भागे, और उन्होंने एक बार भी पीछे मुड़कर यह देखने की कोशिश नहीं की कि उस लड़के या उसके पिता का उस आखिरी दृश्य के बाद क्या हुआ था।

जैसा कि मैंने बताया, तुप्पुर एक छोटा सा गाँव है। इसके अलावा, वहाँ किसी के पास बंदूक नहीं थी। इसलिए एक दर्जन लोग पुलिस को सूचना देने और बंदूकधारी किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए आनंदपुरम की ओर चल पड़े।

संयोगवश रास्ते में उनकी मुलाकात एक लॉरी से हुई जो चोर्डी की ओर जा रही थी ताकि उस नाले से रेत इकट्ठा कर सके जहां से वह पुल के नीचे से गुजरती है, ठीक उसी जगह पर जहां साइकिल सवार ने कुछ समय पहले एक बाघ देखा था।

उन आदमियों ने लॉरी रोक दी और ड्राइवर से कहा कि वह वापस मुड़े और उन्हें जल्दी से आनंदपुरम ले जाए ताकि वे घटना की रिपोर्ट कर सकें। लेकिन ड्राइवर बेहद साहसी था, या कम से कम ऐसा ही लगता था। अगर वे सब उसकी लॉरी में बैठ जाएँ, तो वह सड़क पर उस जगह तक ले जाएगा जहाँ यह 'परी कथा'—जैसा कि उसने खुलेआम बताया—घटित हुई थी। तब वे सब देखेंगे कि क्या होता है। किसी ने पूछा, 'शेर का क्या?' 'तुम्हारे पास खुली ट्रक है। मान लो कि वह हम पर हमला कर दे और हममें से कुछ को मार डाले?' ड्राइवर ने दृढ़ता से कहा, 'भाई, मैं यहाँ हूँ; इसलिए तुम्हें किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है। क्या तुम्हें लगता है कि मैं चुपचाप बैठा रहूँगा, शेर के आने का इंतज़ार करूँगा? मैं पलक झपकते ही अपनी ट्रक उस जानवर के ऊपर चढ़ा दूँगा।'

ड्राइवर के साहसी शब्दों से प्रेरित होकर बारह लोग लॉरी पर चढ़ गए। देखते ही देखते वे घटनास्थल पर पहुँच गए। मुझे बताया गया कि जब ड्राइवर ने पिता को सड़क पर अपने ही खून के बड़े तालाब में पड़ा देखा तो वह सचमुच हैरान रह गया—उस समय तक उसकी मौत हो चुकी थी। उसे लगा था कि पूरी कहानी मनगढ़ंत है।

बेटे का कोई अता-पता नहीं था।

इस समय तक चालक का आत्मविश्वास काफी हद तक टूट चुका था। तेरहों लोग कुछ देर रुके और बुजुर्ग लकड़हारे के शव को लॉरी में रख दिया। फिर वे पूरी रफ्तार से चोर्डी की ओर चल पड़े। वहां उन्होंने रेंज अधिकारी को साथ लिया और कुम्सी के लिए रवाना हो गए, जहां कुछ देर बाद कुम्सी रेंज अधिकारी और पुलिस सब-इंस्पेक्टर भी उनके साथ शामिल हो गए। पूरी टीम लॉरी में बैठकर शिमोगा गई, जहां पुलिस और वन विभाग को विस्तृत रिपोर्ट सौंपी गई। औपचारिकताओं के लिए लकड़हारे का संक्षिप्त पोस्टमार्टम किया गया और उसी रात देर से उसका शव उसके परिजनों को सौंप दिया गया।

अगले दिन सशस्त्र पुलिस का एक दल उसी ट्रक में बेटे की तलाश में लौटा। बताया गया कि खून के निशान दिखाई दिए और एक घसीटने का निशान भी, जहाँ आदमखोर अपने शिकार को झाड़ियों से होते हुए वन्यजीव अभ्यारण्य में ले गया था। इसके बाद, जंगल में काम करने में सक्षम कोई भी व्यक्ति निशानों का पीछा करने में सक्षम नहीं था, इसलिए पुलिस दल उसी शाम शिमोगा लौट आया और बताया कि वे बेटे का शव बरामद करने में असफल रहे हैं।

और जहाँ तक मैं देख सका, बाघ के नवीनतम कारनामे की यही पूरी कहानी थी, क्योंकि मैं उन दो लकड़हारों से विवरण जुटाने में सक्षम था जो पूरी घटना और उसके बाद की घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे।

चोर्डी रेंज के अधिकारी ने मुझे कॉफी पिलाई, जिसके बाद वह और उनका सहयोगी, जो कुम्सी से मेरे साथ आया था, दो लकड़हारों और मेरे साथ करादिबेट्टा टाइगर अभयारण्य के सामने सड़क किनारे हुए हमले के स्थल की ओर चल पड़े।

मैं पहले भी कई बार इस सड़क से गुज़र चुका था, और यह दूसरी बार था जब जिस बाघ का मैं पीछा कर रहा था, उसने इस वन्यजीव अभ्यारण्य में शरण ली थी। पहली बार ऐसा तब हुआ था जब गौजा गाँव का एक घायल जानवर अभ्यारण्य में आ गया था, और मैंने उसे अभ्यारण्य की सीमा में प्रवेश करने से ठीक पहले मार गिराया था, जिसकी कहानी मैंने कहीं और बताई है।*

क्षेत्र अधिकारी पहले ही घटनास्थल का दौरा कर चुके थे और उन्होंने ठीक-ठीक उस जगह की पहचान कर ली थी जहाँ बाघ ने पिता-पुत्र पर हमला किया था। यातायात काफी अधिक था और बीच के तीन दिनों में सड़क पर आने-जाने वाली कई बसों, ट्रकों, निजी कारों और बैलगाड़ियों के पहियों के नीचे दबकर खून के सभी निशान मिट गए थे।

अभयारण्य सड़क से कुछ ही गज की दूरी पर सागौन के वृक्षारोपण के रूप में शुरू होता है। उस समय वृक्षों की ऊँचाई लगभग एक समान थी, लगभग बीस फीट, जिन्हें मैसूर वन विभाग द्वारा लगभग दस से पंद्रह वर्ष पहले सीधी पंक्तियों में लगाया गया था। वृक्षारोपण अभयारण्य में लगभग दो फर्लांग तक घना फैला हुआ था, जिसके बाद यह अचानक प्राकृतिक जंगल में विलीन हो जाता था।

सागौन के पेड़ों के नीचे घायल जानवर के खून के निशान ढूंढना लगभग नामुमकिन है। ज़मीन पर गिरे और सूखे पत्ते बिछे हैं, जिन पर कोई निशान नहीं बनता। इस मामले में, आदमखोर जानवर जिस लड़के को ले गया था, उसका खून बहुत कम बहा था। हालांकि लकड़हारों ने वह जगह बता दी थी जहां जानवर और उसका शिकार गायब हुए थे, लेकिन हमने काफी खोजबीन के बाद भी सिर्फ तीन जगहें ढूंढीं जहां सागौन के पत्तों पर खून की बूंदें गिरी थीं। आगे खोजबीन में समय बर्बाद करना उचित नहीं था।

मुझे पता था कि अभयारण्य उत्तर की ओर एक धारा और बैलगाड़ी के रास्ते तक फैला हुआ है, जो पश्चिम में गौजा गाँव को पूर्व में अमलीगोला नामक दूसरे गाँव से जोड़ता है। बैलगाड़ी का

रास्ता और धारा अभयारण्य की उत्तरी सीमाएँ बनाते हैं, हालाँकि जंगल कई मील तक फैला हुआ था। एक समझदारी भरा उपाय यह प्रतीत हुआ कि अभयारण्य की चारों सीमाओं पर चार जीवित शिकार बाँध दिए जाएँ, और एक शिकार केंद्र में बाँध दिया जाए, क्योंकि मुझे इस पवित्र क्षेत्र में इस बाघ का शिकार करने की विशेष अनुमति प्राप्त थी, यदि आवश्यकता पड़ी तो।

मैंने दोनों रेंज अधिकारियों (आर.ओ.) से कहा कि मुझे इन पाँच चारे की व्यवस्था करने में उनके सहयोग की आवश्यकता होगी, क्योंकि इस क्षेत्र में पिछले अनुभव के आधार पर मुझे संदेह था कि क्या मैं पाँच जानवर भी प्राप्त कर पाऊँगा, क्योंकि लोग मवेशियों की बलि देने का विरोध करते थे और सहयोग नहीं करते थे। उन्होंने मुझे चिंता न करने को कहा और बताया कि वे अगले दिन सुबह नौ बजे तक चारा मेरे पास भेज देंगे।

कुम्सी में एक वन लॉज है—वही लॉज जहाँ बाघ के हमले में घायल हुए रेवरेंड जर्विस का हाथ काटने के लिए आपातकालीन ऑपरेशन किया गया था। मैंने इसी बंगले में डेरा डालने का फैसला किया और कुम्सी के पशु चिकित्सक से अनुरोध किया कि वे मुझे चारा दिखा दें, इससे पहले कि वे उसे चोर्डी ले जाकर अन्य चारे में मिला दें, जिसे चोर्डी में उनके समकक्ष ने लाने का जिम्मा लिया था। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं अपने द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले जीवित चारे के बारे में काफी सतर्क रहता हूँ। बहुत बीमार या बूढ़े मवेशी, जो मौत के कगार पर होते हैं, अक्सर साहब को चारे के रूप में सौंप दिए जाते हैं। फिर वे आश्चर्य करते हैं कि बाघ उन्हें आसानी से क्यों नहीं मार देता। लेकिन बाघ एक शिकारी और सज्जन होता है, साहब की तरह, वह सियार नहीं होता जो हड्डियों के एक बीमार ढेर से संतुष्ट हो जाए।

जब मैं चारे के बारे में बात कर रहा था, तब मेरे साथी बहुत बेचैन हो रहे थे, क्योंकि शाम के छह बज चुके थे और रात का अंधेरा छाने लगा था। हालाँकि, मैं ज़्यादा घबराया हुआ नहीं था, क्योंकि मुझे पता था कि जब तक हम पाँचों साथ रहेंगे, हम सुरक्षित रहेंगे। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि हम घने सागौन के बागान से होते हुए एक साथ मिलकर आगे बढ़े और सड़क पर खड़ी कार तक पहुँच गए। चोर्डी अधिकारी और दो लकड़हारों को अधिकारी के घर छोड़ने में ज़्यादा समय नहीं लगा और हम पंद्रह मिनट से भी कम समय में कुम्सी वापस आ गए।

उस रात मैं वन लॉज में चैन से सोया और अगली सुबह जल्दी ही स्थानीय वन अधिकारी के क्वार्टर में यह देखने गया कि चारा खरीदने का काम कैसा चल रहा है। पिछली शाम के उनके आत्मविश्वास के बावजूद, मुझे लगा कि स्थानीय वन अधिकारी के रूप में अपने प्रभाव के बावजूद, उन्होंने अपने सामने आने वाली कठिनाइयों को कम करके आंका था। अच्छा हुआ कि मैं वहाँ गया, क्योंकि उन्होंने अभी तक काम शुरू नहीं किया था।

संक्षेप में कहें तो, सुबह के 10 बज चुके थे जब उसने तीन जानवरों को इकट्ठा किया। उनमें से एक भैंस का बच्चा था। बाकी दो दुबले-पतले बूढ़े बैल थे। मुझे बाद वाले बिल्कुल पसंद नहीं थे, लेकिन आर.ओ. ने कहा कि उसके पास इससे बेहतर कोई विकल्प नहीं था। इसके अलावा, उन पर मेरा काफी पैसा खर्च हो गया था।

हमने तीन आदमियों को चार मील लंबे सड़क मार्ग से चोर्डी तक उन्हें ले जाने का काम सौंपा और मैं अपनी कार में ग्यारह बजे उस जगह के लिए रवाना हुआ, और तीनों जानवरों से ठीक पहले अपने गंतव्य पर पहुँच गया।

चोर्डी आर.ओ. ने एक अधपका बैल मंगवाया था—काफी अच्छा जानवर, भूरे रंग का—और कहा कि कोटे में दूसरा चारा, जिसे उन्हें पूरा करना था, उसी सुबह मंगवा लिया गया था और जल्द ही आ रहा है। उसे आने में एक घंटा लग गया, और साढ़े बारह बज गए जब तक हमारे पाँचों जानवर एक साथ आए। आधा दिन पहले ही बर्बाद हो चुका था।

नतीजतन, उस दिन हम उनमें से केवल तीन को ही बांध पाए। सबसे अच्छा, अधेड़ उम्र का भूरा बैल, मैंने अभयारण्य के लगभग बीच में बांधा। भैंस के बच्चे को सड़क से कुछ गज अंदर दक्षिण की ओर बांधा गया, जहाँ हमला हुआ था। अभयारण्य के पूर्वी किनारे पर, जो संयोगवश चोर्डी से लगभग पाँच मील उत्तर में था, चारा के रूप में रखा गया बैल एक बूढ़ा सफेद बैल था।

जब तक हमारा काम खत्म हुआ, तब तक सूर्यास्त हो चुका था, और मैंने बचे हुए दो जानवरों को चोर्डी में छोड़ दिया, यह कहते हुए कि मैं अगली सुबह बहुत जल्दी वापस आऊंगा ताकि उन्हें बांधने के लिए जगह चुन सकूं, जो कि आपको याद होगा कि अभयारण्य द्वारा बनाए गए लगभग आयताकार के उत्तरी और पश्चिमी किनारों पर शेष दो हिस्से होने थे।

अगले दिन भोर से पहले मैं अपने दोस्त कुम्सी रोड ऑफिसर के साथ चोर्डी वापस जा रहा था, जो पहले से ही उठकर मेरा इंतजार कर रहा था। हमारी मंजिल से लगभग आधे रास्ते में एक विशाल सांभर हिरण सड़क पार कर गया और उसने कहा कि यह शुभ संकेत है।

चोर्डी में, वहाँ के वन अधिकारी ने कहा कि वह मेरे साथ शेष दो बछड़ों को बाँधने में मदद करेगा, और उसने अपने अधीनस्थ, एक वनपाल को निर्देश दिया कि वह दो वन रक्षकों और उन लोगों में से एक को साथ ले जाए जो पिछले दिन हमारे साथ थे और इसलिए जानते थे कि वे कहाँ स्थित हैं, ताकि अभयारण्य के पूर्व और दक्षिण में स्थित बछड़े जीवित हैं या नहीं, यह देखा जा सके। हम स्वयं अभयारण्य के केंद्र में बँधे तीसरे बछड़े को देखेंगे, क्योंकि हम पश्चिमी और उत्तरी सीमाओं की ओर मुड़ने से पहले अभयारण्य से होकर एक शॉर्टकट लेंगे। हम सभी एक साथ निकले, और डेढ़ घंटे से अधिक समय बाद हम उस बछड़े के पास पहुँचे जिसे मैंने अभयारण्य के मध्य के पास बाँधा था। वह जीवित और स्वस्थ था।

इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि हर जीवित शिकार को बांधते समय, उसे प्रतिदिन खिलाने-पिलाने का भी ध्यान रखना पड़ता है। खिलाना तो आसान है, क्योंकि चौबीसों घंटे में उसके लिए भूसे का एक गट्ठा भेजा जाता है, लेकिन पानी पिलाना अक्सर एक बड़ी समस्या बन जाता है। बेशक, एक बर्तन या मिट्टी के तेल का डिब्बा उपलब्ध कराया जा सकता है और उसे प्रतिदिन पानी से भरा जा सकता है, लेकिन इस विधि में भी कुछ कमियां हैं। जानवर अक्सर बर्तन को गिरा देता है या अगर वह बर्तन हो तो उसे तोड़ देता है, और मिट्टी के तेल का डिब्बा पास में होने से बाघ अक्सर हमला करने से हिचकिचाता है। इसलिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि जो लोग प्रतिदिन शिकार के पास जाते हैं, वे उसे खोलकर किसी तालाब या नदी के किनारे ले जाएं, वहां उसे पानी पिलाएं और फिर वापस ले आएं। हालांकि, ऐसा तालाब या नदी आसानी से उपलब्ध नहीं होती, और अक्सर जानवर को एक मील या उससे अधिक दूर तक उपयुक्त स्थान पर ले जाना पड़ता है। गाँव वाले स्वभाव से आलसी और उदासीन होते हैं, और वे आमतौर पर इतनी लंबी पैदल यात्रा को अनावश्यक समझते हैं। उनका तर्क होता है कि जानवर को तो वैसे भी मारने के लिए ही बांधा गया है। तो उसे पानी पिलाने की चिंता क्यों करें? भारत में जीवित शिकारियों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। यदि वे प्रतिदिन शिकारियों के आने-जाने पर निगरानी नहीं रखते हैं, या कम से कम इस काम के लिए भरोसेमंद लोगों को नियुक्त नहीं करते हैं, और यदि कोई बाघ या तेंदुआ शिकार नहीं करता है, तो लगभग निश्चित है कि बेचारा शिकार एक सप्ताह तक प्यासा और प्यासा ही रहेगा, जब तक कि उसे बांधने की जगह के पास पानी न हो, या किसी बर्तन में पानी उपलब्ध न कराया गया हो।

इस मामले में, आधा मील दूर एक छोटी नदी थी। हम जानवर को वहां ले गए, उसे जी भर पानी पीने दिया और फिर उसे वापस ले आए।

आप सोच रहे होंगे कि पानी पिलाने की समस्या से बचने के लिए चारा किसी नदी या

तालाब के किनारे बांधना ज़्यादा आसान होगा। अक्सर ऐसा ही किया जाता है, क्योंकि बाघ खुद भी पानी पीने के लिए ऐसी जगहों पर आते हैं। लेकिन कुछ और बातें भी ध्यान में रखनी ज़रूरी हैं। नाले, जानवरों के रास्ते, आग बुझाने के रास्ते और कुछ पैदल रास्ते, बैलगाड़ी के रास्ते और यहाँ तक कि सड़कों के कुछ हिस्से, जहाँ बाघ अक्सर चलते हैं, चारा बांधने के लिए उतने ही अच्छे स्थान हैं, और साथ ही वहाँ बाघों के पदचिह्न नियमित रूप से मिलने का अतिरिक्त लाभ भी हो सकता है। जिन जगहों पर ये रास्ते आपस में मिलते हैं, वे और भी बेहतर हैं। बाघ हमेशा नदियों के किनारे नहीं टहलते, खासकर जहाँ नदियाँ बहुत हों। हमने यह चारा एक ऐसे रास्ते पर बांधा था जहाँ बाघ अक्सर चलते हैं, जैसा कि चोर्डी रेंज अधिकारी ने मुझे पिछली शाम आश्वासन दिया था, जब हम एक उपयुक्त जगह की तलाश कर रहे थे।

हमने अपने साथ लाए दो जानवरों को अभयारण्य की पश्चिमी और उत्तरी सीमाओं पर उपयुक्त स्थानों पर पेड़ों की छाया में सुरक्षित कर दिया। लेकिन यह काम पूरा होने में दोपहर हो चुकी थी।

बेशक, आपको एक पल के लिए भी यह नहीं सोचना चाहिए कि यह सब करके हमने बाघ को अभयारण्य के भीतर पूरी तरह से घेर लिया था। क्योंकि अभयारण्य मीलों तक फैला हुआ था और इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं था कि वह जहाँ भी निकले, उसे मेरे किसी चारे का सामना करना ही पड़ेगा। मैंने तो बस उस समय की परिस्थितियों के अनुसार जो संभव था वही किया था, बाकी सब भाग्य या किस्मत पर छोड़ दिया था, आप जो भी नाम देना चाहें। और उस दिन भाग्य ने बड़ा ही बड़ा खेल खेला।

दोपहर के लगभग तीन बज रहे थे और हम वापस लौट रहे थे, चोर्डी के पास ही थे, तभी उस छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में अपने खेतों में हल चला रहे कुछ लोगों ने हमें बताया कि हमने सुबह जिन वन रक्षकों को भेजा था, उन्हें पता चला है कि जिस भैंस के बच्चे को आदमखोर बाघ ने दो आदमियों को मारा था, उसके पास ही बांधकर रखा गया था, जिसे पिछली रात एक बाघ ने मार डाला था। उन्होंने बताया कि वन रक्षकों ने हमें सूचना नहीं दी क्योंकि उन्हें ठीक से पता नहीं था कि हम किस रास्ते गए हैं या कैसे लौटेंगे। इसलिए उन्होंने सभी राहगीरों से कहा था कि अगर वे रास्ते में हमसे मिलें तो हमें सूचित करें।

यह खबर सुनकर हम जल्दी से चोर्डी लौट आए, जहाँ दोनों रेंज अधिकारियों ने हमें घटना की सूचना न देने के लिए गार्डों को खूब खरी-खोटी सुनाई। उनकी गलती तो थी ही नहीं, बेचारे, क्योंकि हम खुद दोपहर भर चलते रहे थे, और अगर वे हमें पकड़ने की कोशिश करते तो शायद वे नाकाम हो जाते और और भी ज्यादा देरी हो जाती। ऐसी स्थिति में, मुझे लगा कि चोर्डी में डटे रहकर और गाँव से गुजरने वाले सभी लोगों के ज़रिए सूचना भेजकर उन्होंने सबसे बुद्धिमानी का काम किया था। खैर, अगर हम जल्दी करते तो मचान लगाने में अभी देर नहीं हुई थी, और यह खबर सुनकर कि उन्होंने गिद्धों से बचाने के लिए शिकार को टहनियों से ढक दिया था, मैंने उनकी तरफ से हस्तक्षेप किया।

दोपहर 3:30 बजे तक मेरी स्टडबेकर कार दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर खड़ी थी, ठीक उस जगह के सामने जहाँ से हमें सागौन के बागान में प्रवेश करना था और भैंस के बछड़े को बाँधने के लिए थोड़ी दूर पैदल चलना था। तीन मिनट में हमने कार के पीछे लगे सामान रखने वाले डिब्बे से अपनी तह करने वाली चारपाई खोल ली। मैंने यह चारपाई हाल ही में बनाई थी और यह पुरानी वाली से बेहतर थी, क्योंकि इसका ढाँचा सामान्य लंबाई से लगभग आधा ही था। इसलिए इसे सामान रखने वाले डिब्बे पर ले जाना आसान था और यह कार की चौड़ाई को दोनों सिरों से पार नहीं करती थी। आराम और सादे रंग के लिए, मैं चौड़ी खाकी नवार टेप पर बैठा था,

जिसकी पट्टियाँ चटाई की तरह आपस में बुनी हुई थीं। टेप के सिरे आयताकार ढाँचे को बनाने वाले बांसों के चारों ओर स्थायी रूप से लूप किए हुए थे। चारों कोनों पर लगे चार पैर लगभग एक फुट लंबे थे, जो आयताकार ढाँचे से ऊपर और नीचे लगभग छह इंच तक फैले हुए थे। इससे मचान को पेड़ से बाँधने के लिए पर्याप्त सहारा मिल जाता था। पूरी संरचना सरल, हल्की, बहुत आसानी से ले जाने योग्य और बेहद आरामदायक थी; सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह जरा सी भी हलचल पर चरमराती नहीं थी, जैसा कि पेड़ों से काटी गई शाखाओं से बने किसी भी सामान्य मचान में होता है।

हालांकि यहाँ सागौन के पेड़ों की औसत ऊँचाई लगभग बीस फीट थी, लेकिन अपेक्षाकृत कम उम्र के होने के कारण कुछ पेड़ काफी पुराने और इसलिए ऊँचे भी थे; मैंने भैंस को इनमें से एक पेड़ के नीचे बाँध दिया था, ताकि भविष्य में मचान लगाने की ज़रूरत पड़ने पर काम आ सके। इस स्थिति में कोई और विकल्प नहीं था, क्योंकि उस बागान में सागौन के अलावा कोई और पेड़ नहीं उगते थे, और सागौन के पेड़ों की शाखाएँ काफी ऊँची होती हैं, इसलिए मुझे सामान्य से अधिक ऊँचाई पर बैठना पड़ा।

उस पेड़ पर चढ़ने में मुझे बहुत परेशानी हुई, क्योंकि पहले बारह फीट तक कोई शाखा नहीं थी, और मैं सीधे डंडों पर चढ़ने में कभी माहिर नहीं था। फिर भी, मैंने एक वन रक्षक के कंधों पर सहारा लिया, और सभी ने खुशी-खुशी मेरे पैरों को थोड़ा ऊपर धकेलने में मदद की, जब तक कि मैं पहली शाखा को पकड़कर खुद को ऊपर खींच न लूँ। सागौन के पत्तों के बड़े आकार के कारण, मचान को पूरी तरह से छिपाना आसान था। इसके अलावा, चूंकि वहाँ केवल वही पत्ते उग रहे थे, इसलिए हमने जो छलावरण की व्यवस्था की थी, वह बहुत कारगर साबित हुई, क्योंकि मचान दिखाई नहीं दे रहा था और आसपास के वातावरण में स्वाभाविक रूप से घुलमिल गया था। पेड़ की वह शाखा जहाँ हमने चारपाई रखी थी, ज़मीन से बीस फीट से अधिक ऊपर थी।

बछड़े की गर्दन टूट गई थी और आधे जानवर को खा लिया गया था, लेकिन इतना बचा हुआ था कि उसके हत्यारे के एक और दौरे को जायज ठहराया जा सके।

दोनों रेंज अधिकारियों में से कोई भी मोटरगाड़ी चलाना नहीं जानता था, न ही दोनों वन रक्षक। लेकिन चूंकि दो लकड़हारे भी हमारे साथ आए थे, इसलिए मैंने उन छहों को मेरी गाड़ी को कम से कम आधा मील या उससे अधिक दूर धकेलने के लिए कहा ताकि अगर बाघ आस-पास कहीं भी सड़क पार करे तो उसे डर न लगे। दरअसल, मुझे यह बात तब तक याद नहीं आई जब तक हम गाड़ी से चारपाई नहीं खोल रहे थे। वैसे भी, सड़क लगभग समतल थी, और उन छह आदमियों को मेरी गाड़ी को खींचने में ज्यादा परेशानी नहीं होनी चाहिए थी।

शाम के ठीक पाँच बज रहे थे जब उन्होंने मुझे सागौन के पेड़ पर छोड़ा, और मैंने सोचा कि लगभग बीस मिनट में वे गाड़ी हटा देंगे और बाघ के लिए सड़क पार करने का रास्ता साफ हो जाएगा, बशर्ते वह उस दिशा से आए। शायद मैं ज़रूरत से ज़्यादा आशावादी था, और वह बिल्कुल भी नहीं आया।

खैर, वह आ तो गया; लेकिन लगभग सवा आठ बजे, जब पूरी तरह अंधेरा हो चुका था। उसने मुझे पहले से ही काफी समय दे दिया था, या यूँ कहें कि चित्तीदार हिरणों के झुंड ने अपनी तीखी आवाजों से और एक भौंकने वाले हिरण ने अपनी कर्कश, गले से निकलने वाली 'खर-र-र खर-र-र' की आवाज से, उसके आने की सूचना दे दी थी। उन्होंने उसकी यात्रा के आखिरी एक मील तक जंगल के सभी जीवों को उसके गुजरने की सूचना दे दी थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बाघ कम बोलने वाले जानवर होते हैं। जंगल के साधारण निवासियों द्वारा उन पर थोपी गई लोकप्रियता—या कहें अलोकप्रियता?—वास्तव में शर्मनाक होती होगी। इस बार, मुझे यकीन है

कि बाघ को शर्मिंदगी से कहीं ज्यादा महसूस हुआ होगा।

खैर, वह बिना किसी अनावश्यक सावधानी के आया, और उसके शिकार के पास खड़े होने से बहुत पहले ही मैं उसके भारी कदमों की आवाज सुन सकता था जो सूखे गिरे हुए सागौन के पत्तों को कुचल रही थी।

मैंने टॉर्च की रोशनी डाली और उसने सीधे मेरी ओर देखा। टॉर्च की रोशनी में भी मुझे यह समझने में लगभग तीन सेकंड लगे कि उसके सिर पर कोई खास बाल नहीं थे। लेकिन मैं जोखिम नहीं ले सकता था और गोली उसके दिल में लगी और वह गिर पड़ा।

मैंने पंद्रह मिनट तक इंतज़ार किया, बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह मर चुका है। वह ज़रा भी नहीं हिला और मुझे पूरा यकीन हो गया। इसलिए मैं नीचे उतरा, उस भयानक पेड़ से आखिरी सात-आठ फीट की छलांग लगानी पड़ी। शायद मेरा वज़न ज़रूरत से ज़्यादा है, और ज़मीन पर गिरने का जो ज़ोरदार झटका लगा, उससे मुझे पेड़ों से कूदने का अभ्यास बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। मैं मरे हुए बाघ के पास पहुँचा और उसे ध्यान से देखा। फिर मैंने मन ही मन अपशब्द कहे। जैसा कि मुझे गोली चलाते समय भी पता था, यह आदमखोर बाघ नहीं था; क्योंकि मरे हुए जानवर की गर्दन पर एक भी बाल नहीं था। एक बार फिर अपराधी बच निकला था, और एक बार फिर एक निर्दोष बाघ को सज़ा मिली थी। इसके अलावा, मुझे शिमोगा के रक्षा अधिकारी को कुछ स्पष्टीकरण देना होगा। उन्होंने मुझे बाघ अभयारण्य में आदमखोर बाघ को गोली मारने की विशेष अनुमति दी थी—लेकिन किसी निर्दोष जानवर को नहीं।

खैर, यह तो बहुत ही बुरा हुआ।

मैं वापस सड़क पर आ गया और चोर्डी की ओर चलने लगा, इस उम्मीद में कि मेरी कार वहीं मिल जाएगी जहाँ उन लोगों ने उसे धकेल कर छोड़ दिया था। लेकिन सड़क पर कोई कार नहीं थी।

मैंने सोचा, बेचारे। उन्होंने मुझे गलत समझा था और उसे लगभग दो मील दूर चोर्डी तक धकेल दिया था।

मैं चोर्डी और रेंजर के क्वार्टर में आया। दोनों अधिकारी वहाँ मौजूद थे। मैंने घोषणा की कि मैंने एक बाघ को गोली मारी है, लेकिन मुझे लगभग यकीन है कि यह गलत बाघ था, क्योंकि इसकी गर्दन पर बाल नहीं थे।

उन्होंने तर्क दिया कि शायद यह वही आदमखोर सांप हो। हो सकता है कि पिछले दो सालों में उसके बाल झड़ गए हों। या शायद शुरू से ही उसके बाल न रहे हों और यह वर्णन महज़ एक मिथक हो। मैंने माना कि यह बात सही है; लेकिन मेरी उम्मीदें नहीं बढ़ीं।

फिर मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने मेरी कार कहाँ छोड़ी थी। कार? उन्होंने समझाया, "जी साहब, आपने उसे चोर्डी से दूर, सड़क की ओर मुंह करके छोड़ दिया था। हमें उसे चोर्डी की ओर मोड़ना नहीं आता था, जबकि आपने हमें साफ-साफ निर्देश दिया था कि उसे उस जगह से कम से कम आधा मील दूर धकेलें।" हमने वैसा ही किया, जी साहब, लेकिन उल्टी दिशा में।

खैर, जिंदगी ऐसी ही होती है, मैंने धीरे से कहा। इसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। आज रात भी वैसी ही थी जिसमें उतार-चढ़ाव हावी थे—या शायद उतार-चढ़ाव? मुझे इसका जवाब नहीं मिल पा रहा था।

कुछ और कॉफ़ी पीने के बाद, बाँस, लालटेन और रस्सियों के साथ एक दल इकट्ठा हुआ और हम वापस चल दिए। जब लोग बाघ को सड़क तक लाने के लिए उसे बाँध रहे थे, मैं विपरीत दिशा में चला गया और ठीक चार फर्लांग दूर अपनी कार पाई।

हम एक घंटे से कुछ अधिक समय में कुम्सी वापस आ गए।

अगली सुबह मैंने बाघ की खाल उतारी, जबकि दोनों रेंज अधिकारियों ने शिमोगा स्थित रक्षा अधिकारी को अपनी आधिकारिक रिपोर्ट लिखी। उन्होंने लिखा, "मैंने बिना गर्दन के सींग वाले बाघ का शिकार किया है। यह आदमखोर बाघ नहीं हो सकता। मेरे पास मौजूद विशेष परमिट के अनुसार मुझे करादिबेट्टा अभयारण्य की सीमा के भीतर केवल आदमखोर बाघ का ही शिकार करना था, किसी और का नहीं।" उन्होंने अपने संयुक्त बयान का समापन यह कहते हुए किया कि 'आप आगे जो भी आवश्यक कार्रवाई उचित समझें, वह करें।'

फिर उन्होंने मुझसे ऐसी रिपोर्ट लिखने के लिए माफी मांगी।

मैंने अपनी छुट्टी खत्म होने तक इंतजार किया, लेकिन बाकी किसी भी जानवर को नहीं मारा गया। शिमोगा के रक्षा अधिकारी ने मुझे आधिकारिक तौर पर लिखा कि उनके रेंजरों ने बताया है कि मैंने अभयारण्य के अंदर एक बाघ को गोली मारी थी, जो आदमखोर नहीं था, जबकि मुझे दिया गया परमिट आदमखोर बाघ के लिए था, किसी और जानवर के लिए नहीं। क्या मैं इसका स्पष्टीकरण दे सकता हूँ?

मैं पूरी जिंदगी भारत में ही रहा हूँ। इसलिए सरकारी कामकाज में होने वाली लालफीताशाही से मैं भली-भांति परिचित था। लेकिन मुझे रक्षा अधिकारी का पत्र मिलने पर कोई नाराजगी नहीं हुई। मैंने उन्हें एक आधिकारिक पत्र लिखकर खेद व्यक्त किया कि उन्हें यह गलतफहमी हो गई थी कि मैंने जिस बाघ का शिकार किया था वह आदमखोर बाघ नहीं था। मैंने स्पष्ट किया कि मैंने अभयारण्य के भीतर जिस बाघ का शिकार किया था वह आदमखोर बाघ ही था, कोई दूसरा बाघ नहीं। यह शिकार मैंने उस विशेष परमिट के प्रावधानों के अनुसार किया था जो मुझे इस उद्देश्य के लिए बड़ी कृपा से प्रदान किया गया था।

तो क्या हुआ? सब लोग खुश थे। सभी पक्षों की ओर से आधिकारिक मर्यादा का पूर्णतः पालन किया गया था। सभी संबंधित पक्षों ने अपने कर्तव्यों का कड़ाई से और उचित ढंग से निर्वाह किया था।

बैंगलोर लौटने का समय आ गया था। मैंने दोनों रेंज अधिकारियों को उनकी मदद के लिए धन्यवाद दिया, बचे हुए चार चारे उनके मालिकों को उनकी खरीद के एक चौथाई से भी कम दाम में बेच दिए और घर वापसी की यात्रा पर निकल पड़ा। रास्ते में मैं शिमोगा में रुका और रक्षा अधिकारी से मुलाकात की। उन्होंने मुझे बताया कि मैंने उनके पत्र का समझदारी से जवाब दिया था जिसमें उन्होंने स्पष्टीकरण मांगा था और पत्र लिखने के लिए माफी मांगी, यह कहते हुए कि उन्हें ऐसा करना पड़ा क्योंकि उनके दोनों रेंज अधिकारियों ने उन्हें रिपोर्ट दी थी। मैंने उनसे कहा कि चिंता न करें और ऐसी बातों का मुझे अनुभव है, साथ ही यह भी बताया कि मैंने ही रेंज अधिकारियों को बताया था कि मैंने गलत बाघ को गोली मार दी है जब मैंने देखा कि उसकी गर्दन पर बाल नहीं थे। हम अच्छे दोस्त बनकर विदा हुए।

पूरा एक साल बीत गया। उस बूढ़े आदमी और उसके बेटे के शिकार होने के बाद से कोई और हत्या नहीं हुई थी। यह पिछले साल की शुरुआत के आसपास की बात थी। या शायद कुछ महीने बाद की—मुझे अब ठीक से याद नहीं है। सभी को लगता था कि अयाल वाले आदमखोर की कहानी एक मनगढ़ंत कहानी थी और मैंने ही असली अपराधी को मार गिराया था। मुझे भी ऐसा ही लगता था, जब तक कि मेरा भ्रम टूट नहीं गया।

सागर कस्बे के बाहरी इलाके में एक बाघ ने एक आदमी को मार डाला। जैसा कि मैंने बताया, सागर कस्बा कुम्सी और आनंदपुरम से आगे जाने वाली सड़क पर, जोग जलप्रपात से पहले पड़ता है। दो सप्ताह बाद उसने आनंदपुरम के पास एक दूसरे आदमी को मार डाला, और फिर अगले महीने के भीतर ही उसने तगार्थी और गौजा गांवों में एक-एक पुरुष और महिला को

मार डाला। ये दोनों स्थान आनंदपुरम से दस मील के दायरे में हैं। अगस्त की शुरुआत में उसने दिनदहाड़े एक लंबानी लड़के को उठा लिया। वह कुम्सी कस्बे के बाहरी इलाके में मुख्य सड़क के पास अपने मवेशियों को चरा रहा था।

अभयारण्य के पास बूढ़े लकड़हारे और उसके बेटे की हत्या करने के बाद नरभक्षी वापस लौट आया था और अब वह पूरी ताकत से हत्याएं कर रहा था। या अगर वह खुद नहीं था, तो उसकी जगह उसके ही किसी रिश्तेदार ने ले ली थी जो कहीं अधिक तेज़ी से इंसानों को अपना शिकार बना रहा था।

मैंने किसी तरह एक हफ्ते की छुट्टी ले ली, जो मुझे मिल सकती थी, और गाड़ी से कुम्सी के लिए निकल पड़ा। शिमोगा में तैनात रक्षा अधिकारी का तबादला हो गया था और उनकी जगह एक दूसरे अधिकारी ने ले ली थी, जिन्हें मैं नहीं जानता था। लेकिन उन्होंने मुझे सफलता की शुभकामनाएं दीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या कुम्सी और चोर्डी में तैनात दोनों रेंज अधिकारी वही हैं जिनसे मैं पिछले साल की शुरुआत में मिला था, और जब उन्होंने हां में जवाब दिया तो मुझे खुशी हुई।

कुम्सी में जब मैं रेंजर से उसके क्वार्टर में दोबारा मिला, तो पुराने दोस्तों की मुलाकात हुई, और कुछ समय बाद चोर्डी में भी, जब मैं उसके साथी से मिला। दोनों अधिकारियों का मानना था कि यह आदमखोर बाघ बिल्कुल अलग तरह का जानवर है, और मैंने वास्तव में एक साल पहले अभयारण्य के अंदर सही बाघ को मारा था। उनके ऐसा कहने का कारण यह था कि तब से लेकर पिछले कुछ महीनों तक किसी भी इंसान की हत्या नहीं हुई थी। अगर मैंने उस आदमखोर बाघ को गोली नहीं मारी होती, तो वह इतने महीनों तक कहाँ था? एक बार आदमखोर, हमेशा आदमखोर। बाघ कभी भी अपनी इस आदत को पूरी तरह से नहीं छोड़ते। इसलिए यह बाघ जहाँ भी भटका होगा, उसने उस दौरान कम से कम कुछ इंसानों को तो मारा ही होगा और हमें इसकी जानकारी जरूर होती।

मुझे कहना होगा कि उनका तर्क बहुत ठोस प्रतीत हुआ, और मैं अनिच्छा से ही सही, उनकी बात से सहमत हो गया।

हमने आगे क्या करना है, इस पर चर्चा की। इस बाघ ने सागर, आनंदपुरम, टैगार्थी, गौजा और अब कुम्सी में शिकार किया था। यह वही इलाका था जहाँ दो साल पहले दूसरा आदमखोर बाघ—जिसे अयालदार बाघ कहा जाता था, अगर ऐसा कोई जानवर कभी था भी—अपना आतंक मचाता था। मुझे अपने चारे कहाँ लगाने थे? शुरुआत कहाँ से करनी थी? हम कोई फैसला नहीं कर पा रहे थे।

अगले दिन मामला हमारे लिए सुलझ गया। संयोगवश, बाघ ने दिन दहाड़े आमलिगोला में एक चरवाहे को अपना शिकार बना लिया। आपको याद होगा कि आमलिगोला करादिबेट्टा अभयारण्य की उत्तरी सीमा का पूर्वी छोर था। दूसरे शब्दों में, आमलिगोला अभयारण्य के लगभग आयताकार क्षेत्र का उत्तर-पूर्वी कोना था। वहां के वन रक्षकों ने तुरंत चोर्डी मुख्यालय में अपने वन अधिकारी को इसकी सूचना दी, जो मुझे बताने के लिए तुरंत कुम्सी आ गए। उनके पहुंचने का समय दोपहर 3 बजे था।

इस जगह तक पहुँचने के लिए, अमलिगोला, दो रेंज अधिकारियों और मुझे एक लंबा रास्ता तय करके चोर्डी से आगे एक बेहद ऊबड़-खाबड़ बैलगाड़ी के रास्ते से जाना पड़ा। अमलिगोला में एक छोटा सा सुंदर वन-शाला है, जिसके ठीक पीछे करादिबेट्टा की उत्तरी सीमा बनाने वाली धारा बहती है। यह धारा लगभग दो मील दूर एक बड़े तालाब में जाकर गिरती है। लड़का उस तालाब के किनारे मवेशी चरा रहा था। बाघ धारा के किनारे से चलकर आया और सुबह लगभग नौ बजे

लड़के पर हमला कर दिया। उसने मवेशियों को छुआ तक नहीं, हालाँकि वे उस जगह के चारों ओर चर रहे थे जहाँ लड़का खड़ा था। शिकार करने के बाद, बाघ अपने शिकार को लेकर उसी धारा के किनारे-किनारे जंगल में वापस चला गया।

मुझे बाघ के पदचिह्न दिखाए गए, जब वह लड़के की ओर आया था, और वापसी की यात्रा के उसके पदचिह्न भी, जहाँ लड़के के पैरों के घिसटने से बने एक निशान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। पदचिह्नों पर न के बराबर खून था।

यह सब देखते-देखते शाम ढल चुकी थी और इतना अंधेरा हो गया था कि उस बेचारे नौजवान का शव ढूंढना नामुमकिन था। यह बहुत दुख की बात थी। मुझे इस बात पर बहुत गुस्सा आ रहा था कि कुम्सी में हमें यह खबर इतनी देर से मिली। हालांकि हमने जल्दी पहुंचने की पूरी कोशिश की थी, लेकिन अम्लिगोला जाने वाले खराब रास्ते की वजह से समय बर्बाद हो गया, क्योंकि मैं कोई स्प्रिंग या एक्सल तोड़ना नहीं चाहता था। अगर मुझे उस शाम शव मिल जाता, तो मैं बाघ के लौटने का इंतज़ार करते हुए रात भर जागता रहता। मैंने अपनी बदकिस्मती को कोसा।

रेंज अधिकारी वन लॉज के एक कमरे में सोए। मैं दूसरे कमरे में सोया। दोनों गार्ड रसोई से सटे एक गोदाम में गए थे, जो मुख्य बंगले से अलग एक इमारत थी, जहाँ उन्होंने दरवाज़े को बंद कर दिया और कुंडी लगा दी।

आधी रात के कुछ देर बाद एक बाघ की आवाज सुनाई दी। वह हमसे लगभग एक मील की दूरी पर था। उसने फिर आवाज लगाई और रेंज अधिकारियों ने उसे सुना। उन्होंने मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए हमारे कमरों को अलग करने वाले दरवाजे पर दस्तक दी, कहीं मैं सो न रहा हूँ। मैंने दरवाजा खोला और उन्हें अंदर आने दिया, साथ ही बताया कि मैं खुद भी आवाजें सुन रहा था।

फिर मैंने लॉज के संकरे बरामदे की ओर जाने वाला मुख्य दरवाज़ा खोला। चारों ओर फैले जंगल पर चाँदनी पड़ रही थी और बरामदे के एक कोने से रोशनी अंदर आ रही थी। किसी उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में ही जंगल में चाँदनी रात के रोमांच का पूरा आनंद लिया जा सकता है। जब मैं बाहर की ओर देख रहा था और उस अद्भुत नज़ारे में खोया हुआ था, तभी बाघ ने फिर से आवाज़ लगाई, इस बार बहुत करीब से। अचानक मुझे एहसास हुआ कि वह जानवर बंगले के पीछे कुछ ही गज की दूरी पर बहने वाली धारा के किनारे चल रहा था और शायद अगले दस मिनट में वहाँ से गुज़र जाएगा। क्या यह आदमखोर बाघ था?

मैंने अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया।

राइफल की नली पर लगे दो क्लैंपों पर टॉर्च लगाने में मुझे बस कुछ ही मिनट लगे। मैं लॉज के पीछे बने बाथरूम के दरवाजे से बाहर भागा, परिसर की सीमा पर लगे युवा कैसुआरिना पेड़ों की पतली झाड़ी को पार करते हुए पीछे की ओर ढलान से नीचे उतरकर छोटी सी धारा के किनारे जा पहुँचा।

चांदनी में पानी की सतह चमकती और टिमटिमाती हुई दिखाई दे रही थी, हालांकि जिस किनारे पर मैं खड़ा था, उसके पास उगे पेड़ों के नीचे बहुत अंधेरा था। मैंने आपको बताया है कि यह धारा करादिबेट्टा की उत्तरी सीमा बनाती है। इसका दूसरा किनारा अभयारण्य के भीतर था। वन आश्रम और जिस किनारे पर मैं अब खड़ा था, वे अभयारण्य की सीमा से ठीक बाहर थे।

बाघ ने फिर से दहाड़ लगाई। वह तेजी से पास आ रहा था और मुश्किल से एक चौथाई मील दूर था। अगर मुझे उस पर घात लगाकर हमला करना था तो मुझे जल्दी कार्रवाई करनी होगी।

सबसे अहम सवाल यह था: वह किस किनारे पर चल रहा था? अगर वह दूसरी तरफ या

कार्डिबेटा किनारे पर होता, तो चांदनी में उसे देखने और तस्वीर लेने के लिए मुझे पानी के किनारे के बहुत करीब जाना पड़ता। दूसरी तरफ, अगर वह उसी किनारे पर आ रहा होता जिस पर मैं खड़ा था, और अगर मैं नदी के किनारे चला जाता, तो बाघ को न सिर्फ पानी पर चांदनी में मेरी परछाई देखने का फायदा मिलता, बल्कि वह खुद भी ऊँची जगह पर होता। अगर वह मुझ पर हमला करता, तो यह मेरे लिए बेहद खतरनाक और नुकसानदेह साबित हो सकता था।

उसने फिर से आवाज़ दी—लगभग एक फर्लांग दूर से। समय बिल्कुल भी बर्बाद करने का नहीं था। मैंने जोखिम उठाने का फैसला किया। संभवतः वह नदी के दूसरी ओर, अभयारण्य के अंदर ही था।

इस बीच मेरी आँखें छिपने की जगह की तलाश में बेताब थीं। मेरे किनारे से लगभग दो फुट की दूरी पर सरकंडे का एक झुंड था, जो पूरी तरह से पानी से घिरा हुआ था। मुझे पता था कि धारा उथली है, इसलिए मैं किनारे तक दौड़ा और चुपचाप दो फुट पानी में चला गया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कोई छपछपाहट न हो। फिर मैं घास में नीचे बैठ गया। दो-तीन मिनट सन्नाटे में बीत गए। मैं दोनों किनारों पर पेड़ों की गहरी छाया में कुछ भी नहीं देख पा रहा था।

फिर बाघ ने मेरे ठीक सामने, उसी किनारे पर जहाँ मैं अभी खड़ा था, दोबारा कराहने की आवाज़ निकाली। वह ठीक उसी क्षण वहाँ से गुज़र रहा था।

मैंने गिनती की, एक-दो-तीन-चार-पाँच, ताकि वह पूरी तरह से मेरे ऊपर और मेरे बराबर न दिखे। फिर मैंने टॉर्च का बटन दबाया। वहाँ, मुश्किल से पंद्रह गज की दूरी पर, उसकी धारीदार आकृति दिखाई दी।

वह अचानक रुक गया और पीछे मुड़ गया। उसका चेहरा दाईं ओर था, इसलिए मुझे उसकी दाहिनी कंधे के पीछे गोली मारनी पड़ी। वह हवा में उछला और पीछे की ओर गिर गया। मैंने दूसरी और तीसरी बार गोली चलाई।

फिर उसे मेरी मौजूदगी का एहसास हुआ और वह ढलान पर फिसलते-लड़खड़ाते हुए मेरी ओर बढ़ा। महज पाँच गज की दूरी से मेरी चौथी गोली उसके सिर को भेद गई।

बाद में, जब मैंने उसकी जांच की, तो मैं उसकी गर्दन के चारों ओर उगने वाले बालों के असामान्य गुच्छे को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। यह एक नियमित अयाल का रूप ले रहा था।

जंगल के कुछ रहस्य कभी सुलझ नहीं सकते, और उनमें से एक यह है कि इस बाघ के सिर पर बाल (अयाल) क्यों थे।

---

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

नौ

पेगेपलयम का आदमखोर

यह आदमखोर बाघ के कारनामों और पतन की पूरी कहानी नहीं है, क्योंकि जिस बाघ के बारे में मैं लिख रहा हूँ वह इस समय जीवित है। आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार उसने चौदह लोगों को मारकर खाया था, हालांकि अनौपचारिक रूप से उसके शिकारों की संख्या सैंतीस बताई जाती है, जिनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। इस अनौपचारिक अनुमान में से लगभग आधे लोगों को वास्तव में पूरी तरह या आंशिक रूप से खा लिया गया था, शेष को जानवर के पंजों से केवल घायल किया गया था। आधिकारिक रिकॉर्ड में केवल मारे गए और खाए गए व्यक्तियों को ही गिना जाता है, घायलों को नहीं। इसी कारण आधिकारिक और अनौपचारिक मृत्यु-सूचनाओं में अंतर है।

मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, उसकी दिलचस्प बात यह है कि मेरा मानना है कि यह बाघ वही जानवर है जिसका वर्णन मैंने अपनी पिछली पुस्तक में 'राजनगर का हमलावर'* नामक कहानी में किया था। जब मैं वह वृत्तांत लिख रहा था, तब एक बाघ ने उत्तरी कोयंबटूर जिले में, डिंबम ढलान की तलहटी में, पहाड़ी पठार की तलहटी से सटे झाड़ीदार जंगल में, और उत्तर में डिंबम (पहाड़ी पर खड़ी घाट सड़क के शीर्ष पर) और दक्षिण में तलहटी में शुष्क मैदानों पर स्थित सत्यमंगलम शहर के लगभग मध्य में अपना निवास स्थान बना लिया था।

पहाड़ियों की तलहटी में स्थित झाड़ियों वाले घने जंगलों के सबसे नज़दीकी गाँव का नाम राजनगर है। जब से इस बाघ ने इस गाँव के चरवाहों को सताना शुरू किया, जो अपने मवेशियों को इन झाड़ियों वाले जंगलों में चराने ले जाते थे, तब से वह राजनगर के बाघ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसके अलावा, हमले के अपने अनोखे तरीके के कारण उसने विशेष ख्याति अर्जित की —या कम से कम जब मैंने वह कहानी लिखी थी, तब तो यही माना जाता था। यह अनोखा तरीका यह था कि वह झाड़ियों से निकलकर अचानक हमला करता और अपने पंजों से खरोंचकर चरवाहे को बुरी तरह घायल कर देता, और फिर हमले के दौरान आसपास घूम रहे मवेशियों के झुंड में से हमेशा अपने लिए एक मवेशी चुनकर ले जाता। उस समय तक उसके द्वारा हमला किए गए किसी भी इंसान को काटने का कोई पुख्ता सबूत नहीं था। एक-दो लोगों के लापता होने की सूचना मिली थी और यह माना जाता था कि बाघ उन्हें खा गया था, लेकिन इस अनुमान की पुष्टि करने वाला कोई ठोस सबूत नहीं था। इतना तो पता था कि यह बाघ अपने शिकार को काटने के बजाय अपने पंजों से घायल करता था।

इस विचित्र आदत के कारण यह आम धारणा बन गई कि वह एक ऐसा जानवर था जिसके चेहरे या जबड़े पर इस तरह की चोट लगी थी कि वह काट नहीं सकता था। साथ ही, यह भी पाया गया कि वह चरवाहे पर हमला करने के बाद जिन मवेशियों को मारता था, उन्हें वह बड़े चाव से खाता था, जिससे यह साबित होता था कि जब उसका मन करता था तो वह अच्छी तरह से काट और खा सकता था। कुल मिलाकर, यह एक अत्यंत असामान्य और विचित्र मामला था, जिसकी आज तक संतोषजनक व्याख्या या प्रमाण नहीं मिल पाया है, हालांकि इस आदत के लिए कई तरह के तर्क दिए गए हैं।

मैंने बताया है कि मैंने इस बाघ को गोली मारने की कोशिश कैसे की और कैसे मैं असफल रहा। वह एक बेहद मायावी जानवर था। आखिरकार मैं बेंगलुरु में अपने घर लौट आया, और 'राजनगर के खूंखार बाघ' को हमारी मुठभेड़ के पहले दौर का निर्विवाद विजेता बना दिया। मुझे पूरा विश्वास था कि वह समय जरूर आएगा जब दूसरे दौर का मौका मिलेगा, और मुझे उम्मीद थी कि इस बार मुझे बेहतर सफलता मिलेगी।

कुछ मित्रों और शुभचिंतकों ने मुझे पत्र लिखकर पूछा है कि क्या उस कहानी का कोई अगला भाग है। मेरे एक पुराने परिचित, जो केर्नी ने तो लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया से मुझे एक तार भेजकर बताया कि वे इस विशेष बाघ के बारे में आगे की जानकारी का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

अफसोस, मैं उनमें से किसी की भी जिज्ञासा शांत नहीं कर सका, क्योंकि 'राजनगर के हमलावर' ने अपना हमला बंद कर दिया और मेरे आने के कुछ ही समय बाद वह गायब हो गया। हम सभी को उम्मीद थी कि वह सुधर गया होगा और शायद नए साल के साथ उसने अपनी आदतें सुधार ली होंगी। या शायद वह किसी दूर के जंगल में चला गया होगा या उसकी स्वाभाविक मृत्यु हो गई होगी। समय बीतता गया और राजनगर के चरवाहे अपने खेतों के आसपास के झाड़ीदार जंगल में अपने मवेशियों को चराने के लिए वापस लौट आए और शाम को थके हुए, लेकिन बिना किसी चोट के घर लौट आए।

फिर, लगभग नौ महीने बाद, एक शाम, राजनगर से लगभग पचास मील उत्तर में स्थित बिलिगिरिरंगन पर्वत श्रृंखला के पीछे सूरज डूबने लगा। उसकी तिरछी किरणें पेगेपलयम नामक छोटे से गाँव की कुछ झोपड़ियों की पूर्वी दिशा में लंबी परछाइयाँ बना रही थीं। यह गाँव जंगल के एक खुले मैदान में बसा था, जिसके पश्चिम में पर्वत श्रृंखला थी और पूर्व में दिंबुम से कोललेगल जाने वाली सड़क लगभग दो मील की दूरी पर थी। यह गायों के घर लौटने का समय था, और गाँव से कुछ ही दूरी पर स्थानीय गायों का झुंड पेगेपलयम की ओर जाने वाले जंगल के रास्तों पर चल रहा था; दो चरवाहे, एक आदमी और एक लड़का, उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

घने जंगलों से ढकी घाटियाँ देश को काटती थीं। बरसात के मौसम में पश्चिम की पर्वत श्रृंखला से नीचे बहते पानी की धाराएँ पूर्व की ओर तेज़ी से बहती थीं। लेकिन उस सुहावनी शाम को वे बिल्कुल सूखी थीं, और बुलबुलों की चहचहाहट और 'सात बहन' पक्षियों के कई समूहों की सरसराहट ने उस दृश्य को शांति और सुकून का माहौल दे दिया था।

मवेशी ज़मीन के एक ढलान को पार कर रहे थे। वयस्क चरवाहा आधे रास्ते तक पहुँच चुका था और लड़का घाटी की तलहटी की ओर ढलान वाले दूसरे किनारे पर था। झुकती घास की डंडियों से घिरे युवा बांसों के एक झुंड ने उसका रास्ता रोक रखा था, और ठीक आगे चल रहे मवेशियों के झुंड के पदचिह्न उसके चारों ओर से गुजर रहे थे, जिन पर कई खुरों से उड़ी धूल अभी तक जमी नहीं थी। लड़का अपने विचारों में डूबा हुआ उनके पीछे-पीछे चल रहा था।

आगे चल रहे वयस्क चरवाहे को खोखली सी आवाज़ सुनाई दी, फिर एक हल्की सी सिसकी जैसी आवाज़ आई, तो वह कारण जानने के लिए पीछे मुड़ा। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दिया। उसके पीछे का रास्ता बाँस के झुंड की ओर जा रहा था। वहाँ कोई भी नहीं था। चरवाहा झुंड के पीछे-पीछे चलने लगा। उसे यकीन था कि लड़का भी उसके साथ आ जाएगा।

अंततः वे पेगेपलयम के पास पहुँच गए। चरवाहे ने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा। लड़के का फिर कोई निशान नहीं था। उसने नाम लेकर पुकारा: 'वेंकट, वेंकट,' लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। चरवाहा थोड़ी देर रुका और फिर पुकारा, लेकिन फिर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इसी बीच मवेशी गाँव की ओर आगे बढ़ रहे थे, और क्योंकि वह उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहता था,

इसलिए वह उनके पीछे गाँव में चला गया। तभी उसे पता चला कि चरवाहा लड़का नहीं आया था।

लड़के के देर से आने के सौ कारण हो सकते थे, इसलिए इस पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया। लेकिन लगभग एक घंटा बीत जाने के बाद भी जब लड़का नहीं आया, तो चरवाहे को याद आया कि बांस के झुंड के चारों ओर से रास्ता पार करने के बाद वह उसे देख नहीं पाया था। उसे एक खोखली सी हांफने की आवाज़ भी याद आई और उसने यह निष्कर्ष निकाला कि लड़के के साथ कुछ हुआ होगा। शायद उसे किसी सांप ने काट लिया हो। चरवाहे के मन में आदमखोर बाघ या तेंदुआ का ख्याल कभी नहीं आया, क्योंकि पेगेपलयम के शांत इलाके में ऐसे किसी खतरे के बारे में कभी सुना भी नहीं गया था।

इसलिए वह वापस मुड़ा और बांस के झुंड की ओर तेजी से बढ़ा। उसने रास्ते के मोड़ को पार किया, और वहाँ, मवेशियों के खुरों के निशान और अपने पैरों के निशानों के ऊपर स्पष्ट रूप से एक बाघ के पदचिह्न, एक संक्षिप्त संघर्ष के संकेत और उस जगह के घसीटने के निशान दिखाई दिए जहाँ शिकारी अपने शिकार को घसीटकर ले गया था।

और इस तरह पेगेपालयम के आदमखोर सांप के बारे में लोगों को पता चला।

समय बीतता गया और छिटपुट मानव हत्याओं की खबरें छिटपुट स्थानों से आती रहीं, दक्षिण-पश्चिम में तलवाड़ी और तलाईमलाई तक, लगभग तीस मील दूर; पूर्व में पोन्नाचीमलाई पहाड़ी की तलहटी में, और एक अन्य घटना कावेरी नदी के किनारे आलमबाड़ी में, चालीस मील से अधिक दूर; और एक और घटना उत्तर दिशा में, कोललेगल के बड़े कस्बे से मुश्किल से छह मील दूर हुई। यह घटना सबसे ताजा थी, जिसमें एक पंद्रह वर्षीय लड़के पर सुबह लगभग 10:30 बजे चिलचिलाती धूप में उस खेत में काम करते समय बेरहमी से हमला किया गया और उसे घसीट कर ले जाया गया।

इस आदमखोर के बारे में एक महत्वपूर्ण तथ्य वह जानकारी है जो उस घटना के दौरान मिली थी जब पेगेपलयम के चरवाहे लड़के को मारने वाली जगह से लगभग तीन मील दूर एक और शिकार हुआ था। तीन आदमी एक बैलगाड़ी के रास्ते से जंगल में जा रहे थे, जिसका इस्तेमाल पहले पेड़ों से कटे हुए बांस निकालने के लिए किया जाता था। आदमखोर की गतिविधियों के कारण, बांस काटने का काम लगभग बंद हो गया था, और लोग जंगल में तभी जाते थे जब बहुत जरूरी होता था; कभी अकेले नहीं और हमेशा दिन के उजाले में। इन तीनों आदमियों को कोई जरूरी काम था, जिसकी वजह से वे वहां मौजूद थे, उनकी संख्या अधिक थी और समय भी दोपहर दो बजे से ठीक पहले का था। उन्होंने पेगेपलयम में दोपहर का भोजन किया था और लगभग अपनी मंजिल तक पहुँच चुके थे। उन्हें उम्मीद थी कि वे दोपहर 3:30 बजे तक वापस आ जाएँगे।

अचानक और बिना किसी चेतावनी के, एक बाघ आगे चल रहे व्यक्ति के ठीक आगे रास्ते पर झपट पड़ा। दल भय से स्तब्ध होकर रुक गया। फिर बाघ ने आगे चल रहे व्यक्ति पर हमला कर दिया, अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर उसके चेहरे पर पंजे मारने लगा। उसके साथी सौभाग्य से पास ही मौजूद एक पेड़ की ओर भागे और उस पर चढ़ गए। इसी बीच, जिस व्यक्ति पर हमला हुआ था, उसने अद्भुत सूझबूझ और साहस दिखाते हुए, उस चाकू से बाघ के सिर पर अंधाधुंध वार किया, जिसे सभी शोलागा लोग लकड़ी काटने या झाड़ियों में रास्ता बनाने के लिए रखते हैं। वार बाघ के सिर के एक तरफ लगा और फिसल गया। इस अप्रत्याशित हमले से बाघ दर्द से दहाड़ा, और सभी आदमखोरों में पाई जाने वाली स्वाभाविक कायरता के कारण वह अपने शिकार को छोड़कर वापस छिप गया।

इसी बीच बाकी दो आदमी पास के पेड़ की सबसे ऊपरी शाखाओं तक पहुँचने में कामयाब हो गए, जहाँ से उन्होंने नीचे का मंजर डर से देखा। उनके साथी के चेहरे और सीने से खून बह रहा था, जो बाघ के पंजों से लगे गहरे घावों से निकला था। वह सदमे से सुन्न होकर जमीन पर बेसुध बैठा था। पेड़ पर बैठे आदमियों ने उसे पुकारा: 'भाई, जल्दी आओ और इस पेड़ पर चढ़ जाओ। जमीन पर रहना सुरक्षित नहीं है। आदमखोर बाघ वापस आ सकता है।'

घायल व्यक्ति ने उनकी आवाज़ सुनी, उठ खड़ा हुआ और सिर से पगड़ी उतारकर अपने शरीर पर लगे कई खरोंचों से बहते खून को पोंछने लगा। पेड़ पर बैठे लोगों ने उसे फिर पुकारा, और वह चढ़ने के इरादे से पेड़ के आधार की ओर चलने लगा। लेकिन भाग्य ने उसके जीवन के अंतिम दिन तय कर दिए थे। आदमखोर बाघ की क्षणिक कायरता क्रोध में बदल गई थी, संभवतः उस घाव के दर्द के कारण जहाँ बहादुर व्यक्ति के चाकू ने उसके सिर के किनारे की त्वचा को चीर दिया था। बाघ ने झपट्टा मारा और इस बार अपने अगले पैर से उसके सिर के पिछले हिस्से पर ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे उसकी गर्दन टूट गई। उसका शरीर ज़मीन पर गिरते ही बाघ ने उसे अपने जबड़ों में उठाया और पेड़ पर बैठे दोनों व्यक्तियों के सामने जंगल की ओर चल पड़ा।

इस घटना के तुरंत बाद मैंने कोललेगल और पेगेपलयम का दौरा किया और इन दोनों व्यक्तियों से बात की। उनके बयान आश्चर्यजनक रूप से एक-दूसरे से मेल खाते थे और विवरण में स्पष्ट थे। दोनों इस बात पर सहमत थे कि दोनों बार जब बाघ ने हमला किया था, तो उसने मुख्य रूप से अपने पंजों से हमला किया था, न कि अपने दांतों से।

मुझे सब कुछ याद आ गया। क्या यह वही मायावी बाघ हो सकता है, 'राजनगर का खूंखार योद्धा', जिसने पहली मुठभेड़ में मुझे हरा दिया था, समय के साथ और भी साहसी हो गया था और एक पक्का आदमखोर बन गया था, और अब 'पेगेपलयम का आदमखोर' बनकर सामने आया था? दोनों व्यक्तियों के साक्ष्य से यही संभावना प्रतीत होती थी कि यह बाघ वही जानवर था।

मैंने इस संबंध में काफी छानबीन की, न केवल पेगेपलयम में बल्कि आसपास के एक-दो गांवों में भी, जहां इस जानवर ने अपने शिकार बनाए थे, और कोललेगल स्थित वन विभाग से भी संपर्क किया। बाघ द्वारा शवों को पूरी तरह खा जाने से पहले ही कई शव बरामद कर लिए गए थे। सभी के शरीर पर पंजे के निशान थे, साथ ही काटने के निशान भी थे। इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं था कि बाघ ने केवल पंजे मारकर ही शिकार किया था, जैसा कि 'हमलावर' बाघ ने किया था; और वैसे भी, किसी भी शव को खाते समय पंजे मारने और काटने की क्रियाएं तो होती ही हैं।

पेगेपलयम की मेरी पहली यात्रा केवल एक सप्ताह तक चली, लेकिन आदमखोर सांप ने मेरे द्वारा दिए गए तीनों जीवित शिकारों को छुआ तक नहीं। उस दौरान उसके बारे में कोई खबर भी नहीं मिली। कर्तव्य पुकार रहा था और छुट्टी बढ़ाने का कोई बहाना नहीं था। मैं बैंगलोर लौट आया।

जैसा कि मैंने बताया है, तब से आदमखोर ने फिर से हत्या कर दी है—दिन दहाड़े, खुले मैदान में, एक पंद्रह वर्षीय लड़के की, जबकि कोललेगल का बड़ा कस्बा केवल छह मील दूर था। इस बार मेरा बेटा, डोनाल्ड, उसका पीछा कर रहा है और उसे उम्मीद है कि उसे मुझसे ज़्यादा सफलता मिलेगी।

हम दोनों यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं कि क्या आदमखोर वही खूंखार जानवर है जिसके बारे में मैंने आपको बताया है, हालांकि इस बात को साबित करने का कोई तरीका नहीं दिखता जब तक कि डोनाल्ड उस खूंखार जानवर की दांतों के बजाय पंजों से हमला करने की

असामान्य आदत का कोई कारण न ढूंढ ले। अगर वह सफल हो जाता है, तो डोनाल्ड निश्चित रूप से जंगल के एक बेहद दिलचस्प रहस्य को सुलझा लेगा।

और जैसे ही मैं इन विचारों में खो जाता हूँ, ये पन्ने और ये लिखावट एक बार फिर मेरी आँखों से ओझल हो जाते हैं। कल्पना में मुझे अपने सामने एक अलाव की धधकती लपटें दिखाई देती हैं, जिनसे चिंगारियों की बौछारें रुक-रुक कर अंधेरे में गिरती हैं, जबकि धुएँ का एक घना गुबार आकाश की ओर उठता है।

आसमान साफ है, लेकिन अलाव की रोशनी के कारण आकाश में बिखरे असंख्य तारों में से कुछ ही दिखाई दे रहे हैं।

अपनी पूरी शक्ति के बावजूद, टिमटिमाती रोशनी मेरे चारों ओर लगभग पंद्रह गज तक ही अंधेरे को दूर कर पाती है। इसके आगे घना, शांत और सर्वव्यापी अंधकार है, मानो कोई ठोस पदार्थ हो, जो हर चीज़ को ढक रहा हो—जंगल की रात का अंधकार, मखमली उदासी की चादर।

मेरी पाइप से और भी धुआं निकलता है, और मैं संतुष्टि से कश लेता हूँ। धुआँ ऊपर उठता है, आग की लपटों से निकलने वाले धुएं में मिल जाता है और अंत में आग की टिमटिमाती, रुक-रुक कर आने वाली रोशनी में गायब हो जाता है, जिसकी गर्मी सुखदायक तो है, लेकिन थोड़ी घुटन भरी भी है।

मेरे चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है, जिसे केवल आग की लपटों की चटकने और फुफकारने की आवाज ही तोड़ रही है।

फिर मुझे वो आवाज़ सुनाई दी। पहाड़ियों के ऊपर से, दूर से, लेकिन धीरे-धीरे पास आती हुई। 'ओ-ओ-ओ-न-ओ-ओ-न! आ-ऊंघ! आ-ऊंघ!' ये एक बाघ की पुकार थी!

मैंने इसे पहले भी कई बार सुना है, और जितनी बार मैं इसे सुनता हूं, उतनी ही बार मैं उस भयानक लेकिन अद्भुत मधुर ध्वनि से रोमांचित हो जाता हूं।

'उघा-उघ! उघ! औंग-हा! आ-ऊंग! ओ-ओ-न-ओ-ओ-न!' फिर से वही आवाज़! बाघ नज़दीक आ रहा है, और भी नज़दीक।

और मेरी कल्पना में, मुझे लगता है कि यह 'पेगेपलयम का आदमखोर' होगा।

---

* देखें मैन-ईटर्स एंड जंगल किलर्स (एलेन एंड अनविन, लंदन)।

Anderson, more famous for hunting man-eating tigers, finds in a wily panther a real challenger to his hunting acumen. There are thrills, failures, disappointments, and at long last, the elusive success. He tells the real-life adventure story set in the deep jungle, with snakes, bisons and of course tigers, with unique verve and colour which only he is capable of.

Kenneth Anderson (1910-74) hailed from a Scottish family settled in India for six generations. His love for the denizens of Indian jungle led him to big game hunting and eventually to writing real-life adventure stories. His book are hailed as classics of jungle lore.